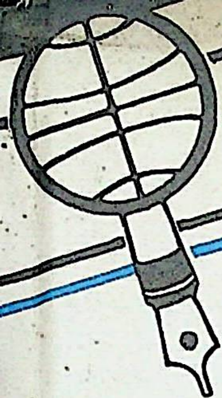


वैज्ञानिक ग[illegible]

यक्षोपहार

जयंत नारलीकर

विज्ञान गल्प माला :

यक्षोपहार

(बारह मराठी विज्ञान-कथाओं, का हिन्दी रूपांतर)

मूल लेखक : डॉ. जयंत नारलीकर

हिंदी रूपांतर : सुश्री सुनीता परांजपे, एम.ए.

सम्पादक : मोरेश्वर तपस्वी



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

वैज्ञानिक गल्पमाला
लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक 512
पहला संस्करण : 1991

यक्षोपहार
(विज्ञान-कथायें)

लेखक : डॉ जयंत नारलीकर

अनुवादक : सुनीता परांजपे

संपादक : मोरेश्वर तपस्वी

मूल्य : 55.00

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया
लोदी रोड, नयी दिल्ली-110003

मुद्रक
शकुन प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032

आवरण-शिल्पी : पुष्पकणा मुखर्जी

YAKSHOPAHAR (Stories) by Jayant Naralikar. Published by Bharatiya Jnanpith, . 18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110003 and Printed at Shakun Printers, Naveen Shahdara, Delhi-110032.

First Edition; 1991 Price : Rs. 55.00

प्रस्तुति

वैज्ञानिक गल्प साहित्य की एक प्रतिष्ठित विधा बनती जा रही है। वैज्ञानिक तथ्यों की कलात्मक माध्यम से प्रसार की प्रगति के प्रति उत्सुकता बढ़ाने में इस विधा का विशेष महत्व है। विशेष रूप से नवयुवकों में वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रति समझ-बूझ और जागरुकता बढ़ाने के लिए यह विधा अत्यन्त उपयोगी है। हमारे देश की विभिन्न भाषाओं में इस विधा का निरन्तर विकास हो रहा है। हिन्दी पाठकों को अन्य भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट वैज्ञानिक गल्प से परिचय कराने के उद्देश्य से भाषा निधि (उत्तर प्रदेश सरकार) की सहायता से भारतीय ज्ञानपीठ ने एक नयी वैज्ञानिक गल्प श्रृंखला प्रकाशित करने की योजना बनाई है। इसका श्रीगणेश हम मराठी की तीन लोकप्रिय पुस्तकों से कर रहे हैं—जयन्त नारलीकर का कहानी संग्रह "यक्षोपहार", लक्ष्मण लोढ़े का "सम्भवामि युगे युगे" और दामोलकर का "विज्ञानेश्वरी"। हमारा प्रयत्न होगा कि शीघ्र ही अन्य भाषाओं के वैज्ञानिक गल्प का हिन्दी रूपान्तर भी प्रकाशित किया जाये।

भाषा निधि के तो हम आभारी हैं ही पर साथ ही उन लेखकों के भी जिन्होंने इस योजना में योगदान करना सहर्ष स्वीकार किया है। इन तीन पुस्तकों के संपादक मोरेश्वर तपस्वी ने इस पूरे कार्यक्रम में हमारी अत्यंत सहायता की है जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूं। ज्ञानपीठ की ओर से सदा की ही भांति मेरे सहयोगियों नेमिचन्द जैन, चक्रेश जैन व सुधा पाण्डेय ने इस पुस्तक के प्रकाशन में विशेष रुचि ली है; मैं उनका कृतज्ञ हूं। सुरुचिपूर्ण साज-सज्जा के लिए पुष्पकणा मुखर्जी व सुन्दर मुद्रण के लिए अबुंज जैन का आभारी हूं।

नई दिल्ली
10 फरवरी, 1991

बिशन टंडन
निदेशक

विज्ञान-युग और विज्ञान-साहित्य

हर भाषा का साहित्य उसे बोलने वाले समाज की गतिविधियों से प्रभावित होता है। साहित्य की विधा कोई भी हो, लेखक उसके सृजन के समय और सृजन में अपनी सामाजिक परिस्थितियों से अछूता नहीं रह सकता। किसी पुस्तक की प्रस्तावना में भले ही लिख दिया गया हो कि 'इसमें वर्णित घटनाएं विशुद्ध काल्पनिक हैं और प्रत्यक्ष में वर्तमान के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं हैं', लेखक आत्मपरीक्षण करे, तो इस घोषणा की व्यर्थता वह स्वयम् अनुभव कर सकता है।

किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि सामाजिक गतिविधियों का पूरा प्रतिबिम्ब साहित्य में दिखाई देता है। भाषा जितनी अधिक विकसित होगी, सामाज के अधिकांश पहलुओं को वह स्पर्श करती है। किन्तु समाज-जीवन के भाषा द्वारा ही उपेक्षित पहलु उसके साहित्य में भी नहीं उभरते और उतनी मात्रा में वह भाषा असमृद्ध मानी जाती है।

भारतीय भाषाओं की अपूर्णता सर्वाधिक विज्ञान-साहित्य के क्षेत्र में प्रतीत होती है। बीसवीं सदी विज्ञान की सदी कहलाती है और सही कहलाती है। आइन्स्टाइन का सापेक्षतावाद और प्लैन्क-आइन्स्टाइन-बोर का पुंज वाद—दो ऐसे अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बुनियादी सिद्धान्त हैं, जो इस सदी के प्रथम पंद्रह वर्षों में भौतिकी को मिले। अमूर्त गणित की अनेक विधाएं इसी सदी में स्थापित हुईं। इस सदी के उत्तरार्द्ध में बरसों से अनबूझे पड़े गणित के सवाल चुटकियों में हल करने वाले संगणकों का आविष्कार हुआ। आज मानव विश्व का विराट-दर्शन कर सकता है और अणु के अंतरंग का सूक्ष्म-दर्शन भी कर सकता है। जीव-विज्ञान की जड़ माना जाने वाला डी.एन.ए. रेणु वैज्ञानिकों ने कोई तीन सदियों पहले खोज निकाला। विज्ञान की यह वैनतेय-उड़ान थी जो तकनॉलॉजी के रूप म मानव जीवन का अधिक विकास करने में सहायक हुई। साथ ही वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग संहारक शस्त्रास्त्रों के निर्माण में भी किया जाने लगा। फलत: पृथिवी निवासी मानव-अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया। किसी भी पूर्व सदी के किसी भी देश का इतिहास लीजिए, वर्तमान सदी में मानव जीवन तथा सामाजिक परिस्थितियों में जितने परिवर्तन हुए हैं, उतने पहले कभी नहीं हुए थे,यह बात स्पष्ट हो जाएगी। फिर भी हमारी कितनी भाषाओं के साहित्य में विज्ञान के इस प्रभावी आक्रमण का मामूली-सा उल्लेख भी पाया जाता है ? भारतीय भाषाओं में विज्ञान-साहित्य लगभग नहीं के बराबर है।

किन्तु विज्ञान-साहित्य आखिर किसे कहेंगे ? वैज्ञानिक अनुसंधान के निबंधों या किसी उपशाला में विश्व-स्तर पर किए गए अनुसंधानों के प्रतिवेदनों को मैं विज्ञान-साहित्य नहीं मानता। किन्तु किसी वैज्ञानिक आविष्कार की जानकारी जनसाधारण तक पहुंचाने के उद्देश्य से लिखे लेखों को मैं अवश्य विज्ञान-साहित्य मानूंगा। यह काम

विज्ञान-गल्प विधा द्वारा सबसे अच्छा किया जा सकता है। किसी वैज्ञानिक परिकल्पना पर आधारित कहानी या उपन्यास अच्छा विज्ञान-गल्प बन सकता है। गल्प की विधा और शैली में लिखे विज्ञान-साहित्य को भी विज्ञान-गल्प ही माना जाना चाहिए। किन्तु ऐसा विज्ञान गल्प कितनी भारतीय भाषाओं में लिखा जा रहा है ?

लेकिन भारतीय भाषाओं में विज्ञान-गल्प की और चर्चा करने से पहले मैं अँग्रेजी भाषा के ऐसे साहित्य का उदाहरण एक अपवाद के नाते प्रस्तुत करना चाहूंगा। पिछली सदी में विश्व के अनेक देशों ने विज्ञान-युग की आहट पा ली थी। तार, फोन, रेल, औद्योगिक क्रांति इन देशों ने अनुभव की थी। इन्हीं वैज्ञानिक आविष्कारों की पृष्ठभूमि पर आधारित एक पुस्तक 'अस्सी दिनों में पृथिवी की परिक्रमा' ज्यूल्स बर्न ने लिखी। फिर भी उसे यथार्थ में विज्ञान-उपन्यास कहना कहां तक उक्ति है ? उसके उपन्यास में उपरोक्त सभी आविष्कारों का उल्लेख अवश्य आया है। पूर्व की ओर जाते हुए पृथिवी की परिक्रमा दिन और रात मिला कर २४ घण्टों से कम समय में पूरी हो जाती है। आज जेट विमानों में यात्रा करने वालों को इसका अनुभव तुरन्त मिल जाता है। किन्तु समुद्री जहाज में आहिस्ता आहिस्ता प्रवास करते समय इसकी प्रतीति नहीं होती। फलतः समूची पृथिवी-परिक्रमा कर आने वाले के कालखण्ड का एक दिन बच जाता है। इसी वैज्ञानिक हकीकत का ज्यूल्स ने अपने उपन्यास में कुशलतापूर्वक उपयोग कर लिया है। शायद इसीलिए उसे वैज्ञानिक-उपन्यास कहना हो तो कहा जा सकता है।

ज्यूल्स बर्न ने चंद्रमा पर मानव के आक्रमण का जो वर्णन किया है, उसकी दूरदर्शिता का परिचायक है, क्योंकि वह वर्णन अपोलो अभियानों में प्राप्त अनुभवों से काफी समानता रखता है। ज्यूल्स बर्न के बाद एच.जी. वेल्स ने विज्ञान-कथालेखक के नाते काफी नाम कमाया। हाल के जमाने में आर्थर क्लार्क, आइज़क एसीमोव, रे ब्रैडबरी आदि लेखक विज्ञान-गल्प लिख कर अपने पढ़ने वालों को विज्ञान-युग का बहुत ही अच्छा परिचय कराते हैं। दूरदर्शिता का परिचय आधुनिक जमाने के लेखक भी देते हैं। उदाहरण के तौर पर अंतरिक्ष युग प्रारंभ होने से पहले ही आर्थर क्लार्क ने भूस्थिर उपग्रहों की कल्पना प्रस्तुत की थी और संकेत दिया था कि इन उपग्रहों का संचार-माध्यम के नाते उपयोग किया जा सकता है। उसकी वह भविष्यवाणी आज सच साबित हो गई है। 'कृष्ण मेघ' शीर्षक अपने पहले विज्ञान-उपन्यास में प्रो. फ्रेड हायल ने कल्पना प्रस्तुत की थी कि अंतरिक्ष में रेणुओं के बादल हो सकते हैं। सूक्ष्म तरंगों की खगोलिकी के प्रत्यक्ष उपयोग में प्रारंभ होने के पश्चात् लिए गए वेधों ने उनकी कल्पना की प्रतीत दिलाई है।

इस तरह दूरदर्शी होने के लिए वैज्ञानिक या तंत्रविशारद होना भी आवश्यक नहीं होता। ई.एम्. फोर्स्टर साहित्यिक थे, विचारक भी थे, किन्तु विज्ञान के अध्ययनकर्ता नहीं थे। फिर भी उनकी पुस्तक 'पैसेज टु इंडिया' विश्व में लोकप्रिय हो गई। फिर भी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारण और उनके अधिकाधिक उपयोग के फलस्वरूप मानव दिन-प्रतिदिन अधिक यंत्रावलंबी हो जा रहा है, इस बात को उन्होंने देखा था। पाठ साल पहले अपनी 'यंत्र रुकता है' शीर्षक कहानी में उन्होंने उस स्थिति की कल्पना की

थी कि यंत्रों पर हर बात में निर्भर करने वाली मानव सभ्यता का उस यंत्र के बंद होने के कारण कितना बुरा हाल हो सकता है। बिजली बंद होते ही न्युयार्क जैसे अतिविकसित शहर में लोगों की जो दुर्दशा हो गई थी उसका प्रदर्शन देखने पर फोर्स्टर की वह कथा अतिरंजित नहीं लगती।

विज्ञान को रंजक शैली में प्रस्तुत करने का काम भी अँग्रेजी के अनेक लेखकों ने किया। जनसाधारण को विज्ञान का परिचय सरल एवं आसान भाषा में करा देने की प्रथा पिछली सदी में माइकेल फैराडे ने प्रारंभ की। विज्ञान-गल्प लिखने में आइन्स्टाइन, श्रोडिंजर, थाम्पसन, जीन्स, एडिंगटन, हॉयल, वाटसन एण्ड ग्रीक, बॉडी, डाइसन आदि बड़े लेखकों ने कोई अप्रतिष्ठा या हेयता नहीं मानी। साथ ही वाल्टर स्लीवन, नाइजेन केल्डर, जैसे अनेकों ने विज्ञान-पत्रकारिता में नए कीर्तिमान स्थापित किए। विज्ञान सरीखे क्लिष्ट विषय को अखबारों एवं मासिक पत्र-पत्रिकाओं में कैसे लिखा जा सकता है, ऐसी हताशा उन्होंने कभी अपने अंदर आने नहीं दी। 'साइन्टिफिक अमेरिकन' विज्ञान-मासिक पत्रिका में 'गणित के खेल' शीर्षक स्तम्भ मार्टिन गार्डनर ने कई सालों तक चलाया और उसमें ताजगी बनाए रखी।

इस पृष्ठभूमि में सोचें तो हिन्दी भाषा में विज्ञान-साहित्य और उसमें भी विज्ञान गल्प कितना कम है, स्पष्ट हो जाएगा। तुलना में मराठी में विज्ञान गल्प काफी विकसित हो चुका है। विज्ञान-कथाओं के अनेक लेखक मराठी में आज हैं। विज्ञान-गल्प को प्रकाशित करने वाली अनेक पत्र-पत्रिकाएं भी मराठी में हैं। विज्ञान उपन्यास भी काफी लिखे जाने लगे हैं, यद्यपि विज्ञान-कथाओं की तुलना में उनकी संख्या आज भी कम ही है। विज्ञान को रंजक शैली में प्रकाशित करने का सिलसिला अनेक जाने-माने समाचार-पत्रों में भी स्थायी स्तंभ के रूप में प्रारंभ हो गया है। सप्ताह में एक बार विज्ञान-परिशिष्ट निकालने वाले दैनिक समाचारपत्र भी हैं और उनकी संख्या में भी वृद्धि होती जा रही है।

विज्ञान युग की बीसवीं सदी समाप्त होने जा रही है। ऐसे समय भरत की भाषाओं में उपलब्ध उत्तम विज्ञान गल्प को हिंदी में प्रकाशित करने की भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा तैयार की गई योजना प्रशंसनीय है और स्वागतार्ह भी। मराठी में मैंने इस दिशा में काफी पहले विनम्र प्रयास किया है। अब तो मराठी विज्ञान-गल्प काफी विकसित हो चुका है। अतः मराठी की अच्छी विज्ञान-गल्प रचनाओं को हिन्दी में रूपांतरित करने का यह उपक्रम स्वागतार्ह होने के साथ ही आवश्यक भी है। मराठी ही क्यों, अन्य भारतीय भाषाओं में भी यदि मौलिक विज्ञान-गल्प हो, तो उसकी चुनींदा रचनाओं को भी हिन्दी में रूपांतरित किया जाना चाहिए। भारतीय ज्ञानपीठ जैसी मूर्धन्य साहित्यिक संस्था इस दिशा में अग्रसर हो रही है, यह सन्तोष की बात है। मैं तो आशा करता हूं कि यह विज्ञान-गल्प-माला भारतीय. भाषाओं के श्रेष्ठतम विज्ञान-गल्प के आदान-प्रदान का शुभारंभ होगी।

विज्ञान जन-जीवन को अंधश्रद्धाओं से उबारेगा। जीवन को तर्कनिष्ठ बनाएगा। आज जब विज्ञान हमारे समाज-जीवन का अभिन्न अंग बन गया है, उसके प्रति हौआ, दूरियों

का भाव या भय समाज से दूर हो जाना चाहिए। इसके लिए विज्ञान की जानकारी सरल सादी भाषा में लोगों के पास पहुंचाना आवश्यक है। विज्ञान-गल्प ही इसका सर्वोत्तम माध्यम हो सकता है। विज्ञान-गल्प में वह शक्ति है जो विज्ञान की तथाकथित क्लिष्टता एवं अनाकलनीयता बोध को समाप्त करने में काफी बड़ा योगदान कर सकती है।

— जयंत विष्णु नारलीकर

य क्षो प हा र

यक्षोपहार

अखबार 'पेसाडीना हेराल्ड'। दो फरवरी का अंक। विशेष प्रतिनिधि ने समाचार दिया था :

'बेकमन ऑडिटोरियम' वहाँ होने वाली गोष्ठी तथा वक्ताओं के आकर्षण से खचा खच भर गया था। सैकड़ों विद्यार्थियों को तो निराश होकर दरवाज़े से ही लौट जाना पड़ा। गोष्ठी का विषय था : "अतिविकसित जीव-सृष्टि है।" और वक्ता थे, कैलिफ़ोर्निया इन्स्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नॉलॉजी के अभ्यागत प्रोफ़ेसर सर रॉजर आर्मस्ट्रांग तथा लोकप्रिय विज्ञान-कथालेखक बेन थॉमस। इन दोनों हस्तियों से कॅलटेक वाले भली भाँति परिचित थे। विभिन्न अवसरों पर दोनों ने अपने भाषणों से श्रोताओं की विचार-शक्ति को काफ़ी मसाला दिया था। लेकिन कल की युगलबंदी पहली भी थी और अविस्मरणीय भी।

चर्चा रात आठ बजे शुरू हुई। सर रॉजर ने, सबसे पहले स्लॉइड्स द्वारा पृथिवी से परे, फैले विस्तृत विश्व की खगोलशास्त्रीय जानकारी दी। बाद में, वहाँ जीव-सृष्टि के होने की और उसके अतिविकसित होने की संभावना उन्होंने दर्शायी। किन्तु पृथिवी पर मनुष्य के भविष्य के प्रति वे काफ़ी आशावादी नही थे। दुनिया में बढ़ती जनसंख्या, पृथिवी के प्राकृतिक स्रोतों की भयानक बरबादी, (उन्होंने अमरीका को इसके लिए ज़्यादा दोषी बताया), विभिन्न देशों के बीच आपसी झगड़े, समाज में फैलते मनमुटाव आदि का उल्लेख करते हुए सर रॉजर ने कहा : "यदि हम इन बुराइयों पर क़ाबू न पा सके, तो, मैं समझता हूँ कि मानव-संस्कृति दो दशकों तक ही रह पायेगी।" सर रॉजर के इस निराशावाद में बेन थॉमस ने आशा की किरण जगा दी। उन्होंने सर रॉजर के वैज्ञानिक मुद्दों पर अपनी सहमति दर्शाते हुए 'मनुष्य-स्वभाव' पर अपने विचार रखे—"भग्नप्राय अवस्था तक पहुँच कर भी मानव-संस्कृति नष्ट नहीं हुई। उन्हें विश्वास था कि आज भी मौजूदा संकटों से उभर कर मानव-संस्कृति बनी रहेगी। जीव-सृष्टि ने पृथिवी पर बसने की सोची, तो ? मजाक में उन्होंने कहा, "भगवान् करे, हमारी पृथिवी पर किसी की नज़र ही न पड़े।"

श्रोताओं में मौजूद अनेक विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, विद्यार्थी, साहित्यिक प्रश्नों के ज़रिए चर्चा में शामिल हो गये थे। आख़िर रात ग्यारह बजे अध्यक्ष ने कहा, "अब ऑडिटोरियम बंद होने वाला है।" तथा उनके समापन-भाषण से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस समाचार का शीर्षक था, "सावधान ! मानव, सावधान !!"

++ ++ ++

प्रेक्षागृह ख़ाली हो गया था, लेकिन श्रोताओं की चर्चा ख़त्म नहीं हुई थी। उन्हीं में से—विजय सिन्हा और ब्रायन लोगी—बातचीत करते हुए लेक एव्हेन्यू स्थित कांटिनेंटल बर्गर बार जा पहुँचे। ब्रायन कॅलटेक में सीनियर रिसर्च फ़ैलो था तथा खगोल शास्त्र में

अनुसंधान कर रहा था। संशोधन करने एक साल के लिए भारत से आया, विजय कंप्यूटर-विशेषज्ञ था। दोनों ३५-३६ साल के थे और एक ही जैसे स्वभाव के कारण उनमें बनती भी खूब थी।

"मैं तो सर रॉजर की बातों से सहमत हूँ।" हंबर्गर खाते हुए ब्रायन ने बात छेड़ी। "इतिहास गवाह है कि विभिन्न देशों में, वहाँ की मनुष्य संस्कृति के भंडार में अनेक विशेषज्ञों, विचारकों, कवियों तथा दार्शनिकों ने बहुमोल योगदान दिया। लेकिन संस्कृति का भविष्य तय किया निम्न श्रेणी के बहुजन समाज ने। रोमन साम्राज्य का क्या हुआ ? उनके पश्चात् वहाँ बार्बेरियन्स ही आये थे ना ?"

"ठीक है, किन्तु यूरोप का अंत तो नहीं हुआ ना ? आगे चलकर वहाँ नयी संस्कृति का निर्माण हुआ या नहीं ? माइकेल एंजेलो, लिओनार्दो दा विंची जहाँ पैदा हुए वहाँ यह निराशावाद किस लिए ?" विज़य हमेशा आशावादी रहता था।

"मैं मानता हूँ कि चक्रनेमि क्रम सृष्टि का नियम है और वह मनुष्य-संस्कृति पर भी लागू पड़ता है। लेकिन कभी-कभी हम इतने घटिया स्तर तक पहुँच जाते हैं कि वहाँ से उभर पाना नामुमकिन हो जाता है। पृथिवी पर मनुष्य की यही अवस्था होने में देर नहीं है।" ब्रायन बहुत गंभीर हो गया था—"और फिर हमने अपना सर्वनाश नहीं भी किया तो कोई दूसरा कर देगा।"

"कोई दूसरा कौन ?" विजय ने पूछा।

"यह तो मैं भी नहीं जानता !" ब्रायन के चेहरे पर नटखटता छलक रही थी। "मगर कभी-कभी बेन की भाँति लगता है कि किसी परायी 'जीव-सृष्टि' की निगाहें हम पर टिकी हैं। वे किसी ग्रह पर या तारों के बीच के भारी अंतराल में कहीं होंगे। और मौक़ा पाते ही हम पर आक्रमण करके हमारा नामोनिशान मिटा देंगे। आपसी मतभेदों और विवादों को भुलाकर विभिन्न राष्ट्रों को इकट्ठा होना चाहिए। ज़्यादा समय हमारे पास नहीं है।"

"अरे भाई, ख़ूब याद दिलाया ! समय तो आज मेरे पास भी नहीं है।" अपना चीज़—सैंडविच ख़त्म करते हुए विजय बोला। "रात भर जाग कर अपनी रपट पूरी करनी है।"

"कौन-सी रपट ?" बिल उठाते हुए ब्रायन ने पूछा।

"अरे मेरी इन्स्टिट्यूट को नया कंप्यूटर ख़रीदना है। मेरी रपट और सिफ़ारिश पर किसी एक मॉडल का चयन हमारी फ़ैकल्टी करेगी। ७ अप्रैल से नया आर्थिक वर्ष शुरू होगा, सो उससे पहले आर्डर जाना आवश्यक है।"

"पर आज तो दो फ़रवरी है।" ब्रायन ने घड़ी देखी और कहा। उस समय ठीक बारह बजे थे।

"अरे यार, हम भारतीयों की सुस्त गति को तू नहीं जानता। काम ठीक समय पर हो, इसके लिए आज सुबह मेरी रपट हवाई डाक से रवाना होनी आवश्यक है। रात तीन बजे तक मैं अपना काम पूरा करने वाला हूँ।"

"मैं तो चला सोने। तुम अपनी क़लम-घिसाई करते रहो।" घड़ी देखते हुए ब्रायन ने कहा। "तुम्हारी कंप्यूटर ग्रांट मंजूर होने से रही। लगा लो शर्त ! क्यों बेकार अपनी नींद बरबाद करते हो। चलो, सो जाओ।"

"अबे लोगी के बच्चे, शुभ-शुभ बोल—"विजय खुद ही से बोला। लेकिन वह काफ़ी विचार-मग्न था।

++ ++ ++

रपट के सजते-सँवरते रात के तीन बज गए। विजय भी थक गया था। रपट के साथ अपने प्रोफ़ेसर के नाम जाने वाला पत्र बाद में लिखा जाये यह सोचकर उसने साढ़े सात का अलॉर्म लगा दिया। और सोने जा ही रहा था कि अचानक फोन की घंटी बजने लगी। "७९६-८९४७" रिसीवहर उठाते ही विजय बोला। उसने सोचा, कोई ग़लत नंबर होगा।

"क्या आप डॉ. विजय सिन्हा हैं ?"

"हाँ। लेकिन आप कौन हैं ? और भला यह भी कोई वक़्त है फोन करने का ?"

"तकलीफ़ के लिए माफ़ी चाहता हूँ। लेकिन मैं आपकी रपट पूरी होने का इंतज़ार कर रहा था। आप तीन बजे तक उसे पूरा करने वाले थे ना ?"

"लेकिन आपको कैसे पता चला ?" विजय आश्चर्य कर रहा था।

"जब आप डॉ. लोगी के साथ स्नैक्स ले रहे थे तो, बिना किसी ख़ास कोशिश के, मुझे आपकी बातचीत सुनायी दे रही थी। इसलिए सोचा, ठीक समय पर ही फोन किया जाए !"

विजय बोलने वाले के हठ का कमाल अनुभव कर रहा था। उसके बोलने का अंदाज़ अमरीकियों जैसा था लेकिन, विजय को लगा, यह अमरीकी नहीं होगा। मुझ पर नज़र रखने वाला यह कोई जासूस तो नहीं ? गुस्से में विजय ने पूछा :

"अजी, काहे का ठीक समय ? बेसमय फोन करते शर्म नहीं आती आपको ?"

"मैं फिर एक बार माफ़ी चाहता हूँ। लेकिन हालात ही कुछ ऐसे हैं। क्या आप अपनी रपट एक दिन बाद नहीं भेज सकते ? यदि आप ऐसा करें तो बड़ी मेहरबानी होगी। वैसे आपकी भलाई भी इसीमें है !"

"कमाल है ! आप होते कौन हैं मुझे सलाह देने वाले ? रपट का कल ही जाना आवश्यक है।" विजय को नींद तो बहुत आ रही थी। लेकिन समझ नहीं पा रहा था कि यह बातचीत कैसे रोकी जाए। क्योंकि बातचीत करने वाले ने यूं ही मजाक में फोन नहीं किया होगा।

"तीसरी बार फिर आपसे माफ़ी मांगता हूँ। कई बार जोश में रुककर मैं सामान्य प्रथाएँ भी भूल जाता हूँ। वैसे मैं हूँ डॉ. सुलेमान रशीद। मिडिल ईस्टर्न कंप्यूटरर्स कंपनी का एक निर्देशक। मेरा अनुरोध है कि अपनी रपट भेजने से पहले एक बार हमारा कंप्यूटर भी देख लें। आज, जब चाहें मैं आपको कंप्यूटर दिखा सकता हूँ।"

अमरीकी सेल्समैनशिप की ताक़त से विजय परिचित था। विजय के पास भी रशीद की बात काटने का नुस्खा था। उसने अपनी औपचारिक असमर्थता बयान की—

"डॉ. रशीद, आपको ग़लतफ़हमी है। दरअसल कंप्यूटर का चयन मेरे हाथ में नहीं है। हमारी सरकार ग्रांट देने से पहले ही तय कर लेती है कि कौनसी कंपनी से कंप्यूटर लिया जाय। मेरा काम तो सिर्फ़ मॉडल के चयन का होता है।"

"लेकिन, यदि सरकार ग्रांट ही नामंज़ूर कर दे तो? हम अपना कंप्यूटर—चंद शर्तों पर—आपको निःशुल्क दे सकते हैं।" अपना सेल्स-टॉक जारी रखते हुए रशीद ने कहा, "सरकारी योजनाएँ तो बदल भी सकती हैं।"

"उसकी कोई गुंजाइश नहीं। सरकार ग्रांट मंज़ूर कर चुकी है। अब तो सिर्फ़ चेक का इंतज़ार है। शेष सभी औपचारिकताएँ भी पूरी हो चुकी हैं।" विजय सिन्हा दो-टूक बात कहकर सोच रहा था चलो—यह बंदा अब तो बात समझ जायेगा!

"अच्छा, मैं आपको ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता। लेकिन यदि ग्रांट कैंसल होती है तो मुझे याद कीजिएगा? मेरा फोन नंबर लिख लीजिए।"

रशीद की इस बला से छुटकारा पाने के लिए विजय ने उसका नंबर लिख लिया और रिसीवर रख दिया।

थोड़ी ही देर में विजय खुर्राटे भरने लगा।

"कर्र sss कर्र ss ...."

टेलिफोन की घंटी से विजय की नींद खुली तब दस बज चुके थे। "अरे! मैं तो अलार्म लगाना भूल ही गया था। शुक्र है, फोन की वजह से नींद तो खुली।" उसने फोन उठाया।

"डॉ. विजय सिन्हा?" फोन से एक मीठी आवाज़ आयी।

"स्पीकिंग।"

"दिस इज़ वेस्टर्न यूनियन, सर। आय हॅव अ कॉल फॉर यू। मे आय रीड इट आउट?" ऑपरेटर ने पूछा। विजय से संमत्ति मिलते ही उसने संदेश पढ़ना शुरू किया।

"कंप्यूटर ग्रांट कैंन्सल्ड। पोस्टपोन रिपोर्ट। लैटर फॉलोज।"

संदेश, उसके कंप्यूटर सेंटर के प्रमुख प्रोफ़ेसर गुप्ता ने भेजा था।

"डू यू वांट अ कॉपी इन राइटिंग, सर?" ऑपरेटर के सवाल से विजय होश में आया।

"येस प्लीज़। थैंक्स फ़ार कॉलिंग।" जैसे-तैसे उसने जवाब दिया। ऑपरेटर का 'यू आर वेल्कम' वाक्य सुनने से पहले ही विजय ने फोन रख दिया।

कंप्यूटर ग्राण्ट की अस्वीकृति ने उसे निराश कर दिया। पिछले कई महीनों से नये कंप्यूटर पर क्या-क्या प्रयोग करने हैं? उसका कैसा प्रयोग करना है? आदि बारे में बनाये सभी हवाई क़िले ढह गये थे और विचारों पर पानी फिर गया था। यह हताशा उसकी अकेले की नहीं थी। नये कंप्यूटर पर इन्स्टिट्यूट के अन्य ग्रुपों के प्लैन्स भी आधारित थे। इन्स्टिट्यूट की बाल्यावस्था में पुराने कंप्यूटर ने बहुत अच्छा काम दिया था, लेकिन अब वह उसके बस की बात नहीं थी। एक ज़माना था जब वह चुटकियों में

सवाल हल कर देता था, लेकिन अब नये नये कंप्यूटर्स के मुक़ाबले में वह फीका पड़ता जा रहा था। उसके बार-बार ख़राब होने के कारण लोग उसे बैलगाड़ी कहा करते थे। इसलिए सभी नये कंप्यूटर की ओर आस लगाये बैठे थे। लेकिन अब क्या होगा ?

विजय गुमसुम बैठा था। अचानक उसकी नज़र एक चिट्ठी पर गयी। उस पर डॉ. रशीद-७१४-७५६-२१२१ लिखा था।

उस नाम और नंबर को देखते ही विजय को रात की बातचीत याद आ गई। "आपकी कंप्यूटर ग्रांट नामंज़ूर हो जाए तो मुझे फोन कीजिए।" डॉ. रशीद का यह संदेश भी याद आया। क्या रशीद की इस बात का कंप्यूटर की नामंज़ूरी से कोई संबंध हो सकता है ? विचारों के चक्कर में फँसने की बजाय विजय ने रशीद का फोन नंबर मिलाना उचित समझा।

"कौन, डॉ. विजय सिन्हा ना ? मैंने ठीक पहचाना ?" रशीद की आवाज़ आ रही थी। विजय ने उसे कंप्यूटर के नामंज़ूर हो जाने की ख़बर दी।

"चलो, अच्छा ही हुआ। कम से कम, हमें मौक़ा तो मिलेगा।" विजय को लगा रशीद की आवाज़ में आश्चर्य कम और उत्साह अधिक है। उसने आगे कहा—"कहिए, कब आयेंगे आप ? आज आ सकते हैं ? आप जब कहें, तब मैं आपको लेने हाज़िर हो जाऊँगा। हाँ, वहाँ पहुंचने में मुझे एक घंटा लग जायेगा।"

"ठीक है तो आप एक बजे मेरे ऑफिस आ जाइए। मेरा पता लिख लीजिए।"

"मैं ठीक एक बजे पहुँच जाऊँगा। आप चाहें तो ट्रायल के लिए कुछ प्रोग्राम साथ ला सकते हैं। आपके कॅलटेक कंप्यूटर पर जो सवाल एक घंटे में सुलझता होगा हमारे मॉडेल पर एक सेकण्ड में सुलझ सकता है। मैं कोई अतिशयोक्ति नहीं कर रहा—आप खुद आज़मा सकते हैं।" रशीद का सेल्स-टॉक फिर शुरू हो गया था।

++ ++ ++

विजय ने अपने दो तथा ब्रायन लोगी के दो कंप्यूटर प्रोग्राम ट्रायल के लिए साथ लिए। उनमें से एक कॅलटेक कंप्यूटर ने दो घंटों में सुलझाया था। और दूसरा ब्रायन का वह प्रोग्राम था जिसके लिए पचास घंटों की आवश्यकता थी। शेष तीनों प्रोग्रामों के उत्तर विजय के पास थे ही।

रशीद नियत समय पर आ पहुँचा। डील-डौल गोरा किंतु अरबी लग रहा था। उसके पहरावे और बोल-चाल पर अमरीकी छाप थी। लाल मस्टंग में विजय को साथ लेकर रशीद ने गाड़ी शुरू की और साथ ही बातचीत का सिलसिला भी।

"'प्रथम मैं अपना परिचय देता हूँ। अलिफ संतूर, मिडिल ईस्ट की एक छोटी-सी रियासत है। मैं वहीं का हूँ।" विजय को इस रियासत का कोई पता नहीं था। "यद्यपि हमारा देश छोटा-सा, पिछड़ा हुआ है, लेकिन हमारे शेख़ साहब बहुत उदार मतवादी हैं। अपना देश तेज़ी से उन्नति करे, यही उनकी हमेशा इच्छा रहती है। उनके पास इसके लिए अपार तैलजनित संपत्ति भी है। लेकिन वे नहीं चाहते कि इस संपत्ति का व्यय विदेशी तकनालॉजी स्वदेश लाने में हो। अपने देश के विद्यार्थी पढ़-लिखकर स्वदेश लौटें

और उसकी सेवा करें, यही उनकी तमन्ना है। इस कार्य हेतू उन्होंने प्रतिभावान् छात्रों के लिए विशेष छात्रवृत्तियाँ रखी हैं। मैं भी ऐसी ही छात्रवृत्ति पाकर यहाँ आया हूँ।

मेरा रुझान शुरू से ही इलैक्ट्रानिक्स में कंप्यूटर्स की ओर अधिक रहा है। मैंने अपना संशोधन कंप्यूटर्स को अधिक से अधिक गतिशील बनाने और जानकारी समेटने की उसकी क्षमता को वृद्धिगत करने की ओर केन्द्रित किया है। आप आज जो मॉडल देखेंगे,वह मेरे ही परिश्रम का फल है।"

रशीद लगातार बोले जा रहा था। विजय सिर्फ़ सुन रहा था। आख़िर अपनी चुप्पी तोड़ते हुए विजय बोला, "मुझे लगता है कि आपने सुबह जो बात कही, यदि वह सच है, तो निश्चय ही आपने एक अभूतपूर्व खोज की है।"

रशीद थोड़ा-सा मुस्कराया और बोला—"समय आने पर मैं आपके अभिनंदन का स्वीकार करूँगा ही।"

कार फ्री-वे मार्ग को तेज़ी से पार कर रही थी। विजय इस मार्ग से परिचित था। रशीद के, पॅसाडिना फ्री-वे से सॅटा ॲना फ्री-वे की तरफ़ गाड़ी मोड़ने के कुछ ही देर बाद ॲनहाम इलाक़ा शुरू हुआ। लॉस एंजेलिस का यह उपनगर अनेक मनोरंजन उद्यानों के लिए प्रसिद्ध है। जापानीज विलेज, डिस्नी लैंड का मॅटहार्न-पर्वत आदि भाग भी विजय के जाने-पहचाने थे। इसके बाद रशीद ने मुख्य रस्ता छोड़ एक छोटा रास्ता पकड़ लिया। भीड़-भाड़ वाला भाग छूटते ही संतरों के बग़ीचे दिखने लगे।

"एक ज़माने में ऑरेंज-काउंटी संतरों की पैदावार के लिए प्रसिद्ध थी। लेकिन अब उद्योगों, अम्यूज़मेंट-पार्क, कारख़ानों आदि की वजह से संतरों के पेड़ देखने इतनी दूर आना पड़ता है।" रशीद का बोलना जारी था। अंगूर के बगीचे की तरफ़ गाड़ी घुमाते हुए उसने कहा, "हम अपना कामकाज अधिक से अधिक गोपनीय रखना चाहते हैं। वरना अमरीकी कंपनियाँ तो हमारी खोज से पैसा कमाने की ताक में बैठी हैं। इसलिए शेख़ साहब ने इस बग़ीचे में प्रयोगशाला बनाई है ताकि मैं अपना संशोधन कर सकूँ। वैसे देखा जाये तो यह झोनिंग नियमों के ख़िलाफ है, लेकिन हमारे काम में वातावरण दूषित नहीं होता।"

एक आयताकार इमारत के सामने जाकर गाड़ी रुकी। भीतर जाने के लिए कई 'सिक्युरिटी डिवइसेज़' थे। उस सुरक्षा-प्रबंध से रास्ता निकालते हुए रशीद विजय को अपने ऑफ़िस ले आया। "मैं कॉफ़ी बनाता हूँ। तब तक आप अपने प्रोग्राम शुरू करके देखिए", कहकर रशीद विजय को एक दूसरे कमरे में ले गया।

वहाँ कोई कंप्यूटर नहीं था—सिर्फ दो सिरों पर 'इनपुट टर्मिनल' और 'आउटपुट टर्मिनल' लिखा था। और दो-दो बटन थे। इनपुट टर्मिनल का एक बटन दबाते ही वहाँ एक आला तैयार हो गया। विजय के पहले प्रोग्राम के कार्ड रशीद ने वहाँ रखे और दूसरा बटन दबाया जिससे वह आला अपने-आप बंद हो गया। दूसरे ही क्षण एक हरी बत्ती टिम-टिमाने लगी।

"लगता है,आपका प्रोग्राम कंप्यूटर को भा गया है।" रशीद ने कहा।

"तो फिर जवाब कब देगा ?" विजय ने पूछा।

रशीद ने आउटपुट टर्मिनल की ओर इशारा किया। वहाँ एक हरी बत्ती जल रही थी। आऊटपुट टर्मिनल का एक बटन रशीद ने दबाया और शीघ्र ही वहाँ एक आला तैयार हो गया। वहाँ विजय के प्रोग्राम का उत्तर छपकर तैयार था। प्रिंट आउट के काग़ज़ विजय को सौंपते हुए रशीद ने दूसरा बटन दबाया। और वह आला भी बंद हो गया।

"आप अपने अन्य प्रोग्राम चलाकर देखिए, फिर कॉफ़ी पी जाए।"

विजय ने देखा कि प्रिंट आउट पर छपा जवाब बिल्कुल सही था। प्रिंट आउट पर 'टाइम ऑफ़ एक्ज़िक्यूशन' याने जवाब देने में लगने वाला समय देख कर तो विजय हैरान था, विजय का प्रोग्राम केवल .०८२ सेकंड में सुलझ गया था जबकि कॅलटेक ने इसके लिए पूरे ५८ मिनट लिये थे। अर्थात् एक सेकंड के बारहवें हिस्से में ही रशीद के कंप्यूटर ने काम कर दिखाया था। इसका मतलब कंप्यूटर की गति के बारे में रशीद का कहना अतिशयोक्ति नहीं था।

अपना दूसरा और लोगी का पहला प्रोग्राम चलाने पर विजय का यही अनुभव रहा। अंत में उसने लोगी का वह प्रोग्राम लगाया—जिसे सुलझाने के लिए कॅलटेक कंप्यूटर को पूरे पचास घंटों की ज़रूरत थी!

लगभग एक ही मिनट बाद आउटपुट टर्मिनल की हरी बत्ती टिमटिमाने लगी। बटन दबाकर विजय ने प्रिंट आउट निकाला। जवाब सही था या ग़लत, यह तो लोगी ही बता सकता था। लेकिन सवाल का जवाब इस बार सिर्फ़ ५० सेकंड में आया था।

विजय बहुत रोमांचित था। रशीद के ऑफ़िस में घुसते ही उसने कहा, "डॉ. रशीद यू आर अ जीनियस।" क्या मैं आपकी मशीन देख सकता हूँ?

"थैंक्स! मैं माफ़ी चाहूँगा, फ़िलहाल तो मैं आपको मशीन नहीं दिखा सकता। सही समय आते ही मैं अपना यह खिलौना अवश्य दिखाऊँगा।"

"किंतु इतना बहुमूल्य कंप्यूटर आप हमारी इन्स्टिट्यूट को निःशुल्क क्यों देना चाहते हैं?" विजय इसी बात से काफ़ी परेशान था।

"हमारा स्वार्थ कह लीजिए। चलिए, इस संबंध में बात करें।" रशीद, विजय को अपने ऑफ़िस ले आया।

++ ++ ++

कंप्यूटर के मसले पर कुछ महत्त्वपूर्ण फ़ैसले लेने के लिए डायरेक्टर साहब ने इन्स्टिट्यूट की एक ख़ास फ़ैकल्टी मीटिंग बुलवाई थी। सवा ग्यारह बजे सभी फ़ैकल्टी सदस्य उपस्थित हुए और डायरेक्टर ने बोलना शुरू किया :

"सरकारी ग्रांट की नामंज़ूरी के कारण हम सब बहुत निराश है। लेकिन देश की नाज़ुक आर्थिक स्थिति के कारण सभी मजबूर हैं। किंतु तीन दिन पहले एक आशाजनक बात हमारे सामने आयी है। इसीलिए आज की यह मीटिंग बुलायी गयी है। प्रोफेसर गुप्ता आपको इस संदर्भ में विस्तृत जानकारी देंगे।" डायरेक्टर ने प्रो. गुप्ता की ओर देखा।

"आप सबको याद होगा कि, जब ग्रांट मिलने की संभावना थी तब फ़ैकल्टी ने डॉ.

सिन्हा को कंप्यूटर मॉडल के चयन के लिए रिपोर्ट तैयार करने को कहा था।" प्रो. गुप्ता बोले।

"यह कौन डॉ. सिन्हा हैं ?" गणित के प्रोफ़ेसर डॉ. सह्याद्रि ने पूछा।

"डॉ. सिन्हा कंप्यूटिंग ग्रुप में फेलो हैं। एक साल कैलिफ़ोर्निया इन्स्टिट्यूट ऑफ़ टेकनालॉजी में अनुसंधान के लिए गए हैं।" प्रो. गुप्ता ने स्पष्टीकरण दिया। "कंप्यूटर ग्रांट की नामंज़ूरी डॉ. सिन्हा की रिपोर्ट आने से पहले ही पता चल गई थी। उन्हें यह बात मैंने केबल करके बतायी थी। तत्पश्चात् तीन दिन पूर्व डॉ. सिन्हा का एक पत्र प्राप्त हुआ। उन्होंने लिखा है कि एक मिडिल ईस्टर्न रियासत से एक अद्यतन कंप्यूटर हमें चंद शर्तों पर मुफ्त मिल सकता है। रियासत का नाम मैं अभी नहीं बता सकता—बाद में आप जान ही जायेंगे। फिलहाल इतना कहना ही काफी है कि इस संस्थान के और भारत के संबंध बहुत अच्छे हैं। और इसीलिए उनकी इस 'गिफ़्ट' पर सरकार को कोई आपत्ति नहीं होगी।"

डायरेक्टर ने कहा, "मैंने कल ही दिल्ली फोन कर के इस बात की तसल्ली कर ली है। यदि इस कंप्यूटर का उपयोग सरकारी डिफ़ेन्स प्रेजेक्ट के लिए दिन में दो घंटे होता है तो सरकार कोई आपत्ति नहीं उठाएगी।"

"मगर कंप्यूटर देने वालों की क्या शर्तें हैं ? आख़िर इतना बड़ा तोहफ़ा दे रहे हैं, शर्तें तो होंगी ही !" सॉलिड स्टेट फ़िज़िक्स वाले प्रो. वैद्य ने पूछा। किसी भी नए प्रोजेक्ट पर आलोचनात्मक तेवर अपनाने के लिए वे प्रसिद्ध थे।

"कंप्यूटर की सारी ज़िम्मेदारी कंपनी पर होगी। कंप्यूटर इन्स्टिट्यूट के अहाते में ही होगा लेकिन उसके कमरे में हमें प्रवेश नहीं मिलेगा। वहाँ सिर्फ़ कंपनी का स्टाफ़, एक मैनेजर और दो-तीन सहकर्मी जा सकेंगे। कंप्यूटर का उपयोग हमें उन्हीं के ज़रिए करना होगा। यह है पहली शर्त। दूसरी शर्त के मुताबिक कंप्यूटर का इस्तेमाल हम दिन में सिर्फ़ आठ घंटे कर सकेंगे, जिनमें दो घंटे सरकारी काम के लिए होंगे। बचे कुल छह घंटे। सुबह ९ से ११ सरकारी काम, और ११ से ५ हमारा काम। इस तरह समय का आयोजन किया जा सकता है।" प्रो. गुप्ता ने कहा।

"कंप्यूटर का इस्तेमाल सिर्फ़ छह घंटे ?" प्रो. वैद्य बोले, "पुराना कंप्यूटर पूरे २४ घंटे के लिए मिलता था।"

वैद्य साहब खुद कंप्यूटर का प्रयोग नहीं करते थे लेकिन उनकी बात पते की थी। "उस कंपनी को सॉफ़्ट वेअर पर काफ़ी रिसर्च करना है। इसीलिए कंप्यूटर पर उन्हें इतना समय चाहिए। और फिर हमारे पास इस विषय के कई विशेषज्ञ भी हैं। इसी कारण हमारी इन्स्टिट्यूट को कंप्यूटर देने का निर्णय उन्होंने लिया। मुझे लगता है कि इसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं है। अब छह घंटों में यह कंप्यूटर क्या कुछ कर सकता है, इसकी जानकारी प्रो. गुप्ता देंगे।"

"इस कंप्यूटर को छह घंटों तक कार्यरत रखना हमारे बस की बात नहीं है। एक बैलगाड़ी और सुपर सॉनिक जेट के समान ही पुराने और नये कंप्यूटर में अन्तर है।" प्रो.

गुप्ता ने फिर कंप्यूटर की विलक्षण गति का परिचय देने के लिए विजय द्वारा भेजे आँकड़े पढ़ने शुरू किये। उन्हें सुनकर सभी चकित थे।

"मुझे भी ऐसा ही आश्चर्य हुआ था। लेकिन डॉ. सिन्हा की रिपोर्ट पर मुझे पूरा भरोसा है। उन्होंने कुछ प्रोग्राम्स ख़ुद चलाकर भी देखे हैं।" प्रो. गुप्ता का स्वर एकदम शान्त था।

"यदि ऐसा है तो खगोल-शास्त्र के हमारे कई सवाल चुटकियों में सुलझ सकते हैं।" खगोल-शास्त्रज्ञ प्रो. राजदेरकर ने कहा।

"मॉलीक्यूलर बायोलॉजी के हमारे कई सवाल अगली पीढ़ी के अद्यतन कंप्यूटरों पर निर्भर करते हैं। यह कंप्यूटर तो ज़माने से बहुत आगे जा चुका है। लगता है हमारा काम हो जाएगा।" इस विषय के प्रोफ़ेसर अहमद अपनी दाढ़ी सहलाते हुए बोले।

"वैसे तो मैं कभी कंप्यूटर के चक्कर में नहीं पड़ा। लेकिन कंप्यूटर यदि इतना गतिशील है तो नंबर थियरी के कुछ महत्त्वपूर्ण आँकड़ों को खोजने में निश्चित सहायता करेगा।" मितभाषी गणितज्ञ प्रो. लक्ष्मणमूर्ति धीरे से बोले।

" 'फ़ोर कलर प्राब्लम' जैसे मसलों पर भी महत्त्वपूर्ण संशोधन किया जा सकेगा।" प्रो. सह्याद्रि ने कहा।

इस बात पर डायरेक्टर प्रो. गुप्ता की ओर देखकर आँखें मिचका रहे थे। क्योंकि गणितज्ञ आजतक कंप्यूटर को हीन भावना से ही देखते आये थे।

"लेकिन पहली शर्त सरकार को मान्य होगी,ऐसा मुझे नहीं लगता।" प्रो. वैद्य अपनी नापसंदगी का इज़हार करते रहे। "सिक्योरिटी के हिसाब से कंप्यूटर रूम में सरकारी इन्सपेक्शन का होना ज़रूरी है। सरकार से ठीक सलाह किये बिना कोई क़दम उठाना ठीक नहीं होगा।"

"वह काम सरकार का है।" डायरेक्टर ने कहा। "कल ही मैंने गृह तथा विदेश मंत्रालयों से उच्च स्तरीय संपर्क किया और उन्हें दोनों शर्तों की पूर्ण कल्पना दी थी। उस रियासत के शेख़ साहब ने भी कंप्यूटर से संबंधित सारी जानकारी सरकार को दी है। उसीकी बिना पर—यदि इन्स्टिट्यूट को आपत्ति न हो तो—कंप्यूटर लेने की पूरी इजाज़त है।"

"अच्छा, इस शक्तिशाली कंप्यूटर के लिए जगह भी बड़ी ही आवश्यक होगी। अपने ऑफ़िस की कितनी जगह ख़ाली करनी पड़ेगी?" प्रो. वैद्य आख़िरी दम तक शंकाएँ उपस्थित कर रहे थे।

"डॉ. सिन्हा की रिपोर्ट से मुझे लगता है कि तीन ऑफ़िसों की जगह उस कंप्यूटर और उसके साथ काम करने वालों के लिए काफ़ी होगी। हमारा पुराना कंप्यूटर तो इससे पांच गुना जगह ज्यादा घेरता है।"

प्रो. गुप्ता के इस कथन ने प्रो. वैद्य का रहा-सहा विरोध भी समाप्त कर दिया।

नये कंप्यूटर के लिए फ़ैकल्टी की सहमति हासिल कर डायरेक्टर ने मीटिंग बरख़ास्त कर दी।

++ ++ ++

तीन महीनों के बाद इन्स्टिट्यूट में नया कंप्यूटर आ गया। रशीद स्वयं कंप्यूटर-मैनेजर था और उसीके देश के फ़ारुख़, क़ासिम तथा, मंसूर उसके सहायक थे। कंप्यूटर सबसे ऊपरी मंज़िल पर कोने के तीन कमरों में रखा गया था। भीतर का अंतिम कमरा कंप्यूटर का, बीच का रशीद का तथा बाहरी उसके सहयोगियों का था। कंप्यूटर का इस्तेमाल करने वालों का संबंध सिर्फ़ इन तीनों से आता था। कंप्यूटर प्रोग्राम के पंच किये गये कार्ड लेने और उत्तरों के काग़ज़ देने का काम इसी ऑफ़िस में होता था। डायरेक्टर और प्रो. गुप्ता के साथ-साथ डॉ. विजय उन थोड़े वी.आई.पी. में से थे जिनकी रशीद तक पहुँच थी। हाल ही में विजय कॅलटेक से लौटा था और उसे पदोन्नति देकर रीडर बनाया गया था। साथ ही नये कंप्यूटर और इन्स्टिट्यूट के बीच आपसी तालमेल बनाये रखने की जिम्मेदारी भी उसी पर थी रशीद और उसकी दोस्ती गाढ़ी हो गई थी।

इन्स्टिट्यूट वाले नये कंप्यूटर पर फ़िदा थे। कंप्यूटर को छ: घंटे कार्यरत रखना हमारे बस की बात नहीं—यह प्रो. गुप्ता की भविष्यवाणी सच साबित हो रही थी। इन्स्टिट्यूट वाले पुराने कंप्यूटर ऑपरेटर से—"आप प्रोग्राम दीजिए और तीन दिन बाद आइए, शायद आपको उत्तर मिल जाए"—यही सुनते आये थे। लेकिन 'नये कंप्यूटर पर इधर प्रोग्राम दीजिए और उधर जवाब लीजिए', फ़ारुख़ के इस कथन की सत्यता सब लोग बार-बार महसूस कर रहे थे। इधर रशीद और विजय की दोस्ती भी बढ़ती जा रही थी। इन्स्टिट्यूट में सॉफ़्ट वेअर में होने वाले कार्य में रशीद को भी बड़ी दिलचस्पी थी। इस काम का उपयोग वह अपने कंप्यूटर को और अधिक सुधारने के लिए करता था।

कुल मिलाकर स्थिति सन्तोषजनक थी। लेकिन विजय अभी तक कंप्यूटर देख नहीं पाया था। यही बात उसे बहुत खटकती थी। इस संदर्भ में कई बार अपनी उत्सुकता दर्शाने पर भी रशीद हर बार कंप्यूटर दिखाने की बात टाल जाता था। कंप्यूटर की तरफ़ जाने वाला रास्ता हमेशा बंद रहता था। दरवाज़े पर सेफ़ की भाँति डबल कांबिनेशन वाले ताले लगे रहते थे। कंप्यूटर की गोपनीयता शुरू से ही प्रयत्नपूर्वक सँभाली गई थी। उसके विभिन्न यूनिट्स अलग-अलग पैकेट्स में आये थे। ख़ास सरकारी आदेश के कारण कस्टम वालों ने उन्हें हाथ भी नहीं लगाया। इसके पीछे शायद शेख़ साहब का अनुरोध था। कंप्यूटर की स्थापना के लिए इन यूनिटों का एकत्रीकरण भी रशीद ने स्वयं ही किया होगा, और वह भी दरवाज़ा बंद करके।

बंद कमरे में इस तरह शाम के ५ से सुबह के ९ बजे तक रशीद अपना अनुसंधान किया करता था, लेकिन अपने कार्य की थोड़ी भी भनक वह किसी को पड़ने नहीं देता था। ऐसा क्यों ? अपना अनुसंधान कोई चुरा न ले, इसकी सावधानी इसमें थी या इस गोपनीयता का कोई और कारण था ?

कंप्यूटर की स्थापना को एक साल हो चुका था। इस दौरान इन्स्टिट्यूट में हो रहे खोज-कार्य को दुनिया भर में सराहा गया। वहाँ के कंप्यूटर पर काम करके देखने के लिए तथाकथित विकसित राष्ट्रों के विशेषज्ञ भी इन्स्टिट्यूट देखने के बहाने आने लगे। अंत में उनसे पीछा छुड़ाने के लिए डायरेक्टर के अनुज्ञापत्र की पद्धति शुरू करनी पड़ी थी।

इसी बीच इन्स्टिट्यूट में एक दुर्घटना हुई। वहाँ के बगीचे में काम करने वाला सखाराम माली अचानक पागल हो गया। सखाराम सनकी ज़रूर था लेकिन उसे पागलपन का दौरा कभी नहीं पड़ा था। रोज़ की तरह एक दिन वह काम करने आया। वहाँ घास काटते-काटते अचानक उसने काम करना बंद कर दिया और समुद्र की ओर बेतुकी बातें करता हुआ भागने लगा। उसके सहयोगियों का उसकी ओर ध्यान गया और उन्होंने उसे डूबने से बचा लिया, वरना वह समुद्र में छलाँग लगाने ही वाला था। बड़ी मुश्किल से, जैसे-तैसे वे उसे पकड़कर लाये और एक कमरे में बंद कर दिया।

कुछ देरी के बाद उसके पागलपन का दौरा शांत हो गया, लेकिन उसकी याददाश्त चली गई थी। काफ़ी इलाज के बाद भी वह ठीक नहीं हुआ। अंत में उसे पेंशन देकर छुट्टी दे दी गई।

रशीद के ऑफ़िस में विजय बात कर रहा था। तभी इन्स्टिट्यूट के रजिस्ट्रार श्री शब्दे का फोन आया।

"मुझे आपसे बहुत जरूरी और कॉन्फिडेन्शियल बात करनी है। क्या मैं तुरंत आपसे आपके ऑफ़िस में मिल सकता हूँ।"

"अवश्य ! मैं पाँच मिनट में ऑफ़िस पहुँचता हूँ। आप चाहें तो आपके ऑफ़िस में आ जाऊं ?" विजय ने पूछा।

"नहीं ! यहाँ फोन विज़ीटरों से बहुत रुकावटें आती हैं।" शब्दे ने अपना हमेशा का जवाब दिया।

रशीद से विदा लेकर विजय अपने ऑफ़िस पहुँचा। शब्दे उसकी बाहर ही राह देख रहे थे। विजय के ऑफिस में आते ही शब्दे ने पहले दरवाज़ा ठीक से बंद किया। और खिड़की से बाहर कोई सुनने वाला नहीं, इसका यक़ीन होने पर ही वे विजय के सामने आ बैठे।

"कहिए,किस 'षड़यंत्र' की ख़बर लगी है ?" विजय ने मजाक में पूछा।

किंतु शब्दे ने बड़ी गंभीरता से कहा कि "मैंने एक विलक्षण बात सुनी है। यक़ीन ही नहीं होता। अत: सोचा,पहले आपसे कन्सल्ट कर लूँ, बाद में डायरेक्टर को बताया जाये।" विजय की प्रश्नांकित मुद्रा देख शब्दे ने अपनी आवाज़ और भी अधिक कम करते हुए कहा—"आज सुबह मैं हमेशा की तरह बग़ीचे का राउण्ड ले रहा था कि अचानक फोरमैन हरि पवार आया। हरि और सखाराम दोस्त थे। अपने सनकी मिजाज़ के कारण सखाराम की किसी से बनती नहीं थी। सिर्फ़ हरि ही था जो समझा-बुझाकर उससे यथायोग्य काम करवा ही लेता था। अब हरि का कहना है कि सखाराम के पागल हो जाने में ज़रूर कोई राज़ छिपा है। और वह राज़ उसे आज पता चला है। उसने कहा,जिस दिन सखाराम पागल हुआ उससे एक दिन पहले वह बहुत खुश था। हरि ने उससे खुशी का कारण पूछा। पहले तो उसने बड़ी आनाकानी की लेकिन बात उसके पेट में रहती तब ना ! उसीने हरि को बताया कि डॉ. रशीद ने उसे सौ रुपये इनाम दिए थे।"

"इतना बड़ा इनाम भला रशीद ने क्यों दिया ?" विजय ने आश्चर्य से पूछा।

"मैंने भी हरि से यही सवाल किया था," शब्दे बोले। "और ठीक यही सवाल हरि

ने भी सखाराम से किया था। बात हुई कुछ इस तरह : उस दिन सखाराम फ़ारुख़ के कमरे में फूल रखने गया। रशीद का कमरा हमेशा बंद रहता है इसलिए हम वहाँ फूल नहीं रखते। (इन्स्टिट्यूट के ऑफ़िसों को फूलों से सजाने की प्रथा थी।) किंतु उस दिन रशीद का कमरा खुला था। रशीद ने सखाराम को बुलाया और गुलाब के एक गुलदस्ते की माँग की। उसे किसी ख़ास काम के लिए इन फूलों की आवश्यकता थी। सखाराम ने इन्स्टिट्यूट की नर्सरी से गुलाब का गुलदस्ता तैयार किया और रशीद को दे दिया। तब रशीद ने इनाम के रूप में एक नोट सखाराम के हाथ में रखा। सखाराम ने सोचा, एक रुपए का नोट होगा, किंतु जब सौ रुपए का नोट देखा तो उसने रशीद को बताया। "दिया हुआ इनाम मैं वापस नहीं लेता" कहकर रशीद ने उसे भेज दिया।

पता नहीं क्यों, पर हरि को बार-बार लग रहा था कि इस घटना का सखाराम के पागल होने से कोई संबंध ज़रूर है। इसलिए फ़ारुख़ के कमरे में फूल रखने का काम वह ख़ुद करने लगा, ताकि किसी दिन रशीद से मुलाक़ात होगी और कोई जानकारी हाथ आयेगी। आज उसी आशा की पूर्ति हुई। रशीद आज सुबह उसे मिला था और उसने वैसे ही पुष्प-गुच्छ की माँग की। हरि तुरंत गुच्छा लेकर पहुँचा पर रशीद वहाँ नहीं था। और कमरे का दरवाज़ा खुला था।"

"तो उसने अंदर क्या देखा ?" विजय की उत्सुकता बेक़ाबू हो गयी थी।

"अचरज की बात तो यही है कि वहाँ एक छोटे से टेबल पर किसी पोर्टेबल टाइपराइटर की मशीन से बड़ी कोई चीज़ है ही नहीं। हरि कहता है, पूरा कमरा ख़ाली था। कंप्यूटर कॉन्सॉल, टेप यूनिट्स, मेमोरी स्टोरेज यूनिट्स इत्यादि कुछ भी नहीं था। हरि के अंदर झाँकने के एक मिनट बाद ही रशीद वहाँ पहुँच गयाँ। उसने फ़ौरन कमरा बंद कर दिया, फूल लिये और उसको भेज दिया इस बार बिना किसी इनाम के।

हरि को शक है कि वहाँ कंप्यूटर वग़ैरा कुछ है ही नहीं। सब एक फ़रेब है। उसे तो यक़ीन है कि रशीद ने जादू-टोना करके ही सखाराम को पागल बना दिया।

उसकी बातें सुनकर रशीद के प्रति मेरे मन में भारी शक पैदा हो गया है। हरि के कथनानुसार यदि वहाँ कंप्यूटर है ही नहीं, तो इन्स्टिट्यूट वालों के साथ यह धोखाधड़ी है। लेकिन कंप्यूटर के बिना सवाल सुलझते कैसे हैं ? इसमें उसका क्या उद्देश्य है ? हरि के मुताबिक क्या वह कोई जादूगर है या कोई जासूस ? मेरा तो दिमाग़ काम ही नहीं कर रहा। इसलिए सोचा, पहले आप की राय ली जाए।"

"वाक़ई, है तो बड़ी विचित्र घटना।" विजय ने कहा "हरि कहाँ होगा ?"

"वह खाना खाने कैण्टीन गया है। आप चाहें तो उसे बुलाकर उससे दुबारा पूछा जा सकता है।" रजिस्ट्रार ने हरि को बुलवाने रिसीवर उठाया।

दस मिनट बाद हरि हाज़िर हुआ। शब्दे साहब ने हरि से सुबह का सारा वाक़्या बताने का अनुरोध किया। हरि की मुद्रा प्रश्नांकित थी।

"कौनसा वाक़्या, साहब ?"

"सखाराम के बारे में ! अरे, तुम आज रशीद साहब से मिले थे ना ?"

"जी नहीं साहब ! मैं तो रोज़ की तरह फ़ारुख़ साहब के कमरे में फूल रख कर

वापिस आ गया। रशीद साहब तो मुझे मले ही नहीं।"

शब्दे ने हरि से तरह तरह से सवाल किए और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि या तो वह घटना घटी ही नहीं, या हरि सब भुला बैठा है।

++ ++ ++

हाथ मलते हुए शब्दे चले गए, किन्तु विजय सिन्हा वहीं बैठा रहा। शब्दे द्वारा बतलाए गए हादसे की पुष्टि संभव नहीं थी। विजय जानता था कि भारी दबाव में गवाह कोर्ट में अपने बयान बदल देते हैं। किन्तु हरि पवार की बोल-चाल से तो क़तई नहीं लगता था कि रशीद ने उसपर कोई दबाव डाला हो। ऐसा सन्देह करने के लिए भी गुंजाइश नहीं थी। हरि झूठ बोल रहा होता तो शब्दे-जैसा अनुभवी अधिकारी तुरंत भाँप जाता। तो फिर माजरा आख़िर क्या था ?

रशीद के बारे में विजय के मन में तरह-तरह की आशंकाएँ उठने लगीं। कहीं वह किसी शत्रु राष्ट्र का (या सतही मित्रता जताने वाले राष्ट्र का) जासूस तो नहीं ? लेकिन तब वह बिना कम्प्यूटर की सहायता के प्रश्न हल कैसे कर देता है ? रशीद का 'कम्प्यूटर' प्रश्न सही-सही और फटाफट हल कर देता है, इसकी दुहाई देने वाले कई लोग थे। इतना उच्च कोटि का कम्प्यूटर भला एक छोटे से टाइपराइटर के आकार का कैसे होसकता है ? शायद कभी नहीं। संभव है कि हरि ने ही ठीक से देखा न हो।

विजय के मन में एक बार कम्प्यूटर वाले कमरे में जाकर स्वयं अपनी आँखों से मामला देख आने की प्रबल इच्छा जागी। उसने तय किया कि रशीद स्वयं कम्प्यूटर दिखाने के लिए तैयार नहीं होता है, तो उसे बताये बिना ही उसके कमरे में घुसा जाये। इसके लिए देखना होगा कि कब रशीद और फ़ारुख़ दोनों कम्प्यूटर के पास नहीं होते। तभी विजय को याद आया कि शीघ्र ही ऐसा मौक़ा आने वाला है।

अगले सप्ताह शेख़साहब बम्बई पधारने वाले थे। रशीद और उसके सहयोगी दो दिन उन्हींकी सेवा में रहने जा रहे थे। कम्प्यूटर की स्थापना के बाद यह पहला मौक़ा होगा जब वह बंद रहने वाला था और उसके चालक भी उससे दूर रहने वाले थे।

शेख़साहब के आगमन की विजय बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था। शेख़साहब के सम्मान में बम्बई में कई कार्यक्रमों तथा दावतों आदि का आयोजन किया गया था। विजय उन सभी में आमन्त्रित था। लेकिन कोई-न-कोई बहाना बनाकर वह वहाँ जाना टाल रहा था। उसने तय कर लिया था कि जिस दिन शेख़साहब स्वयं दावत देंगे, उसी दिन कम्प्यूटर वाले कमरे में घुसा जाये। उस दिन दोपहर में उसकी रशीद से भेंट हुई।

"विजय, आ रहे हो न हमारी दावत में ? रात दो बजे तक चलती रहेगी वह। अरबों के भोजन-समारोह आराम से चलते रहते हैं।"

"नहीं भाई। यूं तो न आने का कारण मैंने सिर-दर्द बता दिया है, लेकिन बात असल में यह है कि मुझे देर रात तक चलने वाली पार्टियाँ पसंद नहीं। रात दस बजे ही सो जाने की ठानी है। बुरा न मानना यार। इन्स्टिट्यूट के बिग शाट्स तो आयेंगे ही।"

"सच पूछो तो, मुझे भी ऐसे समारोह रास नहीं आते। किन्तु क्या किया जाये, मजबूरी जो है। फिर शेख़साहब के मुझपर बहुत ऐहसान भी हैं, उन्हें कैसे भुला सकता हूँ ? नहीं भुला सकता।"

कह कर रशीद चला गया।

++ ++ ++

"रशीदसाहब के कमरे में एक ज़रूरी सन्देश रखना है, ज़रा चाबी तो देना उनके कमरे की," विजय ने सुरक्षा अधिकारी से रात ग्यारह बजे कहा। विजय का रशीद के कमरे में आना जाना हमेशा चलता ही रहता था और वैसे भी वह इन्स्टिट्यूट का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुका था। इसलिए चाबी प्राप्त करने में उसे कोई दिक़्क़त नहीं आयी।

उसे चाबी थमाते हुए सुरक्षा अधिकारी ने कहा—"साहब, चाबी तुरंत ला दीजिएगा। दरअसल मुझे स्वयं ही कमरा खोल देना चाहिए था।"

"अरे, इतने ऊपर आने की तकलीफ़ तुम क्यों उठाते हो ? मैं बस अभी गया और आया। चाबी की चिन्ता मत करो। फ़ौरन लौटा दूँगा। फिर अब तो नाइट शिफ़्ट भी शुरू हो गई है, सो तुम्हारा यहीं रहना अधिक आवश्यक है।"

चाबी लेकर विजय लिफ़्ट की ओर लपका और पाँच मिनट बाद नीचे आकर उसने चाबी सुरक्षा अधिकारी को लौटा दी। किन्तु ऐसा करते समय उसने रशीद का कमरा खुला रख लिया था।

मुख्य काम तो अब कहीं शुरू होने वाला था, क्योकि कम्प्यूटर के कमरे का मज़बूत दरवाज़ा तो बंद ही था। वह जानता था कि वहाँ कांबिनेशन्स वाला ताला है। दरवाज़े पर लगे दो चक्राकार ताले उस कमरे के समर्थ रक्षक थे।

विजय ने पहला चक्र देखा। वहाँ एक के पीछे एक दस चक्र थे। हर चक्र पर ० से ९ तक अंक थे और उस पर एक पॉइंटर था। विजय ने सोचा कि प्रत्येक चक्र के सही अंक पर पॉइंटर के आने से ताला खुलता होगा। लेकिन सही अंक है कौन सा ? उत्तर पता न हो तो १० × १० .... × १० (दस बार दस से गुनना पड़ेगा) याने १० अरब कांबिनेशन्स चलाने पड़ते। इसका मतलब एक सेकंड में एक कांबिनेशन भी चलाया जाये तो भी तीन साल लग जाते। विजय ने सोचा, क्यों न कोई अंदाज़ आज़माया जाए। और उसने अगले चक्रों पर ग़ौर किया।

पहले चक्र पर ३ अंक अन्य अंकों के मुक़ाबले थोड़ा फीका नज़र आया। इसी प्रकार, उससे अगले चक्र पर १ और उसके अगले चक्र पर ४ अंक अस्पष्ट थे। इससे अगले चक्र का अंक विजय नहीं पढ़ सका।

३ १ ४ ....

यह अंक कहाँ देखे हैं ? तभी विजय को याद आया कि गणित में एक अत्यंत उपयोगी अंक है जो किसी भी चक्र की परिधि और व्यास का अनुपात होता है। इस अनुपात को ग्रीक अक्षर π से संबोधित किया जाता है। उसे कुछ-कुछ याद आ रहा

था—π = ३.१४१५९ ......

क्या पहले कांबिनेशन के अंकों में π के मूल्य के पहले दस अंक होंगे ? लेकिन विजय को दशांश के बाद सिर्फ़ पाँच ही अंक याद आ रहे थे। और चार अंकों की ज़रूरत थी।

विजय दौड़कर अपना कॅलक्यूलेटर ले आया और उसके π का बटन दबाते ही यह अंक सामने आए : ३.१४१५९२६५३

उसके मशीन में दशांक से आगे १९ अंक आने की व्यवस्था थी। चूँकि विजय ने केवल नौ अंक ही माँगे थे इसलिए बाक़ी अंकों के स्थान पर शून्य आये थे। उन दस अंकों पर पॉइंटर घुमाते ही तालों में से कर्रऽऽ आवाज़ के बाद क्लिक की आवाज़ आयी।

विजय उत्सुकता से दूसरे ताले की ओर लपका। पहले ताले की भाँति उसें पहले तीन अंक :

अस्पष्ट नज़र आए और उसका चेहरा खिल उठा। वह इन्हीं अंकों की अपेक्षा कर रहा था। क्योंकि π की तरह गणित का दूसरा महत्त्वपूर्ण अंक 'e' था। अपने जेबी कॅलक्यूलेटर पर 'e' बटन दबाते ही उत्तर आया :

२.७१८२८१८२८

इन दस अंकों के चुनते ही दूसरा ताला भी खुल गया और दरवाज़ा भी, वो भी बिना किसी आवाज़ के।

तब रात के बारह बजे थे।

++ ++ ++

विजय ने बत्ती जलायी। कंप्यूटर रूम में कोई खिड़की नहीं थी, इसलिए अंदर कोई है इसका बाहर से पता भी नहीं चल सकता था। जैसा कि हरि ने बताया था, टाइपराइटर जैसा एक यूनिट ही कमरे में दिखायी दे रहा था। दरवाज़े के पीछे बने शेल्फ़ में माइक्रोस्कोप जैसा एक यंत्र था—और एक बक्सा भी। इस बक्से के पास ही डायरीनुमा लाल किताब पड़ी थी। अंदर झाँकते समय हरि को ये चीजें नहीं दिखायी दी थीं।

टाइपराइटर जैसा यूनिट बिजली से संचालित था। उसमें से गूंऽऽ आवाज़ आ रही थी। काँच के कवर में से लाइट फ़्लैश हो रहे थे। विजय ने सोचा यही होगा कंप्यूटर। विजय को कल्पना भी नहीं थी कि इतना शक्तिशाली कंप्यूटर आकार में इतना छोटा होगा। कुछ देर सोचने के बाद उसे लगा कि यह कोई कल्पनातीत बात नहीं है।

उसे कंप्यूटर वंश के मुख्य पुरुषों की याद आई। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् वे अवतरित हुए थे। उनके यूनिट्स बहुत बड़े हुआ करते थे। अनगिनत तारों से जुड़े वे कंप्यूटर कई कमरों तक फैले होते थे। आज की तुलना में उनकी गति और स्मरण शक्ति भी बहुत सीमित थी। लेकिन फिर भी इस निर्मिति से ही एक नया युग शुरू हुआ था। जैसे-जैसे संशोधन होते गए, कंप्यूटर का आकार छोटा होता गया, उसकी गति, स्मरणशक्ति तथा संग्रह शक्ति विस्तृत होती गई। उसका पॉकेट कंप्यूटर ऐसे ही अनुसंधान की मिसाल थी। उसका कंप्यूटर हथेली जितना था लेकिन जानकारी बेशुमार

देता था। जब प्रथम बार उसका इस्तेमाल, किया तो उसके मुख से शब्द निकले "करमध्ये सरस्वती !"

ट्रांजिस्टरों की बदौलत यह संभव हुआ है। इसके बाद का चरण क्या होगा ? और उसके बाद ? रशीद का कंप्यूटर इस बात का द्योतक था कि इंसान ने उपलब्धियों की बहुत लंबी दूरी तय कर ली है। "न जाने कौन-सा मंत्र मिला है पट्ठे को !" विजय को ईर्ष्या होने लगी थी। किंतु कंप्यूटर वंश की क्या सीमा होगी ? विजय ने रघुवंश पढ़ा था। उसे लगा कि रघुवंश की ही तरह दिलीप, रघु और अज के बाद, आज हम कंप्यूटर वंश में राम अवतार देख रहे हैं।

कवि-कल्पनाओं का वह समय नहीं था। कंप्यूटर का बक्सा खोलने के लिए कुछ नज़र नहीं आ रहा था। विजय ने दूसरी बातों की तरफ़ ध्यान केंद्रित किया।

उसे एक माइक्रोस्कोप दिखायी दिया जो उसने पहले कभी देखा नहीं था। उसके आई-पीस से झाँकने पर एक इलैक्ट्रिक सर्किट दिखायी दिया। सर्किट की रचना बहुत ही गूढ़ और अपरिचित थी। उसकी सूक्ष्मता को देख विजय हैरान था। इतने सूक्ष्म सर्किट बनाने की तकनीक किसी भी देश के पास नहीं थी। विजय ने अनुमान किया कि रशीद का कंप्यूटर इसी नयी तकनीक पर आधारित होगा। माइक्रोस्कोप के पास ही एक बंद बक्सा था। विजय उसे खोल नहीं सका। आख़िर वह उस लाल डायरी की तरफ़ बढ़ा।

यह डायरी चालू वर्ष की ही थी और उसमें अगले महीने के पन्नों पर कुछ बातें दर्ज की हुई थीं। उन्हें देख विजय को और भी आश्चर्य हुआ, क्योंकि हर तिथि के आगे बंबई की प्रमुख सार्वजनिक घटनाओं का उल्लेख था। हर समारोह का स्थल, समय, अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, वक्ता इत्यादि बातें उनकी उपलब्धतानुसार लिखी थीं। उनमें कुछ नामों के आगे पाँच क्रॉस के निशान थे, कुछ के आगे चर और कुछ के आगे एक, दो और तीन निशान अंकित थे। इन नामों का वर्गीकरण बतौर वी.आई.पी. किया गया होगा, क्योंकि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के ही आगे पाँच निशान थे।

यह ज़रूर कोई राजनीतिक चाल होगी। लेकिन विजय का यह शक वर्गीकृत सूची में राजनीतिज्ञों के अलावा लेखकों, शास्त्रज्ञों, डॉक्टरों, वकीलों आदि के नाम देखकर दूर हो गया। कहीं इनको ख़त्म करके समाज को किंकर्तव्यविमूढ़ करने का तो इरादा नहीं था। किंतु विजय की यह शंका भी दूर हो गयी, क्योंकि जिन तिथियों के आगे इन व्यक्तियों के नाम थे वे समारोह निर्विघ्न सम्पन्न हो चुके थे। आख़िर यहाँ क्या पक रहा है ?

विजय को और अधिक तर्क करने का मौक़ा ही नहीं मिला। 'क्लिक' आवाज़ आयी, चौंक कर देखा तो दरवाज़ा बंद हो गया था और रशीद सामने खड़ा था।

++ ++ ++

"अरे, तुम इतनी जल्दी वापस आ गए ? मैंने तो सोचा था, तुम्हें आने में कम-से कम दो बज ही जायेंगे।" अपनी आवाज़ प्रयत्नपूर्वक सहज रखते हुए विजय ने कहा। विजय इस चिंता में था कि रशीद इस चोरी की क्या सज़ा देगा।

बिना कुछ बोले रशीद मॉइक्रोस्कोप के पास रखे बॅक्से के पास गया। उसे खोलकर देख और फिर बंद कर दिया। मुस्कराते हुए विजय के पास आया। इस मुस्कान के पीछे कोई घोखा तो नहीं होगा—विजय सतर्क था।

"यहाँ तक पहुँचने के लिए पहले मेरी ओर से बघाई" विजय से शेक हैंड करते हुए रशीद ने कहा। "दरवाज़े के कॉबिनेशन्स ऐसे थे कि गणित सीखा हुआ चोर ही समझ सकेगा। तुमने वह खोज निकाली, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। और हाँ, मैं भी यहाँ अचानक नहीं पहुँचा।

"तो मैं आज यहाँ आने वाला हूँ, तुम यह जानते थे ?" विजय समझ गया था कि वह रशीद के बिछाये जाल में फँस गया है।

नहीं, तुम आज ही आओगे, यह तो मुझे मालूम नहीं था। किन्तु मुझे यक़ीन था कि जिज्ञासा तुम्हें शीघ्र ही यहाँ खींच लायेगी। इसलिए मैंने ऐसा प्रबंध कर रखा था कि मेरे अलावा किसी और के इस कमरे में घुसते ही मुझे रिमोट कण्ट्रोल ट्रसमिशन् से पता चल जायेगा। किसी जौहरी की दुकान फोड़ी जाते ही पुलिस को उसकी ख़बर करने वाली तकनीक है यह, किन्तु काफ़ी सुधरी हुई है।" रशीद अब भी मुस्करा रहा था।

"अच्छा, यह तो बताओ, मुझे क्या सज़ा देने का इरादा है तुम्हारा ?" विजय ने पूछा। रहस्यकथाओं में खलनायक बड़ी निर्ममता से नायक का सफ़ाया कैसे कर देते हैं, विजय को याद आरहा था। कुछ वैसी ही आशंका विजय के मन में खड़ी हुई थी। रशीद उसके मन की बेचैनी को ताड़ गया था। उसने कहा—

"घबराओ मत, मैं तुम्हें कोई क्रूर दण्ड नहीं दूंगा। समय आने पर तुम्हें पता चल ही जायेगा। मेरे कामकाज के स्तर में जान लेना या यातनाएँ देना जैसी क्रूरता दिखाने की कोई गुंजाइश नहीं होती।"

"तो क्या पागल बनाने या स्मरणशक्ति का नाश कर डालने की होती है ?" विजय पूछना तो चाहता था, किन्तु अपने मन ही मन में बुदबुदा कर रह गया। प्रत्यक्ष में उसने पूछा—

"अच्छा तो क्या मेरी जिज्ञासा बुझाने वाले जवाब दोगे मेरे प्रश्नों के ? पहले यह बताओ कि आखिर तुम्ह्लारा काम है क्या ? तुम कोई सीधे-सादे शोघ-कार्य करने वाले वैज्ञानिक तो हो नहीं। उस लाल डायरी से लगता है, तुम किसी देश के जासूस हो। क्या यह सच है ? किसके ? फिर यह भी बताओ कि इस अति उच्च कोटि के काम्प्यूटर का उपयोग वास्तव में तुम किस काम के लिए कर रहे हो ? हमारे प्रोग्राम तो वह चुटकियों में सुलझा देता है। मुझे नहीं लगता कि इतने साधारण काम के लिए उसका निर्माण किया गया होगा।"

"तुम्हारे सभी सवालों का, और इसके आगे भी तुम जो पूछना चाहो, उन सबका उत्तर देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु पहले मेरी बात सुनो और उसके बाद जो भी पूछना चाहो, अवश्य पूछो।" यह कह कर रशीद ने विजय को उस माइक्रोस्कोप में देखने को कहा। और बोला "तुम्हे जो यूनिट दिखाई दे रहा है वह मुश्किल से एक मायक्रॉन के बराबर का होगा ! (१०,००० मायक्रॉन याने एक सेंटीमीटर)

"!!" विजय चकित था। इतना पेचीदा यूनिट और इतना छोटा ? किंतु रशीद की मुद्रा से इसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं लग रही थी। उसने अपना बोलना जारी रखा—

"भारत ही नहीं, बल्कि इलेक्ट्रॉनिक्स में अपने आपको सबसे आगे समझने वाले देशों के लिए भी यह टेक्नॉलाजी बिल्कुल नई है। टेबल कंप्यूटर इस बेहतरीन तकनीक का नतीजा है। तुम्हारा उपजाऊ दिमाग यह बात जान ही गया होगा ! पर यकीन मानो, माइक्रोस्कोप के नीचे का यूनिट तैयार करने के लिए मुझे पूरा एक साल लग गया। जब से कंप्यूटर बंबई आया है मैं उसे परफेक्ट बनाने में जुटा हूं। यह यूनिट, कंप्यूटर की सहायता से मानव मस्तिष्क का काम कर सकता है। यही नहीं कई बार मानव-मस्तिष्क से भी अधिक श्रेष्ठ साबित होता है।

"इसका मतलब ब्रेन-वॉशिंग का यह बेहतरीन तरीका है।" विजय को अचानक यह कल्पना सूझी। उसने पूछा, "यह बताओ, क्या तुमने सखाराम माली पर इस यूनिट का प्रयोग किया था ?"

रशीद थोड़ा दुखी नजर आ रहा था। "हाँ ! यह यूनिट उस समय प्रयोगात्मक अवस्था में था। मेरी छोटी-सी भूल के कारण बिचारे सखाराम का मगज तो बेकार हो ही गया, लेकिन साथ वह यूनिट भी बिगड़ गया। लेकिन उसके शरीर में नया यूनिट बिठाकर मैं उसे पूर्ववत् कर सकूँगा।"

विजय ने पूछा—"तुम्हारा यूनिट परफेक्ट है, इसका क्या सबूत है ?"

"हरि पवार अपना अनुभव भूल गया था या नहीं ? वह शब्दे से मिलने से पहले ही मुझे उसकी स्मृतियाँ मिटा देनी चाहिए थीं—ताकि यह प्रकरण तुम तक पहुँच ही न पाता। बेचारे शब्दे ! हर तरह से हरि को पूछते रहे। लेकिन .....।" रशीद हँसते-हँसते बोला।

"याने तुमने सब-कुछ सुन लिया ?" और विजय को अपने ही सवाल पर हँसी आ गई। मैं भी कितना बावला हूँ, इलैक्ट्रॉनिक्स के इस सुपर ऐक्सपर्ट के लिए हमारा कमरा 'बग' करना बाएँ हाथ का खेल था।

"हाँ—सुना ही नहीं, देखा भी !" रशीद बोला। "हरि पर वह प्रोटोटाइप यूनिट बिठाने के बाद मैंने वैसे ही हजारों यूनिट्स बनाए हैं। उस बक्से में वे ही यूनिट्स रखे हैं।"

"और उनका प्रयोग किस पर करोगे ?" विजय ने सोचा, डायरी की सूची का इससे कुछ-न-कुछ संबंध अवश्य होगा।

उसकी नज़र डायरी पर टिकी देख रशीद ने कहा "तेरी अंदाज़ सही है। बंबई के ऊँचे पद वालों पर पहला प्रयोग होगा। बात इस तरह है। किसी भी देश पर अपना प्रभुत्व प्रस्थापित करने के लिए अक्सर शक्ति का प्रयोग होता है। किंतु उससे एक तो भीषण प्राणहानि होती है और दूसरे आज-कल के औजारों से प्रदूषण भी होता है। नतीजा, विजयी राष्ट्र भी इस जीते हुए प्रदेश पर राज्य नहीं कर सकता। इसलिए हमने ब्रेन-वाशिंग जैसा अलग मार्ग ढूँढ निकाला है और उस पर अमल करने की योजना भी मेरे पास तैयार है।"

विजय कुछ पूछना चाहता था, लेकिन उसे रुकने का इशारा करते हुए रशीद ने अपनी बात जारी रखी :

"तुम्हारी गीता में कहा है न: 'यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।' हर इंसान में विचार करने वाला यंत्र होता है उसका मगज़। लेकिन वह उसका पूरा उपयोग नहीं करता। उसकी ज्यादातर गति-विधियाँ 'कॉपी' की शक्ल में ही होती हैं। सामाजिक गति विधियाँ इसी कारण सुचारु रूप से चलती रहती हैं, इसलिए यह बात दुर्लक्षित रहती है। अक्सर मंचों, रेडियो, टेलिविज़न और क़लम के ज़रिए किसी ख़ास विषय पर जनमत तैयार किया जाता है। मैं इसीलिए मंचों से प्रारंभ करने वाला हूँ। दरअसल यहाँ पहुँचना आसान काम है। वैसे भी आप भारतीयों को भाषण देने और सुनने का बड़ा शौक़ है। ज़रा सोचो, आज 'अ' का भाषण है। 'ब' अध्यक्ष, 'क' आयोजक और 'द' स्वागत करने वाला है। इसके अलावा समापन भाषण देने वाला एक तो मुख्य अतिथि कोई दूसरा ... इस तरह कम से पाँच-छह लोग मंच पर होते ही हैं। फिर हरएक को कुछ न कुछ बोलना ही होता है। 'अ' बेचारा अपनी बारी की प्रतीक्षा करता रहता है।"

विजय की आँखों के सामने टी.वी. की एक ही ढाँचे की ख़बर आई। 'आज फलाँ हॉल में फलाँ फलाँ परिषद आयोजित की गई थी। उसका उद्घाटन .... ने किया .... मुख्य अतिथि थे ....' एक के बाद एक ऐसे ही समाचारों से विजय प्रारंभ में ख़ूब झल्लाया करता था। लेकिन बाद में उसने टी.वी. समाचार देखने ही बंद कर दिए।

"आपके इन मंचों पर आमंत्रितों पर मेरे मगज वाले यूनिट्स चढ़ाना एकदम आसान काम है। मालाएँ पहनाकर, पुष्प-गुच्छ देकर उनका स्वागत करने की अच्छी परंपरा है। किंतु यह प्रोग्राम कुछ ज्यादा ही खिंचा जाता है। प्रत्येक संबंधित संस्था माला या पुष्प-गुच्छ देने की होड़ में होती है। मौक़ा न मिले तो झगड़ा शुरू। माला पहनाते समय या गुच्छा देते समय मैं अपना यूनिट उन पर चढ़ा सकता हूँ। तत्पश्चात् वे सब मेरे हाथ की कठपुतली बन जायेंगे और मैं जैसा चाहूँ वैसा जनमत तैयार कर सकता हूँ।

"आपके देश में सामर्थ्य है, आत्मविश्वास है ... लेकिन छिपा हुआ या सुप्तावस्था में है। विदेशी आक्रमण के समय आप सब एक हो जाते हैं और आक्रमण का ख़तरा टलते ही आपस में झगड़ने लगते हैं। इसलिए बिना आक्रमण के आप लोगों में प्रविष्ट होना है। मेरी स्कीम का उपयोग आपको अँधेरे में रखना है और नामर्द बना कर आपके आत्मविश्वास को मिटाना है। इतना कि आप हमारी तरफ आँख लगाए बैठे रहेंगे। हमारे इस आक्रमण की शुरूआत आपके देश से शुरू होते ही दुनिया भर में फैल जाएगी। यह सब बहुत ही धीमी गति से होगी, शायद पचास-सौ साल भी लग जाएँ—लेकिन हमें भी कोई जल्दी नहीं है। तुम मानवों पर पूर्ण प्रभुत्व पाकर पृथ्वी का उच्चाटन करने में यदि दो सदियाँ लग जाएँ तो भी कोई हर्ज़ नहीं है। हमारे लिए यह कोई बहुत बड़ी कालावधि नहीं है।" रशीद हमेशा की तरह बिल्कुल शांत स्वर में सब बता रहा था। उसकी आँखों में जरा भी उन्माद नहीं था।

"हम मानव ! तो क्या तुम अपने आपको भगवान समझते हो ?" उपहास-भरी विजय की बात का रशीद ने एकदम अनपेक्षित उत्तर दिया :

"तुम्हारी कल्पना वाला भगवान मैं नहीं हूँ। किंतु मैं मानव भी नहीं, और न ही इस पृथ्वी का हूँ !"

++ ++ ++

रशीद के इस कथन से विजय को आश्चर्य तो हुआ लेकिन 'धक्का' नहीं लगा; क्योंकि रशीद की बातें सुनकर वह वैसे ही सुन्न हो गया था। उसे लगने लगा था कि इस घटना के सभी सुराग़ अब हाथ आ रहे हैं। शुरू से ही उसे, रशीद का कंप्यूटर और उसके मगजी यूनिट्स मानव तंत्रज्ञान के परे की बात हैं, ऐसा लगता था। उसका कारण भी अब समझ में आ रहा था।

"इन दिनों अल्फा सेंटाउरी तारे के परिवार में हम वास कर रहे हैं। किंतु चूँकि इस तारे में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं, इसलिए यह जगह अब रहने योग्य नहीं रही। तारों में होने वाले परिवर्तन तुम लोग भी जानने लगे हो। लेकिन आप हमारी तरह किसी तारे का भविष्य मिनटों, सैकण्डों तक सही नहीं बता सकते। इस ग्रह पर हम ज्यादा से ज्यादा पाँच सौ सालों तक रह सकेंगे इसलिए बसने का कोई नया ठिकाना खोजना आवश्यक है। और हमारी दृष्टि से पृथिवी सबसे योग्य जगह है। तुम मानवों में इस विविध गुणसंपन्न पृथिवी का उपभोग करने की पात्रता ही नहीं है। तुम तो बस उसका दुरुपयोग करना जानते हो।—

"किंतु यह पृथिवी हमें सिर्फ़ अपने लिए चाहिए—उसे मानव-विहीन करना इसीलिए आवश्यक है। पृथिवी पर उपलब्ध साधन-सामग्री हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। पृथिवी पर बसने के बाद इसलिए भी, हमें मानव जाति का निर्मूलन जल्द-से-ज्ल्द करना होगा।"

"तो क्या गैस चेंबर में ठूँसोगे सब को ?" विजय ने पूछा।

"नहीं ! नहीं ! इतना क्रूड तरीका हम नहीं अपनाते। प्रजोत्पादन क्षमता के नष्ट होते ही मानव जाति अपने-आप नष्ट हो जायेगी। मैंने पहले भी कहा कि हम दो-तीन सदियों तक रुक सकते हैं।

"तुम्हारे कितने लोग आये हैं पृथिवी पर ?" विजय ने पूछा। "तुम्हारे शेख साहब और वे सहकारी फ़ारुख़, मंसूर और क़ासिम भी क्या दूसरे ग्रह के ही हैं ?"

"नहीं—फिलहाल मैं अकेला ही आया हूँ। मेरी तरह कुछ अन्य दूत दुनिया में नई जगहें ढूँढ़ने जा चुके थे। उनमें से कुछ मारे गए, कुछ अभी लौटे नहीं और कुछ ने नकारात्मक रिपोर्ट दी है। मेरी रिपोर्ट सकारात्मक थी, इसलिए आगे का इंतज़ाम करने मुझे भेजा गया। मानव संस्कृति, उसके विविध अंगों, भाषाओं तथा इतिहास की मुझे ख़ास शिक्षा दी गई मैं तो तुम्हारी मातृभाषा में भी बातचीत कर सकता हूँ।"

"तो इसीलिए भगवद्गीता का उल्लेख तुम्हारे मुख से सुनने को मिला।" यवन को यह जानकारी कहाँ से मिली, इसका उत्तर विजय को मिल गया। "लेकिन यह बताओ,

कि इतनी सारी जानकारी तुम्हारे भेजे में कैसे समायी ?"

"क्योंकि मेरा दिमाग़ यांत्रिक है !" रशीद ने कहा, "इस संदर्भ में आगे बताता हूँ। पहले मैं यहाँ कैसे पहुँचा, सुनो। मुझे एक 'स्पेस कैप्सूल' द्वारा भेजा गया था। आलिफ़ संतूर पहले बहुत पिछड़ा हुआ प्रदेश था किंतु लगाकि वहाँ के शेख़ साहब का अच्छा उपयोग हो सकेगा। मेरे प्रारंभिक शिक्षण तथा अनुसंधान की बातें सही हैं लेकिन मैंने वह सब नाटक की भूमिका की भाँति किया था। वैसे मेरे तीनों सहयोगी संपूर्णत: मानव ही हैं और मैं उन्हें अपना देशवासी लगता हूँ।"

इन्स्टिट्यूट के लिए कम्प्यूटर-ग्रांट की स्वीकृति के समय हुईं सारी घटनाएँ विजय को याद आ रही थीं। उसे तभी सन्देह हो चला था कि उन सभी घटनाओं का सूत्रधार रशीद ही होगा। वह सन्देह अब यक़ीन में बदल गया।

"अच्छा, एक और सवाल। तुमने यह योजना भारत से ही क्यों प्रारंभ की ? हमसे अधिक समृद्ध और विकसित राष्ट्र पर तुम अपना प्रभुत्व प्रस्थापित क्यों नहीं करते ?"—विजय ने पूछा।

"इसके कई कारण हैं। हमारे लिए यह ज़रूरी था कि आज से सौ साल बाद कौनसा राष्ट्र उपयुक्त होगा,यह तय करते। हमें विश्वास है कि पृथिवी पर शीघ्र ही 'हिमप्रलय' आने वाला है। भूमध्य रेखा के आसपास का थोड़ा ही भाग मानवों के रहने योग्य रहने वाला है। विकसित राष्ट्र तब तक अपनी दौलत और ऊर्जा को अनापशनाप मात्रा में बरबाद कर चुके होंगे। भारत के पास न केवल समुद्र के अन्दर तेल के विशाल भण्डार मिलेंगे, बल्कि वह भाग रहने योग्य भी रहेगा। अत: यहीं आकर बसना हमारे लिए आवश्यक था। यहाँ आकर हम अपने तंत्रविज्ञान से सौर ऊर्जा का उपयोग करते हुए हिमप्रलय का सामना करेंगे।"

"क्या तुम्हारे सब लोग हम मानवों-जैसे ही दिखते हैं ? और तुम स्वयं पृथिवी पर कैसे आये ?"—विजय के प्रश्न समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

"हाँ, वास्तव में हम सब मूलत: मानव ही हैं। किन्तु हमारी तकनालॉजी तुमसे कहीं अधिक विकसित है। हम तुमसे उतने ही आगे बढ़ चुके हैं, जितने तुम लोग गुफा-मानव से आगे हो। एक उदाहरण देना चाहूँ तो यूँ समझो कि जन्म होते ही हमारा शारीरिक भेजा निकाल कर उसके स्थान पर यांत्रिक भेजा लगा दिया जाता है। अब तुम पूछोगे कि ऐसा क्यों किया जाता है। इसकी कहानी कुछ इस प्रकार है : पहले हम भी तुम्हारी ही तरह अपने भेजे का उपयोग किया करते थे। लेकिन जैसे-जैसे कम्प्यूटर का निर्माण होने लगा, हम लोग भी तुम्हारी ही तरह सुविधा के लिए उसका उपयोग करने लगे। आगे चल कर कम्प्यूटरों के आकार छोटे होते गए और उनपर हमारी निर्भरता बढ़ती गई। हाथ में कम्प्यूटर हो, तो अपने दिमाग से कोई हिसाब क्यों करें ? अन्त में प्रकृति ने ही इस बदलती स्थिति पर ग़ौर किया। जिस तरह शरीर का वह भाग जो काम में नहीं लाया जाता, बेकार होने लगता है, उसी तरह हमारा दिमाग़ भी बेकार होता गया। तब एक शोधकर्त्ता ने 'आर्टिफ़िशियल ब्रेन' यानी कृत्रिम भेजे की खोज की, जिसने शीघ्र ही शारीरिक भेजे का स्थान ले लिया। प्राकृतिक भेजा अब अपेण्डिक्स की तरह

हमारे यहाँ बेकार साबित होगया है।"

"किन्तु आप सबके यदि कृत्रिम भेजे लगे हैं, तो तुम्हारे जीवन में हमारी तरह कोई विविधता नहीं होगी ?" विजय की बात सुन कर रशीद को हँसी आगई। उसने कहा—

"हममें और किसी यंत्र में कोई फर्क़ नहीं है। न कभी कोई झगड़ा, न कोई फसाद। प्राकृतिक चीज़ों का प्रचुर उपयोग करते हुए हम चलते हैं।"

क्या मानव समाज की प्रगति का यही लक्ष्य होगा ? क्या यह लक्ष्य प्राप्त होजाएगा ? तब वहाँ लड़ाई-झगड़े नहीं होंगे। अकुशलता, लाल फीताशाही, आवश्यक वस्तुओं की बरबादी नहीं होगी। यह तो सब ठीक ही है। किन्तु मानव द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित कीर्तिमान भी वहाँ नहीं होंगे। शेक्सपियर, कालिदास, सार्क्रेटिस, न्यूटन, आइन्स्टाइन्, व्यास, शुकदेव, मुहम्मद, बुद्ध की आज तक लगातार चली आई परम्परा क्या अन्त में 'सब मानव एक समान' वाले सिद्धान्त में विलीन हो जायेगी? विजय के मन में सवाल और शंकाएँ उभर रही थीं। उत्तर भारत का मुगलकालीन वास्तुशिल्प तथा दक्षिण के हिंदू मंदिरों की विविधता देख आने के बाद बैक-के-रिक्लेमेशन पर खड़ी एक-सी दिखने वाली मीनारों की गंदी बस्तियाँ देख कर विजय हमेशा ही खिन्न होता था। बरबस ही उसके मन में जीवन की विविधता और यांत्रिकी समानता की तुलना शुरू होगई थी।

घड़ी देखते हुए रशीद ने कहा—"चलो, चलते हैं, मुझे शेख़साहब के पास जाना होगा।"

"लेकिन मेरी चोरी की सज़ा तो तुमने सुनाई ही नहीं ? कहानियों में भी खलनायक अपनी कहानी बता चुकने के बाद हीरो को मार डालने की व्यवस्था तो करता ही है।" विजय से रहा नहीं गया।

"भई वाह ! मैं खलनायक और तुम हीरो ?"—रशीद नक़ली शिकायतभरे स्वर में बोला, "तुम्हें मार कर सृष्टि के एक उपयोगी घटक को मैं भला क्यों ज़ाया करूँगा ? यही तो हममें और तुममें फ़र्क है। मानव-खलनायक तुम्हें मार कर तुम्हारा शव भी ठिकाने लगा देता—उसका समय और शक्ति दोनों की ऐसा करने में बरबादी होती। फिर पुलिस की जाँच-पड़ताल, तुम्हारी खोजबीन, ये सब झंझटें यहाँ चाहिए किसको हैं ? मेरा मार्ग बिल्कुल सीधा है। आज रात तीन बजे तुम्हारी स्मृति अंशतः कम हो जाएगी। सखाराम-प्रकरण की वजह से मेरे प्रति तुम्हारा शक, तुम्हारा यहाँ प्रवेश करना मेरे से हुई बातचीत, सब तुम भूल जाओगे। तुम यही सोचोंगे कि यह कंप्यूटर एक सीधी-सादी मशीन है और इसमें कोई रहस्यमय बात नहीं है। मैंने सारी व्यवस्था भी कर दी है" विजय के साथ कंप्यूटर-रूम से बाहर निकलते हुए रशीद ने कहा। "कमरे में आते ही तुमसे जब शेकहैंड किया था, उसी समय मैंने अपना यूनिट तुझमें बिठा दिया था। उसे ढूंढ़ने की कोशिश मत करना—धूल के कण ढूंढ़ लोको लेकिन यूनिट नहीं ढूंढ़ सकोगे। तुम्हारा दिमाग़ अब मेरे कंट्रोल में है।"

++ ++ ++

रशीद के जाने के बाद विजय को अपने ऑफिस में आया। दो बज चुके थे। अभी एक घंटा हैं, तब तक सारी बातें लिख डालने की विजय ने सोची। पैड निकाला और जल्दी-जल्दी लिखना शुरू किया।

सारी महत्वपूर्ण बातें लिखने के बाद उसने नीचे एक नोट लिखा।

"स्मृतिभ्रंश होने के बाद मुझे भी यह सारी बाते एक फैण्टसी लगेंगी। किंतु सही सच्चाई है।"

विजय की नज़र घड़ी पर गई। २.५५ हुए थे।

वह आर्मचेयर में जा बैठा। नींद नहीं आ रही थीं, और साथ ही अगले पाँच मिनटों में अपने पर क्या प्रयोग होने वाला है, इसकी उत्सुकता चरम सीमा पर थी। कुछ भी हो, लेकिन प्रतिकार करने की उसने ठान रखी थी। ज़ोरों की हवा में सिर की टोपी बचाने के लिए जिस तरह हम उसे सिर पर दबाये रखते हैं, उसी प्रकार रशीद का सारा क़िस्सा मन में दबाया और आँखें मींच लीं।

..... थोड़ी देर में बंबई का दैनंदिन जीवन रोज़ की तरह शुरू होगा। दूध की गाड़ियाँ अलग अलग दिशाओं में निकल पड़ेंगी। सब्ज़ी मंडियों में चहल-पहल शुरू हो जायेगी। काम पर जाने वालों का ताँता लग जायेगा। बसों और ट्रेनों के शोरगुल से सारा वातावरण गूँज उठेगा। सब-कुछ हमेशा की तरह होगा।

—सिर्फ पृथिवी पर अपना अस्तित्व बनाये रखने की मानव-क्षमता समाप्त होने वाली थी। अस्थायी तौर पर पराया आक्रमण थामने का एक ही मार्ग था—रशीद का उच्चाटन और उसके कंप्यूटर का नाश। लेकिन यह कैसे होता ? अपनी लिखी बातें भी उसे अविश्वसनीय लगतीं। उसकी स्मृति, दिमाग़ पूर्ववत् रहता तो भी कौन भरोसा करता उसकी बातों पर ? उसे ही सबके सामने पागल क़रार दिया जाता।

और यह आक्रामक भी ऐसे थे कि आख़िरी दम तक इंसान अँधेरे में रहता। पराये लोगों को इस पृथिवी का महत्त्व पता है और एक हम हैं कि उसका दुरुपयोग करने पर तुले हैं। स्वार्थ और आपसी अदावत पृथिवी का प्राकृतिक सौंदर्य बरबाद कर रहे हैं।

तीन बज गए।

विजय को घंटियों-जैसी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

कर्र sss .... कर्र ....

उसकी ओर ध्यान देता तो कदाचित् रशीद की बातें भूल जाता। इस डर से विजय ने रशीद के वृत्तांत पर ध्यान केन्द्रित किया।

कर्र sss .... कर्र ....

घंटियाँ बज ही रही थीं।

++ ++ ++

विजय ने आँखें खोलीं। उसे रशीद की बातें अब भी याद थीं। यानी उसकी स्मृति में कोई कमी नहीं आई थी। उसे लगा, शायद रशीद ने कोई भूल तो नहीं की। घंटियाँ अब भी बज रही थीं।

तब उसे पता चला कि उसके पास रखे फोन की घंटी बज रही थी।

लेकिन आज उसकी आवाज़ हमेशा की तरह 'कर्र कर्र ..... कर्र कर्र .....' क्यों नहीं आ रही, और 'डायल' के स्थान पर 'पुशबटन' कैसे आया ? उसने इधर-उधर देखा और एकदम खड़ा हो गया।

वह अपने पेसाठीना अपार्टमेंट में था। थॉमस और आर्मस्ट्रांग की चर्चा का कार्यक्रम उसके सामने पड़ा था। कमरे में रखी डिजिटल कॅलेंडर क्लॉक चर्चा के अगले दिन की

तारीख और दस बजे का समय दर्शा रही थी। उसकी कंप्यूटर रपट टेबिल पर पड़ी थी। उसे लगा मैंने जो कुछ देखा, उसे अनुभव भी किया था। उसने फोन उठाया।

"डॉ. विजय सिन्हा ?" फोन से एक मीठी आवाज़ आई।

"स्पीकिंग।"

"दिज़ इज़ वेस्टर्न यूनियन, सर। आप हैव ए केबल फॉर यू। मे आय रीड इट आउट ?" ऑपरेटर ने पूछा। विजय के हाँ कहते ही उसने पढ़ना शुरू किया—

"कंप्यूटर कैन्सल्ड। पोस्टपौन योअर रिपोर्ट। लेटर फॉलोज।—प्रो. गुप्ता।"

"डू यू वांट अ कॉपी इन राइटिंग, सर ?" ऑपरेटर ने पूछा।

"डोंट ब्रॉदर—एण्ड थैंक्स फॉर कॉलिंग।" अप्सेट माइण्डेड स्वर में विजय ने कहा। उसने रिसीवर नीचे रखा और फोन की तरफ़ देखने लगा। वह कुछ खोज रहा था, किंतु टेबिल ख़ाली थी।

वहाँ कोई टेलिफोन नंबर नहीं था।

हिमप्रलय

"पिताजी ! पिताजी ! देखिए तो कितनी मज़ेदार बात है। बाहर चारों ओर बर्फ़ ही बर्फ़ फैली है ! उठिए न।" बच्चों के शोरगुल ने राजीव शाह को हड़बड़ाकर जगा दिया। गहरी नींद से उठा था, सो कविता और प्रमोद की उत्तेजना भाँप नहीं पाया था।

बर्फ़ ? और वह भी बंबई में ? असंभव ! वह फ़ौरन खिड़की की ओर भागा .... और पूरी तरह जग गया। बाहर फैली बर्फ़ की सफ़ेद चादर देख वह हैरान था। कमरे में भी ज़बदस्त ठंड महसूस कर रहा था।

ठंड के मारे राजीव काँपने लगा। बच्चों ने तो दो-दो स्वेटर चढ़ा लिए थे। इससे ज्यादा गर्म कपड़े उनके पास थे ही नहीं। (वैसे ही बंबई वालों के पास गर्म कपड़े कम ही होते हैं।) कड़ाके की ठंड थी लेकिन बच्चों के उत्साह में कोई कमी नहीं थी।

"पिताजी, हम जायें बर्फ में खेलने ?"

"नीचे मत जाओ। हम छत पर चलते हैं। लेकिन पहले तुम जूते-जुराबें पहन लो और एक़ाध चादर या शॉल भी ओढ़ लो।"

बच्चों के अंदर जाते ही राजीव ने भी चादर ओढ़ी। गर्म जुराबें और जूते पहने, लेकिन घर में बिजली या कोयले की अंगीठी की कमी बार-बार महसूस कर रहा था।

पिछले स़प्ताह बंबई का तापमान बहुत नीचे आ गया था। बंबई वाले, जनवरी में यदि तापमान १५° सेल्सियस हो जाए तो शीत लहर आ गई ऐसा मानते हैं। और उनके गर्म कपड़े फटाफट बाहर आते हैं। कल के अख़बार की ओर झपकते राजीव ने सबसे पहले तापमान पर नज़र दौड़ाई। तापमान था ५° सेल्सियस ! ऐसी शीत लहर इससे पहले कभी नहीं आई थी। मौसम विभाग ने भी कोई जानकारी नहीं दी थी। ऐसे में बंबई वालों का लरजना ठीक ही था।

तीन-मंजिली बिल्डिंग में राजीव सबसे ऊपरी मंज़िल में रहता था। वही उसका मालिक भी था। इसलिए सीढ़ियों की चाबियाँ उसी के पास थीं। "चलो न पिताजी", पिताजी का हाथ खींचते हुए कविता बोली। "यह लो चाबियाँ। पर ज़रा सँभल के जाना, फिसल पड़ोगे।" यह सब सुनने को बच्चे थे कहाँ ? वे तो छत पर जा भी चुके थे।

बर्फ़ ने तो बंबई का रंग-रूप ही बदल डाला था। यक़ीन ही नहीं हो रहा था कि यह बंबई है। लग रहा था, यूरोप का ही कोई गाँव हो। हिंदू कॉलोनी के पेड़ बिल्कुल सफ़ेद नज़र आ रहे थे। फुटपाथ तो सफेद चादर तले ढंक गया था। गाड़ियों वग़ैरा के आने-जाने से सड़क पर कीचड़ ज़रूर, हो गया था।

रेलमार्ग भी बिल्कुल शांत था। "वैसे भी ज़रा-ज़रासी बात पर मध्य रेलवे बंद पड़ जाती है। फिर आज की तो बात ही और है।" राजीव थोड़ा बड़बड़ाया। पश्चिम रेलवे की एक गाड़ी बिल्कुल आहिस्ता आ रही थी।

किंतु राजीव का विचार-चक्र बड़ी तेजी से घूम रहा था। "क्या बंबई में बर्फ़ पड़ेगी ?" यह शर्त आज वह हार गया था। क्योंकि उसने कहा था, "ऐसा हरगिज नहीं हो सकता।" और वसंत ने कहा था, "आने वाले दस सालों में ऐसा ही होगा।" पाँच साल पहले की उस घटना की उसे याद आई।

++ ++ ++

भारत के जाने-माने वैज्ञानिक डॉ. वसंत चिटणीस उन दिनों अमरीका आए थे। उनके सम्मान में भारतीय राजदूत ने एक दावत दी थी। मैरीलैंड तथा वर्जिनिया के कुछ अमरीकी वैज्ञानिकों को भी आमंत्रित किया था। और कार्यक्रम की प्रसिद्धि के लिए भारतीय समाचार-पत्रों तथा समाचार-संस्थानों के चुनींदा पत्रकारों को भी बुलाया था। उनमें राजीव शामिल था।

भोजन-पूर्व जलपान के दौरान बातचीत में राजीव जोर-शोर से भाग ले रहा था। लेकिन वसंत चिटणीस बिल्कुल शांत थे। शायद उन हल्की-फुल्की बातों में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। तभी किसीने आकर एक टेलेक्स पढ़ा, "वेसुविअस ज्वालामुखी फिर भमक उठा है।"

"बाप रे ! पिछले तीन महीनों में यह चौथा ज्वालामुखी फटा है। धरती माँ की कोख में यह कैसी उथलपुथल है ?" राजीव ने कहा।

"धरती की कोख में क्या हो रहा है यह सोचने के बजाय उसकी पीठ पर क्या होने वाला है यह सोचिए।" वसंत चिटणीस एकदम बोल पड़े थे।

"क्या मतलब ? साफ़-साफ़ कहिए ! आप क्या कहना चाहते हैं ?" मैरीलैंड युनिवर्सिटी के एक वैज्ञानिक ने कहा।

वसंतजी ने नपे-तुले शब्दों में कहा "ज्वालामुखी बहुत-कुछ उगलता है। कुछ पदार्थ जमीन पर गिरते हैं और कुछ वायुमण्डल में मिल जाते हैं। वायुमण्डल में फैले इन पदार्थों के कारण प्राकृतिक असंतुलन हो सकता है। मुझे तो लगता है कि पिछले साल के विस्फोटों के कारण यह प्रक्रिया शुरू भी हो गई होगी।"

"लेकिन यह असंतुलन किस प्रकार का होगा ? उसके क्या परिणाम हो सकते हैं ?" अपनी कलम उठाते हुए एक पत्रकार ने पूछा।

"यदि मैं कहूं कि आपको अपनी राजधानी वांशिंग्टन की बजाय होनोलुलू बनानी पड़ेगी, तो ?" उस अमरीकी पत्रकार से डॉ. वसंत ने जवाबी प्रश्न किया।

"लेकिन ऐसा किस वजह से होगा ?"

"इसीलिए, क्योंकि पृथ्वी पर हिम-प्रलय आने वाला है। और तुम्हारे वाशिंग्टन, न्युयार्क, शिकागो, आदि शहरों का तो नामोनिशान भी नहीं रहेगा। आप पत्रकारों को पहेलिया बुझाने वाली भाषा पसंद नहीं होती। इसीलिए आपको हर बात स्पष्ट शब्दों में मैंने बता दी है।"

"खाना तैयार है"—बटलर की इस घोषणा ने बातचीत वहीं रोक दी।

खाने के समय राजीव और डॉ. वसंत पास-पास बैठे थे। इसी दौरान उसने डॉ.

वसंत से पूछा "आप तो अपनी हर बात साबित करते हैं। इसीलिए आपकी भविष्यवाणी से दिमाग चकरा गया है। किंतु मुझे लगता है, हिम-प्रलय आते आते हजारों साल बीत जायेंगे।"

"ऐसा बहुतों को लगता है। लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है।" पापड़ खाते खाते डॉ. वसंत ने कहा, "किंतु मैं अपनी बात सिद्ध कर सकता हूँ। इन दिनों हालात बहुत नाजुक हैं। वायुमण्डल का सन्तुलन निरंतर टूट रहा है। ऐसी स्थिति में हिमप्रलय के लिए दस साल भी बहुत हैं। घबराइए नहीं शाह साहब, आप बंबई में सुरक्षित होंगे, क्योंकि भूमध्यरेखा के २०° उत्तर तथा २०° दक्षिण का क्षेत्र सुरक्षित रहेगा ऐसा लगता है।"

"बंबई का अक्षांश १९° है", भूगोल में सीखी बात राजीव को याद आ गई।

"इसीलिए बंबई वालों को हिमपात का थोड़ा सा सामना करना पड़ेगा" हँस कर डॉ. वसंत ने कहा। "आपका संकट थोड़े में ही टल जायेगा।"

"क्या कह रहे हैं आप ? अगले दस वर्षों में बंबई में हिमपात होगा ? असंभव !" राजीव ने अपनी जेब से दस डॉलर का नोट निकाला और डॉ. वसंत से कहा, "आप दस सेंट निकालिए। यदि हिमपात हुआ तो दस डॉलर आपके, और न हुआ तो दस सेंट मेरे।"

"जनाब, अपने डॉलर अपने पास ही रखिए। अटल बातों पर मैं शर्त नहीं लगाता। दस वर्षों में हिमपात हुआ तो अपनी शर्त हार जाने का फोन करना न भूलना! यह रहा मेरा कार्ड !" अपना कार्ड निकालते हुए डॉ. वसंत ने कहा—"शाह साहब, आप भी अपना कार्ड दीजिए .... ताकि यदि बंबई में हिमपात नहीं हुआ तो फोन करके मैं अपनी ग़लती मान सकूं।"

कार्डों का आदान-प्रदान हुआ। और फिर मेहमानों के लिए बनी खास स्वीट डिश सामने आई। डॉ. वसंत ने पढ़ा कि मेनू कार्ड में उसका नाम 'आर्कटिक सरप्राइज़ !' लिखा था। वह बोला, "कितना सामयिक नाम है आज की डिश का ! काश, दस वर्षों में आने वाला सरप्राईज़ इतना सुखकारक होता !"

++ ++ ++

बच्चे बर्फ में धूम मचा रहे थे। उन्होंने पिताजी की ओर भी गोला मारा। राजीव चौंक पड़ा और उसका विचार-चक्र भी रुक गया। वह शर्त हार चुका था इसलिए डॉ. चिटणीस को फोन करना जरूरी था।

"डॉक्टर चिटणीस !"

"जी हां, मैं वसंत चिटणीस बोल रहा हूं। आप कौन ?"

"मैं राजीव शाह। आपको याद होगा ....."

"अरे हाँ, मैं आपके फोन की प्रतीक्षा कर ही रहा था। तो याद है आपको सब। कहिए, आखिर मैं ही जीता ना !"

"जी हाँ। लेकिन मैं आज आप से मिलना चाहता हूँ। मुझे आधा घंटा दे सकेंगे ?"

"किसलिए ?"

"आपसे भेंटवार्ता लेना चाहता हूँ। उन कारणों को समझना और छापना चाहता हूँ जिनके आधार पर आपने इतनी निश्चित भविष्यवाणी की थी।"

थोड़ा हँसते हुए डॉ. वसंत चिटणीस ने कहा "आपकी तो रग-रग में पत्रकारिता भरी है। किंतु मेरे विचार छापने का कोई असर नहीं होगा ! खैर, जाने दो। आपको आपको सुबह ग्यारह बजे समय हो तो इन्स्टिट्यूट में आ जाइए।"

और राजीव जाने की तैयारी करने लगा। दाढ़ी बनाते-बनाते उसने रेडिओ शुरू किया, तब विशेष समाचार बुलेटिन प्रसारित हो रहा था।

" .... उत्तर भारत में मौसम की वजह से भारी कोहराम मचा है। स्थिति बहुत विकट होती जा रही है। पश्चिम में राजस्थान से लेकर बंगाल तक और हिमालय से सह्याद्रि तक समूचे देश में भारी हिमपात हुआ है। मृतकों की कोई निश्चित संख्या बताना असंभव है। फसलों की भी असीमित हानि हुई है। पक्षियों को भी शीत लहर की कोई पूर्वकल्पना नहीं थी, इसलिए उनके सैकड़ों झुंड मृतावस्था में जगह-जगह पड़े पाए जा रहे हैं। हवाई सर्वेक्षण से पता चला है कि उत्तरी महामार्ग पूर्णत: हिमाच्छादित है। जगह-जगह रेल गाड़ियाँ बंद पड़ी हैं। प्रधानमंत्री ने पूरा राहत कोष आपद्ग्रस्तों के लिए खोल दिया है—किंतु डर है कि यह राशि भी अपर्याप्त होगी—इसलिए उन्होंने अन्य लोगों से सहायता की अपील की है ...."

राजीव ने दूसरा स्टेशन लगा कर देखा। वहाँ भी स्पेशल बुलेटिन चल रहा था। तभी कविता ने आवाज दी, "पिताजी,टी.वी. पर भी बर्फ के ही समाचार आ रहे हैं।"

बंबई दूरदर्शन पर प्रसारित विशेष समाचारों में उपग्रह द्वारा भेजे गए देश के विभिन्न इलाकों के दृश्य दिखाए जा रहे थे। उन्हें देख 'डॉक्टर जिवागो' फ़िल्म में दिखाये हिमाच्छादित रूस की राजीव को याद आयी।

जगह जगह तापमान में ऐसी गिरावट आई थी कि उसके आँकड़े पढ़कर कोई भी ठिठुर जाता। श्रीनगर (—२०°), चंडीगढ़ (—१५°), बीकानेर (—१५°), दिल्ली (—१२°), बनारस (—१०°), कलकत्ता (—३°), बंबई के दक्षिण में ठंड की तीव्रता कम थी। इनकी तुलना में मद्रास (५°), बंगलौर (२°) तथा त्रिवेंद्रम् (७°) के तापमान मन की राहत दे रहे थे।

इतने में एक खबर आ धमकी—"प्रधानमंत्री ने एक आपात्कालीन बैठक बुलवाई है जिसमें मंत्रिमंडल के सदस्यों के अलावा, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश तथा तीनों सेनाध्यक्षों को बुलाया है। बैठक में बंबई को भारत की अस्थायी राजधानी बनाए जाने पर विचार-विमर्श होगा।"

"अमरीका को अपनी राजधानी होनोलुलू ले जानी पड़ेगी"! डॉ. वसंत चिटणीस की वह भविष्यवाणी राजीव को याद आ गई। भारत में यह हाल है तो यूरोप तथा रूस के देशों का क्या हाल होगा ? वहाँ तो हर समय ठंड होती है।

दुनिया की स्थिति जानने, राजीव ने बी.बी.सी. वर्ल्ड सर्विस का स्टेशन लगाया। बी.बी.सी. ने बताया कि दुनिया में अनेक स्थानों पर शीत लहर का भारी प्रकोप हुआ

था। तापमान भी २०° से कम था। किंतु, कनाडा, रूस जैसे देशों में, जो ठंड के आदी थे, जन-जीवन में भारत जितनी गड़बड़ी नहीं हुई थी।

राजीव ने घड़ी देखी। नौ बज चुके थे। धूप खूब निकल आई थी। लेकिन उसमें कोई दम नहीं था। शहर की गंदी बस्तियों को अपने में ढांक कर बर्फ ने उन्हें भी खूबसूरती प्रदान की थी। कविता और प्रमोद को उम्मीद थी कि स्कूल आज बंद ही होंगे; इसीलिए वे अपने काम आराम से निपटा रहे थे। और गृहपाठ और पढ़ाई का तकाजा करने वाली माँ भी घर नहीं थी। किसी शादी में वे पूना गई थीं। अतः कविता कॉमिक पढ़ने में व्यस्त थी और प्रमोद कोई मॉडल बनाने में।

नाश्ता-पानी करके राजीव ने गैराज से अपनी गाड़ी निकाली। ठंड के मारे उसने भी चलने में पहले तो काफी आनाकानी की, लेकिन बाद में चल पड़ी। राजीव ने महसूस किया कि बर्फ पर गाड़ी इधर-उधर फिसल रही थी और उस पर नियंत्रण रखना भी कठिन हो रहा था।

जैसे-तैसे वह आंबेडकर रोड पहुंचा। यातायात के कारण इस बड़ी सड़क पर बर्फ तो पिघल चुकी थी। लेकिन इससे पहले कई गाड़ियां और बसें फिसलन के कारण एक दूसरे से टकरा कर बंद पड़ी थीं। हैरत से राजीव सारा नजारा देख रहा था। बेतरतीबी से फैले ट्रैफिक में से राह निकालना अग्निपरीक्षा ही थी।

राजीव सोच रहा था कि "भारतीय कार-चालकों की कुशलता ब्रेक-नियंत्रण तक ही सीमित है। इन चालकों ने ब्रेक का प्रयोग सावधानी से किया होता तो यह हाल न होता।" दादर से कुलाबा जाने में काफी समय लगेगा, यह तो वह समझ ही गया था।

++ ++ ++

"आइए पत्रकार साहब ! बड़ी देर कर दी ! या रास्ते में किसी और से भेंटवार्ता लेने रुक गए थे ?" घड़ी देखते हुए वसंत बोला। दोपहर के बारह बज चुके थे।

"माफ कीजिए डॉक्टर चिटणीस ! दरअसल मैं खुद गाड़ी चला रहा था। लेकिन पूरे रास्ते में ट्रैफिक की इतनी धांधली है कि क्या कहूं ! बंबई में इतनी खराब हालत होगी, सोचा भी न था। मैं पैदल आता तो शायद इतनी तकलीफ न होती, फिर भी विलंब के लिए क्षमा चाहता हूं।"

आरामकुर्सी पर थोड़ा सुस्ताते हुए राजीव बोला, "प्रथम आपका अभिनंदन ! आपकी भविष्यवाणी सही साबित हुई। शर्त तो आप जीत गए हैं, लेकिन मेरे मन में बहुत से प्रश्न हैं। आप ही उनका समाधान कीजिए।" राजीव की नटखट निगाहें डॉ. वसंत पर टिकी थीं। उसने कहा, "और हां, इस मुलाकात का कोई असर नहीं होगा, ऐसा क्यों कहा था आपने ?"

"इन सब प्रश्नों के उत्तर इस बस्ते में हैं"—वसंत चिटणीस ने राजीव के सामने एक बस्ता पटकते हुए कहा।

उस बस्ते में वैज्ञानिक निबंध थे। कुछ दुनिया की जानी-मानी पत्रिकाओं में प्रकाशित थे, कुछ केवल टंकलिखित थे। डॉ. वसंत ने कहा, "मैंने जिन वैज्ञानिक

सिद्धान्तों के आधार पर हिमप्रलय की भविष्यवाणी की थी, वे सारे सिद्धान्त इन लेखों में हैं। और यदि आप ग़ौर से देखें, तो पता चलेगा कि प्रकाशित लेखों की तुलना में टंकलिखित लेखों में अधिक जानकारी है।''

''ऐसा क्यों ?''

''वैज्ञानिकों की तथाकथित वस्तुपरकता और न्यायबुद्धि इसके लिए सर्वाधिक जिम्मेदार है। आप सोचते होंगे कि हम लोग स्थितप्रज्ञों-जैसा व्यवहार करते हैं। हम आपसी अदावत से परे होंगे और ज्ञानार्जन को ही अपना लक्ष्य मानते हैं ..... सब दिखावा है। हम भी आप ही के जैसे मनुष्य हैं। आपके गुण-दोष हम में भी होते हैं। यदि कोई निबंध या शोध-कार्य हमें पसंद न आए, तो, वह प्रकाशित न हो सके, इसके लिए हम भी काफी प्रयत्नशील होते हैं। मेरे प्रकाशित लेख ऐसी वैज्ञानिक परीक्षाओं में सफल हो गए। किंतु टंकलिखित लेखों पर किसी ने ग़ौर नहीं किया, क्योंकि उनमें दिए गए निष्कर्ष प्रचलित विचारधाराओं के प्रतिकूल थे।''

''अर्थात् आज का समाज कोपर्निकस-गैलिलियो के समाज से अलग नहीं है !'' अपनी डायरी में लिखते हुए राजीव ने कहा।

''उस जमाने में धर्म-मार्तण्डों ने कोपर्निकस-गैलिलियो जैसे वैज्ञानिकों को सताया। उन पर अत्याचार किए। आज वैज्ञानिक मार्तण्ड उनकी परंपरा चला रहे हैं। किसी भी अनुसंधान की दिशा और दशा आज धार्मिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक विचारधाराएं तय करती हैं। किसी शोध-निबंध को सरकारी या कोई अन्य अनुदान मिले, किसे छापा जाए, किसे अंधेरे में रखा जाए, यह तय करना आज इन्हीं के हाथों में है। बड़े खेद की बात है आज के इन तथाकथित वैज्ञानिक मार्तंडों में और उस जमाने के धर्म मार्तंडों में कोई अन्तर नहीं है।''

''डॉक्टर चिटणीस, यह आपका अनुभव बोल रहा है। किंतु प्रचलित विचार-धाराओं की यह मान्यता रही है कि हजारों पागलपन की कल्पनाओं में कहीं कोई एकाध सही साबित होती है। बाकी की पागल कल्पनाओं में कोई दम नहीं होता। किसी एक अनुसंधान की सत्यता या असत्यता परखने के लिए किसके पास समय है ? आटे के साथ घुन भी कई बार पिसता ही है।'' राजीव ने अपनी बात स्पष्ट की।

''जी हां, मैं मानता हूं। लेकिन वैज्ञानिक सिद्धान्त हमेशा सबूतों और प्रमाणोंसहित पेश किये जाते हैं। इसके बावजूद उनकी ओर ध्यान न देना कहां तक उचित है ?आखिर धार्मिक और वैज्ञानिक विचारधाराओं का यह बुनियादी अंतर तो ध्यान में रखना ही पड़ेगा।''

''डॉ. चिटणीस, आपका अनुभव और सिद्धान्त क्या है ?'' मुख्य प्रश्न की ओर बढ़ते राजीव ने पूछा।

''बताता हूं, किंतु पहले आपको एक पार्श्वभूमिका ध्यान में रखनी होगी—'' एक नक्शा राजीव के सामने रखते हुए डॉ. चिटणीस ने कहा, ''पृथिवी के तापमान और समुद्र में बहुत गहरा संबंध है। और इस धरातल का दो-तिहाई हिस्सा समुद्र-तले है। पृथिवी का

वायुमण्डल हवा फैलाता है इसलिए समुद्र से गर्म हवा ऊपर जाती है और फिर नीचे आती है।"

"यह बात तो स्कूली किताबों में भी होती हैं—" राजीव ने कहा।

"लेकिन यह मानना कि समुद्र गर्म हैं और हमेशा रहेंगे,कहां तक उचित होगा ? सात-आठ साल पहले समुद्र-तापमान की मैंने गहराई तक जांच की थी। और परिणाम देख कर काफी अचरज में पड़ गया था। सामान्यत: समुद्र में ठंडा पानी नीचे और गर्म पानी ऊपर होता है। समुद्र में गर्म पानी की परतें, जिनसे पृथिवी को उष्णता मिलती है, बहुत पतली हो गई हैं। यकीन मानिए,इससे पहले मुझे भी इसकी कोई कल्पना नहीं थी। समुद्र की निचली परतें जमावबिंदु तक ठंडी होती हैं। इन परतों में दिनों-दिन हो रही वृद्धि निश्चय ही चिंता की बात है।"

"क्या सूर्य पानी गर्म नहीं करता ?"

"सूर्य प्रत्यक्ष रूप से इतना सक्षम नहीं है, क्योंकि ध्रुवीय प्रदेशों में उसका प्रकाश तीव्र होने के बावजूद वह बर्फ को पिघला नहीं सकता। बल्कि बर्फ पर उसका प्रकाश परावर्तित हो जाता है और वह अंदर तक जा ही नहीं पाता। लेकिन परोक्ष रूप से वह कैसे काम आता है, आइए,इस प्रयोग द्वारा देखते हैं।"

डॉ. वसंत चिटणीस के ऑफिस के साथ ही उनकी प्रयोगशाला सटी हुई थी। वहां टेबल पर कांच का एक बहुत बड़ा बर्तन रखा था। प्रयोग को प्रारंभ करते हुए डॉ. वसंत ने कहा ,"इस बर्तन के अंदर जो हवा है वह नमी वाली है। इस हवा को मैं धीरे-धीरे ठंडा करूंगा। लेकिन आप देखेंगे कि पूरी सावधानी बरतने पर, तापमान शून्य सेल्सियस से कम होने पर भी, हवा में मौजूद पानी का बर्फ में रूपांतर नहीं होगा।"

डॉ. वसंत ने हवा ठंडी करनी शुरू की,भीतरी तापमान शून्य से कम होते ही डॉ. वसंत ने उस हवा में रोशनी अंदर छोड़ी। उस रोशनी की ओर समकोण से देखने पर, बर्तन में केवल अंधेरा ही नजर आ रहा था।

"इसका अर्थ रोशनी नमीयुक्त हवा को चीरती हुई दूसरी ओर जा रही है। तापमान और कम करके देखते हैं कि क्या होता है ?"

तापमान धीरे-धीरे कम होता गया। लगभग —४०° नीचे आते ही बर्तन अचानक चमकने लगा। डॉ. वसंत ने समझाया—"जब तक हवा में द्रवांश था तब तक रोशनी दूसरी ओर जा रही थी। किंतु जैसे ही तापमान —४०° तक आया,बर्फ जमने लगी। इस तरह बर्फ के कण रोशनी को इधर-उधर फैला देते हैं।"

राजीव को पुन: अपने ऑफिस में लाते हुए डॉ. वसंत ने कहा—"ध्रुवीय प्रदेशों में ठीक यही प्रक्रिया होती है। वहां तापमान जब —४०° तक पहुंच जाता है तो हवा में बर्फ के कण तैयार होने लगते हैं। इन बर्फ-कणों को 'हीरे की धूल' कहते हैं। इन्हीं के कारण सूर्य-प्रकाश बिखर जाता है। पृथिवी पर तापमान में इतनी गिरावट नजर नहीं आती, इसीलिए ऐसी घटनाएं भी नहीं दिखतीं।" डॉ. वसंत की कारण-मीमांसा का एक चरण पूरा हो गया था। इसलिए वह कुछ देर के लिए रुक गए।

राजीव शाह की कलम तेजी से चल रही थी, लेकिन डॉ. वसंत उसके चेहरे की प्रश्नार्थक मुद्रा ताड़ गए थे। इसलिए उन्होंने फिर समुद्र का विषय छेड़ा, "कल्पना कीजिए, समुद्र से मिलने वाली उष्णता कम हो जाए तो न केवल ध्रुवीय प्रदेशों में बल्कि अन्य स्थानों में भी हवा में 'हीरे की धूल' तैयार होने लगेगी और पृथिवी के ईर्द-गिर्द धूल का पर्दा तैयार हो गया तो, सूर्य प्रकाश-धरातल पर न आकर इधर-उधर बखरने लगेगा।"

"मैं समझ गया। आप कहना चाहते है कि सूर्य की अपर्याप्त उष्णता के कारण समुद्र की ठंडक बढ़ेगी, ठंड बढ़ेगी इसलिए 'हीरे की धूल' भी और बढ़ेगी ..... और यह चक्र हमें हिम-प्रलय की ओर खींचेगा ..... ठीक। किंतु यह चक्र तो तभी शुरू होगा जग समुद्र की उष्णता कम होगी ?" राजीव ने कहा।

हाथ हिला कर डॉ. वसंत ने राजीव से रुकने का इशारा किया। "आमतौर पर वातावरण गर्म रखने के लिए समुद्र की उष्णता पर्याप्त होती है। किंतु जैसा मैंने पहले भी कहा है, समुद्र के गर्म पानी की यह परत बहुत पतली हो रही है अत: सेफ्टी मार्जिन भी कम हो रहा है ! वातावरण में हस्तक्षेप करने वाली कोई भी घटना उसका संतुलन बिगाड़ सकती है। विशेषत: ज्वालामुखी से उष्णता-प्रतिबंधक कणों का बाहर आना, या किसी बड़े भारी कार्बन उल्का के पृथिवी पर गिरने से सूर्य-प्रकाश बिखर सकता है। इसके कारण प्रकाश परावर्तित करने वाले कण वातावरण में तेजी से फैलते हैं—और यहीं से होता है हिम-प्रलय का प्रारंभ।"

पांच साल पहले वॉशिंग्टन की पार्टी में 'ज्वालामुखी का आतंक' विषय पर हुई चर्चा राजीव को याद आ रही थी। और वसंत की भविष्यवाणी का कारण भी समझ में आ गया था।

++ ++ ++

'हिम-प्रलय का आगमन—भारतीय वैज्ञानिक की भविष्यवाणी !' राजीव शाह के इस लेख की काफी चर्चा हो रही थी। विदेशी वृत्त-संस्थाएं भी इस बारे में लिखने लगी थीं और डॉ. वसंत चिटणीस का सिद्धांत इस तरह विश्व-विख्यात हो गया। सभी ने एक बात मान ली कि शीत लहर की पूर्व-सूचना इस वैज्ञानिक ने दी थी। सामान्य आदमी भी उनकी बातों का महत्त्व समझ रहा था। इसीलिए डॉ. वसंत चिटणीस के हर वक्तव्य, हर टिप्पणी को महत्त्व प्राप्त हो गया।

लेकिन कुछ ऐसे वैज्ञानिक भी थे जो अब भी यह मानते थे कि न तो यह हिम-प्रलय है और न ही उसका प्रारंभ। वसंत चिटणीस का सिद्धान्त उन्हें मान्य नहीं था। उनकी यही धारणा थी कि शीत लहर जैसे आई वैसे चली जायेगी और तापमान सामान्य हो जायेगा। किंतु ठंड की चपेट में आए देशों के गले यह बात उतारना कठिन था।

विदेशी पत्रकारों से भेंटवार्ता में डॉ. वसंत चिटणीस ने एक चेतावनी दी—"अबकी गर्मियों में इस बर्फ को भूलिए नहीं, क्योंकि अगली सर्दियां इतनी भयंकर होंगी कि बर्फ पिघलने का नाम ही नहीं लेगी। हिमप्रलय-प्रतिबंधक उपाय है, वह महंगा है, लेकिन

फिर भी उस पर अभी से अमल कीजिए।"

किंतु डॉ. वसंत की यह चेतावनी लोगों को खोखली प्रतीत हुई, क्योंकि अप्रैल में वसंत ऋतु का आगमन ठीक समय पर हुआ था और जून-जुलाई में पृथिवी की तपन बढ़ाने सूर्य-प्रकाश अपनी चरम सीमा पर था। सभी लोग मान कर चल रहे थे कि पिछली सर्दियां भले ही भायनक रही हों, लेकिन अब फिर वही हाल नहीं होगा।

विंबल्डन मुकाबले भी हमेशा की तरह रोमांचक रहे। कहीं कोई रुकावट नहीं आई। पांच टेस्ट मैचों में कड़े संघर्ष के बाद ऑस्ट्रेलिया ने पुनः एशिस हासिल किए। सजे-संवरे खूबसूरत मौसम ने तो अमरीका में हुई ओपन गोल्फ प्रतियोगिता में चार चांद लगा दिए थे। विशेषज्ञों का तो कहना था कि इतना सुहाना मौसम हमें प्रतियोगिता में पहले कभी नसीब नहीं हुआ था। भारत में हमेशा की तरह मानसून पूरे जोरों पर था।

इसलिए हिम-प्रलय के आगमन की आशंका किसी को चिंतित नहीं कर रही थी। बंबई को भारत की अस्थायी राजधानी बनाने की बात सरकारी लाल फीताशाही में सिमट कर रह गई थी।

किंतु डॉ. वसंत चिटणीस की चिंता बढ़ती जा रही थी। इस बार की गर्मियां उस दीपक की भांति थीं जो बुझने से पहले एक बार अधिक रोशनी देता है। यही बात वह गला फाड़ कर कह रहे थे, पर कोई सुनता तब न !

ले-देकर एक राजीव शाह ही सहानुभूति दर्शा रहा था। डॉ. वसंत के विश्लेषण से वह सहमत था। अचानक वसंत को अपने ऑफिस में देखकर वह हैरान था। वह जान गया था कि डॉ. वसंत की गंभीर मुद्रा किसी अप्रिय घटना की सूचना देने वाली है।

"लो,पढ़ो यह टैलेक्स !" अपनी मेज पर पटके उस टैलेक्स संदेश को राजीव ने पढ़ना शुरू किया—

"आपके कथनानुसार, अंटार्कटिक में बर्फ के फैलाव में वृद्धि हुई है और वहां के पानी की परत का तापमान भी दो अंश कम पाया गया है। अपने सर्वेक्षण के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि यह परिवर्तन पिछले दो वर्षों में हुआ है।"

समुद्र-विज्ञान के एक विश्वविख्यात संस्थान के संचालक का डॉ. वसंत के नाम यह संदेश था।

वसंत ने कहा, "यही जानकारी मैंने जानबूझ कर मंगवाई थी। मेरी शंकाओं की इससे पुष्टि मिलती है।"

"इस बार आने वाली सर्दियां महा भयंकर होंगी,यही कहना है न तुम्हारा ?" राजीव और डॉ. वसंत की पहचान अब यारी में बदल चुकी थी।

"यार, तुझमें जो दूरदृष्टि है, काश, मेरे वैज्ञानिक साथी-सहयोगियों में भी होती ! किन्तु इन सब लोगों के पूर्वाग्रहों के सामने किसकी चली है ? साल भर में मरो बच्चो, अपनी बला से ! मेरा क्या जाता है !" डॉ. वसंत चिटणीस ने उद्वेग से कहा।

"सच बता वसंत, क्या अगला साल वास्तव में इतना भयंकर होगा ? इस दुष्ट-चक्र को थामने का कोई उपाय तो होगा तेरे पास ?"

"लेकिन मैं बताने वाला नहीं हूं। आने दो इन वैज्ञानिकों को मेरे पास दामन

फैलाए। जब नाक रगड़ेंगे न,तब बताऊंगा उपाय। किंतु सुनो राजीव, मेरी सलाह मानो और अगले साल इंडोनेशिया चले जाओ। भूमध्य रेखा के पास ही बचने की कुछ गुंजाइश है। मैं तो बांडुंग जाने ही वाला हूं।"

"

++ ++ ++

इंसान ने तकनीकी विकास में निःसंदेह नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, लेकिन, प्राकृतिक प्रकोप के आगे किसी की कुछ नहीं चलती।

बंबईवालों ने २ नवंबर को एक बड़ा अपूर्व दृश्य देखा। आकाश में पूरा दिन पक्षियों का तांता लगा हुआ था। वायुसेना की किसी कवायद की भाँति ये पक्षी अत्यंत अनुशासन में उड़ रहे थे। भिन्न-भिन्न जाति के पक्षियों के साथ हर रोज दिखने वाले कौए-चिड़ियां भी गायब हो रहे थे।

उन सभी पक्षियों को दक्षिण की ओर जाते देख राजीव का कलेजा कांप गया।

४ नवंबर को अंतरिक्ष में स्थिर अनेक उपग्रहों से खतरे के संदेश आने लगे—"पृथिवी के इर्द-गिर्द वायुमण्डल में हिमपात के आसान नजर आ रहे हैं। अगले चौबीस घंटों में जगह-जगह बर्फ गिरने की संभावना है।" एक तरफ देश-विदेश के मौसम विभाग अपनी इस पूर्वसूचना पर गर्व अनुभव कर रहे थे, लेकिन उनकी सूचना से पहले ही पक्षियों को खतरे का अंदाजा आ चुका था और वे भूमध्य रेखा तक सुरक्षित पहुंच चुके थे।

उनकी एकता और अनुशासन यदि मानव जाति में होती तो विभिन्न देशों में भारी भगदड़ न मची होती। तकनीकी लिहाज से, जापान, यूरोप, रूस, कनाडा जैसे प्रगत राष्ट्र भी इस हिमपात का मुकाबला नहीं कर सके। अनेक शहर में पन्द्रह से बीस फुट तक बर्फ गिरी थी। इतने भीषण हिमपात ने चारों तरफ तबाही मचा दी। सिर्फ कुछ ही लोग इस तबाही से अपने आपको बचा सके थे। ये सभी लोग उन शेल्टरों में थे जो अणु-युद्ध से बचने के लिए बनाये गये थे। मध्यपूर्व, एशिया, मैक्सिको जैसे देशों में ठंड का आघात कम था। लेकिन चूंकि उनके पास बचाव का कोई जरिया नहीं था इसलिए वहां भी जान-माल की भयंकर हानि हुई थी।

राजीव शाह मद्रास जा बसा था। वहां हिमपात का प्रभाव कम तो था लेकिन आगे का कोई भरोसा नहीं था। हिमपात को असंभव मानने वाले विशेषज्ञ चुप्पी साधे थे। भारी हिमपात ने बहुतों को हमेशा के लिए सुला दिया था। अमरीकी ऊर्जा समिति के सदस्य रिचर्ड होम्स ऐसी ही विचारधारा के एक विशेषज्ञ थे। उन्होंने वॉशिंग्टन से मियामी स्थलांतर कर लिया था। वे अपने ऑफिस में बैठे थे कि अचानक फोन की घंटी बजी—

"कौन ? शाह ? अच्छा अच्छा राजीव शाह .....। कहिए, वहां बर्फ का क्या हाल ह ? भाग्यशाली हैं आप ..... हां-हां, मैं डॉ. चिटणीस को जानता हूं। दरअसल मुझे भी उन्हीं की तलाश है। लेकिन वे हैं कहां ? दिल्ली, बंबई के तो फोन ही नहीं लगते।"

"वैसे भी वहां फोन लगाना मुश्किल ही होता है।" राजीव अपने से ही बोला। लेकिन होम्स से उसने कहा, "डॉ. चिटणीस बांडुंग में हैं। और वे हमेशा कहते थे कि

इस विपदा का उपाय है। इसलिए मैं चाहता हूं कि हमें उनसे सलाह लेनी चाहिए।"

इस हिमपात ने होम्स के विचार भी बदल डाले थे। वरना राजीव की इस सूचना को वे तुरन्त अमान्य कर देते। वसंत चिटणीस तीन-चार सालों से जिस हिमप्रलय की पूर्वसूचना दे रहे थे वह तो आन खड़ा था। इसलिए, इससे बचने का उनके पास यदि उपाय है, तो उस पर विचार होना ही चाहिए। होम्स ने बात मान ली और दो ही दिन बाद राजीव शाह को लेकर होम्स बांडुंग गए। लेकिन क्या हम वास्तव में इस विपदा पर विजय पा सकेंगे ? उनके मन में अभी भी थोड़ी शंका थी।

"कहिए रिचर्ड ! क्या हाल है तुम्हारे वॉशिंग्टन का ?"हाथ मिलाते हुए डॉ. वसंत ने कहा।

"इंसान तो क्या,पंछी भी वहां नजर नहीं आते .... सच पूछिए तो वे हमसे कहीं अधिक समझदार निकले। वे तो पहले ही शहर छोड़ गए थे।" मुंह लटकाए होम्स कह रहे थे।

"अरे भई वसंत, तुम तो इस शांत जगह आराम से बैठे हो। लेकिन दुनिया में कितना तहलका मचा है, कोई खयाल है तुम्हें ? ये रहे आज के कुछ टैलेक्स।" राजीव शाह ने वे वसंत को थमाए।

"ब्रिटिश सरकार ने अपनी बची हूई जनता के ४०% लोग केनिया में स्थलांतरित किए हैं। स्थलांतरण का यह कार्यक्रम दो महीनों में पूरा होजाएगा।" "मास्को तथा लेनिनग्राद खाली किये जा चुके हैं—सोवियत प्रधानमंत्री की घोषणा।" "जमीन के नीचे बनाई बस्तियों में हम एक साल रह सकते हैं—इजराइली अध्यक्ष का विश्वास।" "उत्तर भारत की सभी नदियां जम चुकी हैं।"

डॉ. वसंत के दिल में कुछ और, चेहरे पर कुछ और था। उसने शांति से सारे टैलेक्स पढ़े और पूरे गठ्ठे पर एक नजर दौड़ाकर कहा, "यह तो केवल शुरूआत है। पिछले वर्ष सिर्फ इसकी झलक मिली थी। किंतु अगले साल पृथिवी मनुष्य-हीन हो जाएगी।"

"क्या अब इस से बचाव का कोई उपाय नहीं ?" होम्स ने पूछा।

"वैसे तो अब बहुत देर हो चुकी है। इसलिए कुछ कहा नहीं जा सकता। हां, पिछले साल बहुत-कुछ किया जा सकता था। लेकिन फिर भी एक प्रयत्न किया जा सकता है।"— कहकर डॉ. चिटणीस ने अपनी दराज से एक टंकलिखित लेख निकाला। उसका शीर्षक था—'अभियान : इन्द्र पर आक्रमण'।

चिटणीस और होम्स की मुलाकात हुए छह महीने बीत चले। हिमयुग अपने पांव पसार रहा था। उत्तर-दक्षिण में २०° अक्षांश से अधिक वाले इलाकों में बर्फ का साम्राज्य हो चुका था। किंतु भूमध्य रेखा की दोनों ओर १०° अक्षांश की एक ऐसी पट्टी थी जहां अभी भी हरियाली नजर आ रही थी। इसी पट्टी पर हिमप्रलय का प्रतिकार करने का अंतिम प्रयास होना था। कन्याकुमारी से थोड़ी दूरी पर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र का अग्निबाण प्रक्षेपण-स्थल था। वहां अनेक वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञ एकत्रित हो रहे थे।

"तो करें शुरू ?" प्रकल्प के प्रमुख तंत्रज्ञ ने पूछा।

"हां, यदि आप तैयार हों, तो दबाइए बटन—"वसंत चिटणीस ने कहा। मुहूर्त आदि पर उसका कोई विश्वास नहीं था।

बटन दबाते ही एक के बाद एक अग्निबाण अंतरिक्ष की ओर लपक पड़े। इस बार इन अग्निबाणों का उद्देश्य तापमान पर नियंत्रण पाना था,न कि तापमान या मौसम का पूर्वानुमान बताना।

पूर्वी तट पर श्रीहरिकोटा से भी उपग्रह छोड़े जाने वाले थे। श्रीलंका, सुमात्रा, केनिया, ग्वाटेमाला आदि अनेक स्थानों से वातावरण पर आक्रमण होने वाला था। डॉ. चिटणीस की ही सारी योजना थी, इसलिए पहला हमला उन्होंने ही बोला। इस अभूतपूर्व आक्रमण के समाचार लगातार उनके पास रखे अनेक उपकरणों पर झलक रहे थे। उन्हें देख डां. चिटणीस का चेहरा खिल उठा। वे संतुष्ट थे। 'हॉट लाइन' पर उन्होंने घोषणा की—"पहला हमला सफल हुआ है, अब सभी आगे बढ़ सकते हैं।"

और भूमध्यरेखा पर स्थित अन्य अनेक देशों से अग्निबाण छोड़े गए। विशालकाय गुब्बारे तथा उपग्रह अंतरिक्ष में लपक रहे थे। साथ ही ऊंची उड़ानें भरने वाले हवाई जहाजों ने भी उड़ानें भरीं। इस प्रकार चतुरंगी सेना ने वायुमण्डल पर जबरदस्त हमला बोल दिया। अंतरिक्ष में भूस्थिर उपग्रह दूरदर्शन पर इस आक्रमण के दृश्य भेज रहा था।

"कुछ पराक्रमी राजाओं ने इन्द्र पर चढ़ाई की थी ऐसा हमारी पौराणिक कथाओं में लिखा है। वही बात आज के आक्रमण को देख कर याद आ रही है," "लेकिन क्या आज की यह चढ़ाई सफल होगी ?" राजीव शाह अपनी डायरी में लिख रहा था।

यही सवाल दुनिया के विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों को भी सता रहा था। इस योजना के तहत सूर्य की उष्णता को अपने में समा कर पृथिवी तक पहुंचाने वाले असंख्य धातु-कण वायुमण्डल में बिखरने वाले थे। वसंत का विचार था कि ज्वालामुखी द्वारा फैले उष्णता-प्रतिबंधक कण नीचे आ जायेंगे और ये धातु-कण उनका स्थान ले लेंगे। लेकिन, यह काफी नहीं थी। वातावरण में ऊर्जा-निर्मिति आवश्यक थी। 'हीरे की धूल' कम करने के लिए वातावरण का अस्थायी तौर पर गर्म होना भी जरूरी था। इसलिए प्रक्षेपण अस्त्रों द्वारा किए जाने वाले विस्फोटों का उपयोग किया गया। उनकी विघातक शक्ति का स्थान धीमी गति से आग उगलने वाले विस्फोटों ने ले लिया। वैसे तो ये अस्त्र एक-दूसरे का नाश ही करते। लेकिन परिप्रेक्ष्य बदलते ही उनकी उपयोगिता भी बदल गई। अपनी सारी साधन-सामग्री दांव पर लगा कर, आपसी अदावत भुला कर सभी देशों ने इस कार्य में मदद की थी। लेकिन फिर भी, सभी इस कशमकश में उलझे थे कि क्या यह आक्रमण सफल होगा ?

सितंबर में इस प्रश्न का उत्तर मिलने लगा। उत्तरी हिन्दुस्तान में जमी बर्फ पिघलने लगी। फ्लोरिडा से कैलिफोर्निया के बीच की जमीन बर्फ के सफेद बुरखे से धीरे-धीरे झांक रही थी। आखिर बर्फ पिघलने लगी थी।

मियामी से होम्स ने फोन किया—

"बधाई हो ! वसंत चिटणीस ! बधाई ! इन्द्र पर आक्रमण सफल हुआ है। तापमान बढ़ रहा है और 'हीरे की धूल' भी कम हो रही है।"

वसंत चिटणीस संतुष्ट थे लेकिन एक दूसरी ही चिंता उन्हें सताने लगी थी।

प्रकृति और इंसान के बीच छिड़े युद्ध में इंसान की जीत तो हुई थी , लेकिन अब उसे अनेक समस्याओं का सामना करना था। बर्फ पिघलने से 'न भूतो न भविष्यति' बाढ़ आने वाली थी। पृथिवी की जन-संख्या आधी हो चुकी थी। अनेक बहु मूल्य चीजें इस आक्रमण में नष्ट हो गई थीं। जिस एकता का परिचय इंसान ने इन्द्र पर आक्रमण के दौरान दिया था, क्या उसीका परिचय वह पुनर्निर्माण कार्य में देगा ?" यह सोच कर वसंत के पसीना छूट रहा था। पिछले दो सालों में पहली बार उसे पसीना आ रहा था।

[सर फ्रेड हायल के ICE में दिए वैज्ञानिक तर्क पर आधारित]

ट्रोजन हॉर्स

जैक्सन के कंट्रोल पैनल की लाल लाइट अचानक टिमटिमाने लगी। साथ ही कंट्रोलर को सचेत करने वाली डबल प्रिकॉशन की बीssप बीप बीssपबीप की आवाज भी आने लगी।

स्पेस-सेंसर बंबर ६ (SS-6) में जैक्सन अपने तीन सहयोगियों के साथ पृथिवी के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा था। अंतरिक्ष की निरंतर निगरानी रखने के काम पर इन चालकों की छह घंटों की ड्यूटी होती थी। शुरू के और आखिरी तीस मिनटों में दो चालक होते थे—एक आनेवाला और एक जानेवाला। किसी अनपेक्षित परिस्थिति में ही इस रुटीन को बदला जाता था।

क्या आज की परिस्थती ऐसी थी ? लाल लाइट और वह आवाज, पृथिवी के आस-पास किसी अपरिचित वस्तु के आने की सूचना दे रही थी।

सन् २०५० में पृथिवी के इर्द-गिर्द कई अंतरिक्ष यान घूमा करते थे। उनमें से अधिकतर यानों का ब्यौरा संगणक में होता था। इस ब्यौरे के अतिरिक्त किसी यान के आते ही वह लाइट जलती और आवाज आती थी। ऐसा होता कम था। लेकिन असंभव नहीं था, क्योंकि कई राष्ट्रों के 'गुप्त' यान अंतरिक्ष में मंडराया करते थे। उनकी जानकारी SS यान के पास न सही, लेकिन पृथिवी के युनाइटेड स्पेस फेडरेशन (USF) के भव्य कंप्यूटर के पास अवश्य होती थी। कंप्यूटर को दी जाने वाली जानकारी अत्यंत गुप्त रखने के लिए सभी राष्ट्रों ने अपने प्रहरी-संकेत बना रखे थे। ये या तो शब्द होते या कोई संख्या। इससे एक-दूसरे के यान छिपे रहते थे। कंप्यूटर में रिकार्ड किए बिना कोई भी राष्ट्र अपना यान अंतरिक्ष में छोड़ नहीं सकता था, क्योंकि ऐसा करने पर USF को उसे जला कर भस्म करने के अधिकार थे।

पृथिवी के कंप्यूटर को जैक्सन ने इस अपरिचित यान की जानकारी भेजी। और तुरंत ही 'इस यान का कोई रिकार्ड हमारे पास नहीं' ऐसा जवाब उसे मिला।

यहीं से शुरू हुआ अनसोची घटनाओं का सिलसिला।

जैक्सन ने अपने दो सतर्क सहयोगी गुप्ता और टाकेनो को बुलाया। SS-6 में बैठा चौथा यात्री खर्राटे भर रहा था।

स्थिति समझाते हुए जैक्सन ने सहयोगियों से कहा, "USF वालों ने सभी राष्ट्रों को अत्यावश्यक संदेश भेजे हैं कि, यह अपरिचित यान जिस किसी भी राष्ट्र का हो, तुरंत हां कह दे, वरना अगली कार्रवाई कर दी जाएगी।"

"आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ था। खैर, देखते हैं अब क्या सूचना मिलती है ?" गुप्ता ने कहा। जैक्सन के बाद वही ड्यूटी पर आने वाला था।

सब की उत्सुकता चरम सीमा पर थी।

बाहर से शांत नजर आ रहे जिनीवा के USF मुख्यालय में बहुत खलबली मची

थी। और इसकी कल्पना चंद लोगों को ही थी। सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की एक आपात बैठक बुलाई गई थी।

अध्यक्ष ने कहा, "दोस्तो ! पृथिवी के पास एक ऐसा यान आया है जिसका न तो कहीं कोई रिकार्ड है और नहीं किसी ने उसकी जिम्मेदारी ली है।" सदस्यों की चुलबुलाहट और आपसी कानाफूसी को रोकते हुए उन्होंने आगे कहा, "यान की जानकारी रिकार्ड करने की पद्धति तीस साल पहले शुरू की गई थी। कुछ राष्ट्रों को उनके असहयोग की कीमत चुकानी पड़ी थी, क्योंकि बिना रिकार्ड वाले यान नष्ट कर दिए गए थे। तब से आज तक USF को सबका समर्थन मिल रहा है। इन तीस सालों में कभी ऐसी परिस्थिति पैदा नहीं हुई थी। इसलिए शीघ्र ही इस यान के बारे में कोई निर्णय लेना होगा—हमारे पास वक्त बहुत कम है।"

"यह यान किस मार्ग से आ रहा है और कहां तक पहुंचा है ?" एक प्रतिनिधि ने पूछा—

"SS-6 के अनुसार यह यान मंगल और पृथिवी के बीच की कक्षा में है और पृथिवी की ओर अग्रसर हो रहा है। अपने डेस्क के टी.वी. स्क्रीन पर आपको हम यान की कक्षा दिखा सकते हैं।" और अध्यक्ष ने वह जानकारी दी।

"मुझे लगता है यह यान कल चंद्रमा की कक्षा में जाकर दो दिन बाद अपने SS-6 यान की कक्षा तक आ पहुंचेगा।" एक वैज्ञानिक ने कहा।

"आप बिल्कुल सही फरमा रहे हैं", डॉ. फ्लेमिंग प्रशंसा-भरे शब्दों में USF के सक्रेटरी ने कहा। कंप्यूटरों के जमाने में अपने दिमाग पर जोर देकर गणित हल करने वाले बहुत थोड़े हैं। डां. फ्लेमिंग की बात ही और थी। वे तो सौ साल पहले भी अलग से चमकते। सेक्रेटरी ने कंप्यूटर से उस यान की कक्षा की दो-तीन दिन की जानकारी सबको दी। प्रतिनिधियों में वाद-विवाद और मंत्रणाएं जोरों पर थी। लेकिन चित्र स्पष्ट नहीं हो रहा था। आखिरकार डॉ. फ्लेमिंग ने बोलना शुरू किया—

"हमारे सामने दो पर्याय हैं। सबसे आसान और कम से कम खतरे वाला उपाय है यान का सर्वनाश। लेकिन मेरी वैज्ञानिक प्रवृत्ति को यह पसंद नहीं। यह यान किसका है ? कहां से आया है ? उसमें क्या है ? यह जाने बगैर उसको उड़ा देने से अच्छा है हम उसका नजदीक से निरीक्षण करें। मुझे लगता है, यह यान पृथ्वी के बाहर से आया है। गौर निरीक्षण के समय खतरा नजर आया तो हम उसे नष्ट कर देंगे—लेकिन मैं चाहता हूं, नष्ट करने का पर्याय अंतिम हो।"

"मगर निरीक्षण करते ही खतरा नजर आया तो ?" अध्यक्ष ने सभी के मन की बात कही थी।

"खतरा तो हमें उठाना ही पड़ेग।" डॉ. फ्लेमिंग ने कहा। "खतरों से खेलकर ही तो हम आज इस मुकाम तक पहुंचे हैं। किन्तु खतरे से खेलते समय भी सूझ-बूझ से काम करना पड़ेगा। मसलन, यदि हम इस यान का चित्रीकरण रिमोट सेंसिंग द्वारा करें, तो क्या हर्ज है ?"

स्पेंस-सेंसर विभाग-प्रमुख ने भी सहमति दर्शाई। SS यानवालों के साहस पर

किसी को शक नहीं था; बल्कि उनकी तो हमेशा यह शिकायत रहती थी कि उन्हें कुछ करने का मौका ही नहीं मिलता।

'हां—ना' करते, डॉ. फ्लेमिंग की बात मान ली गई।

"तुम बड़े ख़ुशक़िस्मत हो, गुप्ता!" जैक्सन ने कहा। "हम तो बैठे-बैठे सिर्फ चक्कर काटेंगे और तुम एक्स के फोटो निकालोगे!" उस यान का नाम 'एक्स' रखा गया था।

"अरे, नहीं भाई! सब तकदीर का खेल है।" गुप्ता का स्वर शांत था। "बात तो सिर्फ इतनी है कि एक्स के चित्रीकरण का फैसला हुआ तो ड्यूटी पर मैं था।" और वह सफर की तैयारी में जुट गया।

चित्रीकरण का सामान उसने एक स्पेस कैपसूल में भर लिया। खाने-पीने की दो दिन की सामग्री तथा स्वरक्षण के लिए जरूरी कुछ शस्त्र भी साथ लिए। फिर टॉकेनो को चार्ज देकर वह चल पड़ा।

स्पेस कैपसूल, याने एक छोटासा हल्का-फुल्का यान, जिसे बहुत कम रॉकेट पॉवर की आवश्यकता होती थी और एक हफ्ते के लिए पर्याप्त ईंधन उसमें होता था। छोटी-मोटी खेपों के लिए उसका प्रयोग किया जाता था। गुप्ता ने कंट्रोल-कंप्यूटर को एक्स की भ्रमण-कक्षा की जानकारी दी और कैप्सूल ने पीछा शुरू किया। उसका अनुमान था कि एक्स के सामने पहुंचने के लिए अठारह घंटे लगेंगे। इसलिए आठ घंटों का अलार्म लगाया, ताकि बीच में थोड़ा सो सके।

समय आते ही एक्स उसके टी.वी. स्क्रीन पर प्रकट हुआ। एक किलोमीटर की दूरी पर उसने अपने कैप्सूल की दिशा बदल डाली। और इतनी ही दूरी से चक्कर लगाने की व्यवस्था भी की। एक्स यान छोटा सा था। गुप्ता को लगा कि उसे कहीं देखा है, लेकिन कुछ ठीक से याद नहीं आ रहा था!

उसने चित्रीकरण का सामान निकाला।

चित्रों को देखते हुए डॉ. फ्लेमिंग ने कहा, "देखिए तो कैसे संयोग की बात है! क्या आपमें से कोई पहचानता है इस यान को?" सहयोगियों की मुद्रा देख उन्होंने कहा, "आज कल के तुम लोग— कभी पुराना साहित्य पढ़ते हो? यदि पढ़ा होता तो यह हाल न होता! दोस्तो, यह पृथिवी का ही पायोनियर —१० यान है। सन् 1972 में इसे छोड़ा गया था।"*१ अपना गृहमंडल लांघ कर यह यान आकाशगंगा के अन्य तारों की कक्षा में चला गया था। लगता है, आज वह लौट रहा है।"

"इस यान को भेजने का कारण क्या था?" एक सहयोगी ने पूछा।

"जरा सोचिए कि कोई डूबने वाला व्यक्ति बोतल में अपना अता-पता लिखकर उसे समुद्र में क्यों फेंकता है? इसलिए न कि कोई बोतल देख उसे ढूंढ़ निकाले? बस, यही बात यहां भी है!" फ़्लेमिंग लाइब्रेरी से पायोनियर१० के कागजात लाए थे। उन्हें सामने रखते हुए उन्होंने कहा, "बाहर से खींचे गए ये फोटो मूल यान से कितने मिलते-जुलते

*१—पायोनियर—१०, यान ३ मार्च १९७२ को केप केनेडी से रवाना हुआ था। ३ दिसंबर, १९७३ के आसपास वह गुरु के पास था। तथा हमारा ग्रहमंडल लांघकर वह दूर तक जा सके ऐसी उसमें व्यवस्था की गई है।

हैं। और यह देखिए,'क्ष' और 'गामा' किरणों द्वारा लिए गए यान के भीतरी हिस्से के फोटो। सारी सामग्री पॉयोनियर—१० की ही तो है।"

"किंतु यह चित्र वाला फलक किसलिए है ?" किसी ने पूछा। फ़्लेमिंग की तरह सभी रोमांचित थे।

"इस फलक पर हमारी पृथिवी से संबंधित जानकारी 'बायनरी कोड' (मतलब १ और ० पर आधारित गुप्त संदेश) में दी गई है। हमारा ग्रह सूर्य से तीसरा है और यही से यह यान भी छोड़ा गया था। ये तस्वीरें देखो, बात साफ हो जाएगी। पल्सार्स की दिशा से सूर्य का स्थान भी दर्शाया गया है। और-तो-और, पृथ्वी के स्त्री-पुरुषों के भी चित्र हैं।"

"किंतु पृथ्वी का लम्बा चक्कर काट कर पुनः वापस आने की यान में क्या कोई व्यवस्था की गई थी ?"

"जी नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं ! इसीलिए मैंने शुरू में 'संयोग की बात है' ऐसा कहा था। पर लगता है,वह मेरी भूल थी ! यान के लौटने में शायद ही संयोग की बात हो।" कुछ सोचते हुए फ़्लेमिंग ने कहा।

"क्या मतलब ?"

"मुझे तो पूरा यकीन है कि अंतरिक्ष में भेजा गया यह यान हमारी तरफ आया नहीं, भेजा गया है ! किसी विकसित संस्कृति को वह मिला होगा और उन्होंने 'कोड' सुलझा कर हमारा पता ढूंढ़ निकाला और उसे हमारे पास भेज दिया। यान को ज्यूं का त्यूं भेजने में उस संस्कृति ने दोस्ती का इजहार किया ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि हमारे फोटो में यान का कोई हिस्सा छिपा नहीं है। निश्चय ही वापिस भेजा गया यह पायोनियर —१० यान ही है। आप चाहें तो तकनीकी उपकरणों से फोटो की जांच कर सकते हैं। तब तक चार घंटे मैं सोना चाहूंगा।" फ़्लेमिंग को पिछले २४ घंटों में नींद नसीब नहीं हुई थी।

आंखें मलते हुए, चार घंटे बाद फ़्लेमिंग उठे। उनका इच्छा-शयनी स्वभाव ऐसी स्थितियों में बड़ा फायदेमंद साबित होता था। मुंह-हाथ धोकर उन्होंने एक कप कॉफी ली। ऑफिस जाने ही वाले थे कि अचानक उनका दस साल का बेटा टॉम दौड़ा-दौड़ा आया।

"डैडी ! ट्रोजन हॉर्स का क्या मतलब है ? मैंने एक कहानी में यह शब्द पढ़ा था। लेकिन मैं इसका अर्थ नहीं समझ पाया।"

"बेटा, उसकी तो बहुत बड़ी कहानी है, फिर कभी फुरसत में सुनाऊंगा। फिलहाल इतना ही समझ लो कि ग्रीक लोगों ने ट्रॉय नामक एक शहर पर हमला किया था। ट्रॉय ने जबरदस्त मुकाबला किया। अंत में हमलावरों ने एक नकली घोड़ों में अपने योद्धा भेजे और छल से ट्रॉय को जीत लिया था।"

"बेखबर शत्रु के क्षेत्र में छल से प्रवेश पाने को ही 'ट्रोजन-हॉर्स' कहते हैं न ?" टॉम ने पूछा। उसका थोड़ा-बहुत समाधान तो हो गया था। "लेकिन आपको सारी कहानी बतलानी होगी। ठीक है ?"

"बिल्कुल ठीक ! कल ही सुनाऊंगा।" अचानक डॉ. फ़्लेमिंग के मन में एक शक पैदा हो गया और वे तेजी से ऑफिस की ओर चल पड़े।

USF के मुख्य 'कॉन्फ्रेंस रूम' में एक सभा चल रही थी, तभी डॉ. फ्लेमिंग ने तेजी से रूम में प्रवेश किया।

"आइए डॉ. फ्लेमिंग। अभिनंदन ! आपके बताए उपाय से हमें पायोनियर —१० वापस मिल गया। वरना हम तो उसे बाहर ही नष्ट कर देते।" अध्यक्ष ने कहा ;"अब हम उसे पूरे सामान के साथ पृथ्वी पर लाने वाले हैं।"

"रुकिए ! आप सब ने मेरी बात मानी, शुक्रिया। लेकिन मुझे और भी कुछ कहना है, यदि आप उसे सुनें तो बड़ी मेहरबानी होगी। इस यान को पृथ्वी पर लाने से पूर्व इसकी पूरी छानबीन होना आवश्यक है, क्योंकि यह जरूरी नहीं कि यान भेजने वाले हमारे मित्र ही हों।" डॉ. फ़्लेमिंग ने कहा।

"किंतु आप और आपके सहयोगियों ने यांत्रिक उपायों से फोटो की पूरी जांच की थी। और आपको कोई संदेहास्पद बात भी नजर नहीं आई थी, है न ? आप कहें तो और फोटो भी मंगवाए जा सकते हैं, क्योंकि गुप्ता अब भी यान के इर्द-गिर्द चक्कर काट रहा है।" अध्यक्ष ने कहा।

"नहीं, एक अलग किस्म की जांच होना जरूरी है। माफ कीजिए, आपकी इजाजत लेने से पहले ही मैंने वह शुरू भी कर दी है। पायोनियर —१० तेजी से पास आ रहा है। इसलिए एक-एक क्षण बड़ा कीमती है।" अध्यक्ष की ओर देखते हुए फ़्लेमिंग ने कहा। "हाल ही में बनाई गई इलेक्ट्रॉन बीम फोटोग्राफ के सभी उपकरणों सहित टाकेनो को SS-6 से मैंने उधर भेज दिया है।"

"लेकिन उससे नया क्या दिखेगा ? फोटो, रोशनी के बदले इलेक्ट्रॉन्स के जरिए निकलेंगे, यही न ?" एक प्रतिनिधि ने कहा।

"यदि ऐसा होगा तो मैं कहूंगा कि यह पायोनियर यान वास्तविक है। वरना ...."

"वरना क्या ?"

"वरना वह ट्रोजन हॉर्स है, ऐसा मैं कहूंगा।" डॉ. फ़्लेमिंग ने कहा। श्रोता ग्रीक पौराणिक कथाओं से परिचित नहीं थे, इसलिए वे अचरज में पड़े थे।

"तभी अध्यक्ष के सामने रखा फोन बजने लगा। उन्होंने रिसीवर उठाया, बात सुनी और उसे रख दिया। वे शांति स्वर में बोले—

"दोस्तो, टाकेनो ने संदेश भेजा है कि इलेक्ट्रॉन बीम से निकाले फोटो ब्लैक आए हैं !"

सब फ़्लेमिंग की ओर देखने लगे।

"इसका मतलब मेरा अंदाजा सही था ! वह यान हमारा भेजा हुआ नहीं है। वह तो एक एंटीमैटर"[१] की प्रतिकृति है !"[१] उसके ऊपर किसी चीज का आवरण होगा जो आस-

*१ आधुनिक विज्ञान के अनुसार मैटर और एंटीमैटर के गुण एक-दूसरे के विरुद्ध होते हैं। प्रकाश के साथ दोनों कही एक ही प्रक्रिया होती है। मैटर और एंटीमैटर की बनी वस्तुएं एक ही जैसी दिखती हैं। उनके भौतिक गण समान होते हैं। किंतु मैटर और एंटीमैटर दोनों पास आते ही एक-दूसरे को नष्ट करके ऊर्जा पैदा करते हैं। हमारी पृथ्वी या ग्रहमंडल मैटर के बने हैं, इसलिए एंटीमैटर यहां ज्यादा देर टिक नहीं सकते।

पास के मैटर से उसका संपर्क नहीं होने देता। यह आवरण किस चीज का होगा, हमें अभी पता नहीं है। किंतु तारीफ करनी होगी उन वैज्ञानिकों की, जिन्होंने मूल यान की बेमिसाल प्रतिकृति बनाई और उस पर एंटीमैटर का आवरण लगाया। वाकई ! उनकी तकनीक हम से बहुत अधिक विकसित है। मैटर और एंटीमैटर पर प्रकाश का एक सा प्रभाव पड़ता है। इसलिए यान के अंदर के फोटो हम आसानी से निकाल सके। पर इलेक्ट्रॉन बीम इस आवरण को चीर न सका, इसलिए वे सारे फोटो काले आए। इलेक्ट्रॉन भी मैटर के ही बने होते हैं ....।

"अत: दोस्तो यह यान दोस्ती के इरादे से बिल्कुल नहीं आया। पृथ्वी पर उसका स्वागत किया गया तो हम अपना सर्वनाश करेंगे, क्योंकि यान के खुलते ही मैटर और एंटीमैटर के संपर्क से बहुत बड़े पैमाने पर ऊर्जा पैदा होगी। इतनी कि हमारे परमाणु अस्त्रों की ऊर्जा उसके सामने फीकी पड़ जाएगी।" डॉ. फ़्लेमिंग बोले।

"तो फिर यान किस तरह नष्ट किया जाए ?"

"यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है। अंतरिक्ष में ही हम इस यान को खोलकर उस पर मैटर की बरसात करेंगे। लेकिन इस काम में अब जरा भी देर करना उचित न होगा।"

योजना के मुताबिक सब-कुछ संपन्न हुआ। उस बनावटी यान का नाश एक जोरदार धमाके के साथ हुआ। पृथ्वी पर सबने उसे देखा। सौभाग्य से इसके कोई दुष्परिणाम नहीं हुए।

"चलो भई, जान छूटी ! धन्यवाद , डॉ. फ़्लेमिंग ! आज आपने पृथ्वी को बचा लिया !"

डॉ. फ़्लेमिंग फिर भी चिंतित थे। सर्वनाश टल तो गया था, लेकिन यह राहत थोड़ी ही देर की है,यह बात उन्हें बेचैन कर रही थी।

विस्फोट

अतीत

"महाराज की जय हो!" द्वारपाल के अंदर आकर सूचना दी—"भिक्खु सारिपुत्त आप से मिलने आए हैं।"

सम्राट हर्षवर्धन सुदक्ष अमात्य से कोई चर्चा कर रहे थे। और ऐसे मौकों पर उनसे कोई मिल नहीं सकता था। अमात्य तो क्या, महारानी को भी तब उनसे मिलने की अनुमति नहीं थी। सभी द्वारपालों को ऐसे ही आदेश दिए गए थे। लेकिन नियमों के अपवाद भी होते हैं। भिक्खु सारिपुत्त उन अपवादात्मक आगंतुकों में से एक थे जिन्हें पाबंदी के ये नियम लागू नहीं थे, क्योंकि वे राजधानी में महायान पंथ के प्रमुख थे। और सम्राट ने भी उसी पंथ को अपना लिया था। किंतु सारिपुत्त ने अपने ऊंचे पद का राजनैतिक मामलों में दखलअंदाजी के लिए कभी उपयोग नहीं किया। बल्कि उन्होंने तो राजधानी से दूर एक आश्रम बनाया था। और गत बीस वर्षों से वे गौतम बुद्ध का दर्शन वहां सिखा रहे थे। उनका कहना था कि विद्वानों एवं अभ्यासकों को राजमहल में अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए। उनकी बुद्धिमत्ता में ऐसी कशिश थी कि सम्राट स्वयं मन:शांति के लिए उनके पास खिंचे जाया करते थे।

तो फिर आज, अपनी ही प्रथाओं के विरुद्ध राजमहल में इतनी जल्दी-जल्दी उनका आना किस बात की सूचना देने वाला था ? हड़बड़ा कर यही सोचते हुए सम्राट भी बाहर आए।

"भंते, आपका स्वागत है ! आप और आपके आश्रमवाले सब कुशल से तो हैं न ? कोई गलती हुई हो, तो क्षमा चाहता हूं।" सारिपुत्तजी को उच्चासन पर बैठाते हुए सम्राट ने कहा।

"राजन् ! जब तक तुम्हारा साम्राज्य है, आर्यावर्त में कोई अनुचित प्रकार हो ही नहीं सकता। तथा तुम्हारे शौर्य के झंडे तो दुनिया भर में लग चुके हैं। इसलिए प्रजा को भी किसी शत्रु से कोई खतरा नहीं है। रही बात मेरे और मेरे सहयोगियों की .... तो हम सब कुशल से हैं। मेरे यहां आने का उद्देश्य न तो कोई शिकायत करना है और न किसी चीज की अपेक्षा करना। मैं आया हूं केवल तुम्हें सावधान करने, सचेत करने .....।"

"किन्तु भगवन् !" ..... अमात्य सुदक्ष बीच ही में बोल पड़ा।

"अरे सुदक्ष ! भगवान् की उपाधि के मैं योग्य नहीं हूं। प्रसाद के शिखर पर बैठे कौए को यदि गलतफहमी हो जाती है कि वह गरुड़ है तो एकबारगी उसे क्षम्य माना जा सकता है, किन्तु मनुष्य को यह कदापि नहीं भुलाना चाहिए कि दिव्यत्व की ओर जाने वाले सोपान की सीढ़ियां अनगिनत होती हैं। अभी तो इस ज्ञान-मार्ग पर मैंने चलना प्रारंभ किया है।" .... हमेशा की भांति अपनी सौम्य वाणी से सारिपुत्त ने समझाया।

"क्षमा चाहता हूं भन्ते !" सुदक्ष झेंप-सा गया।

"अच्छा बताइए, किस बात की शंका है आपको ?"

"भन्ते, आप ही ने कहा था कि राज्य को न कोई बाहरी और न ही कोई भीतरी खतरा है। तो फिर यह सावधानी का संकेत किसलिए ?"

"अरे, हर्षवर्धन ! तुम्हारे पास जब तक सुदक्ष अमात्य जैसा राजनैतिक सलाहकार है, तुम्हें किसी और से सलाहा लेने की जरूरत ही नहीं है।" सुदक्ष की ओर देख मुस्कराते हुए सारिपुत्त ने आगे कहा, "किंतु राजन् ! मैं जिस खतरे के प्रति तुम्हें सावधान करने आया हूं वह इस पृथ्वी से नहीं, बल्कि अंतरिक्ष से आने की संभावना है।"

"अंतरिक्ष से ?" राजा और प्रधान अमात्यु दोनों एक साथ बोले।

"हां ! और यदि वह खतरा वास्तव में साकार होता है तो उसका दायर इतना विशाल होगा कि न केवल यह राज्य बल्कि पूरी पृथ्वी उसकी चपेट में आ जायेगी। खैर, आप लोगों की जिज्ञासा को और अधिक बढ़ाना ठीक नहीं होगा, इसलिए मैं सब-कुछ शुरू से बताता हूं।"

और सारिपुत्त ने अपनी ओजस्वी वाणी में बात शुरू की—

"आप सब तो जानते ही हैं कि मुझे जिनका नाम दिया गया है वे भिक्खु सारिपुत्त भगवान् बुद्ध के एक शिष्य थे। उन दोनों में कई विषयों पर चर्चा हुआ करती थी। भगवान् बुद्ध के ज्ञानामृत का बौद्ध धर्म के रूप में कई देशों में प्रसार हुआ। उनकी बातें सर्व सामान्य दर्शन सिखातीं और इंसान को मानसिक शांति प्रदान करती थीं। इसलिए इस धर्म का प्रचार भी तेजी से हुआ ......"

"गौतम बुद्ध से होने वाली चर्चाओं से सारिपुत्त ने अनुभव किया कि उनका ज्ञान मात्र दर्शन नहीं था। सारिपुत्त ने इन चर्चाओं का ब्यौरा लिख रखा था। वही ब्यौरा पीढ़ी दर-पीढ़ी आगे चलता गया और आखिर मेरे हाथ लगा। इन टिप्पणियों का संबंध मानव-जीवन या दर्शन से नहीं था, इसलिए वे ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो पाईं। कुछ भिक्खुओं ने उन्हें समझने की कोशिश की, किंतु अगम्य मानकर अपने प्रयत्न छोड़ दिए।"

"किंतु मुझे वह जानकारी काफी रोचक लगी, क्योंकि सारिपुत्त की भांति अंतरिक्ष के प्रति मुझे भी बड़ी जिज्ञासा है। सारिपुत्र और तथागत के बीच, आकाश में टिमटिमाने वाले तारों के बारे में हुई चर्चा के उद्धरण मैंने पढ़े हैं। यूनान और अरबिस्तान से प्राप्त खगोलशास्त्रीय जानकारी तथा आर्यभट के सिद्धांतों का अध्ययन करने के बाद मैं उन चर्चाओं को न केवल समझने लगा, बल्कि मुझे तो वे बहुत ही चित्ताकर्षक लगीं।"

"अच्छा, अब संक्षेप में, आज के प्रसंगानुरूप ही बात बताता हूं। मनुष्य जीवन में जिस प्रकार जन्म, बचपन, जवानी, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था और मृत्यु, विभिन्न चरण हैं, उसी प्रकार तारों में भी कालानुरूप परिवर्तन होते हैं। यह परिवर्तन उनके आंतरिक ढांचे में होते हैं लेकिन उनके परिणाम बाह्यरूप में स्पष्ट होते हैं। और इस परिवर्तन की गति इतनी धीमी होती है कि मानवीय जीवन के सौ सालों में भी उन परिवर्तनों का अहसास हमें नहीं हो पाता।"

"किंतु कभी-कभार यह परिवर्तन विस्फोट के रूप में भी होते हैं जिनके कारण

तारों में रचनात्मक असंतुलन पैदा हो जाता है। और अंदर के छोटे से कक्ष के अलावा पूरा तारा टुकड़े-टुकड़े होकर अंतरिक्ष में बिखर जाता है। इस विस्फोट के समय तारा इतना अधिक प्रकाशमान होता है कि वह दिन में भी देखा जा सकता है!"

"लेकिन यह सब क्यों होता है? कैसे होता है? इस बारे में कहीं कोई टिप्पणी मुझे नहीं मिली। शायद यह सोच कर कि यह कारण-मीमांसा समझना बहुत कठिन है, सारिपुत्त ने उसका कहीं उल्लेख ही नहीं किया। या फिर स्वयं तथागत को यूं लगा हो कि सारिपुत्त के लिए बात समझना कठिन होगा अत: उन्होंने ही कुछ बताया न हो। बात कुछ भी रही हो लेकिन मेरी जिज्ञासा खत्म नहीं हुई। यही नहीं, कभी-कभी तो इन घटनाओं की सत्यता-असत्यता पर भी शक होने लगता था। लगता था कि कहीं यह सब कविकल्पना तो नहीं? किंतु आज मेरी सारी शंकाओं का समाधान हो गया है—

"आज सुबह मैंने एक तारे का विस्फोट होते देखा है।"

एक साथ होश में आते हुए सम्राट और अमात्य ने कहा "तारे का विस्फोट? कितना बड़ा? उसमें से कितना प्रकाश निकलेगा? विस्फोट की कोई आवाज? और सबसे महत्त्व की बात—क्या इस विस्फोट से हमें कोई खतरा है?"

अपने श्रोताओं के मन में उठने वाले ये सवाल सारिपुत्त के लिए अपेक्षित ही थे। उन्होंने कहा—"मैं इस विषय का विशेषज्ञ तो हूं नहीं। इसलिए आपके सवालों का जवाब मैं दे पाऊंगा या नहीं, पता नहीं। किंतु मैंने जो कुछ पढ़ा है, उस हिसाब से इतना कह सकता हूं कि आने वाले कुछ दिनों में इस तारे का प्रकाश बहुत अधिक बढ़ेगा। और अगले डेढ़-दो वर्षों में धीरे-धीरे कम होगा। यह प्रकाश कितना होगा, मैं नहीं कह सकता; क्योंकि यह हमसे उसकी दूरी पर निर्भर करता है। हो सकता है कि उसके प्रकाश में इतनी वृद्धि हो कि वह रात का अंधेरा भी मिटा दे। अगले दो-चार दिनों में सबके लिए चित्र स्पष्ट हो जायेगा।"

"किंतु राजन्, मेरी एक बात ध्यान से सुनो। आने वाले चंद दिनों में आकाश में जो चमत्कार होने वाले हैं उनसे घबराना नहीं! आम जनता में किसी प्रकार की घबराहट न हो, इसके प्रति भी तुम्हें सजग रहना चाहिए। इसलिए अपना राज-काज पूरे धीरज से करो। लोगों को आश्वस्त करो कि वे डरें नहीं। जो कुछ होने वाला है उसमें कोई दैवी प्रकोप वगैरा नहीं है—और न ही किसी होम-हवनादि की जरूरत है। ऐसे अंधविश्वासों को पनपने से रोको।"

"अंतरिक्ष विशाल है। पृथ्वी से कहीं अधिक विस्तृत भी है। अत: वहां होने वाले छोटे-मोटे परिवर्तन भी पृथ्वी की तुलना में बहुत बड़े प्रतीत होते हैं। बस यूं समझो कि यह सृष्टि के ही नियम हैं।"

इसके बावजूद सम्राट की तेजस्वी मुद्रा पर गंभीरता की छाया उभर आई थी। उन्होंने कहा, "आपकी सूचनाओं का पालन करने का यह हर्षवर्धन हर संभव प्रयत्न करेगा। किंतु भन्ते, राजा तो प्रजा का पिता माना जाता है। और पिता की हैसियत से परिवार की चिंता करना तो स्वाभाविक है। इसलिए पूछना चाहता हूं—क्या आप इस बात की दुहाई दे सकते हैं कि इस विस्फोट से मेरी प्रजा को कोई खतरा नहीं होगा?"

"अपनी प्रजा पर अपार प्यार करने वाले तुम्हारे जैसे राजा से यह प्रश्न अपेक्षित ही था!" मुस्कराते हुए सारिपुत्त ने कहा। किंतु कुछ देर बाद वे स्वयं भी चिंतित नजर आ रहे थे। उन्होंने कहा, "अपने सीमित ज्ञान से मैं इतना कह सकता हूं कि राजन् कम से कम तुम्हारे राज्यकाल में कोई खतरा नहीं नजर आता, क्योंकि प्रकाश ही विस्फोट की जानकारी लाता है। पंचमहाभूतों द्वारा निर्मित इस विश्व में प्रकाश की गति सर्वाधिक है। प्रकाश तो आज यहां पहुंच चुका है, किंतु इस विस्फोट से निकलने वाले अन्य पदार्थ प्रकाश से कम गति से भविष्य में यहां पहुंचेंगे। तब तक तो तुम और तुम्हारे अनेक वंशज भी जीवित नहीं होंगे। आज की तुम्हारी प्रजा काल के गाल में समा चुकी होगी। इसलिए भविष्य की तुम चिंता मत करो।"

किंतु महाराज हर्षवर्धन अब भी संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने कहा, "किंतु भविष्य में तो इस विस्फोट से खतरा है न ? और यदि है तो उसे दूर करने के लिए क्या हमें अभी से प्रयत्नशील होना नहीं चाहिए ?"

सारिपुत्त पहली बार जोर से हंसे और बोले, "राजन् ! तुम्हारी चिंता स्वाभाविक है। किंतु अंतरिक्ष की विशाल घटनाओं के सम्मुख मानव-शक्ति अपर्याप्त है। अत: हमारे कोई भी प्रयास उपयोगी नहीं हो सकते। यदि इस विस्फोट से विघातक पदार्थ पृथ्वी की ओर आयें तो उनका नाश करना हमारी क्षमता से परे है।"

अमात्य सुदक्ष ने हमेशा की तरह एक व्यवहार्य सुझाव दिया, "महाराज ! यदि हम आज से दिखने वाली घटनाओं का लेखा-जोखा रखें तो भविष्य में अगली पीढ़ी के लिए वह उपयुक्त साबित होगा।"

सारिपुत्त की ओर देखते हुए सम्राट ने कहा, "महाशय ! मेरा अनुरोध है कि आप ही यह काम करें। आपकी लिखी जानकारी ताम्रपत्रों पर खुदवा कर उन्हें जगह-जगह सुरक्षित गाड़ने की जिम्मेदारी मेरी। मेरे विचार से यह जानकारी आने वाली पीढ़ी के लिए निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगी।"

++ ++ ++

वर्तमान

एशियाटिक सोसायटी के दरबार-हॉल में भाषण समाप्त हो चुका था। प्रमुख वक्ता राह बनाते हुए धीरे-धीरे बाहर आ रहा था। तभी एक वृद्ध आदमी ने उसे रोका—

"डॉ. नेने, मैं तात्यासाहब भागवत। पूना से सिर्फ आपका भाषण सुनने आया था। भाषण मुझे बहुत पसंद आया। और साथ ही यहां आने का मेरा 'आधा' उद्देश्य भी कुछ हद तक सफल हो गया। क्या समझे ?"

प्राच्य विद्या और पुरातत्त्व अनुसंधान संस्थान के वयोवृद्ध निदेशक, अपना भाषण सुनने खास पूना से पधारे थे, यह जानकर अविनाश नेने फूला नहीं समाया। किंतु वह यह समझ नहीं पाया कि एक पुरातत्त्ववेत्ता की खगोलशास्त्रीय भाषण में भला इतनी रुचि क्यों थी ? और तात्यासाहब का शेष 'आधा' उद्देश्य क्या हो सकता है ? अविनाश ने अपनी उत्सुकता व्यक्त की।

"आपकी जिज्ञासा जागृत हो गई न ? तात्यासाहब हंस कर बोले, "यदि हम कहीं एकांत में बैठकर चर्चा करें, तो मैं सब-कुछ बता सकता हूं क्या ?"

"एकांत और बंबई में ? तब तो आपको मेरे संस्थान ही आना पड़ेगा। चलेंगे ?" नेने की सूचना मान तात्यासाहब कार में घुसे। उनके हाथ में एक बड़ा ब्रीफकेस (ब्रीफकेस तो क्या , एक छोटा सूटकेस था !) किंतु नेने का ध्यान उधर नहीं था।

संस्थन का अहाता समुद्र-तट पर था। सरों के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की छाया में एक सुंदर जगह बनाई गई थी। उसी जगह पर नेने तात्यासाहब को ले गया। "मेरे दफ्तर में टेलिफोन की और खास कर गलत नंबरों की वजह से बहुत रुकावटें आती हैं। यह जगह उससे कहीं अधिक अच्छी है।" नेने ने कहा।

"वाह ! कितनी शांत है यह जगह। लगता ही नहीं कि यह बंबई है। मैं जो कुछ आपको दिखाने वाला हूं, शायद ऐसे ही शांत रमणीय स्थल पर लिखा होगा।" नेने की प्रश्नार्थक मुद्रा देखकर तात्यासाहब आगे बोले, "अपने भाषण में आपने क्रैब नेब्युला की एक स्लाइड दिखाई थी। ४ जुलाई, १०५४ को जिस तारे का विस्फोट हुआ था, उसी के वे अवशेष हैं ऐसा आपने कहा था—क्या ?"

"उस तारे का विस्फोट काफी पहले हुआ था। किंतु वह तारा हमसे बहुत दूर था, इसलिए विस्फोट के कारण पृथ्वी तक पहुंचने वाला प्रकाश लंबे समय बाद पहुंचा। और जिस तिथि का उल्लेख मैंने भाषण में किया था, उसी दिन पृथ्वी वालों ने उसे सबसे पहले देखा।" अपने भाषण में प्रस्तुत मुद्दे को अविनाश ने पुनः स्पष्ट किया।

"ठीक ! ठीक ! और उसे देखने का विवरण चीनी और जापानी ज्योतिषियों ने किया। यह भी आपका कहना था। तथा भारतीय ज्योतिषियों द्वारा किया कोई विवरण आप ने देखा नहीं ऐसा भी आपने कहा—क्या ?" तात्यासाहब ने बात बढ़ाई।

इस बार के 'क्या' को प्रश्नार्थक मान कर अविनाश ने हां भर दी। कहीं तात्यासाहब को ऐसा विवरण तो नहीं मिला ? अविनाश यह प्रश्न पूछने ही वाला था कि तात्यासाहब की भागवत कथा फिर शुरू हो गई—

"तो आपका कहना था कि ऐसे विस्फोटक तारे आकाशगंगा में कई बार देखे गए हैं। अन्य तारका-विश्व में भी ऐसे विस्फोट देखे जाने की बात भी आपने की। मुझे तो लगता है, हर दो-तीन सौ सालों बाद ऐसे विशाल विस्फोट अपनी आकाशगंगा में होते ही रहते हैं", आपने कहा था—क्या ?" तात्यासाहब अपनी टिप्पणियों पर नजर दौड़ा रहे थे।

"क्रैब को नौ शताब्दियों बाद, अपनी आकाशगंगा में दो-तीन ही बड़े विस्फोट नजर आए थे——" अविनाश ने कहा।

"इसका मतलब क्रैब से पूर्व भी ऐसे विस्फोट हुए होंगे। भारतीयों द्वारा देखे ऐसे ही एक स्फोट का सबूत मैं लेकर आया हूं।"—तात्यासाहब ने आगे कहा।

तात्यासाहब ने अपना ब्रीफकेस खोला। वे काफी उत्साहित थे, किंतु अविनाश को उनकी बातों में रुचि नहीं थी। वे क्या 'सबूत' पेश करेंगे,इसकी कल्पना वह अपने पूर्वानुभव से कर रहा था। कई बार ऐसा सुनने में आया था कि आज-कल के वैज्ञानिक

अनुसंधानों—रेडियो, टी.वी., एटम बम, अंतरिक्ष यान इत्यादि—से हमारे पूर्वज भली भांति अवगत थे। और वक्तव्यों की पुष्टि के लिए दिए गए 'सबूत' भी अविनाश देख चुका था। किंतु उसकी यह धारणा रही थी कि इन सबूतों को तकनीकी पृष्ठभूमि कम और काव्यात्मक रूप ज्यादा दिया गया था। वह हमेशा पूछता था कि "यदि हमारे पूर्वज टी.वी. बनाना जानते थे तो उनका कहीं कोई 'मैन्युअल' तो होता?" कम से कम उसके हाथ तो ऐसा सबूत अब तक नहीं लगा था। लगता है, तात्यासाहब भी ऐसा ही कोई काव्य निकालेंगे। और श्लोकों के आधार पर तारका-विस्फोट हो रहा है, ऐसा निष्कर्ष निकालेंगे। अविनाश को इस बात का थोड़ा बुरा लग रहा था कि उसे कहना पड़ेगा कि इस सबूत का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। परिणामतः तात्यासाहब हतोत्साहित हो जायेंगे।

यूं अविनाश इधर अपनी ही दुनिया में खोया हुआ था और उधर तात्यासाहब अपना सबूत जुटा रहे थे। अपने ब्रीफकेस में से उन्होंने एक गठरी निकाली। उसकी गठान खोली और ताम्रपत्र जैसी एक वस्तु निकाली। उस पर अंकित लिपि से अविनाश अपरिचित था। लेकिन उस पर खुदे हुए अंक एवं रेखाचित्र देख उसकी जिज्ञासा जाग्रत हो गई थी।

"ऐसे अनेक ताम्रपत्र हमें बिहार में उत्खनन के समय मिले हैं। इसका सारा श्रेय मेरे सहयोगी विनोद गुप्ता को देना होगा—क्या? किसी पुस्तक के पन्नों की तरह क्रम संख्यानुसार जुड़े हुए ताम्रपत्रों का यह एक दस्ता ही हमें प्राप्त हुआ है। और ऐसे तीन दस्ते हैं जो तीन जगहों पर मिले हैं—तीनों दस्ते एक समान हैं। गुप्ता का अनुमान है कि ऐसे ही दस्ते कई अन्य स्थानों पर मिलेंगे। मैं भी उनसे सहमत हूं—शायद? इन ताम्रपत्रों के लेखक की यही मंशा रही होगी कि अगली पीढ़ी को वे सुरक्षित प्राप्त हो।" -तात्यासाहब का दावा था।

अविनाश की प्रश्नार्थक मुद्रा देख तात्यासाहब ने आगे कहा, "इन ताम्रपत्रों का अर्थ ढूंढने के हमने कुछ प्रयत्न किए हैं और हम काफी हद तक सफल भी हुए हैं। इन पर लिखी जानकारी पाली भाषा में है और उसे एक बौद्ध भिक्खु सारिपुत्त ने लिखा है। यह सारिपुत्त सम्राट हर्षवर्धन के जमाने का है, न कि भगवान बुद्ध का कोई शिष्य। राजा द्वारा सम्मानित इस विद्वान् भिक्खु ने राजादेशानुसार इन ताम्रपत्रों पर तत्कालीन तारका-विस्फोट की जानकारी लिखी थी। वह स्वयं एक बहुत अच्छा कवि था किंतु उसके वर्णन में कहीं कोई कविकल्पना नहीं है। जो कुछ देखा, ठीक वैसे का वैसा उसने लिपिबद्ध किया है। बिल्कुल, जैसा आप वैज्ञानिक चाहते हैं! इस पर तिथियां भली-भांति अंकित है। दिए गए आंकड़े और रेखाचित्र उसके वर्णन को अधिक परिणामकारक तथा विश्वसनीय बनाते हैं। तत्कालीन सर्वेक्षण साधनों का अधिकाधिक उपयोग करने का उसने प्रयत्न किया है .....

"मैं ना तो कोई ज्योतिर्विद हूं और ना ही कोई प्राच्यविद्या-विशेषज्ञ। इसीलिए आप के पास आया हूं और अनुरोध करता हूं कि, सारिपुत्त की इस कहानी की समझने में सहायता कीजिए। ताम्रपत्र की जानकारी मैंने अपनी अल्प मतिनुसार अंग्रेजी में अनुवादित

की है। उसकी एक प्रति मैं आपको देता हूं।" एक टंकलिखित प्रति अविनाश को देते हुए तात्यासाहब ने आगे कहा, "आपको यह काम करना ही चाहिए, क्योंकि सारिपुत्त ने उससे अगली पीढ़ियों से आह्वान किया है कि वे विस्फोटजनित द्रव पदार्थों से सावधान रहें। अपने इस वर्णन के अंत में सारिपुत्त ने एक बात स्पष्टत: स्वीकार की है कि वह, स्फोटजनित तरल पदार्थ कौन से हैं? उनसे क्या खतरा हो सकता है? या कब हो सकता है? आदि प्रश्नों के उत्तर नहीं जानता। क्या?"

टंकलिखित प्रति पढ़ते पढ़ते अविनाश ने एक बात स्पष्ट करनी चाही कि "आधुनिक खगोल विद्यानुसार, तारका-विस्फोट से विश्व-किरणों की जबरदस्त बौछार होती है। इन किरणों में मूल कण, अणुगर्भ इत्यादि पाए जाते हैं। इन किरणों की गति प्रकाश के बराबर ही होती है किंतु बीच में आकाशगंगा का चुंबकीय क्षेत्र उन्हें थामने की कोशिश करता है। परिणामस्वरूप इन किरणों की गति धीमी पड़ जाती है, दिशा बदल जाती है और उन्हें पृथ्वी तक पहुंचने के लिए प्रकाश से अधिक समय लगता है। किंतु इन किरणों की बौछार पृथ्वी पर बहुत बड़े पैमाने पर हो तो दुष्परिणाम तो निश्चित ही होंगे। हमारे आस-पास के वायुमंडल में जो ओजोन वायु की परत होती है वह सूर्य से आने वाली पराजामुनी किरणों से हमारी रक्षा करती है। किंतु विश्व-किरणों की बौछार से ओजोन वायु की परत नष्ट हो सकती है। और यदि ऐसा हुआ तो पृथ्वी पर जीव-सृष्टि का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। शायद सारिपुत्त इसी वायुमंडलीय प्रकोप के संकेत दे रहे थे। यद्यपि सारिपुत्त को आधुनिक जानकारी नहीं थी, उसकी यह कल्पना कि विस्फोट के अवशेषों से आगे चल कर खतरा पैदा हो सकता है, निश्चय ही सराहनीय है ....

"हां, यदि यह तारका-विस्फोट क्रैब की ही भांति हम से बहुत दूरी पर होगा तो हमें विश्व-किरणों की बौछार से कोई डर नहीं, क्योंकि इतनी दूरी से आने वाली मार की प्रखरता घट जाती है। लेकिन इसके बावजूद आपके टंकलिखित एक वाक्य ने मुझे चौंका दिया है! सारिपुत्त ने लिखा है कि, विस्फोट के बाद लगभग एक वर्ष तक रात्रि में पूर्णिमा की रात से दस गुना अधिक प्रकाश रहा था। इससे पता चलता है कि वह तारा क्रैब की तुलना में हमसे काफी कम दूरी पर था। अत: तात्यासाहब, मुझे भी यह सारा किस्सा बहुत महत्त्वपूर्ण लग रहा है। और इस ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं।" बड़े यत्न से अविनाश ने वाक्य के अंत में '—क्या' शब्द प्रयोग टाला।

तात्यासाहब भागवत के जाने के बाद अविनाश ने सारिपुत्त का सारा विवरण ध्यान से पढ़ा, उसकी मुद्रा और अधिक गंभीर हो गई।

तारका-विस्फोट जिस दिन सर्वप्रथम दृष्टिगोचर हुआ, उस दिन से सारिपुत्त ने प्रतिदिन चार बार उसका सर्वेक्षण किया था—सूर्यदय, मध्याह्न, सूर्यास्त और मध्यरात्रि के समय किए सर्वेक्षण पर उसने टिप्पणियां लिखी थीं। तारे का आकार, उसका तेज और उसमें सबसे ज्यादा दिखाई देने वाला रंग ऐसा विवरण उसमें था। यद्यपि यह सर्वेक्षण मानव के चर्मचक्षुओं से ही किया गया था तथा उसका वर्णन भी अंदाजन किया

गया था, फिर भी सर्वेक्षक का अनुभव और सहेजने की वृत्ति उसमें अवश्य नजर आती थी। सुप्रसिद्ध ज्यतिर्विद सर फ्रेड हायेल की मजाक में कही एक बात अविनाश को याद आई, "आकाश में तारका-विस्फोट कब होता है ? जब उसे देखने पृथ्वी पर कोई बढ़िया सर्वेक्षक होता है तभी !" बहरहाल, इसमें सन्देह नहीं था कि सारिपुत्त का सर्वेक्षण देखकर टाइको ब्राहे तथा योहान्न केप्लर जैसे मंजे हुए सर्वेक्षकों को भी दाद देनी पड़ती।

निःसंदेह ! वह एक महा विस्फोटक तारा ही था जिसका सारिपुत्त ने बिल्कुल सही वर्णन किया था। अब सिर्फ तारे की दिशा और उसके अंतर का अनुमान लगाना ही बचा था—और यह काम सारिपुत्त की जानकारी तथा खगोलशास्त्रीय वेध-प्रणाली द्वारा किया जा सकता था। किंतु उसके लिए कोलाहल से भरी बंबई नगरी छोड़ किसी प्रमुख वेधशाला में जाना जरूरी था। अविनाश ने बंगलौर फोन मिलाया।

—और फिर कुछ दिनों तक जबरदस्त व्यस्तता रही !

बंगलौर के खगोल भौतिक विद्या संस्थान के डॉ. कुमारस्वामी ने अविनाश की बहुत सहायता की। कावलूर की दूरबीन वेध लेने के लिए तुरंत उपलब्ध करवाई और साथ ही अपने भी कुछ सर्वेक्षक अविनाश को दिए। फिर आकाश के एक विशिष्ट भाग के तारों, उसके आस पास के छाया-चित्रों तथा वर्ण पंक्तितनुसार जांच की गई। ऊटी की रेडियो दूरबीन भी इस कार्य में जुट गई। और फिर शुरू हुआ, गणक यंत्रों, नए नए अनुमानों तथा अंतरिक्ष यान में क्ष-किरणों का अध्ययन कर चुकी विदेशी संस्थाओं को निमंत्रण का एक सनसनीखेज दौर ....

इस आधुनिक, खगोल-विज्ञान द्वारा की गई जांच की परिणति एक आपात-परिचर्चा में हुई। परिचर्चा का आयोजन अविनाश के संस्थान में किया गया। विभिन्न विशेषज्ञों ने जानकारी दी और अपने विचार रखे। विज्ञान में मतभेद तो होते ही हैं, लेकिन कुछ मुद्दों पर सर्वसमत निष्कर्ष निकाले गए, जो संक्षेप में इस प्रकार थे :

यह विस्फोट शशक-नक्षत्र के तारकपुंज में हुआ था। इस जगह पर क्रैब नेब्युला के समान किंतु उससे कम तेजस्वी विस्फोटावशेष मिले हैं। रेडियो सर्वेक्षण ने भी इस बात की पुष्टि की है। ऐसे अवशेषों से अक्सर विस्फोटित तारे के सारभाग का 'स्पंदक' (पल्सार) तैयार होने की संभावना होती है। लेकिन ऐसे कोई स्पंदक नहीं मिले हैं। अब इस बात से दो भिन्न-भिन्न निष्कर्ष निकले थे। कुछ विशेषज्ञों का कहना था कि विस्फोट में तारा पूर्णतः नष्ट हो गया होगा। यहां तक कि उसका सारभाग भी नहीं बचा। इसके विपरीत दूसरे विशेषज्ञों का कहना था कि इस तारे का सारभाग इतना बड़ा था कि उसका कृष्णविवर बन गया जो अदृश्य रूप में वहीं कहीं आस-पास होगा। निष्कर्ष कोई भी हो, एक बात स्पष्ट थी कि विस्फोट बड़ा जबरदस्त रहा होगा। तथा सारिपुत्त की 'प्रकाश रेखा' के अनुसार विस्फोट-जनित प्रकाश क्रैब से विशाल था, सिर्फ उसकी अवधि क्रैब से कुछ कम थी। तारे का अंतर हजार प्रकाश वर्ष तय किया गया। तथा इतनी लंबी दूरी से आने पर भी उस प्रकाश ने कुछ दिनों तक पृथिवी की रातों को दिन में बदल दिया था। इससे कल्पना की जा सकती है कि वह विस्फोट कितना बड़ा होगा। विशेषज्ञों की भी विस्फोट की भव्यता पर दो राय नहीं थीं।

इतने भव्य विस्फोट की जानकारी भारत के अलावा और किसी के पास थी या नहीं, इसकी जांच-पड़ताल शुरू की गई। विस्फोट की कालावधि में यूरोप में रोमन साम्राज्य का पतन हुआ था और नई संस्कृति भी अस्तित्व में नहीं आई थी। अत: उस कालावधि का कोई खास लिखित सबूत नहीं था। हां, कुछ कैथोलिक मठों के निवासियों द्वारा लिखी कुछ जानकारी मिली थी लेकिन उसमें सारिपुत्त की वैज्ञानिक दृष्टि का अभाव था। 'दैवी प्रकोप', 'प्रलय की संभावना' आदि बातें ही उसमें प्रमुख रूप से मिलीं। अमरीका की रेड इंडियन जाति के अभ्यासकों ने उनके प्रचलित कर्मकांडों का इस विस्फोट से संबंध जोड़ा था। चीनी विशेषज्ञों' ने भी काफी खोजबीन की परंतु उन्हें कोई विश्वसनीय आधार नहीं मिला।

पुरातत्ववेता और इतिहासकार अतीत में खोए थे लेकिन वैज्ञानिक भविष्य की ओर नजर लगाए चिंतित थे। विस्फोट-स्थल यदि एक हजार प्रकाश वर्ष की दूरी पर है तो, विस्फोट के हजार वर्षों बाद उसका प्रकाश प्रथम पृथिवी पर ही आया होगा। विस्फोट जनित विश्व किरणों को—मार्ग के चुंबकीय क्षेत्र की बाधा के कारण—पृथिवी तक पहुंचने दुगना-तिगुना समय लगेगा। यानी प्रकाश के हजार-दो हजार वर्षों बाद ये विश्व-किरणें पृथिवी पर पहुंचेंगी। विस्फोट के प्रकाश को आए साढ़े तेरह सौ वर्ष हो चुके है, अभी तक विश्व-किरणें पृथिवी तक नहीं आई हैं। लेकिन इसका मतलब खतरा टला तो नहीं था। भविष्य में कभी भी आ सकता था। और यह खतरा आखिर होगा कितना बड़ा ?

सारिपुत्त को इसका उत्तर पता नहीं था। अविनाश और उसके साथी अन्य विशेषज्ञ भी उत्तर टटोल ही रहे थे। सामान्यत: ऐसी मान्यता है कि क्रैब जैसा विस्फोट यदि पचास प्रकाश-वर्ष की दूरी पर होता है तो उसकी विश्व-किरणें हानिकारक साबित होंगी। यह तारका-विस्फोट हजार प्रकाश-वर्ष की दूरी पर अर्थात् खतरे के निशान से बीस गुना दूरी पर हुआ। इसके कारण उसकी विश्व-किरणों की मार चार सौ गुना धीमी—यानी खतरे की सीमा से नीचे होगी। खैर, यहां तक तो सब ठीक था। चूंकि तारका-विस्फोट क्रैब से कई गुना भव्य था, इसीलिए यह गणित भी संतोषजनक नहीं था। अविनाश जैसे वैज्ञानिक विश्व-किरणों के खतरे को नजरअंदाज करना नहीं चाहते थे।

आखिर बीच का मार्ग निकालते हुए दुनिया भर की अंतरिक्ष-संस्थाओं ने नए प्रयोग करने की सोची। जिसके तहत विस्फोट की दिशा में अंतरिक्ष खोजी-यान (स्पेस प्रोब) छोड़े गए। इन यानों में विश्व-किरणों के लिए मापन यंत्र बिठाए गए थे। इनकी सहायता से पृथिवी की ओर बढ़ने वाली ये किरणें खतरनाक हैं या नहीं, इसका पता पहले ही चलने वाला था।

किंतु यदि वे खतरनाक साबित हुईं, तो क्या ? अविनाश इस बात को अनुभव कर रहा था कि आधुनिक विज्ञान मनुष्य की रक्षा एक सीमा तक ही कर सकता है। आगामी शताब्दियों में हो सकता है कि विज्ञान उस मंजिल तक पहुंच जाए जहां से वह प्रकृति पर विजय पा ले। पर विश्व-किरणें क्या तब तक राह देखेंगी ? अविनाश को इसका उत्तर पता नहीं था। पृथ्वी का कोई भी वैज्ञानिक इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता था।

इस प्रश्न का गुरु-मंत्र भविष्य में था !

++ ++ ++

भविष्य

एक किले के विस्तृत अहाते में दस-बारह बच्चे खेल रहे थे। किला क्या था, सिर्फ एक खंडहर-सा था। किंतु उसे देख किले की मजबूती, सुंदरता और ऐश्वर्य की कल्पना की जा सकती थी। दीवारों का लाल रंग, नक्काशी इत्यादि अस्पष्ट दिख रही थी। किसी पुरातत्त्वेत्ता को अनुसंधान के लिए निश्चय ही काफी सामग्री यहां उपलब्ध हो सकती थी।

किंतु बच्चों का उधर ध्यान नहीं था। वे सब एक महत्वपूर्ण उत्खनन-कार्य में जुटे हुए थे। उनके नेता की कल्पना थी कि जमीन को यदि खोदते जाये तो पृथिवी का दूसरा सिरा मिल जायेगा, क्योंकि उसके दादा जी ने कहा था, कि पृथिवी गोल है। उनके इस विधान को मानो वह परखना चाहता था और अपने दोस्तों के साथ यह वैज्ञानिक प्रयोग उसने शुरू किया था। किंतु इस प्रयोग का आधार केवल वैज्ञानिक उत्सुकता निश्चय ही नहीं थी। उसके दिमाग में तो था कि पृथिवी का दूसरा सिरा अधिक आकर्षक होगा, वहां खजाना होगा, जादू की चीजें होंगी आदि। अपनी टोली में सबके गलो उसने यह बातेंउतारी थीं।

इसीलिए सब जी-जान से खुदाई कर रहे थे।

—और अंत में उनके प्रयत्न सफल भी हो गए। पृथ्वी का दूसरा सिरा तो नहीं, लेकिन गाड़ा हुआ खजाना जरूर मिला ! धातु की एक सीलबंद नली थी। टोली के नेता ने वह उठाई। सब बच्चे उसके पास इकट्ठा हो गए और अलग-अलग अटकलें लगाने लगे।

.... "इसमें सोने की मोहरें होंगी।"

.... "यह नली हीरों से भरी होगी।"

.... "नहीं, नहीं ! यह तो जादू की छड़ी है।"

.... "यदि इसमें बंद कोई राक्षस हुआ तो ?"

इनमें से आखिरी अटकल ने सब को सावधान कर दिया। अब सील तोड़कर नली का ढक्कन खोला जाएं या नहीं, इस पर चर्चा शुरू हुई। अंत में नेता ने तय किया कि "हम इसे दादाजी को दिखाते हैं।"

खुदाई बीच ही में छोड़ कर टोली दादा जी की ओर दौड़ी।

दादा जी बस्ती से दूर रहते थे। उनकी आयु का किसी को भी पता नहीं था। वैसे वह किसी के दादाजी वगैरा नहीं थे। किंतु उनके सफेद बाल, लंबी दाढ़ी और कहानियों का खजाना ये 'क्वालिफिकेशन्स' उन्हें दादा जी बनाने के लिए पर्याप्त थीं। इसके अतिरिक्त उनके पास ढेरों पुरानीं पुस्तकें थीं और उन्हें कई विचित्र भाषाएं भी आती थी। पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आई कई कहानियां वे बताया करते थे। वे बताते कि पहले मनुष्य उड़ती गाड़ियों से आया-जाया करता था, घर बैठे दूर किसी भी व्यक्ति से बातें कर सकता था, समुद्र के नीचे मनुष्य रह सकता था ...... यह सारी बातें उन बच्चों को

मनगढ़ंत लगाती थीं, किंतु फिर भी सुनने में मजा आता था। वैसे दादा जी ने भी कहां इन बातों को अनुभव किया था ? ये बातें उन्होंने अपने पिता से सुनीं, उनके पिता ने अपने पिता से ...... यह श्रृंखला कितनी लंबी थी, स्वयं दादा जी को भी पता नहीं था।

"दादा जी ! दादा जी ! यह देखो, क्या मजेदार चीज है ?" पुस्तक पढ़ने में व्यस्त दादा जी को घेर कर बच्चों ने शोर मचाना शुरू किया। दादा जी ने नली हाथ में पकड़ी, उसे ठीक से देखा-परखा और उस पर लिखे अक्षरों से वे उत्तेजित हो उठे। किंतु गंभीर स्वर में उन्होंने कहा, "बच्चों ! तुम तो वास्तव में मजेदार चीज उठा लाये हो। कहां मिली यह नली तुम्हें ?"

बच्चों ने सब-कुछ बताया और उस नली के बारे में अपनी अटकलें भी सुनाईं। सबका कहना था कि नली का सील दादा जी ही तोड़ें। और उनके साथ दादा भी अंदर से निकलनें वाली चीजों के बराबरी के हिस्सेदार हों (अंदर हीरे हों या कोई राक्षस)। किंतु दादाजी ने उसे खोलने से पहले अंदर की चीज पहचान ली !

"बच्चों ! यह एक कालकुप्पी है। हमारे पूर्वजों ने कई साल पहले उनकी दुनिया का वर्णन इसमें कर रखा है और हम जैसों को यह जानकारी सुरक्षित रूप से मिले, इसलिए सारी जानकारी ऐसी नली में सील बंद कर जमीन में गाड़ दी। वही कुप्पी आज तुम लोगों के हाथ लग गई है।"

नली में न तो कोई जादुई चीज थी और न ही कोई खजाना। अतः बच्चे कुछ निराश हो गए थे। हमारे वे पूर्वज जो उड़ सकते थे, समुद्र के नीचे जा सकते थे, शायद उनके बारे में कोई मजेदार बात इसमें हो, इसी आशा पर उनकी उत्सुकता बनी हुई थी। दादा जी ने कांपते हाथों से सील तोड़ी और कालकुप्पी खोली।

अंदर से निकले कागज—दादाजीं की पुरानी किताबों जैसे। उन पर लिखी बातें और लिपि शायद दादाजी के लिए परिचित थीं। उन्होंने शीघ्र ही सब-कुछ पढ़ डाला और एक लंबी सांस छोड़ी, "हाय, कैसी प्राकृतिक दुर्घटना थी !" खुद से बड़बड़ाये और सुन्न होकर बैठ गए।

अचानक होश में आए। बच्चों की उत्सुकता देखी और कालकुप्पी में लिखी बातें बताना शुरू किया। अर्थात् बच्चों को सब-कुछ समझाने में काफी समय लग गया। चलो, हम लिखी हुई जानकारी के कुछ मुद्दों से ही काम चला लेते हैं :

"इस कालकुप्पी में दर्ज सारी बातें सभी देशों की सम्मति के बाद लिखी हैं। इस लेख की एक प्रति अंग्रेजी में और एक उस देश की राष्ट्रभाषा में लिख कर उसकी राजधानी के महत्त्वपूर्ण स्थल में गाड़ दी जायेगी। आपके हाथ लगी कालकुप्पी भारत देश की राजधानी नई दिल्ली स्थित लाल किले के दीवाने खास के सामने गाड़ी गई है। कालकुप्पी गाड़ी जाने की तारीख—10 मार्च 2080 ईस्वी संवत् ......

कालकुप्पी में संस्कृति का तत्कालीन चित्रण किया जाता है। किंतु दुर्भाग्य से इस संस्कृति का यह अंतिम चित्रण होगा, क्योंकि एक प्राकृतिक विपदा इजिप्ट, बैबिलोन और सिंध से अबाधित चली आई मानव-संस्कृति का नाश कर रही है। संतोष सिर्फ इस बात का है कि यह अंत मनुष्य की नासमझी से नहीं हो रहा। जो कुछ होने वाला है, उस

पर मनुष्य का कोई बस नहीं है ......

इस घटना का प्रारंभ हुआ—मानव-दृष्टि से—९ अप्रैल, ६३२ इसवी को। उस समय भारत देश में सम्राट हर्षवर्धन का राज्य था। उसी राज्य में बौद्ध धर्म के महायान पंथ के प्रमुख भिक्खु सारिपुत्त ने इस तारीख को प्रकाशमान तारा आकाश में देखा। उस भिक्खु को तारों के बारे में जानकारी, उस जमाने के हिसाब से बहुत ज्यादा थी। उसे विश्वास था कि उसने जो कुछ देखा वह एक प्राथमिक अवस्था का तारका-विस्फोट है। उसने तुरंत ही सम्राट को इस घटना से अवगत कराया। सम्राट की सूचनानुसार उसने बड़ी बारीकी से इस तारे का सर्वेक्षण जारी रखा और अपने पास सारी जानकारी दर्ज करता गया। आगे चल कर राजा के आदेशानुसार ताम्रपत्र पर उसके पास की सारी जानकारी लिखी गई। आने वाली पीढ़ी को वह सुरक्षित मिले इस उद्देश्य से जगह-जगह वे ताम्रपात्र गाड़ दिए गए। इस तारका-विस्फोट के अवशेषों से पृथ्वी वालों को सावधान रहने की सूचना सारिपुत्त के अंतिम ताम्रपात्र में दी गई है। सारिपुत्त की यह दूरदर्शिता हमें आज भी अचरज में डालती है। ....

इन ताम्रपत्रों का एक दस्ता सन् १९७९ में एक पुरातत्ववेत्ता विनोद गुप्ता को उत्खनन के दौरान मिला। उनकी संस्था के प्रमुख डॉ. भागवत पाली भाषा के पंडित थे। दृष्टि से महत्त्व पहचाना और सैद्धान्तिक खगोल-विद्या के प्राध्यापक अविनाश नेने से संपर्क किया। नेने और उनकी प्रेरणा से अन्य अनेक ज्योतिर्विदों ने सारिपुत्त की जानकारी से तारका-विस्फोट की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। शशक नक्षत्र के तारकापुंज में एक हजार प्रकाश वर्षों की दूरी पर यह विस्फोट हुआ था। यह विस्फोट खतरे के अंतर से परे हुआ था। इसलिए उसके अवशेषों से, विशेषत: विश्व-किरणों से, कोई खतरा नहीं, ऐसी अधिकतर वैज्ञानिकों की मान्यता थी। किंतु कुछ वैज्ञानिकों का कहना था कि विस्फोट भले ही काफी दूरी पर हुआ था, किंतु उसकी भव्यता को देखते हुए खतरा अनदेखा नहीं किया जा सकता। ......

अंत में १९८५ में अंतरिक्ष-खोजी यान भेजे गए। यान में रखे यंत्र विश्व-किरणों को माप कर उसकी जानकारी पृथिवी को भेजेंगे, ऐसी योजना बनाई गई थी। लेकिन बाद में संभावित खतरे को वैज्ञानिकों ने भुला दिया। सामान्य आदमी को तो इस खतरे की थोड़ी भी कल्पना नहीं हो सकी। ....

इक्कीसवीं सदी शुरू हुई, आधी खत्म हुई, समाप्त होने लगी। और फिर साल के पहले ही दिन विश्व-किरणें पृथिवी पर आ रही हैं, यह सूचना अंतरिक्ष खोजी-यान ने देनी शुरू की। इन किरणों की मार पहले धीमी थी लेकिन बाद में उसकी तीव्रता तेजी से बढ़ने लगी। वैज्ञानिकों ने खतरे की सूचनाएं दीं। पृथिवी के आस पास के वायुमंडल में ओजोन वायु की परत पर उनका ध्यान केन्द्रित था ....

फरवरी में ही ओजोन की मात्रा घटने लगी। अर्थात् सूर्य की पराजामुनी किरणों से अपनी—यानी पृथ्वी की जीवसृष्टि—की रक्षा की उसकी क्षमता कम होगी। इन किरणों से बचने के लिए लोगों ने जगह-जगह बने सहारा केंद्रों में आसरा लिया। ये सहारा केंद्र अणु-युद्ध में प्राणघातक द्रव्यों से बचने के लिए बने थे। किसे पता था कि उनका आज

ऐसा उपयोग होगा ....

किंतु यह आसरे भी कब तक हमारी रक्षा करते ? आज की तारीख में पृथ्वी की लोकसंख्या आधी हो चुकी है। प्राणहानि दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। विश्व-किरणों की मार यदि आज भी रो‍की जाए तो पुन: ओजोन की मात्रा बढ़ जाएगी और पृथिवी पर मानव-जीवन का अस्तित्व भी फिर से स्थापित हो जायेगा। उसी आशा से हमारे वंशजों के लिए हमने यह कालकुप्पी तैयार की है ....

यदि यह विपदा दो-तीन शताब्दियों बाद आती तो शायद उससे रक्षण करने की तकनीक मानव खोज लेता। हमें आज भी आशा है कि पर्वतों की गुफाओं में रहने वाले हमारे जंगली बंधु या ध्रुव प्रदेश में रहने वाली कुछ जातियां बच जायेंगी और वंशवृद्धि कर सकेंगी। ऐसी यदि होता है तो नि:संदेह मानव पुन: प्रगति की सीढ़ियां चढ़ेगा .....

अंत में हमारे मन में एक विचार आया है। दुनिया की अन्य घटनाओं की तुलना में तारका-विस्फोट की गति अधिक मानी जाती है। किंतु यह कालावधि मानव-जीवन काल से कहीं अधिक है। इस तारका-विस्फोट के समय ग्रीक संस्कृति अस्तित्व में थी। भारत में मौर्य साम्राज्य आया नहीं था। बुद्ध का अवतार हो चुका था किंतु जीसस का जन्म नहीं हुआ था। विस्फोट का प्रकाश पृथिवी पर आते-आते जीसस के बाद सातवीं शताब्दी आ चुकी थी—और विस्फोटावशेषों से हमारा अंत इक्कीसवीं शताब्दी में हो रहा है !

मनुष्य-जीवन अंतरिक्ष की ऐसी घटनाओं के सामने कितना क्षुद्र है, इसकी कल्पना हमे इस विस्फोट ने करवा दी।

आसमानी निगाहें

टॉम रोहरिच ने फिर एक बार गाड़ी के डैश बोर्ड की ओर देखा। उसके हिसाब से एल पासो अभी सैंतीस मील दूर था। 'टेक्सस अमरीका का एक अति विस्तृत शहर है' भूगोल में पढ़े इस वाक्य पर उसका विश्वास हो चला था। हॉम के लिए गाड़ी से लंबा सफर करना कोई नई बात नहीं थी। सैकड़ों मीलों की दूरी वह गाड़ी से पार कर चुका था। किंतु आज पिछले दो सौ मील के सफर में खास तौर से वह किसी सहेली की कमी अनुभव कर रहा था! क्योंकि रास्ता एकदम सीधा, मनुष्यहीन और सुनसान था। चालक के लिए दिल बहलाने का कोई साधन नहीं था। ऐसे में यदि गाड़ी खराब हो जाए तो ?

पिछले एक घंटे से लगातार गाड़ी चलाने के कारण टॉम मन से बहुत थक चुका था। एक तरफ एल पासो जल्दी से जल्दी पहुंचने की तमन्ना थी तो दूसरी तरफ, थकान दूर करने के लिए वह कुछ देर रुकता है, तो नींद लग जाने का डर था। इन सब बातों के अलावा टॉम के मन में एक शक बढ़ता जा रहा था कि अब गाड़ी सुरक्षित रूप से नहीं चला पायेगा। इसी दुविधा में था कि अचानक उसकी गाड़ी एक छोटा-सा मोड़ दिखाई न देने के कारण पास के 'साफ्ट शोल्डर' पर चढ़ गई। और टॉम ने कुछ देर रुकना ही बेहतर समझा।

साफ्ट शोल्डर पर गाड़ी खड़ी करके टॉम थोड़ा टहलने के लिए नीचे उतरा। थोड़ी ही देर पूर्व सूर्यास्त हुआ था। झुटपुटे में, आस-पास के विस्तृत फैलाव वाले प्रदेश को देखकर, टॉम को बचपन में पेटू की तरह देखे पश्चिमी चित्रपटों की याद आई। कहां न्यूयॉर्क, टोकियो जैसे भीड़-भाड़ वाले क्षेत्र और कहां यह मनुष्यहीन प्रदेश ? एक ही पृथ्वी पर यह कैसा विचित्र विरोधाभास था! टॉम विज्ञान की कहानियों का शौकीन था। उसने सोचा, इस समय मैं दूसरे ग्रह पर हूँ ऐसी कल्पना करूं तो ?

विज्ञान की कहानियां .... अंतरिक्ष यान .... उनमें घूमने वाले हरे लोग ....मनुष्य से अति उन्नत जीव—क्या वास्तव में दुनिया में यह सब है ? बहुत से वैज्ञानिकों की यह मान्यता है कि इस विशाल जगत में मनुष्य ही सबसे अधिक उन्नत नहीं है। तो फिर ये अति उन्नत जीव पृथ्वी तक क्यों नहीं आते ?

तभी टॉम का ध्यान पश्चिमी क्षितिज की ओर गया। झुटपुटे के कम हो जाने से अब उसे एक वस्तु स्पष्ट दिखाई दे रही थी। पीले से रंग की चमकने वाली उस चीज का आकार काफी बड़ा था। पहले टॉम को जरा अजीब सा लगा, किंतु बाद में उसने देखा कि वह चीज उसी की ओर बढ़ती आ रही थी।

टॉम ने सोचा कि तारे की तरह दिखने वाली वह चीज शायद कोई विमान होगा। किंतु इतने नीचे से जाने वाला विमान ...... कहीं वह क्रैश तो नहीं होने वाला ? .... पर उसकी ऊंचाई कम भी नहीं हो रही थी। उसने देखा कि उस चीज का सामने वाला भाग विमान जैसा नहीं था। तभी उसे एक निराली चीज का अहसास हुआ—सामने से

आने वाले यान से कान फाड़ देने वाली आवाज आ रही थी।

टॉम से वह आवाज सहन न हो पाई। वह गाड़ी में जा बैठा और खिड़कियां-दरवाजे सब बंद कर लिए। आवाज की चुभन कुछ कम हुई। लेकिन तीव्रता वैसी ही थी।

बेहोशी आने से पहले टॉम को सिर्फ इतना याद था कि वह कान में ठूंसने के लिए कुछ खोज रहा था !

++ ++ ++

नशें में धुत शिवा कुम्हार लड़खड़ाता चल रहा था। जुए में हाथ लगे कुछ पैसों की जगह हाथ में अब बोतल थी।

रात के बारह बज चुके थे। जल्दी घर पहुंचने के लिए शिवा ने एक पगडंडी चुनी। नशे में था इसलिए उसने यह रास्ता चुना। वरना इस बंजर रास्ते से जाने की वह हिम्मत भी न करता, क्योंकि गांव वालों का कहना था कि वहां भूत रहते हैं ....

लड़खड़ाते हुए शिवा अचानक किसी चीज से टकराया। उस पर कहीं से एकदम प्रखर प्रकाश आ रहा था। शिवा ने सामने देखा तो उसकी बोलती बंद हो गई।

सामने एक मनुष्याकृति थी—किंतु पूरी हरी। शिवा की आंखों के सामने वह आकृति प्रकाशमान हुई और आकाश की ओर जाने लगी। शिवा की नजर उस पर टिकी थी। एक अंतरिक्ष यान में उस आकृति को उसने घुसते देखा। वह यान वहां से धीरे-धीरे जाने लगा। पर देखने से पहले ही शिवा बेहोश हो गया था।

++ ++ ++

वह सिसली के एक ईसाई मठ में नन थी। बचपन से ही बेचारी गूंगी थी। किंतु अपनी सुंदर लिखाई और चित्रों से वह किसी से भी संभाषण कर सकती थी। गूंगेपन की हीन भावना के कारण ही शायद वह अकेली रहा करती। मठ की अन्य जोगनें उसे सिस्टर मरिया कहतीं। उसका असली नाम भगवान ही जाने, क्योंकि वह दो महीने की अनाथ बच्ची थी तब मठ के द्वार पर पड़ी मिली थी।

उस रात एक अनोखी घटना हुई ! हमेशा की तरह मरिया सैर कर वापस लौटी और सीधी मदर सुपीरियर के पास गई। आज वह स्वयं अपने पास आई है इस बात पर मदर को आश्चर्य हुआ। उसने मरिया को अपने पास बिठाया और पूछा, "कहो बेटी,कैसे आना हुआ ?"

मरिया हमेशा अपने पास कागज रखा करती थी। उन्हीं में से एक पर उसने लिखना शुरू किया। उसे आज कुछ विशेष दिखाई दिया था—आकाश में। उसने चित्र द्वारा अपनी बात कही।

मदर सुपीरियर को सब पढ़कर उस पर विश्वास नहीं हुआ किंतु उसका हाथ तुरंत गले में पहनी माला के क्रॉस पर चला गया।

++ ++ ++

वॉशिंग्टन के इर्द-गिर्द फैले उपनगरों में से एक में कुछ वैज्ञानिकों की दावत चल

रही थी। अधिकतर वैज्ञानिक नासा (नैशनल एरोनॅाटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) के गॉडर्ड स्पेस फ्लाइट सेंटर और मेरिलैंड यूनिवर्सिटी से आए थे। उन्हीं में से एक वैज्ञानिक रॉजर बकलैंड को बिदाई देने सभी वैज्ञानिक उसके घर आए थे।

रॉजर बकलैंड 'गॉडर्ड' में ही काम करने वाला एक प्रसिद्ध अंतरिक्ष-विशेषज्ञ था। स्काइलैब, स्पेस लैब जैसे प्रयोगों की श्रृंखला में अंतरिक्ष में जाकर प्रयोग करने वाले वैज्ञानिकों में रॉजर बकलैंड 'उस्ताद' माना जाता था। वैसे तो उसने तय किया था कि यदि कोई अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रयोग करना हो तभी वह अंतरिक्ष में जायेगा, क्योंकि अब जमाना नई पीढ़ी का था। उसके जैसे चालीस वर्ष के बूढ़ों को निवृत्त हो जाना चाहिए ! किंतु अंतरिक्ष की तकनीकी और वैज्ञानिक समस्याओं को सुलझाने के लिए शक्ति से अनुभव अधिक लाभदायक सिद्ध होता था। इसलिए रॉजर को बार-बार बुलाना पड़ता था।

"बस यह मेरी अंतिम अंतरिक्ष-यात्रा होगी ! मैं तो उकता गया हूं। लौटने पर सिर्फ गोल्फ और सेलिंग में ही मैं अपना समय बिताऊंगा।" हर बार रॉजर यही कहता और उसके सहयोगी अनदेखी किया करते। रॉजर भी कहां हार्दिकता से यह सब कहतां था ?

"मैं शर्त लगाता हूं रॉजर। लौटने पर तुम ज्यादा से ज्यादा महीने दो महीने चुप बैठोगे और फिर चले आओगे बीच में सिर घुसाने।" उसके एक साथी ने कहा।

"और यदि मैं लौटा ही नहीं तो ?"

"अरे, हमारा ऐसा भाग्य कहां ?" "अब तो अंतरिक्ष-यात्रा मनुष्य के लिए सबसे सुरक्षित साधन है।"—एक वैज्ञानिक ने कहा। दूसर इस बात की पुष्टि करता हुआ बोला, "कैसी विचित्र स्थिति है देखो ! अंतरिक्ष-यात्रा विमान-यात्रा से अधिक सुरक्षित और विमान-यात्रा कार से अधिक सुरक्षित है। यानी यात्रा जितनी पास की, खतरा उतना ही अधिक ......।"

"और मैंने तो अभी हाल ही में कहीं पढ़ा था कि पैदल सड़क पार करने में ही सबसे अधिक खतरा है।" एक दूसरे वैज्ञानिक ने कहा।

रॉजर भी हंसी-मजाक में शामिल था, सिर्फ एक व्यक्ति जानता था कि दरअसल रॉजर चिंतित है। वह व्यक्ति वहां उपस्थित वैज्ञानिकों में से नहीं था। बाहर से आया था। इसलिए सबसे परिचित भी नहीं था। इसी कारण वह उनकी विलियम (बिल) बोन्स था। आज रात वह रॉजर का मेहमान था।

बिल कोई वैज्ञानिक नहीं था और न ही कोई विशेषज्ञ। क्या काम करते हो, इस प्रश्न का सही उत्तर वह किसी को कभी नहीं देता। जिस समय जो काम सुविधा वाला लगे, बस उसी का नाम बता देता। हालांकि उस समय उस दावत में उपस्थित वैज्ञानिक यही मान रहे थे कि बिल किसी कंप्यूटर फर्म का एजेण्ट है, और काम के सिलसिले में न्यूयॉर्क से वॉशिंग्टन आया है। ....

लगभग दो बजे दावत समाप्त हुई। रॉजर ने बोतलों के क्रेट एक तरफ किए, ग्लास डिश वॉशर में डाले और कॉफी बनाने रखी। खुद थका-हारा सोफे पर लुढ़क गया।

उसे थका हुआ देख बिल स्वयं दो बड़े मगों में कॉफी ले आया।

"काली या सफेद ?" उसने रॉजर से पूछा।

"काली" रॉजर के हाथ से मग पकड़ते हुए उसने कहा। बिल एक रॉकिंग कुर्सी पर बैठा और बोला।

"अब बता! एक अंतरिक्ष-वैज्ञानिक को एफ.बी.आई. एजेण्ट की क्या जरूरत आन पड़ी?"

++ ++ ++

"बिल, तुम तो जानते ही हो कि आज की दावत मुझे विदा करने के लिए दी गई थी।" रॉजर ने कहा, "क्योंकि मैं जल्दी ही अंतरिक्ष यात्रा के लिए जा रहा हूं।"

"लेकिन तुम्हारी दृष्टि से इसमें क्या खास बात है? तुम तो कई बार विभिन्न स्पेस मिशन्स पर जा चुके हो।" पाइप सुलगाते हुए बिल ने पूछा।

"तुम्हारी बात सही है। लेकिन मेरी अन्तरात्मा कहती है कि मैं इस यात्रा से लौटने वाला नहीं!" रॉजर के चेहरे पर कोई भावना नहीं थी।

"कमाल है यार, तुम्हारे जैसा वैज्ञानिक भी अन्तरात्मा की बातें करने लगा?" बिल के स्वर में उपरोध था। रॉजर ने उत्तर में अपने पास रखी मेज की एक दराज खोली तथा उसमें से एक पुलिंदा निकाला और बिल के सामने रखा। उसमें अखबारों की कतरनें थी।

'टेक्सास में उड़न-तश्तरियां?' 'तारापूर के पास छोटे हरे मानव', 'जोगन को आकाश में देवदूतों के दर्शन'—ऐसे शीर्षकों के दुनिया के कोने-कोने से आए कई समाचारों की वे करतनें थीं।

"आजकल सिनेटर ब्लैकमैन अपने भाषणों में कह रहे हैं कि पृथिवी पर पराए लोगों का आक्रमण होने वाला है। उनके यान निगरानी रखे हुए हैं। इस तरह की बातें ऐसे समाचारों को और दाना-पानी देती हैं। वह स्वयं बार-बार कह रहा है कि या तो अमरीकी कांग्रेस द्वारा या फिर युनाइटेट नेशन्स द्वारा इस बात की पूरी जांच की जानी चाहिए।"—रॉजर ने कहा।

"हो, मैं जानता हूं उसके भाषण। लेकिन तुम्हारे-जैसे वैज्ञानिकों ने उसे योग्य उत्तर भी तो दिए हैं।" बिल ने कहा।

"जिसे अंतरिक्ष की विशालता की कल्पना है वह इन उड़न-तश्तरियों पर विश्वास नहीं रख सकता। हमारे सबसे निकट वाले तारे तक प्रकाश को जाने-आने में आठ-दस साल लग जाते हैं। तो फिर प्रकाश की तुलना में बहुत धीमी गति से जाने वाले यानों को कितना समय लगेगा? अपोलो यान ने भी चंद्रमा तक जाने-आने में एक सप्ताह लिया था—प्रकाश वह अंतर डेढ़ सेकंड में तय करता। अब तुम ही हिसाब लगा कर देख लो!" रॉजर जोश में आकर बोल रहा था।

"किंतु लगभग प्रकाश के समान या उसमें अधिक गति यह अंतर जल्दी काट सकती है।" बिल ने कहा।

"अरे, आइन्स्टाइन के सापेक्षतावाद के सिद्धांतानुसार सर्वसाधारण वस्तुओं से बनाए गए यान प्रकाश की गति-सीमा लांघ ही नहीं सकते। प्रकाश की गति लांघना तो

दूर, उसकी बराबरी करने के लिए भी हमें बड़ी भारी ऊर्जा का व्यय करना पड़ेगा। गणित द्वारा ही यह कैसे 'असंभव है' यह मैं तुम्हें बता सकूंगा।"—रॉजर

"लेकिन तुम भूल रहे हो कि हमारी मानव संस्कृति का ज्ञान भले ही सीमित हो, किंतु इस बात का क्या प्रमाण है कि हमसे अति विकसित संस्कृति आइन्स्टाइन से कहीं आगे जाकर, ऐसे यान बनाती हो जो प्रकाश की गति से अधिक तेज हों ?" बिल ने रॉजर को और भड़काया।

"इस बारे में वैज्ञानिकों का उत्तर भी सोचने वाला है! मनुष्य ने ज्ञान, विज्ञान, तथा तकनीक की चरम सीमा तो पाई नहीं है। बल्कि कई वैज्ञानिकों का तो कहना है कि वह अभी बहुत पिछड़ा ही है। उनका अनुमान है कि हमारी आकाश-गंगा में लाख-दस लाख अतिविकसित संस्कृतियां हैं। अब पल भर को मान लें कि वहां प्रकाश की गति के बराबर या उससे अधिक गति वाले वाहन हैं, तो निश्चय ही उनकी तकनीक उच्च और भिन्न स्तर की होगी ही। फिर ऐसी उच्च तकनीक से बने वाहनों में—यानी उड़न-तश्तरियों या सिगरेट की तरह के यानों—और हमारे यानों में कोई विशेष अंतर नहीं है, क्या यह बात विचित्र नहीं लगती ? बैल गाड़ी और जेट विमान की तकनीक में जितना अंतर है उससे कई गुना अधिक अंतर हमारी और उस अति विकसित संस्कृति की तकनीक में होना चाहिए—क्या यह भी बताना पड़ेगा, और इतना अति विकसित तकनीकी ज्ञान जिन्हें है उनका हम जैसी साधारण संस्कृति वालों की खोज में आना बड़ी ही विचित्र बात है।"

"लेकिन इतने सारे लोगों ने जो उड़न-तश्तरियां देखी हैं, उसका क्या उत्तर है ?" बिल ने कतरनों वाले गट्ठे की ओर निर्देश करते हुए कहा।

"पहली उड़न-तश्तरी १९४७ में दर्ज की गई। केनेथ आरनॉल्ड नामक वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम उसे देखा। उसके बाद विभिन्न लोगों द्वारा दर्ज की गई सैकड़ों घटनाएं सामने आईं। उनका अलग-अलग वर्गीकरण किया गया। प्रोजेक्ट ब्लू बुक, कोलोराडो प्रोजेक्ट ...."

"हां, मैंने सुना है उनके बारे में। अधिकतर घटनाओं में किसी सादे विमान, पृथिवी ही के अंतरिक्ष यान, शुक्र ग्रह जैसे तारे, या फिर वायुमंडल में हवा, पानी और प्रकाश के मिलाप से होने वाली कोई जादू, ऐसे ही उल्लेख थे। और कुछ गवाह उनकी मानसिक स्थिति, बढ़ाचढ़ा कर गप्पें हांकने का उनका स्वभाव या अन्य कारणों से विश्वास-योग्य नहीं माने गए।"—बिल।

"क्या इन समाचार-कतरनों की भी यही स्थिति नहीं मानी जा सकती ? यूं देखो कि टेक्सास में टॉम रोहरिच ने उड़न-तश्तरी देखी—लेकिन लगातार गाड़ी चलाने के कारण वह बहुत थका हुआ था। उसने स्वयं कबूल किया है कि वह गाड़ी चलाने की स्थिति में नहीं था। सिसली का यह दूसरा किस्सा। इस मारिया जोगन के बारे में लोग कहते हैं कि उसे देवदूत वगैरा दिखते थे—सच-झूठ तो भगवान ही जाने! तारापुर के पास का यह गांव वाला—इसने तो अच्छी-खासी पी रखी थी। अब मैक्सिको का यह किस्सा ...... कंबोदिया का किस्सा .... मैंने सारे किस्सों की अच्छी जांच की है। विश्वास

किया जाए,ऐसा कोई गवाह नहीं है ...."

"तुम ठीक ही कहते हो रॉजर ! मामूली जुर्म की जिरह भी इनमें से कोई सह न पाता।" बिल ने कहा, "यह सब तो ठीक है। लेकिन असली बात क्या है ? अपनी पहली बात को तुमने अभी स्पष्ट नहीं किया।"

"वही करने जा रहा हूं। मैंने पहले इन तश्तरियों के बारे में अपनी राय स्पष्ट करना उचित समझा। ऐसे यान पृथिवी से दूर किसी अति विकसित संस्कृति से आते होंगे—मैं यह मानने को तैयार नहीं। अच्छा, यह चित्र देखो।" जेब से निकाल कर बिल को उसने एक फोटो दिया।

कंप्यूटर की सहायता से बनाया वह फोटोनुमा एक चित्र था। उस पर 'टॉप सिक्रेट' लिखा था और नासा का ठप्पा था। किंतु चित्र के दाएं भाग पर बिल का ध्यान केंद्रित हुआ।

उसमें सिगार जैसी एक वस्तु थी, जिसके आस-पास कुछ बिंदियां थीं। बिल ने अपने मैग्निफाइंग ग्लास से उसे देखा और विस्मय से सीटी बजाने लगा।

"वास्तव में मुझे यह चित्र तुम्हें नहीं दिखाना चाहिए। खैर, तुमने जो अपने लैंस से अभी देखा, वह हमने हजार गुना बड़ा करके देखा है। बात तो तुम भी समझ ही गए होगे।" रॉजर ने कहा।

"ये बिंदियां मनुष्य की आकृति बनाती है और यही बड़ी सी चीज कुछ और नहीं, एक अंतरिक्ष यान है।" बिल ने आगे पूछा, "किंतु यह फोटो कहां से मिला ?"

"पिछले मई महीने हमने चार यान अंतरिक्ष में छोड़े थे। उन्हीं में से एक में मेरे सहयोगी डॉ. फ्रास्ट थे, जिन्होंने यह फोटो खींची। अपनी जिंदगी का शायद यह उनका आखिरी काम था, क्योंकि उस यान का आगे क्या हुआ,कुछ पता नहीं ....।"

"इन बातों को गुप्त रखना ही आवश्यक था, क्योंकि इस वर्ष के पहले तीन महीनों में खोया हुआ वह हमारा चौथा यान था। पहला मिलिटरी का, दूसरा सी.आई.ए. का और तीसरा वैज्ञानिक प्रयोगों का। इन तीन यानों को खोजने यह चौथा यान भेजा गया था। किसी अद्‌भुत घटना के दौरान तुरंत ही फोटो खींच कर ग्राउण्ड कंट्रोल को भेजने की इसमें व्यवस्था की गई थी। ऐसी स्थितियों में अक्सर मनुष्य की विचार-शक्ति काम नहीं करतीं। अत: प्रथम आपात बटन दबा कर फोटो खींचने की और बाद में मौखिक संदेश भेजने की सूचनाएं फ्रॉस्ट को दी गई थीं। और अच्छा ही हुआ, क्योंकि बटन दबाते ही सिर्फ पांच सेकंडों में एक हजार फोटो हमारे पास पहुंचे—उन्हीं में से यह एक है। फ्रॉस्ट को बोलने का इससे अधिक अक्सर मिला ही नहीं—उसका संपर्क टूट गया।"

"फ्रॉस्ट ने क्या कहा है ?"—बिल

"उसका एकमेव अंतिम वाक्य था—अंतरिक्ष यान ...... उसमें से हरे रंग के मानव बाहर निकल रहे हैं .... किंतु ....।"

++ ++ ++

कमरे में पल भर ही खामोशी थी। दोनों ने वह महसूस की, क्योंकि एअर कंडिशनर की आवाज जोरों से आने का उन्हें आभास हुआ। पाइप की राख झटकते हुए

बिल ने पूछा—

"इस संदेश और फोटो की 'छानबीन' तो तुमने की ही होगी। यह फ्रॉस्ट किस किस्म का आदमी है ?"

"है नहीं, था कहो। उसकी कल्पनाशक्ति बहुत कम थी। किंतु बताया गया काम वह बिल्कुल ठीक से किया करता और जो कुछ मन में होता वह साफ-साफ कह दिया करता था। कुछ भी हो, किंतु फोटो तो झूठ नहीं बोलेगा !"—रॉजर ने कहा।

"अब क्या करोगे ? यह गुप्तता ज्यादा देर तो नहीं रख सकोगे।" बिल ने कहा।

"हां ! इसीलिए एक अंतिम प्रयत्न करने वैज्ञानिकों की एक टुकड़ी अंतरिक्ष जाएगी जिसका नेतृत्व मुझे करना है। फ्रॉस्ट लौटा ही नहीं, ऐसा कहने के बजाय वह किसी दुर्घटना में मारा गया, ऐसा कहा गया। किंतु हम छः में से जब कोई नहीं लौटेगा, तब तो बात साफ हो जाएगी—पर ऐसा समय न ही आए तो अच्छा होगा।"

बिल ने सोचा : सिनेटर ब्लैकमैन जोर-शोर से भाषण दे रहे हैं, "पृथिवी अपनी अंतिम घड़ियां गिन रही है। मनुष्य के लिए तो चंद सांसें ही शेष हैं। अब पराया हस्तक्षेप अटल है। हम पहले से सावधान कर रहे थे .... पर हमारी सुनता कौन है।" इस वर्ष शुरू से ही ब्लैकमैन के भाषणों की धूम मची थी। सामने रखी करतनें उसकी बातों की पुष्टि कर रही थीं। उसने कहा :

"रॉजर, सच बताओ, तुम्हें क्या लगता है ?"

"वही बताने तो मैंने तुम्हें बुलाया है। वैज्ञानिक सब-कुछ देखे-परखे बिना अपने विचार नहीं रख सकता। और मैं भी फ्रॉस्ट की देखी बातों पर टिप्पणी करना नहीं चाहता। मगर उसके संदेश के अंत में उसने जो 'किंतु' कहा था, वह क्या था ? उसका क्या मतलब हो सकता है ? उसे और क्या कहना था ? मेरा तो अब भी विश्वास है कि यह कोई पराया हमला वगैरा नहीं था। मगर ये लोग आते कहां से हैं ? या वह सब कोई भुलावा था ? लेकिन वे इलेक्ट्रानिक्स को कैसे झांसा दे सके ? पराए हमले के अतिरिक्त और कोई भी पर्याय मेरे सामने आया, तो मैं निश्चय उस पर विचार करूंगा। मान लो, यदि मैं और मेरे सहयोगी वापस नहीं आते, तो तुम मेरे इस शक को ध्यान में रखना। शायद तुम्हारे पुलिसिया दिमाग को कोई पर्याय सूझ पड़े।"

"और यदि वह मिल जाए तो ?" बिल को वैसे कोई खास आशा नहीं थी।

"तो तुम इस नंबर पर फोन कर देना।" रॉजर ने उसे एक नंबर दिया और कहा, "यह टॉप सिक्रेट नंबर मेरे बॉस का है। उसे राजदार बना ले। हम उसे मिस्टर 'बी' कहते हैं, क्योंकि वह कौन है यह हम भी नहीं जानते।"

"एक विनती है।" फोटो देखते हुए बिल ने कहा। रॉजर उसके मन की बात समझ गया और उसने वह फोटो उसे दे दिया।

++ ++ ++

रॉजर से मिलकर बिल दूसरे दिन अपने घर गया। उसे भी रॉजर की तरह यकीन हो चला था कि इन सारी घटनाओं को नए सिरे से देखा जाए। किसी दूसरे

अतिविकसित ग्रह से ये यान आये होंगे, इस बात पर उसे विश्वास नहीं हो रहा था। किंतु सामने रखे सबूतों से तो बात और अधिक उलझ गई थी। पिछले दस महीनों में दुनिया के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में लोगों ने ऐसे यान या हरे मानव देखने का दावा किया था। इन सभी को अविश्वसनीय माना जाए तो भी 'नासा' के फ्रॉस्ट द्वारा निकाले गए चित्रों को झूठ कैसे माना जाए ? और उन्हीं चित्रों में से एक उसके पास भी है।

वह फोटो उसने फिर से देखा। उसकी सत्यता तथा विश्वनीयता पर शक करने की कहीं कोई संभावना नहीं थी। और नासा के अंतरिक्ष यान और कण्ट्रोल रूम में 'प्रोसेस' की गई वह फोटो नकली कैसे हो सकती है ? (उसे याद आया कि उड़ती तश्तरी का प्रकाशित फोटो विशेषज्ञों ने झूठ साबित कर दिखाया, ऐसा उसने कहीं पढ़ा था। लैंस कॅप का प्रयोग करके एक फोटोग्राफर ने उड़न-तश्तरी का फोटो छापा था।)

हालांकि नासा के विशेषज्ञों ने उस फोटो का विश्लेषण किया था। फिर भी बिल ने पुन: स्वयं उसका विश्लेषण करने की सोची। वैसे वह एफ.बी.आई. की प्रयोगशाला में दूसरे विशेषज्ञों से यह काम करवा सकता था। किंतु फोटो एक "टॉप सिक्रेट" था। सिर्फ वही देख सकता था। यह काम गुप्त रूप से ही होना जरूरी था और वह भी रॉजर का मिशन शुरू होने से पहले।

अपने खगोल-वैज्ञानिक मित्र जैक बाल्डविन को बिल ने फोन किया। दूर से आने वाली आकाशगंगा के चित्र इलेक्ट्रौनिक्स की सहायता से देखना उसकी हमेशा की आदत थी और इस क्षेत्र में उसकी सानी कोई नहीं था। आंखों, लैंसों या माइक्रोस्कोप से भी जो जानकारी नहीं मिलती थी,उसे वह इलेक्ट्रॉनिक्स की सहायता से अपने कंप्यूटर पर बड़े-बड़े चित्र बनाकर प्राप्त कर लेता था। पर वह था कैलिफोर्निया में।

"जैक, मैं चाहता हूं कि मेरा एक फोटो तुम बारीकी से निहारकर, उसकी रिपोर्ट मुझे जल्दी से जल्दी दो। काम ज़रा अर्जेंट है।"

"तुम्हारे तो सारे काम अर्जेंट ही होते हैं। मैं कल और परसों माउण्ट पैलीमा जा रहा हूं—तारक-अध्ययन करने। और वैसे बाद में मुझे हाइकिंग के लिए जाना था।"

"गोली मार अपने इन कार्यक्रमों को। मैं भी परसों लॉस-एंजेलिस आ रहा हूं।" बिल ने जैक को पुनर्विचार का मौका भी नहीं दिया और फोन बंद कर दिया।

उसने हिसाब लगाया—रॉजर का स्पेस-मिशन फ्लोरिडा से निकलने में केवल दस दिन थे—यानी काम करने के लिए आठ ही दिन समझने चाहिए। और फिर मिस्टर 'बी' को फोन करके या उन्हें मिलकर सब कुछ बताने के लिए एक दिन तो लगेगा ही। इसका मतलब मेरे पास सिर्फ सात दिन हैं। टू बी ऑन द सेफ साइड छ: दिन ही मानने चाहिए। इन छह दिनों में मुझे कोई न कोई जानकारी तो हासिल करनी ही होगी।

बिल नियत समय पर लॉस-एंजिलस आया और सीधा पैसाडीना में जैक की प्रयोगशाला जा पहुंचा। जैक भी कुछ ही देर पहले पैलोमा से लौटा था। बिल ने उसे वह फोटो दिखाया। इससे पहले उस फोटो के पीछे लगे ठप्पे आदि उसने होशियारी से मिटा दिए थे।

"यार, क्यों मेरा मजाक उड़ाने पर तुला है ? यह फोटो किसी विज्ञान-कहानी में

खूब जंचेगी।" शिकायत-भरे स्वर में जैक ने कहा।

"वही तो तय करना है हमें। इस फोटो का ज्यादा से ज्यादा सूक्ष्म परीक्षण होना अत्यावश्यक है।" बिल जैक को कम से कम बातें बताने का प्रयत्न कर रहा था।

"यह फोटो किसी सादे कैमरा से नहीं, बल्कि इलैक्ट्रॉनिक्स की सहायता से निकाला गया है। तथा इसमें जो कुछ दिख रहा है उससे कहीं अधिक जानकारी मिल सकती है।" फोटो को मोटे तौर पर देख कर जैक ने पूछा, "तुम क्या ढूंढ़ रहे हो यह बताओगे तो अच्छा होगा और समय भी बचेगा।"

"यही तो मुझे भी नहीं पता। तुम सिर्फ इतना ध्यान रखो कि फोटो के प्रत्येक भाग की कड़ी जांच करनी है। तो बताओ, कितने दिन लगेंगे ?" जैक के उत्तर पर ही सारा दारोमदार था।

"रात-दिन एक किए तो भी एक सप्ताह लग जायेगा।"—जैक।

"ठीक है। नींद न आने की गोलियां मैं तेरे लिए साथ लेकर ही आया हूं।" बिल ने हंस कर उत्तर दिया।

++ ++ ++

जैक हर काम को तरतीब से करने के लिए प्रसिद्ध था। उसने फोटो के भिन्न-भिन्न अंग स्पष्ट हों, इसलिए उसे कालपनिक रेखाओं से छोटे छोटे भागों में बांटा। उसने और बिल ने प्रथम हरे मानवों और स्पेसशिप पर ध्यान केन्द्रित करने की सोची। बिल जैक और उसके उपकरणों की क्षमता से हैरान था। प्रत्येक हरे मानव के हाथ की उंगलियां तक जैक के उपकरणों द्वारा स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। इतनी महीन जानकारी भी वे उपकण सहज रूप से प्राप्त कर रहे थे।

"ऐसे उपकरण बहुत कम होंगे, है न ?" बिल ने पूछा।

"जहां तक मुझे जानकारी है इतना मुस्तैद उपकरण दुनिया में कोई दूसरा नहीं है। और इसे मैंने ही बनाया है।" कृत्रिम विनय से जैक ने उत्तर दिया।

लेकिन जैक और उसके उपकरणों की मुस्तैदी समय को रोक नहीं सकती थी। समय गुजरता जा रहा था और अभी तक कुछ हाथ नहीं आ रहा था। छठे दिन तक उस 'हरे मानव' से बिल को कोई जानकारी नहीं मिली थी। और उस दिन स्पेसशिप को जांचा जाने वाला था।

छठे दिन जैक अकेला नहीं था, उसके साथ दस साल का उसका बेटा भी था। उसका बेटा जैक जूनियर बहुत ही जिज्ञासु और बुद्धिमान था। उसके प्रश्नों की तेज बोलिंग खेलना बिल और जैक दोनों के लिए ही कठिन साबित हो रहा था।

"मैं तुमसे एक प्रश्न पूछूं ?" जैक जूनियर ने सिर हिलाया और बिल ने पूछा, "तुम आज यहां किस लिए आए हो और कब तक रुकोगे ?"

"बिल चाचा ! मैं तो पिताजी की मदद करने आया हूं। उनका काम खत्म होते ही उन्हें हाइकिंग के लिए ले जाऊंगा। वैसे तो हमें छः दिन पूर्व ही जाना था" —जैक जूनियर ने शिकायत की।

छठे दिन के अंत तक जैक ने स्पेसशिप की छान-बीन पूरी की, किंतु फिर भी कोई समाधानकारक तथ्य सामने नहीं आए थे। बिल को तो वैसे भी कल्पना नहीं थी कि वह क्या खोज रहा है।जैक द्वारा एनलॉर्ज किए सारे प्रिंट्स बिल के हाथ में थे।

"चलो भई, मेरा काम तो खत्म हुआ।" एक लंबी आह भरते हुए जैक ने कहा, "अब आगे का तुम स्वयं संभालो। मैं तो चला हाइकिंग के लिए। क्यों जूनियर, आ रहे हो न ? मैं जरा बाथरूम हो आता हूं।"

जैक बाहर गया किंतु बिल बहुत निराश था। इतने प्रयत्नों के बावजूद कुछ भी हाथ नहीं लगा था। रॉजर और उसके सहयोगियों का स्पेश-मिशन रद्द करने के प्रयत्न भी नाकाम रहे थे। मन ही मन बिल को लगा कि ये लोग यात्रा पर जाते हैं, तो उनका वापस लौटना संभव नहीं है। मगर क्यों ?—यह तो उसे पता नहीं था। फिर भी उसे लगा कि फ्रॉस्ट का जो हाल हुआ, वही इनका भी होगा।

"यह देखो यह आदमी हैम्बर्गर खा रहा है।" जैक जूनियर की आवाज से वह होश में आया। ऐसी स्थिति में भी इस लड़के को हैम्बर्गर दिखाई दे रहा है। है न 'टिपिकल अमेरिकन किड !' किंतु बिल ने देखा,वह लड़का एक प्रिंट देख रहा था !

वह तुरंत उसके पास गया और उसके हाथ से वह प्रिंट छीन ही लिया।

"बिग मैक है वह।" हैम्बर्गर ऐक्सपर्ट ने कहा !

बिल ने ध्यान से देखा। वास्तव में पायलट के स्थान पर बैठा वह हरा मानव दोनों हाथों में सैंडविच जैसा कुछ पकड़ कर खा रहा था। उसका चेहरा निहारते हुए जूनिअर जैक ने दुबारा कहा कि वह, "बिग मैक ही है।"

"यदि ऐसा ही है तो तूने एक बहुत बड़ी समस्या हल कर दी ! बिल ने कहा।

++ ++ ++

उस रात लॉस एंजेलिस से वॉशिंग्टन की अंतिम उड़ान में सफर करते समय बिल को पिछले दो घंटों की घटनाएं याद आ रही थीं। कैसे उसने जैक को बाथरूम से बाहर आते ही फिर से काम करने भिड़ा दिया। जैक ने किस तरह अपने कौशल का कमाल कर दिखाया। अंतरिक्षयान के चालक से हाथों में दिखाई देने वाले उस सैंडविचन का चित्र यथासंभव अधिकतम बड़ा कर दिया और कैसे अंत में दोनों ने मारे खुशी के जैक जूनियर को गोद में उठा लिया था।

तत्पश्चात् दोनों जैक से विदा होकर उसने मिस्टर 'बी' को फोन किया था। उन्होंने तुरंत उसे वॉशिंग्टन बुलाया और साथ ही. अंतिम फ्लाइट में एक सीट भी बुक करा दी थी।

किंतु अब भी ये सारी बातें बिल की समझ में नहीं आ रही थीं। वह यान और वे लोग हैं तो पृथिवी के ही—अमरीकी ही होंगे। तो क्या यह हाईजैकिंग का मामला है ? 'स्पेसजैकिंग' करके सरकार से ढेरों पैसे ऐंठने वाली यह कुछ वैज्ञानिकों की टोली तो नहीं है ? मगर दुनिया के अन्य क्षेत्रों में उसके दिखने का क्या कारण हो सकता है ?

शायद मिस्टर 'बी' इन बातों को स्पष्ट कर सकेंगे। फोन पर तय हुआ था कि वॉशिंग्टन के डलेस हवाई अड्डे पर एन्क्वाअरी ऑफिस के सामने फूलों वाली टाई पहने

लंबे-लंबे बालों वाला एक युवक उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा। उस आदमी को पहचानने में बिल को कोई कठिनाई नहीं हुई। वह आदमी हाथ मिलाने आगे बढ़ा और बोला, "मैं जोनाथन।"

"मैं बिल।" बिल ने हाथ मिलाया और सामान लेकर उसके साथ चल पड़ा।

जोनाथन की गाड़ी बाहर से सादी थी। लेकिन बिल ने देखा,अंदर से वह काफी अलग थी। अंदर से बाहर की कोई चीज नहीं नजर आती थी।

"मिस्टर 'बी' अपना कार्यस्थल बिल्कुल गुप्त रखना पसंद करते हैं। वे बहुत शर्मीले हैं।" जोनाथन ने कहा। एक शोफर गाड़ी चला रहा था।

बिल वाशिंग्टन से भली भंति परिचित था। इसलिए यद्यपि बाहर का कुछ नजर नहीं आ रहा था फिर भी वो कहां जा रहा था इसकी उसे पूर्व कल्पना थी। हवाई अड्डे से शहर की तरफ जाने वाला रास्ता समाप्त होते ही 'बेल्ट वे'—वाशिंग्टन जाने वाला राज मार्ग शुरू हुआ और यहीं से गाड़ी वर्जिनिया की ओर मुड़ गई। उस मार्ग से कुछ दूर जाकर गाड़ी एक छोटे मार्ग पर उत्तर की ओर जा रही थी। किंतु यहां से बिल को कुछ पता न चले इसलिए शोफर ने उलटे-सीधे चक्कर काट कर गाड़ी एक बड़ी बिल्डिंग के तहखाने में खडी कर दी। बिल को आस-पास का इलाका देखने का मौका ही नहीं दिया और जोनाथन ने उसे पास की एक लिफ्ट में लगभग धकेल ही दिया। सबसे ऊंचा १२ नंबर का बटन दबाया। एक-दो दालान छोड़ कर एक बंद दरवाजा उसने खटखटाया। उस पर 'Mr. B' लिखा था। उसे देखने की बिल को बड़ी उत्सुकता थी।

किंतु अन्दर जाकर उसको बहुत निराशा हुई—क्योंकि अंदर तो कुछ भी नहीं था।

++ ++ ++

टेबिल के सामने एक कुर्सी रखी थी। बिल सोच ही रहा था कि उस पर बैठे या नहीं कि अचानक कहीं से आवाज आई—

"बिल, उस कुर्सी पर बैठ जाओ।"

वह उस आवाज की दिशा ढूंढ़ रहा था। जोनाथन तो कभी का दरवाजा बंद करके चला गया था। तभी फिर से आवाज आई, "माफ करना! मैं बहुत शर्मीला हूं, इसलिए तुम्हारे सामने नहीं आ सकता। किंतु मैं सामने बैठा हूं यही समझकर तुम बोलो। और यदि कुछ दिखाना हो तो टेबिल पर रख दो। मुझे दिख सकता है।"

"मैं रॉजर बकलैंड के स्पेस मिशन के बारे में बोलना चाहता हूं। उनकी—याने उन सभी लोगों की यात्रा बेकार न साबित हो—उसे कोई खतरा न पहुंचे, इसलिए मैं आया हूं। यह मिशन रोक दीजिए—उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।"

"इस समय मैं कुछ नहीं कर सकता। कुल सात घंटे ही तो बचे हैं। पर यह बताओ,मेरा नंबर तुम्हें कैसे मिला? और तुम कौनसे सबूत की बात कर रहे थे? यदि तुम्हारी बात मानने लायक हो तो मैं रॉजर और उसके दोस्तों के हित में यह मिशन रद्द करने का हर संभव प्रयत्न करूंगा।"

"रॉजर बकलैंड ने ही मुझे आपका यह नंबर दिया। पृथिवी के पास उड़नतश्तरियां दिखती हैं—उनमें बैठे हरे मानवों ने हमारे अंतरिक्ष यानी के लिए खतरा पैदा किया है

और वे लोग पृथ्वी के अन्य कई स्थानों पर भी देखे गए हैं।"

"यह सब रॉजर ने तुम्हें बताकर ठीक नहीं किया। यह 'ब्रीच ऑफ सिक्योरिटी' है।" 'बी' ने एकदम कहा।

"आप ठीक कह रहे हैं। परंतु स्वर्ग रॉजर को लग रहा था कि वह इस मिशन से जीवित नहीं लौटेगा। उसने फ्रॉस्ट का अनुभव भी मुझे बताया। रॉजर को पूरा विश्वास है कि ये लोग पृथिवी से बाहर की संस्कृति से नहीं आए हैं। पहले के कई उदाहरण उसने सामने रखे, जिनमें उड़ती तश्तरियों के बारे में लोगों के बयान झूठे साबित हुए हैं।"—बिल।

"तो यह सब क्या मायाजाल है ? और रॉजर ने जब तुम्हें इतनी सारी बातें बताई हैं तो हमारे इलेक्ट्रॉनिक्स फोटोग्राफी के बारे में बताया ही होगा।"

मिस्टर 'बी' के ताने की ओर जानबूझकर अनदेखी करके बिल ने कुछ फोटो टेबिल पर रखे और कहा, "हां। यह रहा उसका दिया हुआ फोटो। यह सच है या नहीं पहले आप तसल्ली कर ले।" कुछ देर बाद मिस्टर 'बी' की आवाज आई, "हां यह फोटो सच हैं।"

"तो फिर यह देखिए उसका विश्लेषण करके मिली जानकारी।" बिल ने जैक के साथ मिलकर किए काम के बारे में बताया और अन्य चित्रों की ओर 'बी' का ध्यान आकर्षित किया। अंत में उसने कहा,

"यह देखिए, अमरीकी हैम्बर्गर खाने वाला यह चालक। यह पृथिवी के बाहर से आया है, ऐसा मैं नहीं मानता। ये सब लोग पृथिवी के ही है और हमारे वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों का अपहरण करने का इनका इरादा है। इससे पहले जो यान और लोग लापता हुए हैं वे इन्होंने ही पकड़े होंगे। और अब इनकी आंखें हमारे सर्वोत्कृष्ट वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों पर हैं। इसलिए यह मिशन रोक दीजिए। बल्कि मैं तो कहता हूं कि उनके संभावित आक्रमण का मुकाबला करने के लिए फौज ही भेजिए।"

'बी' काफी देर से शांति से बिल की बातें सुन रहे थे। बिल सोच रहे थे, उनका क्या निर्णय होगा ?

"बधाई हो बिल ! तुमने एक बहुत बड़ा काम किया है। हम भी इसे करने में सफल नहीं हुए थे। मैंने पहले ही कहा था कि वक्त बहुत कम है। परंतु मिशन रोकना असंभव भी नहीं है। इसका पूरा श्रेय तुम्हीं को जाता है। मेरी बात मानो और तुम शीघ्र ही फ्लोरिडा के लिए निकल पड़ो। मैं सब व्यवस्था करता हूं।"

बिल ने राहत की सांस ली।

++ ++ ++

बिल को ठिकाने लगाकर मिस्टर 'बी' ने अपनी टेबिल की तरफ देखा। वहां तीन टेलिफोन रखे थे। लाल, हरा और काला। काले फोन पर उन्होंने अपने एजंटों को सूचनाएं दी। अब उन्होंने हरा फोन उठाया।

"मिस्टर 'ए' ?" उन्होंने पूछा।

"बोल रहा हूं। कहो 'बी', पूरी तैयारी हो गई।"

"हां ! लेकिन एक मुसीबत है। अभी अभी मेरे पास एफ.बी.आई. का एजंट बिल बोन्स आया था। उसने पता लगाया है कि वे हरे मानव पृथिवी के ही हैं।"

"गुस्से में 'ए' ने गाली दी, किंतु अपने आप को संयत करते हुए उसने बात का स्पष्टीकरण मांगा। 'बी' ने सब बताया। वह सुन कर 'ए' ने कहा :

"जॉर्ज बड़ा ही कुशल यान-चालक है, लेकिन उसमें एक दोष है—वह बहुत पेटू है। परसों ही एक पार्टी में गए थे तो साला एक के बाद एक हैम्बर्गर जमा रहा था। और कह रहा था "ये कितने भी खाऊँ तो भी कम ही है।" उसके इस पेटू पने ने ही आज मुसीबत में डाल दिया है। कितने ध्यान से हमने यह प्लान तैयार किया था। रॉजर और उसके साथियों को भगाने के बाद दुनिया में तहलका मच जाता। ओर वह सिनेटर ब्लैकमैन और जोर-शोर से भाषण देता रहता। सामान्य लोग यह मान जाते कि ये यान कहीं बाहर से ही आते हैं। वे घबरा जाते। इसके विपरीत हमारे विशेषज्ञ यह समझाने में जुटे रहते कि उड़न-तशतरियां वगैरा सब झूठ हैं, मायाजाल है। इस वाद-विवाद में अपहृत वैज्ञानिकों और यानों का उपयेग हम जासूसी के लिए बड़े आराम से कर सकते थे। हमारे प्रेसिडेंट भी इस बात के लिए राजी थे। लेकिन इस साले जॉर्ज के पेटूपन ने पूरा प्लान चौपट कर दिया।"

"अभी भी समय है।" 'ए' को रोकते हुए 'बी' ने कहा, "मैंने बिल को फ्लौरिडा भेजा है। तुम्हारी अनुमति हो तो उसे भी इस मिशन पर भेज देते हैं। मेरी जानकारी के अनुसार उसके पास की जानकारी अभी उसने किसी और को बताई नहीं है। किसी एक व्यक्ति की बुद्धिमत्ता के आगे हमारा प्रोजेक्ट विफल नहीं होना चाहिए।" 'बी' को अफसोस हो रहा था। बिल का साहिसक जोश सराहनीय था। किंतु उसकी भी मजबूरी थी। राष्ट्र व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण था।

"बहुत अच्छे ! क्या बढ़िया उपाय खोजा है तुमने 'बी' ?" 'ए' ने उत्साहित होकर कहा। "उन वैज्ञानिकों के साथ इसे भी भेज देंगे अफ्रीकी जंगलों की भूमिगत बस्ती में।"

किंतु 'बी' के विचार थोड़े डगमगा रहे थे। उसने कहा कि, "इन सारी बातों पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। व्यक्ति स्वतंत्रता का समर्थक हमारा राष्ट्र यदि अपने ही नागरिकों को इस तरह पकड़कर एक जगह बंद करे तो क्या यह ठीक होगा ?"

"किन्तु कोई कैसे जानेगा कि इन नागरिकों को उनके अपने राष्ट्र ने ही उड़ाया है ? बरम्यूड त्रिकोण पर भरोसा रखने वाले कितने लोग है ? ठीक वैसे ही, उड़न तश्तरियों पर विश्वास रखने वाले उन हरे मानवों को ही अपहरणकर्ता मानेंगे। जिन्हें विश्वास नहीं है, वे इसे अंतरिक्ष दुर्घटना समझेंगे और चुप रहेंगे। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा ? कुछ दिनों के लिए अंतरिक्ष-यात्राएं बंद हो जाएंगी। और यदि उच्च स्तरीय जांच करवाने के आदेश आएं, तो वह जांच भी कर देंगे। राष्ट्र पर तो कोई आरोप लग ही नहीं सकता। वैसे भी राजनीति मैं नैतिकता की बात करना बेकार है। अणुशक्ति का हम स्वयं तो महासंहारक शस्त्रास्त्र बनाने के लिए खुले आम प्रयोग करते हैं और .... दूसरों को ऐसा न करने की हिदायत देते रहते हैं। ....'

"अच्छा यह बताओ, रॉजर जैसे जिम्मेदार वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञ अंतरिक्ष से निगरानी करने वाली आसमानी निगाहें बनने या हमारे लिए जासूसी करने जैसे कामों में अपने ज्ञान का उपयोग अपनी मर्जी के खिलाफ हमें करा देने के लिए राजी हो जाएंगे ?"

"उसकी चिंता तुम मत करो, क्योंकि इन लोगों को सब बातें कुछ इस तरह बताई जाएंगी कि उन्हें लगेगा, वे किसी राष्ट्रीय सुरक्षा योजना में काम कर रहे हैं। वैज्ञानिकों के सामने यदि बात योग्य ढंग से प्रस्तुत की जाती है तो वह निश्चित रूप में सहायता करते हैं। दूसरे महायुद्ध की बात अलग थी, किंतु उसके बाद शांतिमय दौर में महासंहारक शस्त्रास्त्रों को सही जगह डालने की योजना किसने बनाई थी ? राजनितिज्ञों ने नहीं बल्कि ऐसे ही वैज्ञानिक थे वे। सिर्फ उन्हें इस बात का विश्वास दिलाया गया कि जो कुछ वे करने जा रहे है वो राष्ट्र हित में होने वाला है। हम भी तो यही कर रहे हैं। वह फ्रॉस्ट कितने उत्साह से हमारी सहायता कर रहा है, जानते हो ?"

"दरअसल वह भी एक वैज्ञानिक ही था। इसलिए अपनी योजना के बारे में बीच बीच में मेरे सामने कुछ सवाल पैदा हो जाते है। किंतु तुमने उनके अच्छे उत्तर देकर मेरा समाधान किया है !" 'बी' ने कहा। "बस अब एक ही बात—"

"यह बिल है कहां का ?"

"असल में वह मेरी यंत्रणा में काम नहीं करता। अतः उसे भगाने का आदेश भी मैं नहीं दे सकता। कोई उच्च स्तरीय आदेश मिले तो बात बन सकती है।" 'बी' की नजर सफेद फोन की ओर गई।

"उसका इंतजाम मेरे जिम्मे रहा।"

++ ++ ++

वॉशिंग्टन के १६००, पेन्सिल्वानिया एवेन्यू का सफेद महल। ओवल ऑफिस के नाम से पहचाने जाने वाले एक कमरे में एक व्यक्ति ने अपने टेबल पर रखे अनेक टेलिफोनों में से एक का रिसीव्हर उठाया।

'बी' के सफेद फोन की घंटी बजने लगी।

अहंकार

"कप्तान साहब ! मैं आप से कुछ कहना चाहती हूं।" निरीक्षण कक्ष के द्वार पर खड़ी चित्रा ने कहा।

निरीक्षण-कक्ष की बड़ी कुर्सी पर कप्तान विश्राम आराम से बैठे थे। उनके आस-पास टी.वी. के कुछ पर्दे लगे थे। प्रत्येक पर्दे पर अंतरिक्ष-यान की गतिविधियां नजर आ रही थीं। वह कोई संचालन-कक्ष नहीं था। किंतु यदि जरूरत हो तो कप्तान के पास यह यंत्रणा थी जिससे वह संचालन में आवश्यक परिवर्तन कर सके। आपात्काल में कप्तान वहीं बैठकर सारे निर्णय ले सकता था।

सभी कप्तानों में सर्वाधिक अनुभवी थे कप्तान विश्राम। और इसीलिए अत्यधिक जिम्मेदारी की मांग करने वाले इस पद को वे बहुत कुशलता से संभालते थे। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए उन्होंने यह अनुभव प्राप्त किया था। अपने अनुभवी होने के एहसास से कप्तान विश्राम भी अछूते नहीं थे। यही कारण था कि कई बार वे अपनी बात पूरे जोर से कहने में हिचकिचाते नहीं थे।

विश्राम ने थोड़ी नाराजगी से मुड़ कर देखा। चित्रा की आंखों से उनकी नाराजगी छिपी नहीं।

"बैठो चित्रा ! कहो, क्या बात है ?" हमेशा के अपने विनम्र अंदाज में विश्राम ने कहा।

"आप जानते ही हैं कि मैं इस यान के संदेश प्रसारण गृह में काम करती हूं। हमारे यान को निकले दस महीने हो चुके हैं। इस दौरान काम के सिलसिले में मेरा संबंध कुछ विशिष्ट लोगों से आया है। और आगे भी आता रहेगा। यान के मुख्य वैज्ञानिक दिलिप राजे और आप के नीचे काम करने वाले पहले अधिकारी विजय सिंग से मेरी कुछ खास ही दोस्ती हो गई है।" चित्रा कप्तान विश्राम का निर्विकार चेहरा निहार रही थी। लेकिन चित्रा ने अपनी बात जारी रखी।

"यात्रा समाप्त होने में अभी एक साल है। इन संबंधों को केवल मित्रता तक सीमित रखने की सोची थी मैंने। लेकिन बात हद से ज्यादा आगे बढ़ चुकी है। दिलिप और विजय दोनों ही मुझसे शादी करना चाहते हैं। और दोनों में से किसी एक का चयन तो करना ही होगा।"

"क्यों भला ? विचारों की स्वतंत्रता कुछ है या नहीं। यदि वे दोनों ही तुम्हें पसंद न हों, तो किसी और का चयन करने के लिए तुम स्वतंत्र हो। उन दोनों से मन की बात साफ साफ कह दो।"

"बात वह नहीं है।" शरमाती हुई चित्रा बोली। "मैं दोनों में एक से प्यार करती हूं।"

"तो फिर समस्या है कहां ? कप्तान के नाते, जब चाहो, मैं तुम्हारी शादी करवा

सकता हूं।" विश्राम ने हंसते हंसते पूछा, "इन दोनों में से कौन भाग्यशाली है ?"

"दिलिप राजे का मैं बहुत सम्मान करती हूं। वे कमाल के वैज्ञानिक हैं। उन्होंने आज तक कई समस्याओं को बड़ी कुशलता से सुलझाया है। यही कारण था जो मुझे उनकी ओर आकर्षित करता रहा। किसी न किसी बहाने में अक्सर उनके कमरे में जाया करती थी ताकि उनका सहवास ज्यादा से ज्यादा मिल सके। मेरी इस भावना में व्यक्तिपूजा की भावना थीं .... किंतू बाद में मैंने महसूस किया कि जीवनसाथी के रूप में मैं उनके अयोग्य हूं। उनकी बुद्धिमत्ता की ऊंचाई तक मैं नहीं पहुंच सकती थी। वे विज्ञान के प्रति पूर्णतः समर्पित है। आज भले ही मेरी ओर आकर्षित हुए हैं, लेकिन उनके जीवन में मेरा स्थान हमेशा ही गौण रहेगा ....।

"इसके विपरीत विजय सिंग का हंसता खेलता मिलनसार स्वभाव, वक्त आने पर जान की बाजी लगाने वाली उसकी हिम्मत ने मन मोह लिया। बुद्धिमत्ता के पलड़ों पर शायद मेरा ही पलड़ा भारी हो। इसीलिए शादी के लिए मैंने विजय को चुना है .... और समस्या भी यहीं से शुरू होती है।"

कप्तान समस्या समझ चुके थे। उनकी गंभीर मुद्रा इसका संकेत दे रही थी। लेकिन फिर भी चित्रा ने बात स्पष्ट करनी चाही। "दिलिप राजे मेरी ना सहन नहीं कर पाएंगे। उनके जैसे अद्वितीय प्रतिभावान व्यक्ति को ठुकरा कर मेरा एक सामान्य व्यक्ति का हाथ पकड़ना उनके अहंकार को निश्चित ठेंस पहुंचाएगा। और नतीजा आप सबको भुगतना पड़ सकता है।"

चित्रा ठीक कह रह थी। दिलिप राजे का आत्मविश्वास जबरदस्त था और उसीसे उत्पन्न अहंकार तो और भी अधिक। जिस तरह नाटक और फिल्मी सितारों की मर्जी हर कीमत पर संभाली जाती है, बड़े बड़े कलाकारों का सनकी मिजाज बर्दाश्त किया जाता है, उसी प्रकार दिलिप राजे की खुश रखने की यान के सभी लोग (विश्राम भी) कोशिश करते थे, क्योंकि इस यात्रा में उसकी बहुत आवश्यकता थी।

"क्या तुम अपना निर्णय कुछ दिनों तक स्थगित नहीं कर सकती ?" कप्तान ने चिंतित हो कर पूछा।

"दिलिप राजे को कल तक उत्तर चाहिए। हां के अतिरिक्त अन्य कोई भी निर्णय उनके अहंकार को चोट पहुंचाएगा।"

कप्तान विश्राम बात समझ रहे थे। झुंझला कर बोले, "मैंने बीसियों बार कहा होगा, महिलाओं को अंतरिक्ष यात्रा में न लिया जाए। बेकार में झंझट पैदा होते हैं। लेकिन मेरी कोई सुने तब ना ?"

महिलाओं को अंतरिक्ष यात्रा में क्यों लिया जाए—चित्रा के पास इसके बहुत से कारण थे। लेकिन वे बताने का यह मौका नहीं, वह जानती थी। विश्राम ने ही आगे कहा,

"तो फिर मुझ से क्या चाहती हो ?"

"मैं आपसे किसी सहायता की अपेक्षा नहीं कर रही, क्योंकि कुछ भी हो आखिर यह मेरा निजी मामला है। किंतु मेरे निर्णय से राजे यदि अपना संतुलन खो देते हैं तो उन्हें आप ही पुनः पूर्ववत कर सकते हैं। और जल्दी ही आंपको यह कठिन कार्य करना

पड़ेगा। इसकी पूर्व सूचना देने मैं आई हूं।"

"ठीक है। पूर्वसूचना के लिए धन्यवाद।" माथा सहलाते हुए विश्राम ने चित्रा को जाने की अनुमति दी।

वही हमेशा का त्रिकोण! एक महिला और दो पुरुष। यहां युक्लिड का ज्यामिति प्रमेय उत्तर नहीं दे सकता था। आवश्यकता थी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की। स्वयं को बहुत अनुभवी मानता हूं, लेकिन कभी ऐसी समस्या नहीं सुलझाई थी। यान के इस काफिले में मैंने बेकार ही महिलाओं को शामिल करने दिया। यदि मैंने कड़ा विरोध किया होता तो मेरी बात अवश्य मान ली जाती। ऐसी स्थिति भी पैदा न होती। परंतु अब रोने से क्या होगा। कल तक इस समस्या का कोई न कोई हल ढूंढना ही पड़ेगा।

कप्तान विश्राम विचार मग्न थे।

बहुत सोचने पर भी उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था. आखिर उन्होंने सोचा कि संकट सामने आन खड़ा होगा तब तो सूझेगा वैसा ही करेंगे ....।

++ ++ ++

दिलिप राजे के रूप में वह संकट उनके सामने आन खड़ा था। दिलिप के अनसंवरे लंबे लंबे बालों का हुलिया देखकर ही कप्तान विश्राम समझ गए थे कि चित्रा उसे अपना निर्णय सुना चुकी है, लेकिन फिर भी अपनी अनभिज्ञता दर्शाते हुए उन्होंने कहा, "क्या बात है दिलिप? जैनों की तरह हाथों से बाल नोंचकर केशलुंचन करने का इरादा है क्या? उससे तो यान का नाई यह काम अच्छी तरह कर देगा।"

"कप्तान विश्राम। यह कोई मजाक की बात नहीं है। मुझे आज एक जबरदस्त आघात पहुंचा है। अपनी बुद्धिमत्ता के कारण हम अपने आप को जानवरों से श्रेष्ठ समझते हैं। पर आपको आश्चर्य होगा कि दुनिया में बुद्धिमत्ता की कोई कीमत नहीं है .... उसके अन्य गुणों की ज्यादा कद्र की जाती है।"

"दिलिप, पहेलियां न बुझाओ! किस बुद्धिमान को किसने तुच्छ माना है?"

"स्पष्ट ही कहे देता हूं, कप्तान! उस विजय सिंग से यदि मैं अपने आपको अधिक बुद्धिमान समझता हूं तो क्या कुछ गलत है?"

"नहीं! स्वयं विजय सिंग इस बात को मान्य करेगा।"

"तो फिर मोटी अक्ल की वह चित्रा उसे श्रेष्ठ क्यों समझती है? ...... हम दोनों ने उससे शादी करने का प्रस्ताव रखा था। लेकिन उसने मुझे ठुकरा कर उस का चयन किया है।"

"लेकिन इस बात पर इतना बेचैन होने की क्या जरूरत? जीवन साथी चुनने के लिए बुद्धिमत्ता एकमेव कसौटी तो नहीं है। अन्य गुणों से भी तो व्यक्ति को परखा जा सकता है। अब कौन किस गुण को महत्व देगा, यह उसका व्यक्तिगत निर्णय होता है। तुम क्यों आपे से बाहर होते हो? चित्रा ना सही, ऐसी बीसियों मिल सकती है तुम्हें।" तुम्हें।"

"कप्तान! किसे समझा रहे हैं आप? मैं कोई दूध पीता बच्चा हूं? मुझे चित्रा ही

चाहिए। वरना ...."

नहीं तो दिलिप क्या करता यह पता ही नहीं चला, क्योंकि अचानक एक जोरदार आवाज हुई। पूरे यान को ऐसे जबरदस्त झटके लगे कि कप्तान और राजे इधर उधर गिर पड़े। खतरे की घंटियां बजने लगीं और विद्युत प्रवाह भी एक क्षण रुक गया।

—दूसरे ही क्षण प्रवाह फिर शुरू हो गया। किंतु कप्तान को यह पहिचानने में देर नहीं लगी कि आपातकालीन व्यवस्था के रूप में यह स्वयंचलित यंत्रणा शुरू हुई थी, क्योंकि कक्ष में उनके टी.वी. पर्दों पर लाल बत्तियां टिम टिमा रही थीं।

यान की कंपन रुक गई। विश्राम अपनी कुर्सी पर आ बैठे। उन्होंने एक बटन दबाया, इंटरकॉम से आवाज आई।

"प्रथम अधिकारी विजय सिंग बोल रहा हूं। कप्तान, आप सुरक्षित तो है न ?"

"हां। क्या हुआ है, बताओ।" विश्राम ने आदेश दिया।

"अंतरिक्ष का एक बड़ा पत्थर यान से टकरा गया। धक्के का असर चार डिग्री का है।"

"बाप रे ! चार डिग्री ?" कप्तान बोले।

"हां। मुझे तो यही लगता है। वैसे कंप्यूटर भी यही दर्शा रहा है। हमारे ईंधन के सभी टैंक फट चुके हैं .... । अंदर की सिर्फ एक टंकी में ईंधन शेष है।"

"पर यह पत्थर आया कैसे ? अचानक ?"

"अचानक नहीं। आते हुए उसे हमने देखा था लेकिन वह इतनी तेजी से आ धमका कि हम बचाव के लिए कुछ कर ही नहीं सके। मुझे लगता है वह किसी ग्रह की ओर तेजी से खिंचा जा रहा था।"

"ग्रह नहीं कृष्ण विवर।" दिलिप राजे ने एकदम कहा।

"कृष्ण विवर ?" कप्तान विश्राम ने चकित होकर पूछा।

"जी हां ! मैं कुछ व्यक्तिगत उलझनों में उलझा जरूर हूं, लेकिन मेरा ध्यान यान की हर गतिविधि पर है। कल से मैं एक बात देख रहा हूं। वायुमंडलीय तरलता के कारण कुछ विशेष दिखाई नहीं दे रहा। किंतु जो थोड़ी बहुत चीजें दिखाई दे रही हैं वह एक विशिष्ट दिशा में तेजी से खिंची जा रही है। हमारा यान भी उसी दिशा में खिंच रहा है। चूंकि हमारा मार्ग इस कृष्ण विवर की बगल से जाता है इसलिए उस विवर में गिरने का हमें खतरा नहीं है। वैसे भी हमारा मार्ग कंप्यूटर के नियंत्रण में है। अतः कृष्ण विवर के आकर्षण को रोकने के लिए रॉकेटों का इस्तेमाल अपने आप ही हो गया।" दिलिप ने बात स्पष्ट की।

"तभी ! कल से ईंधन जरूरत से ज्यादा ही खर्च हो रहा है ऐसा मुझे बार बार लग रहा था।" विजय ने कहा। उसने आगे पूछा, "लेकिन यह कृष्ण विवर है कहां ?"

दिलिप ने निरीक्षण कक्ष के कंप्यूटर-टर्मिनल के कुछ बटन दबाए। उसके पर्दे पर कुछ अंक आए। दिलिप ने वे पढ़कर सुनाए।

"इस जगह तो पहले सुपरनोवा था। लगता है उस महाविस्फोटक तारे के अवशेषों से यह कृष्ण विवर तैयार हुआ होगा।" विजय ने कहा। उसे रोकते हुए कप्तान विश्राम

ने कहा, "मगर यह कृष्णविवर कहां है और कैसे बना हमें इससे क्या लेना ? हम तो इस अंतरिक्ष में इस तरह फंसे हैं कि पास की किसी बस्ती तक जाने के लिए पर्याप्त ईंधन भी नहीं है।"

"कप्तान ! उपलब्ध ईंधन हमें कब तक जीवित रख सकेगा ?"

"सिर्फ यान में जीवित रहने के लिए हमें ज्यादा ईंधन नहीं लगेगा। साल तो आराम से कट जायेगा।"

"तब ठीक है।" दिलिप ने कहा।

"ठीक है ?" कप्तान हैरान थे। "साल भर यहां रह कर क्या करेंगे ? यहां से निकलने के लिए ईंधन कहां से आयेगा ? और हमारी टंकियां भी फट चुकी हैं। उनकी मरम्मत कैसे होगी ? इस विशाल अंतरिक्ष में इसी दिशा में किसी दूसरे यान के आने की कोई संभावना नहीं।"

"कप्तान ! मैं अभी ठीक से नहीं कह सकता, किंतु जिस कृष्णविवर के कारण हम पर यह संकट आया है वही हमारा बेड़ा पार करेगा।"

"कृष्णविवर ? भला वह कैसे ?"

"मैं गणित द्वारा समझाता हूं। लेकिन उसके लिए एक साहसी आदमी की आवश्यकता होगी।" टी.वी. के पर्दे पर विजय सिंग की छवि की तरफ टेढ़ी नजर से देखकर दिलिप हंस रहा था।

++ ++ ++

अंतरिक्ष यान के यंत्रणा-कक्ष में छः व्यक्तियों में गोलमेज चर्चा चल रही थी। कप्तान विश्राम, प्रथम अधिकारी विजय सिंग, डॉ. चंडोला, प्रमुख अभियंता मुहम्मदुल्ला तथा संचार विशेषज्ञ राजीव भल्ला, पांचों लोग छठे व्यक्ति की योजना को जांच रहे थे। और यह छठा व्यक्ति कोई और नहीं वैज्ञानिक दिलिप था। दिलिप ने अपनी योजना बताते हुए अंत में कहा,

"हमें कृष्णविवर से आने वाली गुरुत्वीय लहरों को दर्ज करने और उसकी ओर फेंकी वस्तुओं की गति की जांच करने से उस विवर की शक्ति का अनुमान हो गया है। इसके साथ ही वह अपने अक्ष के इर्द गिर्द किस गति से मंडरा रहा है इसका भी पता चल चुका है। यही जानकारी कुछ देर पूर्व मैंने आपको दिखाई थी। इस चुंबकीय भंवर से ऊर्जा किस तरह मिलेगी यह भी स्पष्ट किया था। यह भी सिद्ध कर दिया है कि यह ऊर्जा हमें पास की किसी बस्ती तक ले जाने के लिए पर्याप्त है। अब इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए आप लोगों की सहायता आवश्यक है।"

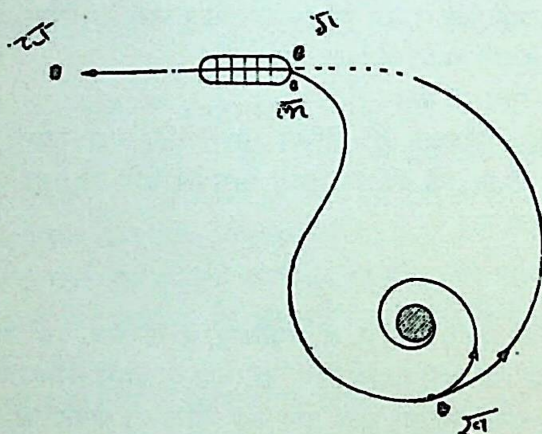
"दिलिप ! प्रथम मैं तुम्हारी योजना संक्षेप में दोहराता हूं।" विश्राम ने कहा,. "हमारे यान का बड़ा हिस्सा काट कर कृष्णविवर की दिशा में फेंका जायेगा। कृष्णविवर के इर्द-गिर्द मंडराते समय उसका एक भाग अलग होकर विवर में गिर जाए ऐसा प्रबंध करना होगा। इससे बचा हुआ भाग काफी तेजी से पलट कर हमारे यान पर आ धमकेगा। इस धक्के के कारण हमारा यान तेजी से नियोजित स्थल पर पहुंचेगा। दिलिप की पहली पारदर्शिका देखते हैं ...."

सबने फिर एक बार पारदर्शिका देखी। 'क' से यान का हिस्सा फिकेगा। 'ख' पर वह विभाजित होगा तथा बचा हुआ भाग लौटकर 'ग' यान पर टकरायेगा और फिर यान अपने निर्धारित लक्ष्य 'घ' तक पहुंच जायेगा।

सतही तौर पर तो योजना ठीक प्रतीत हो रही थी। लेकिन कई सवाल पैदा हो रहे थे। और प्रश्नों की बौछार शुरू हो गई।

"ठहरिए! एक एक कर पूछिए। डॉक्टर साहब, पहले आप पूछिए" कप्तान विश्राम ने कहा।

दिलिप की पारदर्शिता :



अंतरिक्षयान का एक भाग 'क' से छोड़ा जाए, 'ख' के पास विभाजित हो कर उसका एक भाग कृष्णविवर में गिरे और दूसरा यान पर 'ग' स्थान पर टकराए, ऐसी दिलिप की योजना थी। 'ग' पर मिला धक्का यान को निर्धारित लक्ष्य 'घ' तक ले जायेगा। (कृष्णविवर से ऊर्जा प्राप्त करने का यह मार्ग रॉजर पेनरोज नामक वैज्ञानिक का सुझाया है।—लेखक)

मितभाषी डॉ. चंडोला चर्चा में हमेशा पिछड़ जाते। अतः बोलने का प्रथम मौका उन्हें दिया जाना ठीक ही था। उन्होंने कहा, "क्या इस योजना में मनुष्य को भेजना सचमुच जरूरी है? पूछने का कारण, तीव्र गुरुत्वाकर्षण में मनुष्य प्राणी जीवित रहेगा या नहीं, हमें पता नहीं है। मैंने ऐसा पढ़ा है कि ऐसी स्थिति में मनुष्य का शरीर खिंचता चला जाता है ....।"

"यह कैसे हो सकता है?" मुहम्मदुल्ला ने सवाल किया। लेकिन दिलिप ने ही बात स्पष्ट की।

"चंडोला ने ठीक कहा है। कल्पना कीजिए कि आप किसी ग्रह पर खड़े हैं। आप के पैर ग्रह के अधिक निकट होने के कारण गुरुत्वाकर्षण का दबाव सिर के मुकाबले पैरों पर अधिक होगा। किंतु चूंकि ग्रहों पर सामान्यतः गुरुत्वाकर्षण कम होता है अतः यह तनाव भी कम होता है। किंतु कृष्णविवर के पास गुरुत्वाकर्षण बहुत अधिक होता है

.... अतः इस तनाव को कम करने का कोई प्रबंध करना आवश्यक है। इसके लिए जरूरत है कुछ दवाइयों की जो हमारे पास हैं भी ....

"किंतु चंडोला जी का प्रश्न था, क्या मनुष्य को भेजना आवश्यक है ? मेरा उत्तर है हां, क्योंकि कृष्णविवर की तरफ ठीक समय पर यान का एक भाग फेंका नहीं गया तो हमारे सारे प्रयत्न असफल हो जाएंगे। यह काम यंत्र की अपेक्षा मनुष्य ही अधिक अच्छा कर सकेगा। मेरी पारदर्शिका में 'ख' बिंदु बहुत ही महत्वपूर्ण है। उस समय एक खास बटन दबाकर यह काम पूरा करना होगा।"

"क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूं ?" हाथ उठाकर राजीव भल्ला ने पूछा। अनुमति डॉ. विश्राम ने दी।

"इस संपूर्ण योजना में उत्तम संचार व्यवस्था का होना आवश्यक है। जो भाग वापिस आकर यान से टकराएगा उसमें हमारा अंतरिक्ष-वीर कुछ देर तो रहेगा ही। उस समय यान और उस व्यक्ति के बीच सीधा संपर्क होना चाहिए। मुझे लगता है कि छोटी मोटी अंतरिक्ष-यात्राओं में इस्तेमाल की जाने वाली स्पेस-कैपसूल उस भाग में चिपकाई जाए। उसमें संचार की सभी आवश्यक चीजें हैं। दिलिप की योजनानुसार संदेशों के आदान-प्रदान की योजना मैं बनाता हूं। है मंजूर ?"

"मंजूर है। लेकिन कृष्णविवर के पास जाने के लिए उस कैंपसूल में कुछ सुधार करने आवश्यक है। उस बारे में मैं मुहम्मदुल्ला को सूचना दे दूंगा। कुल मिलाकर इस यात्रा के दो महत्वपूर्ण चरण है। अभी हमने पारदर्शिका में देखा वह पहला चरण है। 'ख', जहां कृष्णविवर में गिरने वाला भाग अलग होगा। दूसरा चरण है 'ग', जहां हमारा अंतरिक्ष-वीर स्पेस-कैपसूल समेत शेष भाग से अलग हो जाएगा। चरण 'ख' में यदि थोड़ी भी लापरवाही हुई तो वह स्वयं यान पर टकरा कर भस्म हो जाएगा ....। दोनों चरणों की अग्रिम सूचना कंप्यूटर से मिलेगी जो अंतरिक्ष-वीर तक पहुंचनी अत्यावश्यक है।" दिलिप राजे ने स्पष्टीकरण दिया।

तत्पश्चात् इस योजना पर काफी देर तक तकनीकी चर्चा हुई। अंत में यात्रा का दिन निश्चित किया गया। सारी तैयारियों के लिए एक महीने की अवधि तय की गई। लेकिन एक महत्वपूर्ण सवाल तो फिर भी शेष था।

"अंतरिक्ष-वीर का चयन अभी करना है", कप्तान विश्राम ने कहा।

"उसके लिए आप समय बरबाद न करें। मैं यह काम करने के लिए तैयार हूं। बल्कि मेरा तो यह आग्रह ही है।"

ये शब्द विजय सिंग के थे।

++ ++ ++

अंतरिक्ष यान के सभी लोग उस महत्वपूर्ण अवसर पर उपस्थित थे। दिलिप के सुझाए प्रोजेक्ट का शुभारंभ था।

"सब कुछ तैयार है ?" कप्तान विश्राम ने विजय सिंग से पूछा।

"जी, कप्तान ! सभी चीजों की जांच हो चुकी है और वे सुचारू ढंग से काम कर रही हैं।"

उत्तर देने वाला विजय सिंग पहचाना नहीं जा रहा था। शारीरिक खिंचाव कम करने के लिए खास तौर से बनाए कपड़ों में विजय सिंग सर से पांव तक ढक गया था।

"अच्छा विजय, सब ठीक है ? हम सब की शुभ कामनाएं तुम्हारे साथ हैं। तुम एक बहुत बड़ा जोखिम उठाने जा रहे हो। और उसके लिए हम सब तुम्हारे ऋणी रहेंगे। किंतु जिस तरह दिलिप की वैज्ञानिक-क्षमता पर हमें पूरा भरोसा है, उसी तरह तुम्हारे साहस पर भी। तुम दोनों सफल होगे, मुझे पूरी आशा है .... दिलिप तुम्हें विजय से कुछ कहना है ?"

"नहीं कप्तान विश्राम ! विजय को मैंने सब सूचनाएं ठीक से समझा दी हैं। कंप्यूटर से जैसी सूचनाएं मिलेंगी वह ठीक वैसा ही करेगा। मुझे भी उस पर पूरा भरोसा है।"

दिलिप राजे ने विजय से हाथ मिलाया। कप्तान विश्राम ने उसकी पीठ थपथपाई। हवा में हाथ हिलाकर विजय ने सबसे विदा ली और अपने निर्धारित स्थान के लिए चल पड़ा।

कप्तान विश्राम ने धीरे से देखा, चित्रा की आंखें नम थीं और उसकी मुद्रा गंभीर थी। उन्होंने उसे धीरज बंधाने का निर्णय लिया और तभी उनकी नजर दिलिप पर गई।

दिलिप अलिप्त भाव से दूर जाती हुई विजय की आकृति देख रहा था। किंतु उसकी नजर देख कप्तान विश्राम बेचैन हो उठे थे।

++ ++ ++

पूर्वनियोजित रूप से योजना का प्रारंभ हुआ। अंतरिक्ष-यान का एक हिस्सा साथ लेकर विजय अपने स्पेस-कैपसूल के साथ कृष्णविवर की तरफ बढ रहा था। यह हिस्सा दो भागों में विभाजित था। अगले भाग में विजय का स्थान था। और पिछला भाग योग्य समय पर उससे अलग होकर विवर में गिर जाएगा ऐसी व्यवस्था की गई थी। विजय और कप्तान विश्राम के बीच का संदेशों का आदान प्रदान सुचारु रूप से चल रहा था। और कप्तान को सफलता का यकीन हो चला था। उन्हें लगा मैं बेकार ही बेचैन हुआ जा रहा था। ....

"कप्तान साहब, कप्तान साहब ....।"

विश्राम ने मुड़कर देखा। दरवाजे में चित्रा खड़ी थी। बेहद घबराई हुई ! चिंतित !

"कप्तान विश्राम, धोखा हुआ है, धोखा ....।"

"होश की दवा करो चित्रा ! स्पष्ट बोलो !" कप्तान विश्राम अलिप्त नजर आ रहे थे, किंतु मन ही मन वे फिर से बेचैन हो गए थे। ....

स्वयं को संभालते हुए चित्रा ने कहा, "गलती के लिए माफी चाहती हूं कप्तान साहब। लेकिन स्थिति ही कुछ ऐसी है कि मैं अपना संतुलन खो बैठूंगी। अभी अभी मुझे पता चला है कि 'मेरा विजय—विजय जिस काम के लिए गया है वहां से वह कभी लौट कर आयेगा ही नहीं। वह स्वयं कृष्णविवर में फेंका जाएगा ऐसा ही प्रबंध किया गया है।"

"यह कैसे हो सकता है ? कप्तान के नाते मैं तुम्हें आश्वासन देता हूं कि ऐसी कोई योजना नहीं है। विजय सही सलामत लौटेगा,भरोसा रखो।" कप्तान विश्राम ने कहा।

"नहीं कप्तान साहब ! असली योजना आप को पता ही नहीं है। यह सारी दिलिप की साजिश है, विजय को समाप्त करने की।"

"चित्रा! तुम एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पर गंभीर आरोप लगा रही हो। तुम्हें पूरा स्पष्टीकरण देना चाहिए।" मन पर संयम रखने के लिए कप्तान ने उठकर चहल कदमी शुरू की थी।

"हां ! मैं सब बताती हूं। मैंने जो कुछ अभी कहा है, स्वयं दिलिप की बताई बातों पर आधारित है।" चित्रा शांत स्वर में बोली।

"क्या कहती हो ?" आश्चर्य से कप्तान विश्राम ने पूछा।

"कुछ देर पहले दिलिप मेरे पास आया था। में संदेश-प्रेषण-कक्ष में थी। काम तो कुछ नहीं था। लेकिन मैं हमेशा के समय वहां उपस्थित रहूंगी यह जान कर दिलिप वहां आया। पता नहीं क्यों, पर उसे देखते ही मुझे लगा कि कुछ अशुभ होने वाला है।" चित्रा की बात बीच में ही काटते हुए कप्तान विश्राम ने कहा,

"इन दिनों दिलिप का तुमसे कैसा बर्ताव है ?"

"शादी के लिए मैंने ना कही थी तब दिलिप को बहुत बुरा लगा था। वह नाराज भी था। किंतु बाद में यान के इस संकट के कारण ही सही, उसका ध्यान मुझ से हट गया था और वह संकट से मार्ग निकालने में जुट गया था। तब से उसका व्यवहार विनम्र किंतु अजनबियों जैसा हो गया है। मैंने सोचा कि शायद वैज्ञानिकी योजना में व्यस्त होने के कारण उसका गुस्सा ठंडा हो गया होगा। किंतु आज मैं समझ गई .... वह मेरी भूल थी। .....

"आज दिलिप का रूप अलग ही था। मेरी ओर देखते हुए वह बोला, "क्यों चित्रा ! तुम्हारे प्रियतम से संदेश बराबर आ रहे हैं न ?"

"मेरे हां कहते ही वह बोला, "अगले चौबीस घंटों में जो कुछ बातें करनी हैं। कर लो उससे .... फिर ऐसा मौका नहीं मिलेगा।"

"चौंककर मैंने पूछा," "ऐसा क्यों सोचते ही दिलिप ? विजय अपना काम पूरा कर सुरक्षित लौटेगा तब जी भर के बातें कर लेंगे। वैसे भी ऊर्जा की बचत करने के लिए हम जितना आवश्यक हो उतना ही बोलते हैं।"

"ठीक ही है !" कप्तान विश्राम ने कहा। "फिर दिलिप ने क्या कहा ?"

"वह हंस पड़ा। लेकिन उसकी हंसी बहुत भयानक थी, डरावनी थी। उसने कहा, 'मैं कभी तुम्हारा मित्र रह चुका हूं। इसीलिए कहता हूं,विजय वापिस आ ही नहीं सकता। जिस मार्ग से वह जायेगा वह कृष्णविवर में ही समाप्त होता है।' यह सुनकर तो मेरे होश ही उड़ गए, कप्तान साहब।"

"किंतु ग्रह असंभव है !" विश्राम बोले। "दिलिप का गणित और कंप्यूटर प्रोग्राम कइयों ने देखा—परखा है। उन सब की यही राय है कि विजय की कक्षा, वह वापस लौटेगा ऐसी ही स्थिति मैं है।" किंतु चित्रा ने कहा,

"इस नियोजित प्रोग्राम को हम नंबर-१ से संबोधित करें तो हो सकता है दिलिप किसी दूसरे गणित के सहारे विजय को दूसरी कक्षा में भेज दे। दिलिप ने यह प्रोग्राम नंबर-२ कंप्यूटर में भरा है। अगले २४ घंटों में इन दोनों कक्षाओं का अंतर बढ़ता जाएगा। विजय यदि दूसरी कक्षा में जाता है तो उसकी वापसी के सारे मार्ग बंद हो जायेंगे। वह भयानक कृष्णविवर उसे निगल जाएगा .... यह सब दिलिप ने ही मुझे बताया है।"

"किंतु बात हाथ से निकली नहीं है अभी। तुम दिलिप को मनाती क्यों नहीं ?" विश्राम ने कहा।

"उसका कोई फायदा नहीं ! मैंने बहुत मिन्नतें की दिलिप की कि विजय असफल होता है तो उसके परिणाम हम सबको भुगतने पड़ेंगे। मेरे निर्णय की सजा विजय को क्यों देते हो ? लेकिन सब विफल साबित हुआ। एक विशिष्ट समय पर वह विजय को कक्षा नंबर दो के मार्ग पर ला कर रहेगा। अंतिम उपाय के रूप में मैंने यह भी कहा कि मैं विजय को छोड़ कर तुमसे शादी करने को तैयार हूं। लेकिन जबरदस्ती की वह शादी उसे मान्य नहीं। हार कर मैं आपके पास आई हूं।"

कप्तान विश्राम की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। चित्रा की बात पूरी होने पर उन्होंने पूछा, "कक्षा नंबर १ और २ के बीच का अंतर कब से पता चलेगा ?" दीवार पर दुनिया का समय दर्शाने वाली घड़ी देखकर चित्रा ने हिसाब लगाया। "दिलिप की जानकारी के अनुसार अब से बाईस घंटे और चालीस मिनटों बाद।"

"दिलिप को बंदी बनाकर यदि हम कंप्यूटर पर कब्जा कर लें तो ? हम विजय को कक्षा नं. १ में भेज सकते हैं।"

"कप्तान, दिलिप ने अपनी इस साजिश में कोई कमी नहीं रखी है। इस विकल्प का भी उसने इंतजाम कर रखा है। क्योंकि कंप्यूटर का वह प्रोग्राम गुप्त संकेतों पर ही आज्ञा का पालन करता है। और वह संकेत सिर्फ दिलिप ही जानता है। अत: दिलिप के सिवा कोई कुछ नहीं कर सकता।"

"और यदि कोई परिवर्तन किया ही न जाए तो ?"

"उस स्थिति में भी यान नंबर दो की कक्षा में ही जाएगा ऐसा प्रबंध दिलिप ने पहले से ही कर रखा है।"

चारों खाने चित कप्तान विश्राम सिर पीट रहे थे।

"दिलिप ! मुझे तुमसे जरूरी बात करनी है—जल्दी आ जाओ।"

कप्तान विश्राम जानते थे कि चित्रा की बताई वह सनसनीखेज खबर झूठी नहीं हो सकत थी। लेकिन वे स्वयं दिलिप से सुनना चाहते थे। और हो सके तो उसे मनाने का प्रयत्न करना चाहते थे। पूर्वानुभव से वे जानते थे कि दिलिप अपनी ठानी हुई बात से कभी मुकरता नहीं है। किंतु वे जानते थे कि उनके सिवा और कोई दिलिप को मना भी नहीं सकता था। इसी अहसास ने उन्हें दिलिप को बुलाया था। दिलिप से बात किस तरह छेड़ी जाए, इसी बात का विचार वे कर रहे थे।

"मैं जानता हूं कप्तान विश्राम आप ने मुझे क्यों बुलाया है।" दिलिप की बात सुन

कर कप्तान के विचारों की श्रृंखला टूटी और वे चौंक पड़े।

"तुमने चित्रा को जो कुछ बताया क्या वह सच है ?"

"जी हां। मैंने कंप्यूटर में नंबर दो का प्रोग्राम भरा है। तथा विजय का उस कृष्णविवर में खिंचना निश्चित भी है।"

"दिलिप, इतनी भावुकता किस काम की कि तुम अपनी. विवेकबुद्धि ही खो बैठो ? पता है तुमने कितना भयानक काम किया है ? प्यार के खेल में किसी एक का जीतना और दूसरे का हारना तो स्वाभाविक है। अपनी हार को हंस कर स्वीकार करे वही सचा खिलाड़ी होता है नं ?"

"दूसरों को उपदेश देना आसान है। किसी और से कहिए यह बातें। जिस पर गुजरती है वही जानता है कि खेल भाव से जीना कितना कठिन होता है। कम से कम मैं तो उस भाव से जी नहीं पाया।" दिलिप ने शांत रह कर अपनी बात कही। विश्राम ने अब दूसरी बात छेड़ी।

"हम अपने को विकसित और सुसंकृत समझते हैं। जंगली जीवों और हमारे न्याय में कुछ अंतर होता है या नहीं ? प्राणहानि भी हम नहीं होने देते। तो फिर तुम्हारी इस करनी से विजय की मृत्यु कितनी क्लेश दायक होगी—क्या तुम्हें इसके बारे में कुछ लगता ? कृष्णविवर में गिरते समय गुरुत्वाकर्षण के कारण विजय खिंचता चला जाएगा और उसके शरीर के चीथंड़े हो जाएंगे, इसमें कोई शक नहीं।"

"कप्तान साहब, आप मुझे दयालुपन की शिक्षा मत दीजिए। मैं एक वैज्ञानिक हूं और मैंने जो कुछ किया है, सोच समझ कर किया है।" लेकिन इस समय दिलिप की आंखें एक टूटे हुए भावुक जीव की दास्तान कह रही थीं न कि किसी वैज्ञानिक की।

"दिलिप, क्या तुम्हें इस बात का थोड़ा भी अहसास नहीं कि तुम्हारा यह उद्देश्य यान के अन्य निरपराध लोगों की भी जान लेगा ? विजय की यात्रा यदि असफल रही है तो हम सब,तुम भी—इस भयानक अंतरिक्ष में मर जाएंगे। यह सब किस लिए ? अपना दर्द मिटाने के लिए दूसरों को मिटाने का तुम्हें क्या हक है।" विश्राम ने दूसरे प्रकार से दिलिप पर हमला बोला। किंतु दिलिप विचलित नहीं हुआ।

"मेरी मृत्यु का मुझे कोई दुख नहीं है। आपके जैसे मित्र और सहयोगी बेकार मारे जाएंगे इस बात का मुझे भी अफसोस है—लेकिन मैं विवश हूं। तय की हुई योजना मैं कभी बदलता नहीं।"

"किंतु हम सबको धोखे में रखकर तुमने अनुशासन भंग किया है उसके लिए ...."

"मुझे मृत्यु दंड देंगे न ? मैंने तो पहले ही कहा था कि मेरी मृत्यु निश्चित है और मैं उससे डरता नहीं।"

विश्राम को विश्वास हो गया था कि दिलिप पर साम-दाम-दंड-भेद का कोई असर होने वाला नहीं है। निराश हो कर उन्होंने कहा, "मैं तुम से आखरी बार बिनती करता हूं,दिलिप ! कंप्यूटर में से प्रोग्राम नंबर-२ निकाल कर उसे पुनः प्रोग्राम नंबर-१ पर ले आओ। यह काम केवल तुम ही कर सकते हो। और हम सबको जीवनदान करने का श्रेय

भी तुम्हें मिलेगा। विजय से बदला ही लेना है तो उसकी वापसी पर किसी और तरह से ले लेना।"

"वह संभव नहीं कप्तान, विश्राम। आप जैसे शरीफ व्यक्ति को 'ना' कहने में बड़ा बुरा लग रहा है। किंतु मैं प्रोग्राम बदलने वाला नहीं।"

कप्तान विश्राम खड़े हुए और बेचैनी से कमरे में इधर से उधर चहलकदमी करते हुए अपने से ही बुदबुदाए,

"जो होना है वह होगा ही। यह कहने की आज मुझ पर नौबत आई है।" दिलिप की तरफ मुड़कर उन्होंने कहा, "ठीक है, मैं भी बेकार तुमसे बहस नहीं चाहता .... आज तक मैं स्वयं को बड़ा भाग्यशाली समझता था, क्योंकि मैंने आज तक इस यान को अनेक संकटों से निकालकर लोगों की जानें बचाई थीं। तुम्हारे जैसे वैज्ञानिकों का सहयोग मुझे प्राप्त है इसका भी बड़ा अभिमान था मुझे .... अब हम सब का नाश होने पर दुनिया जान जाएगी कि कभी गलती न करने वाला वैज्ञानिक भी आखिर गलती कर ही बेठा।"

"दुनिया को कैसे पता चलेगा ?" दिलिप ने चकित होकर पूछा।

"क्योंकि तुम्हारी योजना की जानकारी मैंने रेडियो संदेश द्वारा प्रसारित कर दी थी। कृष्णविवर से ऊर्जा निकालने का आज तक का अछूता प्रयोग कर दिखाने वाले दिलिप राजे पहले वैज्ञानिक होंगे। और यह बात सारी दुनिया जानती है। परंतु तुम्हारे उस प्रोग्राम नंबर-२ ने पूरी स्थिति ही बदल दी है। दुनिया तो यही कहेगी कि तुम असफल रहे .... खैर तुम्हारी क्रूरता के कारण तुम्हारी जो बदनामी होगी उससे तो यही अच्छा है, न ?"

दिलिप ने वाक्य पूरा होने का इंतजार न किया। वह कमरे से जा चुका था।

कप्तान विश्राम ने चैन की सांस ली।

++ ++ ++

अपने छोटे से स्पेस-कैपसूल में विजय अधीरता से राह देख रहा था। उसका शरीर कसक रहा था। गुरुत्वाकर्षण का तनाव अब महसुस हो रहा था। वह जानता था कि वो पल-पल कृष्णविवर के पास खिंचा जा रहा है .... एक विचार उसे कई बार बेचैन कर रहा था, "दिलिप के गणित में कहीं कोई गलती तो नहीं होगी ?" किंतु इस बात से मन को दिलासा देता—कि दिलिप ने कभी कोई गलती नहीं की थी।

तो फिर उसका कैपसूल अभी तक कृष्णविवर की ओर क्यों जा रहा था। जिस बड़े भाग से वह जुड़ा था वह विभाजित होकर उसका एक भाग कृष्णविवर में गिरेगा और वह बाहर फेंका जायेगा—वह क्षण कब आयेगा ? या अनजाने में वह आ चुका है ?

शंकाओं से जूझते हुए उसे एक धीमी आवाज सुनाई दी। "कर्र ss कर्र ss कर्र र्र र्र ...." यही तो था वह संदेश। विजय ने लाल बटन दबाया। उसे एक बहुत जोर का झटका लगा और वह अपनी सुध खो बैठा।

वह होश में आया तो उसने देखा कि उसकी कैपसूल कृष्णविवर से दूर जा रही थी।

++ ++ ++

"कप्तान विश्राम, मैं ५ मिनटों के लिए अंदर आ सकता हूं ?"

विश्राम ने देखा चित्रा दरवाजे में खड़ी थी। विश्राम ने अपने सामने रखे कागजों का बेलन बनाते हुए कहा, "पांच क्यों ? दस मिनट देता हूं तुम्हें, लेकिन पहले एक काम करना होगा ?"

कागज का वह बेलन उन्होंने एक नली में घुसाया और उसे कंप्यूटर पैनल के एक छेद में डाला। फिर उन्होंने एक बटन दबाया और उसके साथ वह नली लुप्त हो गई।

"दिलिप राजे" कप्तान इंटरकॉम पर बोल रहे थे।

"कहिए कप्तान साहब ?"—दिलिप

"मैंने भेजी हुई नली तुम्हें मिल गई न ?"

"जी हां, अभी अभी मिली है।"

"उसे खोल कर देखो। मुझे आने वाले अभिनंदन के संदेश उसमें हैं। वास्तव में अभिनंदन तो तुम्हारा होना चाहिए, क्योंकि इस सारी कल्पना के सूत्रधार तो तुम ही थे। इन अभिनंदनों के हकदार तुम हो, दिलिप, तुम ! तुम्हें कितनी प्रसिद्धि मिली है, इसका अनुमान उन संदेशों से हो जायेगा।"

इंटरकॉम बंद कर के कप्तान विश्राम ने चित्रा की ओर देखा। "हां, अब कहो। क्या फिर कोई विकट समस्या ले आई हो ?"

"बिकट समस्या तो नहीं किंतु एक पहेली मैं बूझ नहीं पा रही। आप जरूर उसे बूझ सकते है।"

कप्तान की प्रश्नार्थक मुद्रा देख उसने वह पहेली सुनाई।

"दिलिप पर आपने क्या जादू कर डाला ? उसको कैसे मनाया ? मैं तो बिल्कुल निराश हो गई थी।"

कप्तान विश्राम हंसे और बोले, "बिनती, युक्तिवाद, धमकी सभी बेअसर थी। तब अंत में अपने मनोविज्ञान के अध्ययन का उपयोग किया और दिलिप के अहंकार को ही चुनौती दी।"

"वह कैसे ?"

"प्रत्येक यशस्वी वैज्ञानिक को अपने बारे में आत्मविश्वास होना स्वाभाविक होता है। यह आत्मविश्वास कई बार अहंकार में बदल जाता है। मरा सिद्धांत, मेरा गणित, मेरा युक्तिवाद गलत हो ही नहीं सकता, ऐसी भावना उनके मन में निर्माण होती है। ऐसा अहंकार दिलिप में है। उसे चोट पहुंचाने के लिए मैंने कहा कि यदि प्रोग्राम नंबर-२ द्वारा तुम विजय को कृष्णविवर में डालते हो तो उस भंवर से ऊर्जा निकालने का तुम्हारा प्रयोग असफल हो जायेगा। हम सब यान में ही मारे जायेंगे। दुनिया क्या सोचेगी ? यही

कि वैज्ञानिक दिलिप राजे का गणित गलत था और इसी कारण यह यान को बचा नं पाया। यही निष्कर्ष दुनिया निकालेगी। उसके पश्चात् दुनिया की नजरों में गलत साबित होना दिलिप कभी भी सह नहीं पाता, इसका मुझे पूरा भरोसा था। हुआ भी वैसे ही। उसने कंप्यूटर का प्रोग्राम नंबर-२ निकाल डाला और प्रोग्राम नं.-१ भर दिया और वह सफल हो गया। आज दुनिया में उसकी खूब प्रशंसा हो रही है। उसका अहंकार तृप्त है .... तुम्हें और विजय को इस बात का एक फायदा जरूर होगा .... दिलिप अब तुम दोनों को तुच्छ समझता है। इसलिए वह तुम्हारे चक्कर में अब नहीं पड़ेगा। तो अब आप दोनों सुख से गृहस्थी चलाओ।"

चित्रा शरमा गई। किंतु फिर उसके चेहरे पर एक प्रश्न चिह्न उभर आया।

"किंतु कप्तान विश्राम,आपने तो ऊर्जा की बचत करने के लिए संदेश भेजना बंद कर दिया था न ? दिलिप की योजना की जानकारी दुनिया को कहां थी ? योजना सफल हो जाने के बाद आपने वह जानकारी सब दूर भेजी थी। मैं संचार विभाग में थी इसीलिए मुझे पता है ....।"

"तुम्हें क्या पूछना है, मैं जानता हूं।" कप्तान विश्राम ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैंने दिलिप से झूठ कहा था कि उसकी योजना की जानकारी मैंने पहले ही घोषित कर दी थी। इसीलिए उस योजना को सफल बनाने की जिम्मेदारी उस पर, बल्कि उसके अहंकार पर आन पड़ी .... जरूरी हो तो मुझे लगता है कि सच बोलने में थोड़ा विलंब किया जा सकता है।"

किस्सा नौलखा हार का

शेरलॉक होम्स से जब से मेरी जान पहिचान हुई है, मैंने उसकी हर छोटी बड़ी उपलब्धि अपने पास लिख रखी है। उनमें से कुछ अद्‌भुत एवं विचित्र किस्से मैंने समय समय पर प्रकाशित भी किए हैं। अधिकांश किस्सों में होम्स को अपनी चतुराई के कारण ही सफलता मिली थी। माना कि अपराधों की खोज में उसका सानी कोई नहीं रखता। फिर भी ऐसी नहीं कि अपने खोज कार्य में वह सदैव सफल ही रहा हो। उसके अपने बस के बाहर के हालातों, या फिर उसकी अपनी गलतियों के कारण कुछ मामलों में वह सफल नहीं रहा। वे मामले भी मेरे पास दर्ज हैं। किन्तु अपराधों की अनसुलझी गुत्थियों के बारे में लोगों को विशेष दिलचस्पी नहीं होती। इसीलिए उन्हें प्रकाशित करने के झमेले में मैं नहीं पड़ा ! मेरी और होम्स की मृत्यु के बाद आज दर्ज कर रखे ये किस्से जिज्ञासुओं के लिए अवश्य उपलब्ध होंगे।

उन्हें 'नौलखा हार का मामला' शीर्षक की एक फाइल मिलेगी। उस पर लिखा रहेगा—'अ स फ ल' । पढ़ने वालों को लगेगा कि होम्स इस हार-चोरी की पहेली को सुलझा नहीं सका था। लेकिन हकीकत ऐसी नहीं है। होम्स ने अपने मुवक्किल को एक वचन दिया था। उसी वजह से इस मामले का राज बताने की अनुमति मुझे नहीं थी। काफी मिन्नतें करने के बाद, घटना के नब्बे साल बाद—यानी १९७८ में वह किस्सा प्रकाशित करने की अनुमति उसने मुझे दी।

किसी घटना की हकीकत छापने के लिए इतने लम्बे समय का प्रतिबंध अपने में विलक्षण नहीं है। किन्तु इसमें छिपा राज अवश्य ही बड़ा विलक्षण है। वास्तव में पूरा किस्सा ही इतना विलक्षण है कि अब भी उसपर विश्वास नहीं होता। बहरहाल, नव्वे साल बाद ही क्यों न हो, सारा किस्सा प्रकाशित करना आवश्यक है। वरना होम्स के कृतीत्व का परमोच्च बिंदु कहलाने वाला एक उदाहरण जानने से पाठक वंचित रह जाएंगे। और होम्स के कृतीत्व पर लगा असफलता का घब्बा कभी मिटाया नहीं जा सकेगा।

इसीलिए मैंने प्रबंध कर रखा है कि निम्नलिखित वृत्तान्त १९७८ में ही पाठकों के हाथ लगे।

जॉन एच. वॉटसन, एम्.डी.
१५ मई १८८८

सुबह हो चुकी थी, लेकिन सूर्य का कहीं नामोनिशान नहीं था। सड़क पर चारों ओर घना कोहरा छाया था। अप्रैल के महीने में लंदन में इतना घना कोहरा मैंने कभी नहीं देखा था।

नाश्ता लेते लेते में 'टाइम्स' अखबार पढ़ रहा था। समाचार हमेशा के ही थे। बर्मिंघम में ग्लैडस्टोन का भाषण, ब्रिटिश साम्राज्य के कोने कोने की घटनाएं,

ऑक्सफोर्ड—कैंब्रिज बोट रेस पर टीका टिप्पणी...... तभी दो खबरों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। दोनों ही खबरें एक ही पन्ने पर किंतु अलग अलग कॉलमों में छपी थीं। पहले कॉलम की खबर इस प्रकार थी :

वेस्ट एंड होटल में चोरी
(विशेष संवादाता द्वारा)

लंदन के पिकैडिली होटल में एक जबरदस्त चोरी हुई है। पांचवी मंजिल के नुक्कड़ वाले कमरे में रहने वाले महाराज रहिमतसिंग का एक बहुमूल्य हार चुराया गया। यह हार महाराज की तिजोरी से इतनी सफाई से गायब किया गया है कि पुलिस भी अचंभे में पड़ गई है। अनुमान है कि चोर खिड़की से अंदर आया और वहीं से बाहर गया होगा, क्योंकि खिड़की की कुंडी खुली थी और प्रवेश द्वार पर तो महाराज का खास चौकीदार लगातार रखवाली कर रहा था। यह चौकीदार महाराज का अत्यंत विश्वासपात्र सेवक था। अत:इस चोरी में उसका हाथ होने की संभावना नहीं है। तिजोरी के ताले के कौम्बिनेशन सिर्फ महाराज को ही पता थे। महाराज रहिमतसिंग स्वास्थ्य लाभ के लिए यहां आए थे, किंतु चोरी के इस हादसे से उनकी तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब हो गई है। मेट्रोपोलिटन पुलिस ने स्कॉटलंड यार्ड से मदद मांगी है। उनके डिटेक्टिव इन्स्पेक्टर ग्रेगसन ने विश्वास व्यक्त किया है कि जल्द ही इस परिप्रेक्ष्य में कोई न कोई सुराख हाथ आ जायेगा ....।

मैंने सिर झटका, क्योंकि मुझे ग्रेगसन की क्षमता पर विश्वास नहीं था। मैं पहले भी कई बार अनुभव कर चुका हूं कि उसमें आत्मविश्वास जरूरत से ज्यादा ही है।

"बिल्कुल ठीक हो वॉटसन ! ग्रेगसन से यह मासला सुलझने से रहा।" कमरे के दूसरे सिरे से आवाज आई।

"और क्या ? वह बड़ी शेखियां मारता है।" मैंने उत्तर तो दिया, लेकिन हैरान था, "होम्स, मैं क्या सोच रहा था, तुम्हें कैसे पता चला ?"

"वॉटसन तुम्हारा चेहरा में यहां से देख सकता हूं—और वह एक खुली किताब है !" हंसते हुए होम्स ने कहा, "तेरे जागने से पहले ही मैंने अखबार पढ़ लिया था। तुम्हारी नजर की हलचल से तुम कौनसी खबर पढ़ रहे हो मुझे पता चल रहा था। दुनिया की और देश की खबरों पर तुमने केवल सरसरी नजर दौड़ाई। और अब मेरे साथ रहते रहते तुम्हें अपराध की खबरें पढ़ने का शौक हो गया है। इसलिए तुमने पहले कॉलम की खबर ध्यान से पढ़ी और फिर इन्कारार्थक गर्दन हिलाने लगे। तुम्हारे मन की बात मैं जान गया। है न आसान मेरी अनुमान पद्धति ?"

जब कोई जादूगर अपनी जादू का रहस्य बताता है तो वह बहुत आसान लगती है। शेरलॉक होम्स इससे पहले भी कई बार मुझे चकित कर चुका था।

"अब आठवे कॉलम में छपी खबर पढ़ो और फिर अपनी राय देना।" होम्स ने कहा। मैं वह खबर पढ़ चुका हूं :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक गायब

४ अप्रैल। लंदन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर जेम्स ब्रॉडस्टेअर्स कल रात अपनी प्रयोगशाला से लापता हो गए हैं। कल रात उन्हें किसी जरूरी काम से प्रयोगशाला जाते देखा गया था। अपनी प्रयोगशाला में रात बेरात जाना उनकी आदत थी। इसलिए उनकी बेटी ने उनके वहां जाने में कोई खास बात नहीं समझी। किंतु आज सुबह चाय लेकर नौकर उनके कमरे में गया तो वहां कोई नहीं था। बिस्तर पर भी उनके सोने का कोई निशाना नहीं था। प्रयोगशाला में वे नहीं थे। उनकी खोज का काम पुलिस को सौंपा गया। सर जेम्स रॉयल सोसाइटी के फेलो हैं। समझा जाता है कि इन दिनों वे एक महत्वपूर्ण किंतु गुप्त अनुसंधान में जुटे हुए थे।

"क्या तुम्हें इन दोनों बातों में कोई रिश्ता नजर आता है?" मैंने होम्स से पूछा। उसने कहा 'हां'।

"एक ही शहर में जब दो सनसनीखेज बातें होती हैं तो उनमें संबंध होने की संभावना रहती है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि इन्स्पेक्टर ग्रेगसन भी इसी निर्णय पर पहुंचेंगे—किंतु जो संबंध वे जोड़ेंगे वह गलत साबित होगा।"

"मुझे तो एक ही शक आता है कि ब्रौडस्टेअर्स यह हार चुराया होगा और खुद गायब हो गए। किंतु यह बात सच नहीं लगती।" मैंने कहा।

"बिल्कुल ठीक! लेकिन जो बात तुम्हें सच नहीं लगती वह ग्रेगसन को जरूर सच लगेगी। हालांकि सर जेम्स एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं, लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति बड़ी नाजुक थी। उन्होंने प्रयोगों के लिए काफी कर्ज निकाला था। यह बात उनके क्लब के ही एक आदमी ने मुझे बताई थी। अतः उन पर आर्थिक संकट था यह बात तो पक्की! ग्रेगसन को भी यह जानकारी मिलेगी ही। किंतु वे सही जानकारी से गलत निष्कर्ष निकालने में उस्ताद है।"

तो फिर सही निष्कर्ष क्या है यह पूछने ही वाला था कि दरवाजे पर किसी ने दस्तक की। मकान मालकिन ने एक परिचय पत्र होम्स को लाकर दिया।

"उसे अंदर भेज दीजिए।" होम्स ने कहा। मालकिन के जाने के बाद वह परिचय पत्र उसने मुझे दिया। उस पर मिस् अमेलिया ब्रॉडस्टेअर्स लिखा था।

भीतर आने वाली महिला पैंतीस साल की होगी। दिखने में अच्छी थी और रहन सहन सीधा सादा नजर आ रहा था। उसने प्रश्नार्थक मुद्रा से हमारी ओर देखा। होम्स ने अपना और मेरा परिचय कराया।

"वॉटसन हमेशा ही मेरे बहुत काम आता है। अतः उसके यहां रुकने से कोई फर्क नहीं पड़ता।" होम्स ने कहा। "आप क्या अपने पिताजी के सिलसिले में आई हैं? आप सर जेम्स की बेटी है न?"

"हां, लेकिन न जाने आपने कैसे जान लिया?" अमेलिया ने कहा। मेरा भी यही अनुमान था कि वह खबर पढ़कर होम्स ने 'हूज हू' में से सर जेम्स की जानकारी प्राप्त की होगी। उसमें उसके परिवार वालों के नाम होंगे। अमेलिया ने आगे कहा, "खैर जाने दीजिए! लेकिन आज स्कॉटलैण्ड यार्ड के इन्स्पेक्टर ग्रेगसन घर आए थे। उन्होंने मेरे पिता

के बारे में इतने कुरेद-कुरेद कर सवाल पूछे .... जैसे वे कोई अपराधी हैं। तंग आकर मैंने उनसे पूछा, "आप मेरे पिता को ढूंढने में सहायता करने वाले हैं या उन पर इल्जाम लगाने आए हैं ?" इस पर उन्होंने कहा, "रहिमत सिंग के हार की चोरी से उनका संबंध है।"

"यह आरोप उन्होंने किस आधार पर किया ?"

"क्योंकि पिताजी की प्रयोगशाला में उन्हें रहिमत सिंग की राजमुद्रा वाला एक लिफ़ाफ़ा मिला। उस पर मेरे पिता का नाम था।"

"तो यह बात है ! लगता है यह मामला काफी पेचीदा है।" अपनी उंगलियों से खेलते हुए शेरलॉक होम्स ने कहा।

"मिस्टर होम्स ! मैं आपसे मदद मांगने आई हूं। कृपा करके मेरे पिताजी को ढूंढ निकालें। कम से कम उन परं लगाया जा रहा यह आरोप तो दूर कीजिए ! मुझे विश्वास है कि वे सुरक्षित और निर्दोष हैं।"

"मिस ब्रॉडस्टेअर्स, मैं आपकी हर संभव सहायता करने की कोशिश करुंगा। लेकिन आपके पिताजी की जानकारी आपको देनी पड़ेगी। मुझे उनकी प्रयोगशाला देखनी पड़ेगी।" होम्स ने कहा। अमेलिया ने अपने पिता की संक्षिप्त जानकारी दी जो उसी के शब्दों में इस प्रकार है :

"मेरे पिता केंम्ब्रिज में पढ़े। वहां की प्रयोगशाला में उन्होंने भौतिकी का अध्ययन किया। जेम्स क्लार्क मैक्सवेल को, जिनके वैज्ञानिक प्रयोग दुनिया में मशहूर हैं, मेरे पिता अपना आदर्श मानते थे। किंतु उनका रुझान एक अलग ही दिशा की ओर होता गया। मैक्सवेल के विघुच्चुंबकीय विज्ञान से उन्हें अवकाश-शून्य, और समय के बारे में किसी नई बात का पता चला। उन्होंने तीन चार बार मुझे समझाने का प्रयत्न किया। लेकिन वह गणित मेरी आकलन क्षमता से बाहर था ! उनके वैज्ञानिक मित्रों को भी उनके विचारों की कोई कीमत नहीं थी। आखिर लंदन आकर उन्होंने अपनी स्वतंत्र प्रयोगशाला बनाई। और अपने मनपसंद विषयों पर अनुसंधान करने लगे।

"मेरे पिता का दिमाग बड़ी अनूठी चीज है। वे एक साथ दो तीन विषयों पर अनुसंधान कर सकते हैं। उनके अनुसंधानों ने उन्हें दुनिया में कीर्ति दिलाई। रॉयल सोसाइटी की फेलोशिप उन्हें दी गई। और भी कई सम्मान उन्हें मिले। इसके साथ ही, एक विषय, जो दुनिया को अज्ञात किन्तु उनका प्रिय था, पर उनका अनुसंधान चल ही रहा था।

"कई सालों बाद उन्हें उ़स अनुसंधान में सफलता मिल रही है, ऐसा उनके व्यवहार से लगता था। लेकिन मैंने प्रत्यक्ष रूप से उन्हें कुछ पूछा नहीं। मां के पश्चात् कई साल से मैं स्वबं उनकी दिनचर्या की ओर ध्यान देती हूं। और उनकी मानसिकता को भी अच्छी तरह्र समझने लगी हूं। पिछले कुछ दिनों से वे बहुत खुश थे और उत्तेजित भी। परंतु मुझसे वे कुछ बोले नहीं।

"विगत जुलाई में एक विचित्र बात हुई। वे प्रयोगशाला में काम कर रहे थे। इधर उनके नाम एक तार आया। मैंने प्रयोगशाला का दरवाजा खटखटाया पर कोई जवाब नहीं

मिला। तार बड़ा महत्वपूर्ण था। उन्हें उसकी प्रतीक्षा भी थी। और उसके आते ही मैं उन्हें वह दूं ऐसा आदेश भी उन्होंने मुझे दे रखा था। लेकिन प्रयोगशाला में पांव रखने की भी अनुमति नहीं थी मुझे। वहां किसी और को जाने की भी अनुमति नहीं थी। बड़ी अड़चन पैदा हो गई थी। करूं तो क्या करूं ? आखिर सारी हिम्मत जुटाकर मैंने दरवाजा खोल दिया। बड़े आश्चर्य की बात थी। अंदर कोई भी नहीं था।

"मैंने उन्हें बाहर जाते तो देखा नहीं था—फिर वे गए कहां ? प्रयोगशाला का दरवाजा बंद कर मैंने पूरे घर में उन्हें ढूंढा, बगीचे में देखा, किंतु वे कहीं नहीं थे। आखिर घर लौटकर मैंने पुन: प्रयोगशाला का दरवाजा खटखटाया .... और पिताजी ने दरवाजा खोला में तो बड़ी हैरान थी।"

"पन्द्रह मिनट पहलो आप कहां थे ?" मैंने पूछा।

"यहीं तो था ! तुमने दरवाजा खटखटाया क्या ?"

"हां ....।" मैंने कहा। किंतु अंदर भी घुसी थी यह बताने की हिम्मत न हुई। वे शीघ्रकोपी थे।

"मैं काम में बहुत व्यस्त था इसलिए सुनाई नहीं दिया।" लेकिन मेरा मन कह रहा था कि वे झूठ बोल रहे हैं। किंतु मैं कुछ न बोली। तार उन्हें दिया और चली आई।

"कैलिफोर्निया से आए उस तार को पढ़कर वे बहुत खुश हुए। उसे पढ़कर मेरी तो समझ में कुछ भी न आया। उसमें लिखा था :

'माइकेलसन—मोर्ले प्रयोग द्वारा ईथर में पृथ्वी की गति नहीं मांपी जा सकी।'

"अरे, अब तो ईथर का पीछा छोड़ दो। मैं कब से कह रहा हूं, पर सुनता कौन है ?"

"कैसा ईथर ?" मैंने पूछा भी लेकिन वे विचारों में डूब गए थे। इस बारे में आगे वे कुछ नहीं बोले। हां, सिर्फ एक बार बड़ी विचित्र बात कही थी, "मेरे प्रयोग समझने के लिए इन वैज्ञानिकों को दो सौ साल लगेंगे।"

"इस साल मार्च के अंतिम दिनों में रहिमत सिंग हमारे घर आए थे। पिताजी और उनका परिचय केंम्ब्रिज से था। मेरे ख्याल से पिताजी और रहिमत सिंग एक ही कॉलेज में पढ़े थे। किंतु उनकी यह भेंट औपचारिक नहीं थी। वह बड़ी रहस्यमय लग रही थी, क्योंकि चायपान के बाद काफी देर तक वे दोनों पिता जी के अध्ययन-कक्ष में दरवाजा बंद करके चर्चा कर रहे थे।

"लापता होने से एक दिन पहले वे बहुत सोच रहे थे। अंत में सोने से पहले उन्होंने मुझे बुलाया और कहा :

"अमेलिया, अगले कुछ दिनों में बड़ी विचित्र घटनाएं होंगी, किंतु तुम घबराना नहीं। यदि तुम बहुत ही बेचैन हो जाओ तो मि. शेरलॉक होम्स को मिल लेना। जो कुछ हुआ हो, उन्हें बता देना और उनसे सहायता मांगना। मेरे भविष्य के बारे में तुम कोई चिंता मत करना।

"मैंने उनसे अधिक विस्तार से पूछना चाहा तो उन्होंने कहा", "तुम्हारे पास जितनी कम जानकारी हो उतना ही अच्छा है।"

++ ++ ++

"इसलिए, मि. होम्स, मैं आपकी सहायता लेने आई हूं।"

मैंने होम्स की ओर देखा। वह गंभीर था। किंतु उसकी आंखों में विश्वास था। यूं तो उसके पास कई मामले आते हैं—लेकिन बहुत कम मामले उसकी तर्कबुद्धि को चुनौती देते। ऐसे चुनौती भरे मामलों को ही वह स्वीकार करता था। मुझे लगा कि वह इस मामले की अवश्य छानबीन करेगा।

"मिस ब्रॉडस्टेअर्स !" होम्स ने कहा, "क्या ग्रेगसन तुम्हारी प्रयोगशाला देख चुके हैं ?"

"हां, देख तो चुके हैं। लेकिन वे कुछ समझ नहीं पाए।"

"में और बॉटसन अभी आपके साथ ही आकर वह प्रयोगशाला देखना चाहते हैं।" होम्स ने कहा।

एक घोड़ा-गाड़ी में हम सर जेम्स के घर पहुंचे। घर की चारों ओर फैला हुआ बगीचा था। घर के उत्तर पश्चिमी भाग में उनकी प्रयोगशाला थी। हम तीनों सीधे प्रयोगशाला की ओर ही गए।—वहां जाने का रास्ता घर के अंदर से था। प्रयोगशाला को बाहर से न तो कोई दरवाजा था और न ही खिड़कियां। हवा आने जाने के लिए आमने-सामने की दो दीवारों पर सिर्फ जालियां थीं।

प्रयोगशाला के अंदर अनेक दस्तावेज, तरह तरह के यंत्र और उपकरण, चार्ट इत्यादि रखे थे। वे सब मेरी समझ से परे की चीजें थीं। होम्स का भी इस विषय में ज्ञान साधारण ही होगा। किंतु वह सर जेम्स की टिप्पणियां पढ रहा था।

"मिस ब्रॉडस्टेअर्स, क्या तुम्हारे पिता सिर्फ इसी प्रयोगशाला में काम करते थे ?"

होम्स के इस प्रश्न से अमेलिया चकित थी।

"जी हा ! केंम्ब्रिज छोड़ने के बाद यहां उन्होंने अपनी देख रेख में इस प्रयोगशाला का निर्माण किया। उनके सभी प्रयोग यहीं होते थे।"

उसका उत्तर सुनकर होम्स ने गर्दन तो हिलाई लेकिन उसकी आंखें फिर भी सन्तोष नहीं दर्शा रही थी। उसने प्रयोगशाला को पुनः बारीकी से जांचा और सोच में डूब गया।

कुछ देर सब कुछ शांत था। और अचानक होम्स मुस्कुराने लगा। हमें वहीं रुकने को कहकर खुद बाहर गया और कुछ मिनटों बाद वापस लौटा।

"नहीं नहीं वॉटसन ! मैं भी कितना बुद्धु हूं ! तुम और मिस ब्रॉडस्टेअर्स ड्राईंग रूम में बैठो। मैं कुछ देर बाद तुम्हें बुलाने आऊंगा।"

"क्या मेरी कोई मदद नहीं चाहते ?" मैंने पूछा।

"हां वॉटसन तुम्हारी मदद ही तो मांग रहा हूं !" होम्स ने कहा, "किंतु उसके लिए तुम्हारा यहां रुकना ठीक नहीं।"

अनमना-सा मैं बाहर चला गया। ड्राइंग रूम में हम गप्पें मार रहे थे तो होम्स वहां आया। वह बहुत खुश दिखाई दिया।

"वॉटसन और मिस ब्रॉडस्टेअर्स! जुलाई में जो घटना हुई थी उसे आज फिर दोहराते हैं। मैं प्रयोगशाला का दरवाजा अंदर से बंद करूंगा। तुम बाहर से खटखटाना। यदि मैंने उत्तर नहीं दिया तो अंदर आ जाना।"

होम्स ने प्रयोगशाला का दरवाजा अंदर से बंद किया। उसकी सूचनानुसार हमने दरवाजा खटखटाया। अंदर से कोई जवाब नहीं आया। आखिर हम अंदर घुस गए।

वहां होम्स का कोई पता नहीं था।

हम दोनों ने काफी ढूंढा, परंतु वहां किसी व्यक्ति के छिपने लायक जगह ही नहीं थी।

"होम्स जादू भी जानता है, मुझे पता नहीं था—" मिस ब्रॉडस्टेअर्स से निराश होकर मैंने कहा। हम प्रयोगशाला के दरवाजे की ओर देखने लगे कि कहीं वह यहां से खिसक तो नहीं गया ? पर यह कैसे हो सकता था ?"

"यहां कोई जादू टोना नहीं!" पीछे से एकदम आवाज आई। मुड़कर देखा, होम्स दीवार से टिक कर खड़ा मुस्करा रहा था!

"अरे, तुम कहां गायब हो गए थे और इस तरह अचानक कैसे आ गए ?" मैंने पूछा।

होम्स ने बिना कुछ बोले दीवार को एक विशिष्ट स्थान पर हाथ से दबाया। उसी क्षण वह दीवार वहां से खिसकने लगी तथा एक छोटा सा कमरा नजर आने लगा।

"प्रयोगशाला की लंबाई और चौड़ाई अंदर और बाहर से एक जैसी नहीं थी। तभी मैं समझ गया कि यहां कोई गुप्त कमरा अवश्य होगा।"—होम्स ने कहा।

हम उस गुप्त कमरे में घुसे। एक छोटी सीढ़ी तहखाने तक जा रही थी। तहखाना भी काफी विस्तृत और यंत्रों, उपकरणों से लैस था।

"सर जेम्स गुप्त अनुसंधान यहीं करते होंगे। ऊपर की प्रयोगशाला में इस सिलसिले में कुछ भी नहीं था। इसलिए मेरा शक और पक्का होता गया। मिस ब्रॉडस्टेअर्स से भी मैंने इसीलिए पूछा था,किंतु उन्हें भी किसी ऐसी गुप्त प्रयोगशाला की कल्पना नहीं थी।" होम्स ने कहा।

"इसका मतलब यह हुआ कि मैंने जब दरवाजा खटखटाया तो नीचे होने के कारण शायद उन्हें सुनाई न पड़ा हो, क्योंकि मैंने जब अंदर झांका तो वे ऊपर नहीं थे।"

अमेलिया की बात से मैं भी सहमत था। किंतु होम्स फिर भी गंभीर था।

"यदि यह तर्क सही होता तो बहुत सी समस्याएं सुलझ जातीं। परंतु वस्तुस्थिति कुछ और थी। मैं जब नीचे था तब तुम्हारा दरवाजा खटखटाना मुझे स्पष्ट सुनाई दे रहा था। सर जेम्स ने खास इंतजाम किया है इसका। अतः मुझे लगता है कि अमेलिया, आपने जब दरवाजा खटखटाया था तो शायद सर जेम्स न तो ऊपर की प्रयोगशाला में थे और न ही नीचे की।"

"तो फिर वे थे कहां ?" मैंने पूछा।

"वही तो हमें ढूंढना है।" होम्स ने कहा। "मिस ब्राडस्ट्रीअर्स, अब हम चलते हैं। वॉटसन अब हमें 'पिकैडिली होटल जाना चाहिए।"

++ ++ ++

पिकैडिली होटल में हम महाराज रहिमत सिंग के स्वीट में गए। किंतु हमें अंदर जाने से दरवाजे पर ही रोका गया। "महाराज आज बहुत बीमार हैं। अतः किसीसे मिलेंगे नहीं।" उनके सेक्रेटरी ने कहा।

होम्स ने अपना कार्ड निकाला, उस पर कुछ लिखा, एक लिफाफे में बंद किया और सेक्रेटरी को थमाते हुए कहा,

"कृपा कर के यह महाराज को दीजिए। बहुत जरूरी है और इसे सिर्फ महाराज ही देखें।"

बुदबुदाते हुए सेक्रेटरी वह पत्र अंदर ले गया। कुछ मिनटों में वह बाहर आया। उसके व्यवहार में जमीन आसमान का फर्क हो गया था।

"मि. होम्स ! महाराज ने आपको तुरंत बुलाया है।" उसने बड़ी विनम्रता से कहा।

होम्स के साथ मुझे भी प्रवेश मिल गया यह अलग से बताना जरूरी नहीं। महाराज एक तकिये से टिक कर बैठे थे। पास ही हुक्का रखा था लेकिन इस्तेमाल की स्थिति में नहीं था।

"मि. होम्स कई सालों से आपका नाम सुनता आया हूं। मेरे मित्र, विशालपुर के महाराज आपको बहुत याद करते हैं।"

"उनका एक छोटा सा काम मैंने किया था।" होम्स ने कहा।

"उसे 'छोटासा' कहना तो आपकी विनम्रता है। आप ही के कारण महाराज राम मोहन सिंग पर आया बड़ा संकट टल गया था। खैर। आप मेरे लिए सर जेम्स से क्या खबर लाए है ?"

"सर जेम्स आपका काम पूरा करने गए हैं। चिंता न करें—यही उनका संदेश है आपके नाम।"

मैंने होम्स की ओर साश्चर्य देखा। पता नहीं सर जेम्स इसे कब मिले और यह संदेश उन्होंने कब दिया ? पर होम्स पूरी गंभीरता से बात कर रहा था। यह गप नहीं होगी।

उस संदेश का महाराज पर बड़ा अच्छा परिणाम हुआ। उन्होंने कहा, "सर जेम्स पर मुझे पूरा विश्वास है। निःसंदेह वह अपना काम पूरा करेंगे। मि. होम्स आप यह संदेश ले आए हैं, मैं बड़ा आभारी हूं आपका। क्या मैं आपकी कोई सहायता कर सकता हूं ?"

"मुझे तो नहीं परंतु मेरे मुवाक्किल को आपकी बहुत मदद होगी। सर जेम्स की बेटी मेरी मदद मांगने आई है। पुलिस को शक है कि उसके पिता ने आपके आभूषण चुराये हैं। केवल आपके स्पष्टीकरण से यह शक दूर हो सकता है। महाराज, मुझे तो लगता है, वह हार आपने स्वयं सर जेम्स को दिया है और चोरी तथा बीमारी का तो सिर्फ एक दिखावा है।" होम्स ने शांत भाव से अपनी बात कहीं।

महाराज नाराज हो गए थे। झूठ बोलने का उन पर लगाया हुआ आरोप उन्हें अच्छा नहीं लगा। किंतु खुद को संभालते हुए अत्यंत मृदु स्वर में वे बोले, "मि. होम्स, मेरे राज में ऐसा आरोप में कभी गंवारा न करता। किंतु कुछ बातें आपके सामने स्पष्ट करनी आवश्यक है।" उन्होंने कहा, "हां, आपकी बात सही है। पर मैं यह नाटक सर जेम्स की सम्मति से ही कर रहा हूं। दरअसल बात कुछ इस प्रकार है—मेरी दो रानियां हैं। बड़ी रानी का बेटा मेरी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होगा। लेकिन उसमें एक भी अच्छा गुण हो तो कहूं। मेरे राज्य की उसके राज में जरा भी खैरियत नहीं। फिजूल-खर्ची कर वह सारा पैसा उड़ा देगा और ऋण की दलदल में फंस जाएगा यह तो मुझे अभी से दिखाई दे रहा है। पर मैं कुछ नहीं कर सकता। सम्पत्ति पर उसका उत्तराधिकार में छीन नहीं सकता। ब्रिटन के राजनैतिक-एजंट से उसकी सांठ-गांठ है। इसके विपरीत मेरी छोटी रानी का बेटा सुशील और पुरुषार्थी है। वह राजाश्रय पर निर्भर नहीं करेगा। अपने बूते पर जरूर कुछ कर दिखाएगा, मुझे विश्वास है। मैं चाहता हूं कि मैं उसकी मदद कर सकूं। उसकी नहीं तो उसके वंशजों की ही सही। किंतु बात इतनी आसान भी नहीं ....।

"यदि मैं अपनी वसीयत में उसको कुछ दे जाऊं, तो बड़ा अदालत जाने से कदापि नहीं झिझकेगा। मेरे वकील फॉस्टर-फॉस्टर-फॉस्टर बटरवर्थ एण्ड फॉस्टर ने इस परिप्रेक्ष्य में उत्पन्न हो सकने वाले कई खतरे मेरे सामने रखे। अपने जीते जी मैं छोटे को बड़ी सम्पत्ति दे देता हूं, तो बड़ा हर प्रकार षडयंत्र रच कर उसे हड़प कर लेगा। मैं महाराजा तो बस केवल नाम के वास्ते हूं! मेरा आदेश तो मेरे अपने घर में भी कोई नहीं मानता!

"मैंने अपनी यह परेशानी सर जेम्स के सामने रखी। हम दोनों कालिज के जमाने से जिगरी दोस्त रहे हैं। सर जेम्स के नेक स्वभाव और ईमानदारी पर मुझे पूरा भरोसा है। मैंने उनसे पूछा कि अपने बड़े बेटे और सार्वभौम ब्रिटिश सरकार से गोपनीय रख कर मैं छोटे के लिए आखिर क्या कर सकता हूं?

"काफी देर तक सोचने के बाद सर जेम्स ने जानना चाहा कि मेरे पास छोटे के लिए देने के वास्ते आकार में छोटी किन्तु सबसे कीमती वस्तु क्या है? तब मेरे सामने यह अत्यंत कीमती नौलखा हार आया। तब सर जेम्स ने कहा कि आज से नब्बे साल बाद वे इस हार को मेरे छोटे पुत्र या उसके वंशजों के हवाले करने का वचन दे सकते हैं। उन्होंने तुरन्त कहा कि तब तक उसके कोई वंशज जीवित हो तभी यह किया जाएगा। इस पर मैंने उनसे पूछा कि इतने सालों तक इस हार को सुरक्षित रखने की क्या गारण्टी है। इस पर सर जेम्स ने कहा कि इसका तो कोई सवाल ही नहीं उठ सकता!"

"अर्थात्?" पहली बार होम्स ने पूछा।

"यह तो मुझे नहीं पता। सर जेम्स ने भी मुझे अधिक कुछ बताया नहीं। हम दोनों में तो केवल इतना ही तय हुआ था कि मैं वह हार जेम्स को दूंगा, उसके चोरी हो जाने का दिखावा करूंगा तथा हार के सुरक्षित जगह पहुंचने का संदेशा आते ही मैं आगे की कार्रवाई करूंगा। इस कार्रवाई की कल्पना में अभी आपको नहीं दे सकता।" महाराज ने

कहा। "किंतु उसके कारण जेम्स पर चोरी का आरोप लगने की संभावना नहीं रहेगी यह भरोसा मैं अपको दे सकता हूं।"

++ ++ ++

"लगता है इन्स्पेक्टर ग्रेगसन घर आए हुए हैं।" घर के पास पहुंचते ही होम्स ने कहा ,"काफी देर से प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

"तुमने कैसे पहचाना ?" मैंने होम्स से सवाल किया।

"मेरी पद्धति तो तुम्हें पता ही है—उसीका प्रयोग कर के सोचो।" होम्स ने कहा। किंतु मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया। आखिर उसने कहा, "पहियों के निशान और घोड़ों के खुरों से लगता है—घोड़ा-गाड़ी काफी देर वहां खड़ी है। और फुटपाथ पर पुलिस के जूतों के निशान है। कोई पुलिस हवलदार बड़ी देर तक यहां खड़ा रहा होगा। और बगल से हमारे घर में जाने वाले पैरों के निशान भी दिख रहे हैं। वही पैरों के निशान बाहर आकर दोबारा अंदर की ओर जा रहे हैं। यानी अंदर का व्यक्ति राह देख थक गया होगा और उसने बाहर आकर हवलदार और घोड़ा गाड़ी वापिस भेज दी होगी। हवलदार के साथ जरूर इन्स्पेक्टर ही रहा होगा। और हम जो अपराध सुलझा रहे हैं वह मामला इन्स्पेक्टर ग्रेगसन के पास है ! वेसे भी जहां तक मेरी जानकारी है, यह पैरों के निशान ग्रेगसन के ही जूतों के है ? कहो,सही तो है मेरा निष्कर्ष ?"

"हां, तुम्हारी तर्क-पद्धति अब समझ में आई है।" मैंने हमेशा का जवाब दिया।

ग्रेगसन अंदर प्रतीक्षा कर रहा था। हमें देखते ही खड़ा हो गया। होम्स ने उसे बैठने का इशारा किया और पूछा, "तो कुछ पता चला जेम्स का ?"

"अभी कहां ! मैंने सभी किनारों पर कड़ी निगरानी रखी है। वह किसी भी जहाज से बाहर नहीं जा सकता !" ग्रेगसन ने कहा। "किंतु मुझे यह मामला काफी गंभीर नजर आ रहा है।"

"क्यों भई ? मैंने तो सोचा था कि तुम सब सुलझा चुके होगे।"

होम्स की तानाकशी ग्रेगसन समझ नहीं पाया। उसने कहा, "महाराज रहिमत सिंग के सभी नौकरों से मैंने कड़ी जिरह की है। विशेषत: उनके सामान की देखभाल करने वाले मैनेजर से कई सवाल पूछे। उसका कहना था कि हार इस देश में आया ही नहीं।"

"यानी तुम्हें इस बात का शक है कि आखिर हार चोरी हुआ भी है या नहीं ?"

"हां। केवल महाराज ने कहा था, इसलिए हमने चोरी का सूत्र पकड़ा था। भारत में भी खोजबीन का प्रयत्न कर रहा हूं। रास्ते में जहाज में ही हार खो गया होगा, इस संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।"—ग्रेगसन।

"यदि ऐसा है तो सर जेम्स का इस घटना से कोई संबंध नहीं हो सकता।" होम्स ने कहा।

"हां, यही तो मुश्किल है"—ग्रेगसन होम्स की सहायता चाहता तो था, लेकिन कह नहीं पा रहा था।

आखिर होम्स ने कहा, "इस मामले में मैंने अभी पूर्ण रूप से विचार नहीं किया

है। यदि कुछ सूझे तो तुम्हें अवश्य बताऊंगा। अरे हां, तुम महाराज के डॉक्टर से मिले या नहीं ?"

"वह किसलिए ?"

"यूं ही, महाराज की बीमारी के उतारचढ़ाव का पता चल सकेगा। और हां ग्रेगसन ! समुद्र किनारों पर बेकार अपना समय खर्च मत करो ! मुझे पूरा यकीन है कि सर जेम्स इस देश से बाहर गए ही नहीं।"

++ ++ ++

ग्रेगसन के जाने के बाद होम्स काफी देर तक विचारों में खोया रहा। मैं अपने काम के लिए बाहर गया था। तीन चार घंटों बाद मैं लौटा तो होम्स को उसी विचार मग्न स्थिति में ही पाया। मेरे आने से शायद उसकी तंद्रा टूटी।

"यह क्या ? तुम अब तक विचारों में ही खोए हो। कुछ पता है कितना समय बीत चुका है ?" मैंने पूछा।

"कितना ? मैंने तो सोचा तुम कुछ ही देर पहले बाहर गये हो।" होम्स धीरे धीरे अपनी विचार-धुन से बाहर निकल रहा था।

"साढे तीन घंटे हो चुके ! कभी कभी लगता है कि तुम्हें पता ही नहीं होता, समय कैसे गुजरता है।"

होम्स का चेहरा अचानक चमक उठा, "वॉटसन ! तुमने यह रहस्य सुलझा दिया ! बधाई !"

मैं हैरान था—"वह कैसे ? मैंने क्या किया है ?"

"इसका उत्तर मैं सर जेम्स की प्रयोगशाला में ही दूंगा। चलो, हम वहीं चलते हैं।"

रास्ते में उसने दो तार भेजे।

++ ++ ++

सर जेम्स की प्रयोगशाला में मैं और अमेलिया उत्सुक थे कि होम्स क्या करने वाला है। ऐसा लगा कि वह कुछ ढूंढ रहा था। उसने पहले एक कोने की गुप्त दराज को देखा। लेकिन वह खाली थी।

"सर जेम्स का एक संदेश मुझे मिला था।" जेब सै उसने एक कागज निकाला। महाराज को यही संदेश दिया था।"

"अरे ! यह तो मेरे पिता की लिखाई है।" अमेलिया बोली, "तुम्हें यह संदेश कब मिला ?"

"आज, पहली बार मैं यहां आया, तब। अब सर जेम्स से दूसरे संदेश की प्रतीक्षा है। मिस ब्रॉडस्टेअर्स, आपको कोई एतराज न हो तो मैं यहीं इंतजार करता हूं। कितनी देर लगेगी कुछ कह नहीं सकता ! मेरे नाम तार आने की संभावना है।"

"और मैं भी यहीं रुकता हूं—" मुझे भी तो उत्सुकता थी।

कई घंटे हम वहीं बेठे रहे। हमारे खाने का भी प्रबंध वहीं किया गया। होम्स की

अपेक्षानुसार शाम को उसके नाम दो तार आए। तार में लिखी बातों को उसने गुप्त ही रखा। लेकिन किसी पहेली के सुलझने के कारण वह संतुष्ट था।

"वॉटसन ! 'उन्नीसवीं' शताब्दी में हम खुद विज्ञान तथा तकनीकी विकास का श्रेय लेते हैं। किंतु प्रकृति की कई पहेलियां हम बूझ नहीं सके हैं। ये पहेलियां धीरे धीरे एक विशिष्ट क्रम में ही सुलझें ऐसा प्रकृति ने शायद तय कर रखा है। लेकिन सर जेम्स जैसे वैज्ञानिक प्रकृति के ऐसे इरादे नाकाम कर देते हैं ....."

"तुम्हारी बातें भी किसी पहेली से कम नहीं है। जरा साफ साफ कहो न !"

"मेरे लिए संभव होता तो अवश्य कहता, वॉटसन ! अवश्य कहता। किंतु मेरी तर्क-श्रृंखला अभी अधूरी है। मैंने जो तार भेजे थे उनके जवाब पढ़कर लगता है कि मेरे तर्क सही दिशा में है।"होम्स ने एक लंबी आह भरी और कहा, "किंतु यह दिशा बड़ी विचित्र है, अतः मुझे कुछ भिन्न प्रमाणों की आवश्यकता है। सर जेम्स के अनुसंधान के बारे में मैंने अमरीका के दो वैज्ञानिकों से पूछा था। उनके तारों में लिखी बातों की यदि सर जेम्स पुष्टि कर दें, तो बात बन जाए। बस्स उस पुष्टि की अपेक्षा है !"

"वह कैसे और कहां मिलेगी ?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"इसीलिए तो मैं यहां बैठा हूं। या तो वे स्वयं यहां आएंगे या उनका कोई संदेश आयेगा।" होम्स ने गंभीरता से कहा।

"और यदि ऐसा नहीं हुआ तो ?"

"तो वॉटसन "अनसुलझी पहलियां" शीर्षक देकर यह मामला तुम्हें यहीं बंद करना पड़ेगा।" मुस्कुराते हुए होम्स ने कहा।

++ ++ ++

रात का एक बजा था। घर में सब सो गए थे। मुझे भी नींद आ रही थी। लेकिन होम्स बहुत चौकन्ना था।

"वह देखो, वॉटसन—" होम्स की आवाज सुन में हड़बड़ाकर उठा। प्रयोगशाला के एक कोने में अद्भुत दृश्य था। कुछ सफेद कण गोल गोल घूम रहे थे, काली आँधी में मिट्टी के कण गोल गोल घूमते हैं न ठीक वैसे। फिर धीरे धीरे उनसे कागज जैसी एक वस्तु तैयार हो गई। ८" × १०" का लिफाफा ही तैथार था।

सब थम जाने के बाद होम्स ने उसे धीरे से उठाया। उस पर उसीका नाम था। वह लिफाफा होम्स को बहुत आकृष्ट कर रहा था।

"वॉटसन तुमने पहले कभी ऐसा लिफाफा देखा है ? यह कागज भी बिल्कुल अलग प्रकार का है। मुझे कागज के १५७ प्रकार पता है, किंतु यह उनमें से नहीं। लिखाई जरूर सर जेम्स की ही है।"

लेकिन मुझे लिफाफे के अंदर क्या है इस बात की अधिक उत्सुकता थी। होम्स ने पूरी सावधानी से लिफाफा खोला। अंदर एक पत्र था सीलबंद छोटा लिफाफा था। उस पर महाराज का नाम था। किंतु उस पर मुहर थी :—

फॉस्टर-बटरवर्थ-एण्ड कैम्पबेल
१७८०-१९८०
(दो सौ साल की अनुभवी फर्म)

"वॉटसन, यह लिफाफा, यह मुहर—सब अगली सदी का है ! इसीलिए मुझे वह अपरिचित लगा। और यह नाम देखो, बिल्कुल छपा हुआ लग रहा है। जानते हो, हमारे यहां अभी ऐसी मशीनें बनी ही नहीं है।" होम्स का स्वर उत्तेजना से भरा था।

"हो सकता है इस पत्र में कोई स्पष्टीकरण हो— !" मेरा तो दिमाग काम ही नहीं कर रहा था। होम्स के नाम लिखा पत्र ज्यों का त्यों दे रहा हूं।

"प्रिय होम्स,

आपने आज तक अनेक रहस्यमयी घटनाओं को सुलझाया है—आपको इसी तरह सफलता मिलती रहे। लेकिन आपको मानना पड़ेगा कि कुछ देर पहले जो आपने देखा उससे अधिक रहस्यमयी चीज आपने पहले कभी न देखी होगी। लेकिन अफसोस सिर्फ इस बात का है कि यह रहस्य समझाने मैं स्वयं आ नहीं सकता। अत: इस पत्र द्वारा सभी बातों का अधिक से अधिक स्पष्टीकरण दे रहा हूं।

मैं एक वैज्ञानिक हूं। अत: मैक्सवेल ने विद्युच्चुंबकीय शास्त्र का सिद्धांत रखा, तो मुझे पता चला कि उस सिद्धांत में अवकाश और समय का समन्वय होता है। स्वयं मैक्सवेल और अन्य वैज्ञानिक इस निष्कर्ष तक पहुंच नहीं पाए थे। हम सब प्रयोगशाला में बैठे चाय पी रहे थे कि अचानक मुझे यह निष्कर्ष सूझा। स्पष्ट है कि कोई मेरी बात से सहमत नहीं था। दो व्यक्ति प्रकाश की गति को नाप रहे हैं।एक प्रकाश-स्त्रोत की ओर तेजी से बढ़ रहा है और दूसरा स्थिर है। मेरा निष्कर्ष था कि दोनों को प्रकाश की गति एक जैसी ही लगेगी।

यह कैसे हो सकता है ?-मेरे एक साथी ने पूछा। उन्होंने कहा—एक स्थिर व्यक्ति है और एक रेल गाड़ी से जाने वाला व्यक्ति है। दोनों सामने से आती हुई ट्रेन को देखते हैं। उन्हें उस ट्रेन की गति समान कैसे लगेगी ? जवाब में मैंने कहा कि मैक्सवेल के सिद्धांत में प्रकाश का एक विशिष्ट स्थान होता है। लेकिन किसी को यह बात जाँची नहीं। १९०५ में, वैज्ञानिक आइन्स्टाइन ने भी यही निष्कर्ष निकाला था। उस समय भी पहले उसकी अवहेलना ही की गई थीं। बीसवीं सदी के वैज्ञानिक जिसे सापेक्षतावाद कहते हैं उसीमें से अवकाश और समय का समन्वय होता है!

मैंने सापेक्षतावाद से काफी आगे की बात कही थी। आइन्स्टाइन के निकाले निष्कर्ष मैं बहुत पहले ही निकाल चुका था। कुछ वैज्ञानिक ईथर-माध्यम से प्रकाश की गति को नापने का प्रयत्न कर रहे थे। जुलाई १८८७ में मायकेलसन और मोर्जे के निष्कर्ष मेरे सिद्धांत से पूरी तरह मिलते थे। इस आशय का तार जब अमेलिया ने मुझे दिया तब मुझे बहुत संतोष हुआ।

किंतु इससे पहले ही मैं बहुत आगे निकल चुका था। हर इंसान के लिए समय की गति एक सी नहीं हो सकती। फर्ज कीजिए दो जुड़वां भाई हैं। एक पृथिवी पर स्थिर है और दूसरा लगभग प्रकाश की गति से कहीं दूर जाकर लौटता है। दोनों में से दूसरा आयु

के हिसाब से कम विकसित होगा। यह बात इतनी आसानी से गले नहीं उतरेगी, किंतु यही सत्य है !

इसी सिद्धांत का उपयोग हम भूतकाल से भविष्य में जाने के लिए कर सकते हैं। हम जब तेजी से लंबा सफर तय करके लौटते हैं, तब दुनिया की आयु में हम से अधिक वृद्धि होती है। यह तो रही भूतकाल से भविष्य में जाने की बात। किंतु भविष्य से भूतकाल में जाना क्या संभव होगा ?

यह बात कठिन है, किंतु असंभव नहीं ! गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से ऐसा किया जा सकता है। १९४९ में गोडेल नामक एक वैज्ञानिक ने यह सिद्ध किया है। किंतु मैं तो इस निष्कर्ष पर पहले ही पहुंच चुका था। यही नहीं,मैंने तो ऐसा यंत्र भी बनाया था जो भूतकाल और भविष्यकाल दोनों में जा सकता था। मेरे गणित के अनुसार तो मैं नब्बे साल तक की लंबी छलांग लगा सकता हूं।

उस दिन अमेलिया जब तार लेकर मुझे ढूंढ रही थी तब मैं भविष्य काल में एक दिन आगे निकल गया था ! इसलिए मैं वहां होते हुए भी उस 'क्षण' वहां नहीं था।

रहिमत सिंग ने जब उनकी समस्या बताई तब मेरे दिमाग में एक जबरदस्त कल्पना आई। नब्बे साल आगे जाकर यदि मैं उनका हार सुरक्षित रख दूं, तो ? उनके वकील को संबोधित एक पत्र मैंने उनसे लिया। उसमें, "में यह हार अपने छोटे बेटे के वंशजों को दे रहा हूं, ऐसा लिखवाया। वह पत्र और हार उन्हें देकर रसीद बनवाकर मैं लौटूंगा—यानी मेरी वापसी की यह यात्रा नब्बे साल पीछे भूतकाल में होगी।

योजनानुसार हार और वह सीलबंद पत्र लेकर अपने यंत्र द्वारा मैं १८८८ से सीधा १९७८ में पहुंच गया। वकील की फर्म कुछ नए भागीदारों के साथ चल रही थी। मैंने उन्हें पत्र दिया और रसीद ली। महाराज के छोटे बेटे के वंशज जहां कहीं भी हो उन्हें वह हार पहुंचाने की व्यवस्था वे करेंगे ऐसा लिखवा लिया। उनका पत्र सीलबंद करके मैं लौटने लगा—और यहीं एक बड़ी बाधा आन पड़ी।

आज तक नब्बे साल की छलांग मैंने लगाई नहीं थी। मेरी उड़ानें कुछ दिन भविष्य में या भूतकाल में जाने तक ही सीमित थी। नब्बे साल की लंबी उड़ान मेरे यंत्र की क्षमता से अधिक थी। मैं पुनः १८८८ में आ नहीं पा रहा था !

आखिर मैंने यह निर्णय लिया। स्वयं यही रहूंगा और इन पत्रों को ही भूतकाल में भेजूंगा। तदनुसार यह लिफाफा भेज रहा हूं। कृपया महाराज का पत्र उन्हें भिजवा दें। हम दोनों ने यह तय किया था कि मेरा यह काम ठीक ढंग से पूरा हो जाने पर पुलिस को बताया जाए कि हार चुराया नहीं गया बल्कि जहाज में ही कहीं खो गया होगा। इससे पुलिस की कार्रवाई रुक जाएगी। वैसे भी होटल में चोरी के कोई सबूत नहीं मिले। अतः पुलिस भी बात मान जाएगी।

मैं वापिस आ नहीं सकता, इसका बहुत बुरा लग रहा है। विशेषतः अमेलिया से फिर कभी मिल नहीं सकूंगा, इसका बड़ा अफसोस है। किंतु मैं लौटने का हर संभव प्रयत्न कर रहा हूं। बीसवीं सदी में तंत्र विज्ञान की उन्नति विलक्षण है। मि. होम्स ! न्यू स्कॉट लैंड यार्ड यदि आप देखते तो हैरान रह जाते। अपराध की खोजबीन में उसकी

बड़ी सहायता ली जाती है—किंतु फिर भी, मि. होम्स, कभी कभी लगता है कि आपने जो अपराध सुलझाए हैं, इन यंत्रों से सुलझ नहीं पाते! मनुष्य का दिमाग हर हालत में यंत्र से श्रेष्ठ ही है। शायद उन्नींसवी सदी के आदमी की यह बात बीसवीं सदी के परिप्रेक्ष्य में पूर्वाग्रहयुक्त लगेगी!

आपसे एक अनुरोध है कि मेरा यह प्रयोग गुप्त ही रखें। कम से कम नब्बे साल तो अवश्य रखें, क्योंकि .... क्योंकि कारण है ही ऐसा विचित्र! खैर में सब समझाता हूं।

मनुष्य का भूतकाल जब तय हो जाता है तो कहते हैं कि हम उसमें दखलअंदाजी नहीं कर सकते। हमारा भविष्य काफी हद तक हमारे हाथ में हो सकता है। आज हम जो कुछ करते हैं उसके परिणाम हमें भविष्य में दिखाई देते हैं; भूतकाल में नहीं। प्रकृति के इस नियम का मैंने उल्लंघन किया। मैंने १८८८ में आपको १९७८ की कुछ घटनाएं अभी से बता दी! अब आप चाहे तो उन घटनाओं को रोक सकते हैं। जैसे, यदि आप फॉस्टर-बटरवर्थ-एण्ड कैंम्पबेल नामक वकीलों की कंपनी को ही बंद कर दें तो १९७८ में उसे कैसे देख पाऊंगा? वैसे ही १९७८ में मुझे पता चला है कि रहिमत सिंग के छोटे बेटे के वंशज जीवित हैं। किंतु उस वंश का नाश करना आपके लिए मुश्किल नहीं। ऐसी परिस्थिति में सवाल पैदा होता है कि वास्तव में हुआ क्या है? लगता है कि ऐसे प्रश्नों को रोकने के लिए जरूरी है कि सृष्टि की सभी घटनाओं में सुसंगतता हो। शायद इसीलिए, केवल अतीत से भविष्यकाल की जानकारी मिल सके यही सृष्टि का नियम बना है। मुझे डर है कि कहीं मेरे इस अनुसंधान से प्रकृति का व्यवहार और सृष्टि का वह नियम खंडित न हो जाए।............. लेकिन यह भी सच है कि मुझे अभी तक इस सवाल का कोई जवाब नहीं मिला है।

अतः मेरा अनुरोध स्वीकार किया जाए। यह पत्र अमेलिया को दिखाया जाए और मुख्य मुद्दे रहिमत सिंग को बतलाए जाए।

आपका विश्वासी
जेम्स ब्रॉडस्टेअर्स

पुनश्चः—रहिमत सिंग से कहिए कि भारत में अब रियासतों राजा-महाराजाओं की प्रणाली नहीं है।—जे.बी.

++ ++ ++

"होम्स, तुम्हें इन सब बातों का अंदाजा कब आ गया था?" बेकर स्ट्रीट पहुंचने पर मैंने पूछा।

"सच पूछो तो सर जेम्स के पत्र ने ही स्थिति स्पष्ट की। मुझे सिर्फ इतना पक्का पता था कि वे वर्तमान काल में नहीं है।" ड्रेसिंग गाऊन पहनते हुए होम्स अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

"परंतु आखिर यह यकीन तुम्हें हुआ ही कैसे?"

"वॉटसन, मेरी एक निष्कर्ष—पद्धति है, तुम्हें पता है। पहले सभी संभावनाओं को

टटोलना चाहिए और जब कोई भी लागू न पड़े तो बचे हुए पर्याय के बारे में सोचना चाहिए। वह पर्याय, चाहे कितना ही अनपेक्षित क्यों न लगे, वही सच होता है। सर जेम्स लापता हो गए इसका क्या अर्थ था? वे घर में तो छुपे नहीं थे। उनके पूर्वइतिहास से एक बात का यकीन था कि वे साधारण अपराधी की तरह व्यवहार तो करेंगे नहीं। इसलिए मैं लंदन में उन्हें ढूंढने या इंग्लैंड के समुद्र किनारों पर निगरानी रखने के झमेले में ग्रेगसन की तरह नहीं पड़ा। उनका खून हुआ होगा ऐसा भी कहीं कोई सुराग नहीं था। तो फिर वे गए कहां? उनका गणित हालांकि मेरी पहुंच से बाहर था, फिर भी उनके गुप्त अनुसंधान पत्रों से पता चला कि वे कालमर्यादा लांघना चाह रहे थे। मैंने प्रो. मायकेलसन और प्रो. लोरेंझ को तार द्वारा इस अनुसंधान के बारे में पूछा। कुछ ही देर पहले उनके जवाब मिले। उन्होंने इस अनुसंधान के उद्देश्य का समर्थन किया है। किंतु उसकी सफलता के बारे में वे साशंक है। किंतु मैंने इसी असंभव बात पर भरोसा किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सर जेम्स वर्तमान काल में नहीं है। महाराज रहिमत सिंग और उनके बीच हुई संधि ने भी इस बात की पुष्टि कर दी।" होम्स ने कहा।

"होम्स, आज तुमने अपनी कल्पना शक्ति और अनुमान शक्ति का सर्वोच्च शिखर छू लिया।" मैंने प्रशंसा के अंदाज में कहा, "मैं इन सब बातों को दर्ज कर रखूंगा।"

"किंतु तुम उसे प्रकाशित नहीं कर सकते। दुनिया यही सोचेगी कि मैं इस केस को सुलझा नहीं पाया।" उबासी देते हुए जेम्स ने कहा।

"कम से कम १९७८ में सच्ची बात प्रकाशित करने की अनुमति मैंने अमेलिया से ले ली है। नींद हो जाने पर मैं यह सब लिख डालूंगा।" मैं बेडरूम की ओर चल पड़ा।

सोते समय होम्स की वायलिन के सुर सुनाई दे रहे थे।

विज्ञान युग में नारद जी

"नाराऽयण ! नाराऽयण।"

नारदजी के आगमन की सूचना देने वाला जयकारा सुनाई देते ही शेषनाग ने अपना फन हिला कर भगवान विष्णु को जगाया,

"जागिए, भगवन ! नारदजी पधार रहे हैं।"

विष्णु तुरन्त जाग गए। सारे विश्व की रक्षा करने का दायित्व उनपर होने के कारण वे गाढ़ी नींद कभी नहीं सोते थे।

अब तो खड़ताल के ताल पर 'नाराऽयण ! नाराऽयण !' का नारदजी द्वारा किया जा रहा नामस्मरण साफ सुनाई देने लगा था। उसके शीघ्र ही बाद अंतरिक्ष से क्षीरसागर की सतह पर उतरे नारदजी विष्णु के सामने खड़े होगए। उन्होंने भगवान को झुक कर प्रणाम किया।

"नारदजी, आपका स्वागत है। आपका आगमन हमेशा भूलोक के कुछ न कुछ समाचार लेकर ही होता है। तो ताजा खबर क्या है ?"

"क्यों मजाक कर रहे हैं भगवन ? आप स्वयं तो त्रिकालज्ञानी हैं। अंतरिक्ष एवं समय की एक एक घटना बिंदु आपके मस्तिष्क में अंकित होती है। तो आपको भला नई बात मैं क्या बता सकता हूं ? मेरा काम तो संगणकों की भांति उसमें भरी गई जानकारी परदे पर प्रदर्शित करना मात्र है।" नारदजी मुस्कुराते कहने लगे।

"हे नारद, तुम्हारी भाषा में ये नए नए शब्दप्रयोग कैसे आरहे हैं ? ये अंतरिक्ष, समय, घटनाबिंदु, संगणक .... लगता है आप काफी नई नई बातें सीख कर आए हैं। पुराणकाल का नारद ऐसा तो कभी बोलता नहीं था।" विष्णु के स्वर में आश्चर्य था।

"वही तो कहने आया हूं। पुराणकाल अब कभी का बीत चुका है। समय बदल गया है। अब पृथिवी के लोग सतयुग और कलियुग की बात नहीं करते। वे अब विज्ञानयुग में रह रहे हैं। देवताओं का पूजन-अर्चन छोड़ कर वे अब संगणकों, विनाशकारी यंत्रों, ऊर्जा-संयंत्रों ..... आदि यंत्रों के पीछे भागे जा रहे हैं। भजन-कीर्तन, कथा-प्रवचन अब उन्हें सन्तोष नहीं देते। विज्ञान की दृष्टि अब उन्हें अधिक सन्तोष देती है। .... भगवन, मैं आपसे कैसे कहूं ...... किन्तु कहे बिना रहा भी नहीं जाता। इसलिए साहसपूर्वक कहना चाहता हूं। मधुकैटभ, रावण, कंस आदि के जमाने में अधर्म का जितना अभ्युत्थान और धर्म की ग्लानि नहीं हुई थी, उससे कहीं अधिक आज होगई है ..... अब आपको दसवां अवतार धारण करने का समय आगया है।"

"शांत हो जाइए, नारदजी, शांत होइए। तुम्हारी बातें चल रहीं थीं, तभी मैंने भूलोक का चित्र अपनी आंखों के सामने लाया। मुझे तो उसमें चिन्ता करने लायक कुछ भी दिखाई नहीं दिया। ..... " विष्णु ने सौम्य स्वर में कहा।

"आप ऐसा कैसे कह सकते हैं, भगवन ?" नारद ने आश्चर्य जताया।

"अच्छा, मैं तुम्हें अपनी दिव्यदृष्टि देता हूं, स्वयं देखो मुझे क्या क्या दिखाई दे रहा है।" विष्णु के ऐसा कहते ही नारद जी के सामने नए नए दृश्य साकार होने लगे। विष्णु ने आगे कहा, "अब तुम्हारी वैज्ञानिक भाषा में कहना हो, तो समझ लो कि तुम्हारे सम्मुख टी.वी. का पर्दा है और उस पर तुम ये दृश्य देख रहे हो। ..... वह रहा बम्बई शहर। पुराणकाल में उसका अस्तित्व नहीं था, किन्तु आज के भारतीय जीवन में उसका बहुत महत्व है, क्योंकि व्यापार और धन का वह केन्द्र है। किन्तु ऐसे शहर में भी, जहां आम तौर पर साधारण मनुष्य को अपने कामधंधे के कारण सोचने की भी फुरसत नहीं हुआ करती, वे देखो आदमियों की लम्बी लम्बी कतारें। ये कतारें रेलयात्रा या फिल्म के टिकटों के लिए नहीं लगाई गई हैं, बल्कि सिद्धिविनायक के मन्दिर में दर्शन करने के लिए लोग कतारें बांध कर खड़े हैं। इससे भी बड़ी कतारें देखना चाहो तो वह देखो पंढरपुर का विट्ठल-मंदिर या व्यंकटेश्वर का मंदिर। वहां लगी कतारें तो इनसे भी लम्बी हैं। अब तो ऐसे बड़े वड़े मंदिर भारत के बाहर भी दिखाई देंगे। वह देखो, वह रहा 'हरे कृष्णा, हरे रामा' गाते जाने वाले गोरे लोगों की टोली......"

"किन्तु स्वामी ......" नारद कुछ कहना चाह रहे थे।

उनकी बात बीच ही में काट कर विष्णु ने आगे कहा, "और केवल वैदिक धर्म का ही पुनरुज्जीवन हो रहा हो,सो भी नहीं। ईश्वर की ओर ले जाने वाले अनेक वैकल्पिक धर्म संसार में हैं। .... देखो और सुनो श्रीलंका के बौद्ध मंदिर में हो रहे 'बुद्धं शरणं गच्छामि' के घोष को ...... हज के लिए यात्रियों को ले जाने वाले खचाखच भरे उन जहाजों को भी देखो .... और वह उधर रही मेरे ईसावतार में मुझे मिले भक्तों से हजारों गुना अधिक संख्या में सेंट पीटर्स गिरजाघर में एकत्रित भीड़ .... हे नारदजी, धर्म का पालन अमुक एक ही मार्ग से हो, ऐसा मैंने कभी नहीं कहा। अतः आज जो कुछ दिखाई देरहा है, क्यों न उससे मैं सन्तोष कर लूं ?"

"भगवन, आप सर्वज्ञ हैं, किन्तु भक्तों को परखने के लिए कई बार अज्ञानी बनने का बहाना करते हैं। ...... इसलिए आपकी बात को काटने का साहस करता हूं। आपने मुझे दिव्यदृष्टि से अभी जो दृश्य दिखाए, सब के सब सतही परिस्थिति दर्शाने वाले हैं। सत्य स्थिति क्या है ? क्या आज का मानव वाकई में धर्माचरण करता है ? धर्म यदि उसकी समस्याओं का समाधान कर पाता,तो क्यों मानव विज्ञान की ओर मुड़ता ? .... अब मैं आपको कुछ दृश्य दिखाता हूं। किन्तु मैं आपको अपनी दृष्टि नहीं दे सकता। क्या आप मेरे साथ घटनास्थल पर चल कर उन्हें देखने का कष्ट करेंगे ?" नारदमुनि की बातों में काफी आग्रह था। उन्होंने आगे कहा, "किन्तु, भगवन, आप केवल देखने का काम करेंगे। किसी बात में दखलंदाजी नहीं करेंगे।"

"मुझे मंजूर है। चलो हम दोनों गरुड़ पर सवार होकर चलते हैं।" विष्णु ने कहा।

गणेश-विसर्जन का बड़ा जुलूस राजमार्ग से होता हुआ जा रहा था। 'गणपति बाप्पा मोरया। अगले वर्ष जल्दी आ' का जयघोष वातावरण में गूंज रहा था।

"नारदजी, देखा आपने, लोगों में उत्साह कैसे ठाठें मार रहा है।" विष्णु ने कहा। नारद, विष्णु और गरुड़ तीनों किसी हेलीकाप्टर जैसे उस जुलूस में ऊपर हवा में तैरते

हुए जारहे थे, किन्तु अदृश्य रूप से और एकदम नीरव मार्ग पर चल रहे थे।

"देवाधिदेव, आप इतने उल्लसित न बनें। उस जुलूस के बगल से ही देखिए क्या चल रहा है। गरूड़, जरा बाएं होकर चलते हैं, ताकि दृश्य हमें अधिक अच्छी तरह से दिखाई दे।"

रास्ते की दोनों ओर बहुतेरी दुकानें और जलपान-ढाबे थे। नारद द्वारा निर्देश किए स्थान पर विष्णु ने देखा, जुलूस के कुछ लोग एक दुकान में घुस कर सरे आम लूटपाट मचा रहे थे। लूट मचती देख कर पास पड़ोस की दुकानें फटाफट बंद होती जारही थीं।

"माजरा क्या है, नारद ?" विष्णु ने पूछा।

"यह एक मुसलमान की दुकान है। हिन्दुओं के त्यौहार के दिन उसे लूट लेना आसान जो होता है। बस बात इतनी सी ही है।" नारद ने स्पष्ट किया।

"किन्तु पुलिस क्या वहां नहीं होती ?"

"होती क्यों नहीं ? अवश्य होती है। उन्हें भी आपकी ही भान्ति 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्' के लिए ही नियुक्त किया होता है, किन्तु आपकी इस धारणा में और उनकी धारणा में काफी अन्तर है। आप देवता लोग घटनास्थल पर आकर ऐसी हरकतों को रोकते हैं, जबकि यह पुलिस अत्याचार हो चुकने के बाद घटनास्थल पर पहुंचती है।"

विष्णु ने चारों ओर देखा। वाकई पुलिस का कहीं पता ही न था। तभी विष्णु का हाथ सुदर्शनचक्र की ओर बढ़ता नारद ने देखा। उन्होंने तुरन्त कहा, "हां, हां, भगवन्, आपके सुदर्शनचक्र का यहां कोई काम नहीं है। हमारा क्या तय हुआ था ? जो कुछ होरहा है, उसे केवल देखते जाना है, दखलंदाजी कतई नहीं करनी है। आप भूल गए ?"

विष्णु ने अपना हाथ रोक लिया। नारदजी ने आगे कहा, "किन्तु अकेली पुलिस का भी दोष नहीं होता। उधर देखिए, पुलिस की आंखों के सामने अत्याचार होरहा है।"

नारद ने जिधर निर्देश किया था, वह स्थान वहां से केवल २०० मीटर पर था। एक पैट्रोल पंप को तहस नहस किया जा रहा था। घोड़े पर सवार एक पुलिस वाला असहाय होकर देख रहा था।

"क्या यह पंप भी किसी मुसलमान का है ?" विष्णु ने पूछा।

"नहीं। उसका मालिक हिंदू है। किन्तु उसके साथ अदावत रखने वाले ऐसे ही मौके की खोज में होते हैं। ऐसे धार्मिक अवसरों पर की जाने वाली अप्रिय घटनाओं पर धार्मिक दंगे की मुहर लगा दी जाती है। कल यही मामला भभक कर हिंदू-मुसलमानों के साम्प्रादायिक दंगे के रूप में सामने आएगा।"

भीड़ पैट्रोल-पंप में आग लगा देने का प्रयास कर रही थी। परंतु बात बन नहीं पा रही थी। घुड़सवार पुलिस वाले ने अब तक अपने वाकी-टाकी पर बात कर अतिरिक्त सहायता बुलवा ली थी। उसे देखते ही समाजकंटकों ने कुछ पथराव करने के बाद वहां से नौ दो ग्यारह करना उचित समझा था। वे भाग गए थे।

'गणपति बाप्पा मोरया' को अगले वर्ष जल्दी आने का आह्वान अब नहीं सुनाई देता था।

उत्तरी आयरलैण्ड के लंदन डेरी शहर का बागसाइड भाग। ब्रिटिश सैनिकों से लदी एक जीप आराम से टोही गश्त पर जा रही है। रास्तों पर लोगों का आना जाना ऐसा है, जैसा आम दिनों साढे तीन-चार बजे दोपहर में होता है। आयाएं बच्चों को स्कूलों से वापस घर ले जारही हैं। फलों की दुकानों पर लोगों की भीड़ है। सांध्य अखबार छप कर तैयार हैं और छात्र-हाकरों की बाट जोहे पड़े हैं। संक्षेप में कहा जाए तो सैनिकी जीप को टोह पर निकलने की आवश्यकता जताने वाला कुछ भी तो नहीं हो रहा है।

"उस जीप को रोकिए नहीं भगवन् ! जो होने वाला है, हो ही जाने दीजिए।" विष्णु के मन की बात ताड़ कर नारद ने कहा। विष्णु फिर स्तब्ध रह गए।

जीप आहिस्ता आहिस्ता आम चौराहे पर आई। वह वरीयता वाला रास्ता था। बाजू से आने वाले वाहनों को उस मार्ग पर आने से पहले उसपर चल रहे वाहनों की सुविधा का ध्यान रखना होता था। वहां 'स्टाप' का उलटा त्रिकोण भी लगाया हुआ था।

किन्तु बाजू की एक गली से आने वाले एक ट्रक ने इस सूचना को अनदेखा कर दिया। इस हादसे को देखने वालों को लगा कि शायद गली से सड़क की ओर आती ढलान पर ट्रक चालक का अपने वाहन पर काबू नहीं रहा होगा ...... किन्तु बाद में पता चला कि हकीकत भिन्न थी। ट्रक में कोई चालक बैठा ही नहीं था।

ढलान पर तेजी से आता वह ट्रक जीप से टकरा गया। आम तौर पर ऐसी धड़क में जीप कहीं दूर फिंका जाती। किन्तु यहां सारा मामला ही निराला था। एक प्रचण्ड धमाका होकर ट्रक तथा जीप दोनों चूर चूर होकर बिखर गए। कुछ ही क्षणों पूर्व जीप में जवानी की मस्ती में आपस में दिल्लगी कर रहे जवानों के शरीर चिंदियां होकर चौक में इधर उधर गिरे।

"आखिर यह सब किसलिए ?" आम तौर पर हमेशा शांत रहने वाले गरूड़ ने पूछा।

"धार्मिक विवाद के लिए।" नारद ने उत्तर दिया।

"कौन से धर्म ?"

"ईसाई।"

"और ?"

"केवल ईसाई ही। एक ही ईसाई धर्म के दो गुटों में विवाद चल रहा है।"

"इसका मतलब तो यही हुआ न कि दो हजार वर्ष पूर्व जिस धर्म के संस्थापक को परायों ने शूली पर चढ़ाया था, उसीके अनुयायी 'तुम्हारा नहीं मेरा ही मत सत्य' कहते हुए परस्पर की हत्या कर रहे हैं ?" गरूड़ ने कहा।

"अरे बाबा, यही बात तो मैं कब से तुम्हारे स्वामी को समझा रहा हूं कि इस धर्म के नाम पर पृथिवी का मानव देखो कैसा अधर्म कर रहा है।" नारद ने कहा।

"देख लिया, नारदमुनि, मैंने बहुत देख लिया।" विष्णु की बात में वेदना साफ थी।" आते समय हम पशिचम एशिया पर से होते हुए आए। वहां धार्मिक पुनरुज्जीवन के नाम पर मानव किस तरह पीछे-पीछे को जा रहा है, हमने देखा। एक ही इस्लाम के मानने वाले देशों में झगड़े चलते हमने देखे। धर्म के नाम पर नारी पर लगाए बंधन हमने

देखे। और 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' का नीतिवचन सारे संसार को सुनाने वाले भारत में महिलाओं पर जारी अत्याचार देख कर धृतराष्ट्र की राजसभा में द्रौपदी के घोर अपमान की हमें याद हो आई। ....."

"यहां आप गलती पर हैं देवाधिदेव ! द्रौपदी के उस अपमान के समय भीष्म, द्रोण आदि निष्क्रयता से चुप्पी साधे बैठे रहे थे। किन्तु आज के भीष्माचार्य और द्रोणाचार्य तो न्यायालय में दु:शासन के पक्ष में इतनी जोरदार पैरवी करेंगे कि उसे बेकसूर मान कर बरी कर दिया जाएगा।" नारद ने कहा, "और कृष्णावतार में आपके द्वारा दिखाए गए चमत्कारों को भी मात देने वाले साधुसंतों की भी यहां कोई कमी नहीं दिखेगी।"

"ठीक कह रहे हैं आप नारदजी। अच्छा किया, आपने समय रहते ही मुझे रोक दिया।वरना चमत्कार दिखा कर दुनिया को भरमाने वाले उस बाबाजी की पोल में खोलने ही जा रहा था। ....." विष्णु ने बड़े चाव से कहा।

"शान्ति, भगवन् शान्ति," नारद जी मुस्कुरा कर कहने लगे, "आज कल भूलोक में हर बात विज्ञापनबाजी के बल पर चलती है और हर विज्ञापन अपने में सही कभी होता ही नहीं। ये बाबाजी लोग चमत्कार का विज्ञापन कर धर्म को बेचते हैं, और कोई बात नहीं है।"

"किन्तु मेरा मोहभंग असल में तब पूरा हुआ जब मेंने प्रख्यात मंदिरों की प्रथाओं को देखा। देवस्थान को अधिक पैसा देकर, घण्टों कतार में खड़े लोगों से पहले भीतर जाते हुए मूर्ति का दर्शन किया जासकता है, यह बात देख कर तो मैं अवाक् रह गया। नारदजी, आपको याद है न, कौरवों के राजप्रासाद में महाभोज का आमन्त्रण मुझे मिला था, किन्तु उसे अस्वीकार कर मैंने विदुर के घर जाकर रूखी सूखी रोटी खाना पसंद किया था। आज की दुनिया क्या इस बात को भुला बैठी है ?"

"कैसे भुला बैठेगी ? कथापाठ, कीर्तन, जागरण, नाटक, टी.वी., फिल्में आदि में काफी पौराणिक आख्यान देखने सुनने तथा पढ़ने को मिलते हैं। अभी अभी आप ही ने तो कहा था कि इन दिनों धर्म प्रचार में काफी वृद्धि होगई है ..... ऐसा कुछ भी नहीं होरहा है, भगवन् ! आज का आदमी एकदम शतप्रतिशत व्यावहारिक बन गया है। ..... धर्म का उपयोग वह केवल एक मुलम्मा के रूप में करता है। उसका सारा दारोमदार तो आजकल विज्ञान, तथा प्रोद्योगिकी पर है। उनके ही सहारे अपनी प्रगति और विकास होसकेगा इस बात को आपका मानवै भलीभान्ति पहिचान चुका है।"

"क्या बात है नारदजी ? आज आप बड़े विज्ञानवादी बन रहे हैं ?" विष्णु मुस्कुराए, "विज्ञान अंधश्रद्धा को दूर करता है, एक अनुशासन के तहत मानव को प्रकृति की जानकारी कराता है, और उस जानकारी का उपयोग उसका जीवन-स्तर उठाने में सहायता करता है। विज्ञान में कोई महंतगिरी नहीं होती। वैज्ञानिक वस्तुपरक होते हैं... इत्यादि इत्यादि ...."

नारदजी कुछ सहम कर कहने लगे, "हे भगवन्, आप तो सर्वज्ञ हैं इसे मैंने भुला दिया था, क्षमा करें। .... किन्तु क्या आप नहीं मानते कि इसी विज्ञान के सहारे कलजुग का मानव प्रगति कर सकेगा ?"

"नारद जी, काश आप भी मेरी तरह इस संसार का भार उठाए होते ! तब तो आपको भी आसानी से बात समझ में आ जाती कि इन सादे-से प्रश्नों के उत्तर उतने सादे सीधे नहीं हुआ करते। अच्छा, अब तक आपने मुझे भूलोक की सैर कराई, अब मैं आपको सैर कराता हूं। चलो देखते हैं, आपके विज्ञानयुग में विज्ञान का हाल क्या है। गरूड़, और पश्चिम की ओर अमरीका चलते हैं, क्योंकि वह देश, नारदजी, आपके विज्ञानयुग का स्वर्ग जो है।"

अतलांतिक महासागर पर से जाते समय विष्णु ने कहा, "नारदजी, आज के विज्ञान का स्वरूप तो हम देख ही रहे हैं। किन्तु आपने तो इसका प्राथमिक स्वरूप भी अवश्य देखा होगा, तीनों लोक में आपका भ्रमण निरंतर जो चलता रहता है ? तो क्या आपको उस प्राथमिक विज्ञान की कोई विशेषता याद आरही है ?"

"उसके लिए तो भगवन् कोई चार पांच सदियों पहले का जमाना याद करना होगा। कोपर्निकस और गैलीलिओ ! इन दोनों की कल्पनाओं का उस समय के धर्ममार्तण्डों ने कितना जबरदस्त विरोध किया था ! आखिर घुटने टेक कर जब गैलीलिओ ने स्वीकार किया कि 'मुझसे भूल होगई।' तब जाकर कहीं ... गैलीलिओं की वह स्वीकारोक्ति मैंने अदृश्य रूप में देखी थी ... सौभाग्य से आज जमाना काफी बदल गया है। अब किन्ही नई विज्ञान-परिकल्पनाओं का विरोध करने का साहस आज के धर्मपार्तण्डों में रहा नहीं है।"

"निश्चय ही नहीं रहा है ... किन्तु देखते हैं, स्थिति वास्तव में बदली है या नहीं।" विष्णु ने गरूड़ को एक स्थान का पता बताया।

एक सुप्रसिद्ध विज्ञान-संस्थान के वातानुकूलित समिति-कक्ष में एक लम्बी मेज की चारों ओर वैज्ञानिक काफी संख्या में एकत्रित थे। ये सब महानुभाव इतनी बड़ी बड़ी हस्तियां थे कि विश्वविख्यात खगोलशास्त्रियों की नामावली में इनके नाम आसानी से लिखे जासकते थे।

"ये सब लोग हैं कौन ?" नारद ने पूछा।

"नाम तो मैं नहीं बताता। किन्तु इतना कह सकता हूं कि एक विशाल नई दूरबीन का उपयोग करने वाले जो अलग अलग प्रकल्प वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए हैं, उनकी छानबीन करने वाली समिति की यह बैठक है।" विष्णु ने स्पष्ट किया।

गला साफ कर समिति के अध्यक्ष ने कहा, "मित्रों, हमारी अपेक्षा से कहीं ज्यादा प्रकल्प हमारे पास आए हैं। दूरबीन का उपयोग करने लायक रातों की संख्या साल भर में केवल १३० ही होती है। आज तक के अनुभवों से सिद्ध इस बात को हम मान कर चलें, तो हमारे पास छानबीन के लिए आए प्रकल्पों की संख्या एक हजार से अधिक होने के कारण हम केवल इनका आठवां हिस्सा ही छानबीन के लिए स्वीकार कर सकते हैं।"

उनकी बात अत्यंत मुद्दों वाली तथा तर्कसंगत थी। नारद जी ने भी सिर हिला कर दाद दी। विष्णु ने आंखों ही आंखों में उन्हें सूचना दी 'अभी हुआ ही क्या है, जरा आगे' आगे देखिए, होता है क्या।' अध्यक्ष ने आगे कहा :

"इसलिए प्रयोग के वास्ते प्रकल्पों की छानबीन करते समय हमें चन्द बातों का

ध्यान रखना होगा। जैसे प्रकल्प के वैज्ञानिक का पूर्वानुभव, प्रकल्प का किसी ठोस वैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित होना, छोटी दूरबीनों से काम चलने वाला हो तो यह बड़ी दूरबीन का उपयोग उसके लिए न करना आदि ....''

''क्यों नारदजी, इन तर्कसंगत मुद्दों में कौनसा राज छिपा है, आप समझ तो गए न ?'' नारदजी चुप थे, क्योंकि वह राज उन्हें दिखाई नहीं दिया था। बहरहाल उन्हें यह अवश्य महसूस होरहा था कि दाल में अवश्य कहीं काला है।

''कोई बात नहीं, अभी आगे चल कर मालूम होजाएगा।'' विष्णु ने मुस्कुराते हुए कहा।

फिर विभिन्न प्रकल्पों की छानबीन शुरू होगई। बहस भी चलने लगी। यह काम शाम तक चलता रहा। अन्त में चुने हुए प्रकल्पों की अग्रक्रमानुसार सूची बनाई गई। वह काम अभी पूरा हो ही रहा था कि एक सदस्य ने कहा, ''डा. 'क' के एक भी प्रकल्प का चयन हम लोगों ने नहीं किया है। वे कितने अनुभवी एवं कार्यक्षम हैं, इसके बारे में हममें से किसीकी दो राय नहीं है। इस बड़ी दूरबीन के तैयार किए जाने से पहले हम लोगों ने उन्हें हमारी अन्य छोटी दूरबीनों पर काम करने के अवसर दिए हैं। ...''

समिति में सन्नाटा छा गया। वह सदस्य भी शायद समझ गया कि उसने बहुत ही अप्रिय बात कह डाली है। इसलिए उसने तुरन्त आगे जोड़ा, ''इसका मतलब यह कतई नहीं कि मैं डा. 'क' का समर्थन करने के लिए या उनका पक्षधर होने के कारण यह सब कह रहा हूं। किन्तु मैं बस इतना ही चाहता हूं कि कोई आगे चल कर यह न कह सके कि हम लोगों ने बिना चर्चा किए ही उनका नाम छोड़ दिया।''

अध्यक्ष ने एक बार सब पर नजर दौड़ाई और कहा, ''डा. 'क' के प्रति मेरे मन में सबसे अधिक आदर है ...''

''देखा ? दांभिकता में वैज्ञानिक किसी से हार नहीं मानते।'' विष्णु ने नारद के कान में कानाफूसी करते हुए कहा। उधर अध्यक्ष बोले जारहे थे :

''किन्तु इन दिनों देखा जारहा है, और मैं सोचता हूं कि आप लोग भी इसे स्वीकार करेंगे, कि डा. 'क' केवल अनुमानों पर आधारित कल्पना पर काम करने लगे हैं। ....''

''मैं अध्यक्ष जी की बात का समर्थन करता हूं। डा. 'क' मेरे निजी मित्र हैं। इस नई कल्पना को लेकर मैंने उनसे कई बार बहस भी की है। मेरी तो यही राय बनी है कि बिना किसी ठोस आधार के ही वे अपनी कल्पना को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।''

''अरे बच्चू, और अधिक सबूत एकत्रित करने के लिए ही न वह दूरबीन का उपयोग करना चाह रहा है ? और एक आप लोग हैं कि सबूत न होने के बहाने उसे इसके लिए समय ही नहीं देना चाह रहे हैं ?'' नारदजी एकदम बोल पड़े। किन्तु उनकी बात समिति के सदस्यों में से किसीको सुनाई जानी ही नहीं थी, सो नहीं गई।

इस बीच एक अन्य वैज्ञानिक ने कहा, ''मैं एन.एस.एफ. की एक समिति पर था। वहां इसी विषय पर अनुसंधान करने के लिए अनुदान मिलने की मांग करने वाली डा. 'क' की याचिका अस्वीकार कर दी गई है।''

''क्योंकि तुमने स्वयं ही उसके विरुद्ध मत दिया होगा।'' नारद जी बुदबुदाए।

"इसका अर्थ तो यह हुआ कि हमने डा. 'क' को समय दे भी दिया, तब भी वे इस बड़ी दूरबीन का उपयोग कर नहीं पाएंगे, क्योंकि उनके पास पर्याप्त पैसा कहां है ?" अध्यक्ष ने राहत की सांस लेते हुए कहा और विषय समाप्त कर दिया।

"किन्तु भगवन्, डा. 'क' ने इन लोगों का क्या बिगाड़ा है, जो ये लोग उनका विरोध किए जारहे हैं ?" गरूड़ ने त्रिकालदर्शी विष्णु से पूछा।

"कुछ भी बिगाड़ा नहीं है, किन्तु ये लोग उनके वैज्ञानिक सिद्धान्त को बिगाड़ना चाहते हैं। डा. 'क' द्वारा किए गए निरीक्षणों के कारण इन सभी वैज्ञानिकों की धारणा का आधारभूत सिद्धान्त ढह जाएगा। मान लो कि इस बड़ी दूरबीन से किए जाने वाले प्रयोगों के कारण डा. 'क' के निरीक्षणों की पुष्टि हो जाती है, तो ? ... किन्तु रुको, वह एन.एस.एफ. वाला आगे क्या कह रहा है, जरा सुनो।"

समिति सदस्य अपनी अपनी कुर्सियां खिसका कर जरा हाथ पांव पसार रहे थे कि डा. 'क' का मुद्दा उपस्थित करने वाले सदस्य ने एन.एस.एफ. वाले से पूछा, "क्यों जी, मैंने तो सुना है कि आपकी वह मीटिंग स्थगित होगई थी ?" एन.एस.एफ. वाले सदस्य कुटिल अट्टाहास कर गया। उसने कहा, "वह मीटिंग तो परसों होने वाली है। किन्तु अब तो जब डा. 'क' को निरीक्षण के लिए समय ही नहीं दिया जाने वाला है, उन्हें अनुदान देने से क्या फायदा ? जो भी हो, हमारे निर्णय में तो कोई फर्क नहीं पड़ने वाला !"

समिति-कक्ष से बाहर आते समय नारदजी से विष्णु ने पूछा, "क्यों नारदजी, तुम्हारे इन तर्कसंगत वैज्ञानिकों ने कोपर्निकस और गैलीलिओ की कितनी दुर्दशा की होती ?"

नारद निरुत्तर होगए थे।

"गरूड़, अब जरा कम ऊँचाई पर उड़ो, ताकि नारद जी नीचे की चीजें साफ साफ देख सकें।" विष्णु की आज्ञा के अनुसार गरूड़ ने अपनी उड़ान काफी कम ऊँचाई पर शुरू रखी और नारद जी को नीचे का सब कुछ बिल्कुल साफ साफ दिखाई देने लगा।

"यह क्या चीजें बोई गई हैं, भगवन् ?" नारद ने पूछा। जमीन से आकाश की ओर मुंह किए सूलियों जैसी काफी चीजें तरतीब से रखीं दिखाई देरही थीं।

"ये प्रक्षेपास्त्र हैं।" विष्णु ने स्पष्ट किया, "अभी हम एकदम अत्यंत गुप्त एवं कड़े सुरक्षा प्रबंधों वाले क्षेत्र में हैं। इस मर्त्य लोक का कोई जीव हमारी जैसी टोह पर आया होता तो उसे यहां की सुरक्षा यंत्रणा ने पकड़ कर कभी का नष्ट कर डाला होता।"

"किस पर मार करने का निशाना लगाए है ये प्रक्षेपास्त्र ?" नारद ने पूछा।

"मानव के एक समुदाय ने दूसरे पर निशाना साधे उन्हें लगा रखा है। इतना स्पष्टीकरण शायद पर्याप्त होना चाहिए। इसी तरह उस दूसरे समुदाय ने भी इन प्रक्षेपास्त्रों की काट अपने यहां लगा रखी है। इसके अलावा पनडुब्बियों में भी प्रक्षेपास्त्र लगाए गए हैं और अब तो शीघ्र ही अंतरिक्ष में भी उन्हें तैनात किया जाने के आसार दिखाई देने लगे हैं।"

"यह सब तो महाभारत युद्ध की याद दिलाने वाला है।" नारद ने कहा।

"किन्तु आंकड़ों की भाषा में ही कहना हो तो आज के मानव को विनाश करने के

मामलों में विज्ञान ने महाभारत-काल की अपेक्षा कहीं अधिक कार्यक्षम बनाया है।" विष्णु ने सखेद कहा।

नारद ने हिसाब जोड़ कर कहा, "महाभारत में अठारह अक्षौहिणी सेना अठारह दिन में काल के गाल में समा गई। यानी प्रति दिन एक अक्षौहिणी यानी २१८७० रथ, उतने ही हाथी, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल सैनिक।"

"क्यों ? यह संख्या क्या तुम्हें बहुत ज्यादा लगती है ? तो सुनो, इन प्रक्षेपास्त्रों का आधुनिक महाभारत हुआ तो, एक सेकिण्ड में इतनी प्राणहानि होगी, कि उतनी तो इस पृथिवी पर हुए द्वितीय महायुद्ध के दौरान छह सालों में भी नहीं हुई थी। दूसरे महायुद्ध में कोई ढाई करोड़ लोग मारे गए थे। अर्थात् इन प्रक्षेपास्त्रों के विश्वयुद्ध में समूची पृथिवी का सर्वनाश चंद घण्टों मे होजाएगा।" कह कर विष्णु ने आगे गंभीर होकर कहा,

"नारदजी, धार्मिक दंगों तथा युद्ध में मारे गए लोगों की संख्या का विचार करते हुए तुम्हें इन विवादों की जड़ धर्म को ही दोष देने की इच्छा हुई। किन्तु दुनिया को ऐसे महाभयानक एवं विनाशकारी प्रक्षेपास्त्र देने वाले विज्ञान के बारे में अब क्या कहना है ?"

नारद जी निरूत्तर थे।

हिमालय की कतारों को लांघ कर दक्षिण की ओर जाते ही नारद जी को उनकी अपनी परिचित भारतभूमि दिखाई देने लगी। विष्णु की आज्ञा से गरूड़ एक शहर में उतरा।

किन्तु यह शहर वैसा नहीं था, जैसाकि आम भारतीय शहर होता है। वहां परस्पर सटी हुई इमारतें, दुकानें, रेल्वे स्टेशन आदि सब कुछ था तो, किन्तु मनुष्यप्राणी कहीं नहीं था।

"यह क्या मामला है, भगवन् ? यहां कोई बकासुर जैसा राक्षस-वाक्षस तो अपना आतंक फैलाए हुए नहीं है ?" नारद ने पूछा।

"अब मैं तुम्हारी दिव्य दृष्टि वापस लेकर तुम्हें सामान्य दृष्टि देता हूं ताकि तुम अनुभव कर सको कि यहां क्या क्या हुआ है।" विष्णु ने कहा।

विष्णु के इतना कहने की देर थी कि नारद जी बहुत ही अस्वस्थ होने लगे और कुछ ही पलों में जमीन पर गिर कर निचेष्ट होगए।

"क्या देवर्षी आपके प्यारे होगए हैं ?" गरूड़ ने पूछा।

"डरो नहीं गरूड़, शाब्दिक अर्थ में तो शायद तुम्हारी बात सच है। मेरी आज्ञा से ही ऐसा हुआ है। किन्तु तुम भूल गए हो कि देवर्षी अमर हैं। मैं अभी उन्हें खड़ा करता हूं।"

क्षणभर में ही नारद आंखें मलते खड़े हुए। उन्हें विष्णु ने सहारा दिया और शक्ति भी वापस दी। उठते ही नारद ने पूछा, "भगवन् मुझे हो क्या गया था ?"

"नारद जी, आपने एक विषैली गैस का परिणाम भुगता है। इस गैस ने हजारों लोगों की बलि ली है, लाखों को अपाहिज बनाया है और उससे कहीं अधिक लोगों को घरबार छोड़ कर भाग जाने पर विवश किया है।"

"लेकिन उनपर ऐसी गैस का प्रयोग किस शत्रु ने किया ?"

"नहीं, नहीं, यह तो देशों के बीच जारी युद्ध का परिणाम था। मानव-कल्याण के लिए विज्ञान ने अनेक साधन उपलब्ध कराए हैं। उनमें से एक में इस जहरीली गैस का उपयोग किया जाता है। लेकिन यह गैस तैयार करते समय एवं उसका भंडारण करते समय आवश्यक निर्बन्धों का कड़ाई के साथ पालन नहीं किया गया। इसीका यह दुष्परिणाम है।" विष्णु ने स्पष्ट किया।

"एक मायने में यह मामला तो उन प्रक्षेपास्त्रों से भी भयंकर लगता है।" नारद ने कहा, "क्योंकि मानव भली भान्ति जानता है कि उन शस्त्रों के कारण कितना भीषण विनाश होने वाला है। इसीलिए आज तक उन अस्त्रों का प्रयोग उसने नहीं किया है। किन्तु लगता है कि यहां इस गैस-रिसाव के परिणामों से वह अवगत नहीं था। गाफिल था।"

"एकदम पूरा गाफिल था ऐसा तो नहीं कहा जा सकता। आधुनिक प्रौद्योगिकी में तरह तरह का प्रदूषण तो होता ही रहता है। उसके प्रति अनेक चिंतकों एवं विचारकों ने समाज को समय समय पर आगाह किया है। किन्तु यह देखकर कि उस प्रौद्योगिकी के कारण मानव का जीवन स्तर उन्नत होता है, मनुष्य ने उस चेतावनी को अनदेखा किया है। .... यही क्यों, अभी आपने जिस रिसाव को अनुभव किया है, उसके बाद भी मानव समाज जागरूकता नहीं दिखाएगा। कुछ समय तक जोश-खरोश के साथ इस बात की चर्चा होती रहेगी कि यह हादसा क्यों हुआ, कैसे हुआ, इससे बचने के उपाय क्यों नहीं किए जा सके तथा भविष्य में कौनसी सावधानी बरतनी होगी। उसके बाद मामला आया गया हो जाएगा। फिर जैसे थे स्थिति आ जाएगी... गरूड़, चलो, नारद जी को जो कुछ मैं दिखाना चाहता था, दिखा चुका हूं। अब शेषस्थान लौट चलते हैं।"

"किन्तु हे देवाधिदेव, आपने जो कुछ दिखाया, उसे देख कर तो मेरा दिमाग चकरा गया है। मैंने आपको धर्म के दुष्परिणाम दिखाए, तो आपने मुझे विज्ञान की एक निराली ही विरूपता के दर्शन कराए। अब आप ही बताएं आज का मानव आखिर किस मार्ग का वरण करे ? .... किसी जमाने में आपने पार्थ को गीतामृत दिया था। आज मेरे सन्तोष के लिए आप नया उपदेशामृत दीजिए।" नारद मिन्नतें करने लगे।

विष्णु प्रेमपूर्वक उनकी पीठ सहलाते हुए बोले, "देवर्षि ! गीता का जमाना अलग ही था। अर्जुन के मन में कुछ शंकाएं उपस्थित हुई थी, मैंने उनका निराकरण किया और उसने उसे स्वीकार कर लिया था। आज के विज्ञानयुग का मानव इस तरह चम्मच से पिलाया गया उपदेशामृत पीने वाला नहीं है। वह विज्ञानयुग में रहता है, इसलिए वही करेगा जिसे उसने स्वयं अनुभव किया हो। ... किन्तु नारदजी आप निराश न होइए। क्या करें, क्या न करें, ये बातें किसी नई गीता में कहूं, इससे अच्छा है कि आप स्वयं ही वैज्ञानिक बन कर उनके उत्तरों की खोज करो। उत्तर प्राप्त करने के लिए पहले प्रश्नों की आवश्यकता होती है। अतः मैं तुम्हें कुछ वैज्ञानिक प्रश्न देता हूँ। पानी का रंग कौनसा होता है ? धर्म अपने में अच्छा होता है या बुरा ? विज्ञान को भी क्या ऐसे विशेषण लगाए जा सकते हैं ? हम लोगों ने अभी जो देखा वह धर्म या विज्ञान की बुराई के परिणाम थे या उनके अनुचित उपयोग के ? विज्ञानयुग द्वारा दी गई चिकित्सक

दृष्टि के बिना क्या धर्मानुकरण संभव है ? प्रत्युत, धर्म द्वारा प्राप्त वैचारिक परिपक्वता के बिना क्या विज्ञान द्वारा प्रस्तुत मिष्टान्नों को पचाया जा सकता है ? ..."

विष्णु बोले जा रहे थे, नारदजी चुपचाप सुनते रहे, "हे देवर्षि, अब उन धार्मिक अनाचार के प्रसंगों को, जिन्हें हम लोगों ने देखा है, याद कीजिए। आत्मकेन्द्रित होने के कारण ही मानवों ने वे अनाचार किए हैं। मूल धर्म की शिक्षा का उन्होंने गलत अर्थ लगाया है। ठीक उसी तरह आज का मानव विज्ञान से प्राप्त ज्ञान एवं सामर्थ्य का भी अपनी आत्मकेन्द्रितता के कारण ही दुरूपयोग कर रहा है। कोई इस बात की ओर ध्यान देने को तैयार नहीं कि अपने स्वार्थ और कल्याण को साधते समय समाज का अकल्याण तो नहीं होरहा है और परिणामस्वरूप प्रकृति का सन्तुलन तो नष्ट नहीं होरहा है ? .... इसके बावजूद परिस्थिति एकदम निराशाजनक नहीं है। चन्द समझदार लोग धर्म एवं विज्ञान दोनों से उचित सीख कैसे सीखी जासकती है, इसका गहराई से अध्ययन कर रहे हैं। आप भी उनमें शामिल हो जाइए और इन प्रश्नों के उत्तर, मेरे कहे बिना स्वयं खोज निकालिए। मुझे पूरा विश्वास है, आप शीघ्र ही 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा' वाली अवस्था को निश्चय ही प्राप्त हो जाएंगे।"

विष्णु गरूड़ पर सवार होकर चले गए। नारदजी स्तब्ध खड़े थे। उनके दिमाग में विचारों का अंबार-सा लग गया था। भगवान् द्वारा उनके सम्मुख प्रस्तुत प्रश्नमंजूषा को हल करते समय उन्हें 'नाराऽयण' कहने का भी होश नहीं रहा था।

अथेन्स का प्लेग

घने अंधेरे से होता हुआ वह अंतरिक्षयान धीमी गति से भ्रमण कर रहा था। कहने को तो आकाश में कुछ तारे अवश्य थे, किन्तु आखिर वे कितना प्रकाश दे सकते थे ? एक ओर सूर्य दमक रहा था। किन्तु पृथिवी पर से दिखाई देने वाला नीला आसमान यहां नहीं था। इसका कारण यह था कि सूर्य के प्रकाश को सर्वत्र फैलाने वाले ओर उस प्रक्रिया में आकाश को नीला रंग देने वाले वायुमण्डल का यहां अभाव था। इसलिए सूर्य भी उदास-सा लग रहा था।

बाहर की भांति यान के भीतर भी शांति थी। चालकसमेत तीन यात्री उसमें थे। दो जागते थे और तीसरा सो लेता था। बारी बारी से हर व्यक्ति आठ घण्टे सो लेता था। जिन्हें जागना पड़ता, सोने वाले के प्रति ईर्ष्या रखते, क्योंकि उनके सामने हमेशा समय बिताने की समस्या मुँह बाए खड़ी रहती।

"इस यात्रा से तो आजन्म कारावास बेहतर होगा !" चालक राजन ने कहा।

"भई, तुम्हें चालक होने के नाते कुछ तो काम करना है, मेरे तो वह सुख भी नसीब नहीं।" अब्दुल ने कहा।

"अरे, यह भी कोई काम है ? तुम तो जानते ही हो कि सब कुछ स्वचलित है। मेरे लिए काम इतना ही है कि बस उन यंत्रों की ओर देखता रहूं। कभी कभी तो ऐसा लगता है कि ये यंत्र उनकी ओर लगातार देखते रहने के कारण हमें अपनी मोहिनी से प्रभावित कर डालेंगे।"

"अपनी तो भई राय है कि ऐसे अंतरिक्ष-प्रवास पर मानवों को भेजना ही नहीं चाहिए। यंत्रों से सारे काम करवाए जा सकते हैं। मानव आ कर कोई साहसिक कौशल या जौहर दिखाएं, ऐसे दिन अब लद गए हैं, राजन।"

"माना। वे दिन तो दो सौ वर्ष पूर्व ही लद चुके थे। वैसे आसार तभी दिखाई देने लगे थे। किन्तु शायद इस प्रवास में हमें कुछ कर दिखाने का मौका मिलने वाला है।"

अब्दुल ने जमुहाते कहा, "क्या अब हम धूमकेतु की कक्षा में पहुंच गए हैं ?"

"अभी थोड़ा समय और लगेगा। अबसे ठीक १०५ मिनट में हमारा यान उस कक्षा में प्रवेश कर जाएगा। फिर तुम्हारे लिए थोड़ा काम रहेगा।"

"मालूम है, वह भी क्या कोई बड़ा काम है ? उस कक्षा में धूमकेतु द्वारा छोड़े गए पदार्थों के नमूने एकत्रित करना है, और वह भी यंत्रों की सहायता से !" अब्दुल ने कहा।

"किन्तु उस बहाने तुम्हें यान के बाहर जाने को तो मिलेगा न ?" राजन के शब्दों में ईर्ष्या साफ थी।

"काल कोठरी के कैदी को बीच बीच में खुली हवा देने के लिए जंजीर बांधे घुमा कर लाया जाता है न, ठीक वैसा ही है यह यान के बाहर जाना। फर्क इतना ही है कि यहां बाहर घना अंधेरा है और हवा का नामोनिशान नहीं है। जो भी हो, इस छोटी-सी

जगह में जकड़े रहने से तो अच्छा है थोड़ा बाहर हो जाने को मिलता है। यह भी कोई मामूली बात तो नहीं है।"

अब्दुल के लिए तो वे १०५ मिनट युग के समान हो रहे थे। डेढ़ माह की अंतरिक्ष-यात्रा का वह परमोच्च क्षण अब आने वाला था। पृथिवी के पास से गुजरने वाले धूमकेतु—कामेट रोज—की कक्षा में जा कर कामेट से छोड़ी जाने वाली चीजों का गहन अध्ययन करने की योजना बनाई गई थी। वैज्ञानिकों की दृष्टि से आवश्यक अनेक प्रयोगों के उपकरण यान में लगाए गए थे। कक्षा में प्रवेश करते ही उन प्रयोगों का प्रारम्भ होने वाला था।

अब्दुल के पास लगायी लाल बत्ती पीली हो उठी। यान से बाहर निकलने के लिए सिद्ध रहने का वह पूर्व सन्केत था। ध्यान न रहने के कारण बत्ती की बदली हुई रोशनी की ओर देखना भूल गए तो सचेत करने के लिए एक और प्रबंध भी किया गया था। अब्दुल के कानों के पास धीमी-सी 'बीऽऽप-बीऽऽप' की आवाज आने लगती।

किन्तु अब्दुल सावधान था, इसलिए उसे इस दूसरे संकेत की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। कई दिन से वह इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था। बत्ती की रोशनी बदलते ही वह तपाक से उठा उसने अपना स्पेस-सूट चढ़ाना शुरू किया। ...

बत्ती के हरी होते तक अब्दुल बिल्कुल तैयार हो चुका था। हाथों में चन्द उपकरण ले कर उसने यान का द्वार खोला और बाहर कदम रखा।

खुले अंतरिक्ष में वह यद्यपि तैर-सा रहा था, एक लम्बी केबिल ने उसे यान से जोड़े रखा था। किसी अनहोनी घटना के समय उसका यान से सम्पर्क बनाए रखने के लिए ही यह प्रबंध किया गया था। इसके अलावा उसके मुंह के पास ही फिट किया माइक राजन से संपर्क साधे था।

यान में लगे एक टी.वी. पर्दे पर राजन को अब्दुल की प्रत्येक गतिविधि दिखाई देरही थी। उसकी सांसें, दिल की धड़कनें एवं नाड़ी की आवाज राजन को स्पष्ट सुनाई दे रही थी। राजन के आस-पास नाना यंत्रों का जाल सा बिछा था, जिनमें अब्दुल के शरीर की प्रत्येक हलचल बराबर अंकित हो रही थी। केवल उसके मन के विचारों का पता ही विज्ञान अब तक दर्ज नहीं कर सकता था। उसके लिए आवश्यक खोज अब तक नहीं हो सकी थी। ....

ये सब प्रबंध अब्दुल की सुरक्षा के लिए रस्मी सावधानियों के नाते किए गए थे। ऐसे प्रबंध बाईसवीं सदी के प्रारंभ से हर अंतरिक्ष-यान में किए जाते रहे थे। विशेषतः किसी अंतरिक्षयात्री को यान से बाहर निकलना आवश्यक हो, तो इन प्रबंधों का विशेष ध्यान रखा जाता था। वैसे तो अंतरिक्ष पूरा खाली-खाली होता था और इसलिए किसी दुर्घटना आदि के होने की संभावना कम ही थी। फिर भी किसी अनपेक्षित स्थिति में काम

आ सके इसी हेतु ये उपाय किए जाते थे।

यथानिश्चित अब्दुल ने अपने उपकरणों को अंतरिक्ष में रखा और उसने आस-पास भ्रमण करना प्रारंभ किया ....

राजन घड़ी की सुइयों पर बराबर नजर रखे हुए था। ठीक आधा घंटा बाद अब्दुल को वापस यान में आने के लिए प्रारंभ करना था।

दस मिनट बीत गए। पंद्रह .... बीस .... पच्चीस मिनट भी होने को थे और तभी राजन् को खतरे का पहला संकेत मिला। अब्दुल कुछ गश्त खाता चलता दिखाई दिया।

राजन ने पास वाले यंत्र की पैनल की ओर देखा। अब्दुल के दिल की धड़कन और नाड़ी की गति तेज होगई थी, रक्तचाप बढ़ता जा रहा था। .... एक मिनट के अन्दर ही राजन को लगा कि अब्दुल किसी नशे में धुत-सा चल रहा है।

"अब्दुल-हैलो-अब्दुल ! क्या बात होगई है ? बोलो अब्दुल, कुछ तो बोलो," राजन ने पूछा और विल्सन को जगाने के लिए उसने उसके सिरहाने के पास की घंटी बजाई।

"मुझे ... म ... मचली-सी आर ... रही है ... चक्कर आ रहा है ... आ-आ अब्दुल मुश्किल से बोल रहा था।

विल्सन जाग कर पास आगया था। उसे कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं थी। उसने खतरा पहिचान लिया और अब्दुल को जोड़ने वाली केबिल खींचना प्रारम्भ किया। अब्दुल लड़खड़ाता-सा यान की ओर खिंचा जा रहा था।

यान का द्वार खोल कर अब्दुल को भीतर लिया जारहा था तब अब्दुल को यान से बाहर गए पूरे तीस मिनट कोचुके थे। अंतिम पांच मिनटों में ही यह सारा रामायण हो चुका था।

राजन ने मिशन-कन्ट्रोल से सम्पर्क स्थापित किया।

'अंतरिक्ष में भीषण दुर्घटना', 'अंतरिक्षयात्री की रहस्यमय मृत्यु', 'अंतरिक्ष यात्री अज्ञात बीमारी का शिकार ...'।

अखबारों में सुर्खियों में छपे इन समाचारों को पढ़ कर पृथिवी निवासी हतबुद्ध होगए थे। विगत कई दशकों में अंतरिक्ष में कोई दुर्घटना नहीं हुई थी। किसी सड़क को पार करते समय हम लोग उठाते हैं उससे कहीं कम खतरा अंतरिक्ष-यात्रा में होता है, तकनीशनों का दावा था। बीसियों साल का अनुभव भी यही बतलाता था कि इन दावों में काफी सच्चाई है। फिर यह दुर्घटना क्यों और कैसे हुई ? और आखिर अब्दुल को हुई बीमारी क्या थी ? आयुर्विज्ञान तथा वैद्यकविज्ञान में बीसवीं सदी के अन्त तक इतनी प्रगति होगई थी कि पृथिवी से जीवसृष्टि को सताने वाले बीसियों भयंकर रोगों का पूरी तरह से निर्मूलन होगया था। पृथिवी इतनी निरामय होगई थी कि उसके निवासियों को पता ही नहीं था कि बीमारी किस चिड़िया का नाम है।

ऐसी स्थिति में आम आदमी को तो इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होने की कोई संभावना नहीं थी। इसका कारण यह भी था कि इस दुर्घटना के बाद शुरू शुरू में जो खबरें आनी थीं, आगईं। उनके बाद अंतरिक्ष संस्थान ने इस बारे में एकदम चुप्पी साध रखी थी। संस्थान के एक प्रवक्ता ने बस इतना ही कह दिया था कि 'इन प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर हमें नहीं मिलते तब तक हम इस बारे में कुछ भी वताना नहीं चाहते। हां, इतना अवश्य दिलासा दिलाना चाहते हैं कि पृथिवीवासियों को इस हादसे के कारण चिन्ता करने की कोई वजह नहीं है।''

फिर भी अंतरिक्ष संस्थान के वैज्ञानिक चिन्तित थे। वरिष्ठ वैज्ञानिकों की एक समिति नियुक्त की जा चुकी थी। अब्दुल की मृत्यु का रहस्य सुलझाने का काम उसे सौंपा गया था। इस समिति की पहली आपात्-बैठक को संबोधित करते हुए डाक्टर जान्सन ने पहली रपट पेश की थी :

''५ दिसंबर सन् २१८० को यह दुर्घटना हुई। अंतरिक्ष यान सीएस-२ कामेट रोज की कक्षा में ठीक ०९-३०-११.५७ बजे प्रवेश कर गया। यान का रिकार्डर दर्शाता है कि इसके कुछ समय बाद—यानी ०९-४१-२२.०५ बजे अब्दुल यान से बाहर आया। पुच्छल तारे की दुम से निकले पदार्थों का विश्लेषण करने वाले उपकरणों को उसने तरतीब से अंतरिक्ष में लगाया।

''कम्प्यूटर की अंदराजों के अनुसार अब्दुल के शरीर की सारी हरकतें १०-०२-३९.३२ बजे तक सुचारू ढंग से चली रही थीं। लेकिन उसके बाद उनमें तेजी से बदलाव आता गया। ये सभी अंदराज आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं।

''१०-०७-४००.०० बजे राजन ने अब्दुल को यान में वापस खींचने का निर्णय लिया। विल्सन ने तुरन्त अब्दुल को भीतर खींच लिया और आइसोलेशन-चेंबर में रखा। यह चेंबर आम तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाता, क्योंकि उसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती। केवल इस तरह के संकटकाल में ही उसका उपयोग किया जाता है। जाहिर है कि सीएस-२ का यह चेंबर इससे पहले कभी उपयोग में नहीं लाया गया था। किन्तु इस चेंबर के सभी यंत्रों एवं उपकरणों को हमेशा ही भान्ति चुस्त रखा हुआ था। विल्सन और राजन ने अब्दुल को वहां रख कर यथासंभव हर सहायता की।

''इस बीच राजन ने मिशन कन्ट्रोल से संपर्क स्थापित कर सारी जानकारी दी थी। सबसे नजदीकी स्पेस स्टेशन नं. १६ से एक सहायता यान तुरन्त सभी वैद्यकीय सामग्री एवं उपकरणों आदि से लैस कर भेजा गया। यह यान अब्दुल को लेकर वापस आगया। उसपर सभी तरह के वैद्यकीय उपचार किए गए। किन्नु डाक्टरों को सफलता नहीं मिली। १३ दिसंबर को उसका निधन हो गया।

''अब्दुल के जीवित रहते तक और उसकी मृत्यु के बाद भी उसके शरीर पर नाना प्रकार के परीक्षण किए गए। उनके परिणामों के आधार पर विशेषज्ञ बस इतना ही कह पा रहे हैं कि किसी आज तक अज्ञात वाइरस का यह मामला हो सकता है। इससे पहले हुए हैजे, चेचक, पीत-ज्वर आदि अनेक रोगों के बारे में रिकार्ड में पाई गई सभी जानकारी को फिर से जांचा-पड़ताला गया है और उसके आधार पर कहा जा सकता है

कि ऐसी बीमारी पृथिवी पर कभी नहीं पाई गई और आधुनिक वैद्यक के लिए भी वह अज्ञात ही है। बीमारी के लक्षण तथा उनमें काल के अनुसार होने वाले परिवर्तनों की सभी रपटें भी आपके सम्मुख हैं।"

समिति के सदस्यों ने अपने सम्मुख्य रखे टी.वी. के पर्दों पर देखा। हर सदस्य की मेज पर एक टी.वी. सेट रखा था और कुछ बटन दबा कर आवश्यक जानकारी वह अपने सेट के पर्दे पर देख सकता था। कुछ पल सन्नाटा-सा छा गया। हर सदस्य इस बीमारी पर उपलब्ध रपटें पढ़ने में व्यस्त था। सभी सदस्य डाक्टर तो नहीं थे। कोई अंतरिक्ष विशेषज्ञ थे, कोई जीवशास्त्री, कोई खगोलवैज्ञानिक, तो कोई माहिर डाक्टर थे।

डाक्टर विनोद अंतिम गुट में थे। यद्यपि पृथिवी पर से रोग और बीमारियों का लगभग निर्मूलन हो चुका था, जीवविज्ञान की अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्द विशेषज्ञ 'रोग' विषय का अध्ययन करते थे। डाक्टर विनोद उन्हींमें से एक थे। उन्हें काफी आदर एवं सम्मान प्राप्त था। अतः शेष सदस्य जानने के लिए उत्सुक थे कि डाक्टर विनोद की इस रपट पर क्या राय बनी है।

डा. विनोद रपट की मुख्य जानकारी का बार बार मनन कर रहे थे, मानो कंठस्थ ही कर रहे हों। पहले मचली आती है, फिर सिरदर्द होता है। बाद में गला और जीभ लाल सुर्ख पड़ जाती है। सांस अनियमित एवं बदबू-भरी हो जाती है। उसके बाद छींकें आती हैं। सीने में बलगम भर जाता है। फिर उल्टी आती है और शरीर में कंपकंपी और झटके-से आने लगते हैं। कुछ क्षण के लिए आराम महसूस होता है किन्तु तुरन्त फिर रोग का प्रकोप बढ़ जाता है। शरीर में कुछ ज्वर-सा हो आता है और तमतमा कर फोड़े फुन्सिया सारेशरीर पर निकल आती हैं। भीतर से रोगी बहुत बेचैनी-सी अनुभव करता है। उसे लगता है कि सारा बदन जल रहा है। कपड़े उतार फेंकने को उसका जी करता है। ठण्डे पानी में पड़े रहने की इच्छा होती है। प्यास बेहद बढ़ जाती है,जो कितना ही पानी पीने पर भी बुझाए नहीं बुझती। नींद काफूर होजाती है। फिर बढ़ती हुई पेचिश शुरू होजाती है, कमजोरी बढ़ती ही जाती है और अन्त में मृत्यु आती है।

डाक्टर जान्सन का निदान देखते बराबर तो सही लग रहा था। ये आसार किसी एक रोग के वर्णन में फिट नहीं बैठते थे। यद्यपि अब्दुल को आइसोलेशन चेंबर में रखा गया था, उससे पहले उसका राजन और विल्सन से संपर्क तो हुआ ही था। किन्तु उन दोनों को कुछ भी नहीं हुआ था। तो क्या इससे यह निष्कर्ष निकाला जासकता है कि यह बीमारी छूत की नहीं है ?

"कहिए, डा. विनोद, आपकी क्या राय है ?"—खगोलवैज्ञानिक राबर्ट ली ने पूछा।" आपको तो सभी रोगों के आसार किसी शब्दकोश की भांति याद हैं ?"

"अभी तक तो मैं कोई निदान नहीं कर पाया हूं। जांच-पड़तालों की सभी रपटों का ठीक से अध्ययन करने के बाद ही कुछ कह पाऊंगा।" विनोद ने कहा।

"किन्तु स्थितिपरक सबूत तो यही बताते हैं कि इस बीमारी की जड़ उस कामेट से निकले पदार्थों में ही होगी।" राबर्ट ली ने कहा।

जीवशास्त्री फैरेल्ली ने कहा, "यदि समिति चाहे तो इस दृष्टि से हम लोग और

कुछ प्रयोग कर सकेंगे। किन्तु ये प्रयोग मानव के बजाए किन्हीं प्राणियों पर किए जासकते हैं।"

इस मुद्दे पर समिति में काफी बहस छिड़ गई। कुछ सदस्यों का कहना था कि जानवरों पर प्रयोग करना क्रूरता होगी। कुछ को सन्देह था कि प्राणियों पर किए प्रयोगों के परिणाम मानव पर कितने और कहां तक लागू किए जा सकेंगे। अंत में डा. विनोद की बात सबको महत्वपूर्ण लगी : "मान लीजिए, यह बीमारी पृथिवी पर फैल जाती है। तब तो उसका निदान करने के लिए हमारे पास सभी साधन आवश्यक होंगे और इस लिए इस बीमारी के बारे में यथासंभव अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठी करना आवश्यक है।"

अत: कामेट रोज की कक्षा में और एक यान भेज कर जानवरों पर प्रयोग करने का निर्णय समिति ने लिया और बैठक उठ गई।

उसके बाद के छह महिनों में इस बीमारी के बारे में काफी जानकारी प्राप्त हुई। उससे यह निष्कर्ष निकला की बीमारी का संबंध कामेट रोज से ही है। अंतरिक्ष में भ्रमण करते समय इस धूमकेतु द्वारा अंतरिक्ष में पीछे छोड़े जाने वाले पदार्थों में ही इस रोग का वाइरस था। यह बात भी पक्की होगई। स्पष्ट हो चला था कि पृथिवी से दूर किसी स्थान में इस वाइरस का जन्म हुआ होगा और इसे यदि जीवसृष्टि का एक घटिया नमूना—या कम से कम वहां भी कोई जीवसृष्टि होने का ठोस सबूत—मान लिया जाए तो पृथिवी से परे दूर कहीं कोई जीवसृष्टि अवश्य होगी।

"चलो अच्छा ही हुआ जो इस बीमारी का सम्बन्ध उस कामेट के साथ साबित होगया," फैरेल्ली ने कहा। फैरेल्ली और डाक्टर विनोद इटालियन आल्प्स पर हाइकिंग कर रहे थे।

"क्यों ?"

"कारण स्पष्ट है। एक तो यह कि यह बीमारी उस कामेट के कारण ही हुई और दूसरे उस कामेट के साथ यह भी दूर-दूर चली गई। अब हमें उससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। पृथिवीवासियों के लिए खतरा टल गया है। फिर एक बात और भी है। यद्यपि अब्दुल को दुर्भाग्य से अपने प्राण गंवाने पड़े हैं, उसका बलिदान व्यर्थ नहीं गया है। पृथिवी से पर दूर कहीं जीवसृष्टि है, इसका इतना ठोस सबूत इससे पहले कभी नहीं मिला था।"

"इस दूसरी बात के बारे में मैं आपसे सहमत हूं। किन्तु पहली बात मुझे मंजूर नहीं है। आप कैसे कह सकते हैं कि यह बीमारी हमसे दूर चली गई है ? और यदि हम मान लेते हैं कि यह बीमारी उस कामेट से ही निकली है, तो पृथिवी की मानव-दुनिया या जीवसृष्टि पर उसका प्रभाव क्यों पड़ना चाहिए ?" विनोद ने बात काटी।

"अर्थात् ? मैं समझा नहीं ?"

"देखिए मिस्टर फैरेल्ली ! आखिर बीमारी का मतलब क्या होता है ? किसी बाहरी वाइरस का हमारे शरीर से मुकाबला हो जाए तो वह वाइरस हमारे शरीर की कोशिकाओं पर धावा बोल देता है, यही न ? आज तक पृथिवी पर तैयार होने वाले वाइरस के बारे में

हम लोग कहते आए हैं कि फलां फालां वाइरस किन्हीं कोशिकाओं पर ही हमला करता है। अत: एक शत्रु के रूप में ही क्यों न सही, वाइरस तथा कोशिकाओं की पहिचान होना जरूरी होता है। अब आप ही बताइए कि कामेट से निकले इस वाइरस की अब्दुल के शरीर की कोशिकाओं से पहिचान कैसे होगई ?"

"अब मैं समझा, आपकी दिक्कत क्या है ? कोई ऐसा व्यक्ति जिसे मुझसे कोई लेना देना नहीं है, दुनिया के दूसरे छोर से आ कर मुझपर धावा बोल दे, यह बात जितनी अविश्वसनीय हो सकती है, उससे भी कामेट के वाइरस द्वारा किए गए इस हमले की बात असंभव लगती है। इसमें कोई शक नहीं।" फैरेल्ली ने कहा। किन्तु इस असंभवनीयता को कम करने के लिए हम कह सकते हैं कि यह बीमारी पहले कभी पृथिवी पर अपना आतंक मचा चुकी होगी और इसी लिए मानव शरीर की कोशिकाओं को इस वाइरस की पहिचान होगी।"

"मैं ठीक इसी तरह से सोच रहा हूं। किन्तु यह बीमारी पहले कभी पृथिवी पर आ चुकी है, इसका कोई रिकार्ड मुझे नहीं मिल रहा है। मैंने विगत तीन चार सदियों का वैद्यकीय रिकार्ड देख मारा है। हमारे कम्प्यूटर में उस जमाने की सभी बीमारियों के लक्षण दर्ज हैं। किन्तु इस बीमारी की पहिचान नहीं हो पा रही है।"

"लेकिन विनोद, आपने अपना अनुसंधान केवल विगत तीन-चार सदियों तक ही सीमित क्यों रखा है ? क्या उससे पहले बीमारियां नहीं थीं ? मध्ययुग में योरोप में महामारी ने आतंक मचाया था ...."

"माना, किन्तु उस जमाने में वैद्यकविज्ञान विकसित आधुनिक अवस्था में नहीं था। फिर हमें जिन अंदराजों की खोज है, वैसी कोई प्रविष्टियां उस जमाने के लोग लिख कर रखते ही नहीं थे।" विनोद की उलझन सही थी।

"फिर भी आप कोशिश तो करके देखिए। वैद्यकीय अंदराज न भी हो, कुछ प्राचीन ग्रंथों में देखो, कहीं न कहीं आपको इस बारे में कुछ न कुछ जानकारी मिल ही जाएगी। अन्यथा इस दूर की बीमारी का पृथिवी के साथ कोई संबंध होना असंभव ही लगता है।" फैरेल्ली ने कहा।

हाइकिंग से लौटने के बाद विनोद ने काफी जोरों से खोज प्रारंभ की। मानव संस्कृति के इतिहास के अलग-अलग कालखंडों वाले ग्रंथों एवं साहित्य को एक बड़े कम्प्यूटर की स्मृति-मंजूषा में भर कर रखा हुआ था। किन्तु वहां से ठीक वही जानकारी, जो इस संशोधन के लिए आवश्यक थी, ढूंढ निकालना आसान नहीं था। उसके लिए भी विनोद को एक और कम्प्यूटर की सहायता लेनी पड़ी। फिर भी यह काम घास के ढेर में सुई को खोजने जैसा ही था। शायद उससे भी कठिन था, क्योंकि सुई खोजने वाले को सुई कैसी होती है यह तो मालूम रहता ही है। विनोद को तो यही मालूम नहीं था कि उसे

खोज ठीक है किस बात की। वे तो बस यही चाहते थे कि दुनिया की अनेक सभ्यताओं की नाना भाषाओं में लिखे साहित्य में कहीं अब्दुल को हुई बीमारी का वर्णन मिल जाए।...

अनेक दिनों के प्रयासों के बाद कम्प्यूटर से सन्देश मिला : 'निम्न उद्धरण को देखें।' और टी.वी. के पर्दे पर शब्द दिखाई देने लगे। विनोद पहले तो बेफिक्री से पर्दे को देख रहे थे। आज तक ऐसे कई उद्धरण पढ कर उन्होंने अस्वीकार कर दिए थे। किन्तु अबकी मामला कुछ निराला था। विनोद जैसे जैसे पढ़ते गए, उनकी उत्सुकता बढ़ती गई।

"सबकी राय में उन दिनों अन्य कोई बीमारियां थीं ही नहीं। कहीं किसीको कोई अन्य बीमारी हो भी जाती तो उसका रूपांतर इसी बीमारी" में हो जाता था। अच्छे हट्टे-कट्टे लोग भी इस बीमारी की चपेट में आते ही बिना किसी वजह अचानक भारी सिरदर्द से परेशान हो जाते। उनकी आंखें लाल लाल हो जातीं और दर्द करने लगतीं। भीतर से गला और जीभ सुर्ख पड़ जाते और सांस अनियमित तथा बदबूदार आने लगती। फिर छींकें आतीं, गला बैठा जाता, जीभ भी लाल पड़ जाती और देखते ही देखते में छाती में बलगम भर जाता। बीमारी के हृदय तक पहुंचते ही उसमें बिगाड़ होजाता। उल्टियों के तो कई प्रकार होते जिनका नाम डाक्टरों ने ही अलग अलग रखा था। किन्तु मरीज को असहनीय पीड़ा होती ... कन्वल्शन्स आते ... शरीर में ज्वर लगने को तो मामूली लगता, किन्तु भीतर से शरीर का दाह बढ़ जाता और सारे बदन पर फोड़े फुन्सियां निकल आतीं जिनमें जलन बहुत होती .... इतनी कि रोगी को बदन पर हल्का और महीनसा कपड़ा भी बरदाश्त नहीं होता। खुले बदन, नंग धड़ंग रहने दो ऐसी मिन्नतें रोगी करता और उसे एकदम ठण्डे पानी में पड़े रहने की इच्छा होती। कई ऐसे रोगी, जिनकी देखभाल के लिए कोई न होता था, तो ठण्डे पानी के हौज में अपने आपको पानी की सतह के नीचे डुबोए पड़े रहते। प्यास तो उन्हें ऐसे लगती कि कितना भी जल पी लें तब भी बुझती ही नहीं थी। रोगी न आराम कर पाते न ही नींद ले पाते। .... अधिकांश लोग बीमारी के सातवें या नवें दिन मर जाते ..... कुछेक को पेचिश होजाती ..... इस बीमारी का वर्णन शब्दों में कर पाना कठिन है। बीमारी का ओर भी इतना तीव्र होता था कि उसे बरदाश्त करना मानव शक्ति के बाहर की बात थी। एक मामले में यह बीमारी अन्य सभी बीमारियों से अलग ही थी। इस रोग के कारण मरे लोगों के शवों को वे जानवर और पक्षी भी, जो खुले में मिल जाने वाली हर लाश पर चाव ताव से झपट पड़ते हैं, छूते तक नहीं थे। उनके पास तक फटकते नहीं थे और कहीं कोई जानवर या पंछी गलती से इन शवों को नोच लेता तो वह भी मर जाता था। ...."

डाक्टर जान्सन द्वारा इस बीमारी का जो वर्णन किया गया था उससे यह उद्धरण इतना मेल खाता था कि डाक्टर विनोद को लगा कि वे जान्सन की रपट ही पढ़ रहे हैं। कौन था इसका लेखक? यह वर्णन किस जमाने का है? विनोद ने कम्प्यूटर से जानकारी मांगी और उन्हें वह तुरन्त मिल भी गई।

यह वर्णन थूसिडाइड्स नामक एक ग्रीक लेखक ने अपने 'पेलोपोनेशियन युद्ध' शीर्षक ग्रंथ में किया था। ग्रंथ लिखा गया था ईसापूर्व ४३० सन् में। उस वर्ष की गर्मियों में अथेन्स शहर में एक भयानक महामारी छा गई थी। ग्रंथ में उसीका वर्णन विस्तार से किया गया था। थूसिडाइड्स विश्वविख्यात इतिहासकार थे। पूरे सबूतों के बिना वे कभी कोई बात नहीं कहते थे और इसीलिए किसी ऐतिहासिक हादसे के पूरे सबूत मिलते तक वे उसका वर्णन करते ही नहीं थे। सबूतों की प्रतीक्षा वे करते रहते थे। ....

अब विनोद के दिमाग में रोशनी कौंधी। उन्हें याद आया कि उन्होंने भी 'अथेन्स का प्लेग' नामक रोग के बारे में पहले कहीं पढ़ा था। किन्तु मात्र एक ऐतिहासिक घटना जान कर उसकी ओर उन्होंने अनदेखी कर दी थी। अब तो डाक्टर विनोद उसके बारे में जो भी जानकारी जहां से भी मिले, एकत्रित करने में जुट गए। विगत दो तीन सदियों में आयुर्विज्ञान के विशेषज्ञों ने अथेन्स के प्लेग के बारे में अनेक तर्क दिए थे और उसे आधुनिक रोग बताया था। किन्तु किसीको भी किसी आधुनिक बीमारी के साथ उसका साम्य नजर नहीं आया था। वैज्ञानिकों एवं शास्त्रियों को इस प्रश्न का भी कोई उत्तर नहीं मिला था कि क्या कारण रहा होगा जो यह बीमारी फिर से कहीं भी नहीं आई ? अपवाद केवल एक ही था और कम्प्यूटर ने डाक्टर विनोद को उसकी भी जानकारी दे दी।

१९७५ और १९८० के बीच फ्रैड़ हॉएल और चंद्रा विक्रम सिंह नामक दो वैज्ञानिकों ने तर्क प्रस्तुत किया था कि यह बीमारी अंतरिक्ष में आ चुकी थी और वाइरस किसी कामेट से निकल कर पृथिवी के वायुमण्डल से होता हुआ नीचे की ओर आगया था। उस वाइरस की वर्षा अथेन्स के परिसर में हुई होगी। आगे चल कर कुछ ही समय बाद उस रोग के विषाणुओं का अंत होगया होगा। पृथ्वी पर फैलने वाले अनेक रोग इसी तरह से कामेट से उत्पन्न होते रहे होंगे। इनमें से उन्हीं रोगों ने पृथिवी पर हाहाकार मचाया, जिनके विषाणु पृथिवी पर उतरने के बाद काफी समय तक टिके रहे।

अधिकांश वैज्ञानिकों ने इस तर्क एवं कल्पना को बहुत ही अवास्तविक बता कर अस्वीकार कर दिया था। इस कल्पना के जनक भी इन बीमारियों का संबंध धूमकेतुओं के साथ सप्रमाण जोड़ने में असफल रहे थे, यद्यपि अनेक परोक्ष प्रमाण उन्होंने प्रस्तुत किए थे।

किन्तु अब तो डाक्टर विनोद के हाथ प्रत्यक्ष प्रमाण भी आगया था। अब्दुल की जान लेने वाली बीमारी अथेन्स का प्लेग ही थी इसे स्वीकार कर लिया जाए तो स्पष्ट हो जाता था कि इस बीमारी का वाइरस कामेट रोज से ही निकला था।

किन्तु प्रमाणों की लड़ी पूरी करने के लिए एक कड़ी की आवश्यकता थी। विनोद ने तुरन्त राबर्ट ली के साथ फोन पर संपर्क किया।

"बॉब, में विनोद बोल रहा हूं। मुझे एक जानकारी चाहिए।"

"हैलो विनोद ! तुम्हें जानकारी चाहिए ? और वह भी मुझसे ? भई, यह तो उल्टे बांस बरेली जाना हुआ। तुम्हारे कम्प्यूटर में क्या वह जानकारी नहीं है ?"

"वह एकदम नए ढंग की है और इसलिए शायद कम्प्यूटर में न हो। मैं यह जानना चाहता हूं कि कामेट रोज को सूर्य की एक परिक्रमा करने में कितना समय लगता है ?

इससे पहले यह कामेट पृथिवी के पास कब आया था? क्या यह बात कहीं पर दर्ज है?"

"आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर है—'नहीं है।' कारण यह है कि इस धूमकेतु को सूर्य की परिक्रमा करने में बहुत लम्बा समय लग जाता है। अभी सही सही तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु लगभग ८५० से लेकर ९०० वर्ष लग जाते हैं। और प्राचीन समय में खगोलविज्ञान विषयक जानकारियां दर्ज करने की प्रथा न होने के कारण कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है कि पिछली बार यह धूमकेतु पृथिवी के पास कब आया था। क्या तुम्हें यही जानकारी चाहिए थी? किसलिए?" ली. ने पूछा।

"यह तो मैं तुम्हें फिर कभी बताऊंगा। किन्तु आपने मेरी एक बड़ी समस्या हल कर दी है।" फोन् रख कर विनोद ने मन ही मन हिसाब जोड़ना शुरू किया।

विनोद का हिसाब आसान था। कामेट रोज ईसा पूर्व सन् ४३० में पृथिवी के समीप आया हो तो तब से सन् २१८० तक २६१० वर्ष हो जाते हैं। इतनी अवधि में धूमकेतु ने तीन परिक्रमाएं कर ली हों तो एक परिक्रमा के लिए लगने वाला समय होजाता है ८७० वर्ष। यानी राबर्ट ली द्वारा दी गई जानकारी के साथ यह हिसाब ठीक मेल खाता था।

अर्थात् अथेन्स का प्लेग कामेट रोज से ही पैदा हुआ था।

विनोद को सन्तोष था कि एक बड़ी समस्या हल कर ली गई है। अब्दुल की जान लेने वाली बीमारी का वाइरस मानव-कोशिकाओं के लिए अपरिचित नहीं था। यह बीमारी पहले भी पृथिवी पर आई थी। इसी धूमकेतु रोज ने उसे अथेन्स शहर पर थोपा था।

धूमकेतु करोड़ों वर्ष सूर्यमाला में चक्कर काटते रहते हैं। ईसापूर्व सन् ४३० में धूमकेतु रोज पृथिवी के पास से गुजरा, वह उसका पहला चक्कर निश्चय ही नहीं होगा। उससे भी पहले वह सैकड़ों हजारों बार चक्कर लगा कर गया होगा। किन्हीं परिक्रमाओं के समय वह पृथिवी के इतने पास से गया होगा कि उससे निकलने वाले पदार्थ पृथिवी के वायुमण्डल में प्रवेश कर गए होंगे। इस बीमारी के वाइरस इसी तरह पृथिवी पर आ गए। जीवशास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार पृथिवी के जीवों की कोशिकाओं में आहिस्ता-आहिस्ता परिवर्तन होते रहते हैं। जीवों का संवर्द्धन करने वाले परिसर की पहिचान एवं जानकारी जीव-कोशिकाओं में संग्रहीत होती रहती है। इसी कारण कुछ कोशिकाओं में अनेक पीढ़ियों के बाद परिवर्तन दिखाई देते हैं। इसी मार्ग से पृथिवी की जीव-कोशिकाओं को कामेट रोज से आने वाले वाइरस की जानकारी मिली।

पृथिवी के सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य से, इस बीमारी के विषाणु रोग की महामारी आजाने के बाद अधिक समय तक पृथिवी पर टिके नहीं रहे होंगे। इसीलिए अथेन्स के प्लेग के बाद यह बीमारी फिर से पृथिवी को सता नहीं पाई है। फिरसे वह कामेट पृथिवी

के पास से गुजरता नहीं, तब तक पृथिवी को दोबारा खतरा नहीं हो सकता...

और ठीक यहीं डाक्टर विनोद सोचते-सोचते यकायक रुक गए।

इस वर्ष कामेट रोज पृथिवी के पास से गुजरा था।

हॉएल और विक्रम सिंह ने गणित कर दिखा दिया था कि कामेट से निकलने वाला वाइरस कई महिने वायुमण्डल में बना रहने के बाद आहिस्ता आहिस्ता पृथिवी पर उतरता है। अर्थात् यह बीमारी अब पृथिवी पर किसी भी समय आ सकती है।

डाक्टर विनोद ने सोचा कि अब तो हमें उसका प्रतिकार करने के लिए कमर कसनी ही होगी। उन्होंने तुरन्त ही विश्व स्वास्थ्य संगठन से सम्पर्क जोड़ा।

किन्तु जिस रोग का प्रतिकार करना अथेन्स की सभ्यता के लिए संभव नहीं हो पाया था, क्या आज की वैज्ञानिक संस्कृति उसका प्रतिकार कर पाएगी ?

"यही तो एक यक्ष-प्रश्न है," डाक्टर विनोद बुदबुदाए।

गायब तारा

बंगलोर शहर पीछे छूट गया था। राजेश की वैन कावलूरकी दिशा में दौड़ी जा रही थी। किन्तु उसके मन में रह-रह कर बंगलोर के ही विचार आ रहे थे। वास्तव में आज शाम प्रख्यात वैज्ञानिक एवं खगोलशास्त्री रिचर्ड स्मिथ उनका संस्थान देखने आने वाले थे। संस्थान के आद्य संस्थापक वेणू बाप्पू की स्मृति में प्रति वर्ष किसी जाने-माने खगोलशास्त्री के स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया जाता था। इस वर्ष उसीके आग्रह के कारण और प्रयासों के परिणामस्वरूप स्मिथसाहब ने व्याख्यान देने के लिए आना स्वीकार कर लिया था। व्याख्यान का विषय भी उसकी पसंद का था—'आकाशगंगा में तारों की भ्रमणकक्षा।' इस विषय पर उसका अपना अनुसंधान था और उसी पर वह माननीय वक्ता के साथ कुछ चर्चा भी करना चाहता था।

किन्तु वह अक्सर उसके भाग्य में नहीं था। ......

आज प्रात: का घटनाचक्र राजेश को याद आ रहा था... सवेरे साढे सात बजे संस्थान के निदेशक का फोन आया .... कावलूर की बड़ी दूरबीन में कुछ खराबी आगई है .... ऑप्टिक्स तथा इलेक्ट्रानिक्स व्यवस्थाओं का तारतम्य समाप्त सा होगया है .... उसे फिरसे स्थापित करने के लिए क्या अन्य तकनीशनों के साथ तुम कावलूर जा सकते हो ?

राजेश अच्छी तरह से जानता था कि यह पूछना नहीं, आदेश ही है। कावलूर की वह नब्बे इंच की बड़ी दूरबीन केवल एक दूरबीन नहीं थी, बल्कि इलेक्ट्रानिक साधनों का केंद्रस्थान थी। उसकी कार्यकुशलता इन्हीं साधनों पर निर्भर करती थी और राजेश जितना इस दूरबीन के बारे में जानता था, दूसरा कोई जानता ही नहीं था।

"आज की बजाय, कल जाऊं तो क्या नहीं चलने वाला ? मुझे रिचर्ड स्मिथ का भाषण सुनना है और उनसे कुछ चर्चा भी करनी है।" राजेश ने कावलूर जाना टाल सकने की संभावनाओं का पता लगाने के अंदाज में कहा।

किन्तु निदेशक ने अपनी विवशता जताई, "कल प्रोफेसर स्मिथ स्वयं ही इस दूरबीन को देखने के लिए आने वाले हैं। अत: आवश्यक है कि वह कल तक सुयोग्य हालत में रहे। वे जब दूरबीन को देखने आएंगे, तक तुम उनसे चर्चा भी कर लेना।" निदेशक ने लगभग चेतावनी-सी दे डाली थी।

उसी पर सन्तोष कर राजेश ने कावलूर जाने की तैयारी की थी। सामान बैग में भरते समय अपने निजी अनुसंधान विषयक कुछ निबंध भी साथ लिए थे। ....

"क्यों राजेशभाई, किस सोच में डूबे हो ? देख रहा हूं, पिछले आधे घंटे से एकदम बुत बने बैठे हो ?" ब्रजेश ने उसे छेड़ा था। ब्रजेश एक इलेक्ट्रानिक तकनीशन था।

उसकी बात से राजेश की तंद्रा टूटी। उसने पूछा, "तुम्हारा क्या ख्याल है खराबी

के बारे में ? देर रात पहले क्या ठीक होजाएगी ? यानी फिर में परीक्षण के लिए कुछ वेध ले सकूंगा।"

"वह कमबख्त हवालदार बहुत ही डरपोक है। जरासी खराबी दिखाई नहीं दी कि झट बंगलौर फोन कर देता है .... मेरा अनुमान है कि खराबी मामूली ही है, किन्तु वह अपनी जिम्मेदारी पर कुछ करे तब न ? वह तो जिम्मेदारी लेने से घबराता रहा है हमेशा।" ब्रजेश ने कहा।

राजेश ने हंस कर कहा, "गलती तुम्हारी भी तो है ब्रजेश भाई ? तुम उसे हमेशा चम्मच से पिलाते जो रहे हो ? फिर भला उसे क्या पड़ी है स्वयं पहल कर कुछ करने की ?"

"ठीक कहते हो। चलो, आज सब कुछ उससे ही करवाता हूं। मेरी केवल देखरेख ही रहेगी।"

"बिग ब्रदर इज वाचिंग यू" राजेश ने धीरे से कहा।

कावलूर की चढ़ाई शुरू होते तक वैन में शांति थी। हरेक अपने ही विचारों में खोया-सा था।

"सौभाग्य से आज आसमान बहुत बढ़िया है।" ब्रजेश ने प्रारंभ किया।

"हां भई, इतने दूर आगए हैं, तो कम से कम कुछ अच्छे वेध तो लिए ही जा सकेंगे," राजेश ने कहा।

"तुम तो पहले से ही तय कर आए होंगे, क्या क्या वेध लेने हैं, क्यों ? यूं ही बहलाव के नाते में कुछ समय क्या तुम्हारे साथ रह सकता हूं ?" ब्रजेश ने पूछा।

"क्यों नहीं ? क्यों नहीं। बीच ही में कोई मामला खराब होजाए, तो अनायास तुम्हारी सहायता भी मिल जाएगी। लेकिन यह तभी होसकता है, जब तुम और तुम्हारे साथी समय पर अपना काम पूरा कर लोगे।"

"उसकी चिन्ता न करो। इस दूरबीन की रचना ही कुछ इस तरह की गई है कि उसमें आई खराबी ठीक करने में कोई समय नहीं लगेगा।" ब्रजेश ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

तभी एक जबरदस्त झटका खाकर बैन रुक गई। ड्राइवर ने ब्रेक कस कर लगाया था।

बात क्या है, देखने के लिए दोनों ने खिड़की से बाहर झांका। एक बड़ा नाग सड़क से होता हुआ निकल गया।

"चंदन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग," ब्रजेश ने कहा।

"चंदन के वृक्षों के पास सांप तो आएंगे ही ! इसीलिए रात के समय इधर आने में मुझे बहुत डर लगता है, ब्रजेश .... वरना यह चंदनवन परिसर वाकई बहुत ही सुंदर है।" राजेश ने कहा।

चंदन के पेड़ों के झुरमुट में से दूरबीन के गुम्मज दिखाई देने लगे थे। डूबते सुरज के प्रकाश में पहाड़ी की तराई वाला परिसर किसी चित्र-सा अद्‌भुतरम्य लग रहा था। कावलूर आते समय इस प्रकृति की सुंदरता से राजेश हमेशा मोहित होता रहा है।

"पहले कहां चलना, साब ?" ड्राइवर ने पूछा।

"मेरे लोगों और मुझे पहले बड़ी दूरबीन के पास छोड़ो ! फिर राजेशसाहब को गेस्टहाउस ले जाओ।" ब्रजेश ने कहा।

"ब्रजेश, पहले तुम भी गेस्टहाउस क्यों नहीं चलते। हम लोक एक बढ़िया चाय-चाय लेते हैं, फिर तुम अपने काम पर चले जाना।" राजेश ने सुझाया।

ब्रजेश ने सिर हिला कर ना कहा, "नहीं भई, पहले तो दूरबीन को ठीक करूंगा, फिर और बातें .... हो सका तो मैं रात नौ बजे तक सारा काम पूरा करके ही भोजन के लिए आऊंगा।"

ब्रजेश से ऐसे ही उत्तर की राजेश को आशा थी। दूरबीन के इलेक्ट्रानिक्स का पूरा जिम्मा उसने उठाया था। उसमें किसी तरह की कोई गफलत उसके लिए असह्य थी।

हनुमंत हवालदार भी इसी आशा से प्रवेशद्वार के पास ही चहलकदमी कर रहा था। ब्रजेश और उसके सहयोगियों को वहां छोड़ कर राजेश गेस्ट हाउस गया।

चाय पीते-पीते उसने अपने अनुसंधान की फाइल निकाली। आज हो सका तो किन किन बातों के वेध लेना चाहिए, उसे तय करना था।

परीक्षण के काम आने वाले कुछ तारका-क्षेत्रों का चयन उसने किया। वह चाहता था कि यहां पहले लिए गए वेधों की आज के वेधों के साथ तुलना करे और ताजा वेधों के निष्कर्षों को पूर्णता दे। दोनों वेध सही-सही मेल खाते हैं, तो उसका अर्थ दूरबीन में आई खराबी ठीक होगई है यही होगा।

"क्या कोई नया प्रकल्प लाए हो ?" चालीस इंच की दूरबीन पर काम करने वाले उसके सहयोगी रामाराव ने पूछा।

"नया नहीं है, केवल परीक्षण प्रकल्प है। नब्बे इंच की दूरबीन में कुछ खराबी आगई है, उसे दूर करना है .... परीक्षण-प्रकल्पों से नया क्या मिलने वाला है, रामाराव ?" राजेश ने अंगड़ाई लेते हुए कहा।

किन्तु उसका यह अनुमान गलत साबित होने वाला था।

ब्रजेश के अनुमान के अनुसार उसने और उसके साथियों ने दूरबीन में आई खराबी ठीक की, तब नौ बज रहे थे।

"खगोलपंडित जी, अब आपकी बारी," गेस्टहाउस के भोजनकक्ष में आते-आते ब्रजेश ने कहा।

"खराबी क्या बड़ी थी ?" राजेश ने उससे पूछा।

"बड़ी तो नहीं थी, किन्तु नए स्थान पर थी। वास्तव में मेरा काम आधा घंटा पहले ही पूरा हो जाता, किन्तु मैं ने उस हवालदार के बच्चे से सारा काम करवाया ... बिल्कुल खराबी कहां है, क्या है, और कैसे ठीक की जासकती है, सब उसीको तय करने लगाया। अब उसमें भी कुछ विश्वास पैदा हुआ-सा लगता है।"

"बहोत अच्छे बच्चू ! चलो, अब चलो, भोजन करते हैं और फिर कुछ परीक्षण करते हैं।" राजेश ने घंटी दबा कर भोजन परोसने के लिए आदेश दिए।

भोजन के बाद आवश्यक कागजात लेकर वे नब्बे इंच की दूरबीन में पहुंचे तब तक साढेदस बज चुके थे। ऊपर एकदम साफ आसमान था। अमावस बीत चुकने के कारण आकाश में चंद्रप्रकाश लगभग नहीं था। अर्थात् खगोलवेध करने के लिए एकदम आदर्श अवसर उपलब्ध था।

राजेश ने वांछित दिशा की जानकारी कम्प्यूटर में भर दी। उन सूचनाओं के अनुसार दूरबीन ने अपनी दर्शक-नली आकाश की तरफ घुमाई। पहले के जमाने में खगोलशास्त्री इसी नली में से देख कर वेध लिया करते थे। आगे चल कर मानवी आंखों का स्थान फोटोग्राफिक प्लेट ने ले लिया। तकनोलाजी की प्रगति और विकास के साथ प्लेट का रिवाज भी जाता रहा। इमेज ट्यूब आगई। फिर फोटो मल्टिप्लायर आया और अब तो सी.सी.डी. तथा उससे जुड़ा गणकयंत्र इस्तेमाल किया जाने लगा है। आज का खगोलशास्त्री दूरबीन की नली में नहीं देखता, अपितु नली से दिखाई देने वाले तारका-नक्षत्रों को टी.वी. के पर्दे पर देखता है। कलम से कोई अंदराज दर्ज नहीं करता, बल्कि कम्प्यूटर में से छप कर आए आंकड़ों को पढ़ता है। अब वह फोटो में भी न आने वाली आकाश की चीजों के मानचित्र आधुनिक प्रतिबिंब-प्रणाली के जरिए इच्छानुसार रंग भर कर बना लेता है। दूरबीन का उपयोग खगोलशास्त्र के लिए सबसे पहले करने वाला गैलीलिओ इन सभी आधुनिक उपकरणों को देखता तो पहले तो चकित रह जाता और बाद में हर्ष से नाचने लग जाता।

"सी.सी.डी. कैमरा ठीक से फिट किया, न ?" राजेश ने टी.वी. के सामने बैठते हुए पूछा।

राजेश ने कम्प्यूटर की सांकेतिक भापा में अपेक्षित सूचनाएं दीं। कम्प्यूटर ने जवाब दिया, सूचनाएं स्वीकार हैं और शीघ्र ही वेध-कार्य शुरू होने जारहा है।

"तुमने आखिर किस प्रकल्प का चयन किया ?" खगोलविज्ञान की सतही जानकारी रखने वाले ब्रजेश ने पूछा।

"मैं तो हमारे नजदीकी किन्हीं तारकापुंजों को निहारना चाहता हूं। उनके आलेख मेरे पास हैं। पुरानी पैलोमो वेघशाला द्वारा तैयार की गई प्लेटें भी साथ हैं। उनके साथ मिला कर देखना है।"

"तारे क्या चन्द दशकों में अपना स्थान बदलते हैं ?" ब्रजेश ने पूछा।

"जी हां। आकाशगंगा में भ्रमण करते समय उनकी दिशा बदल जाती है। किन्तु आम दूरबीन से यह बदलाव दिखाई नहीं देता। किन्तु अतिसूक्ष्म मापन करने वाली दूरबीनों की सहायता से बरसों बाद के वेधों के साथ मिलान कर देखने पर यह बदलाव

ध्यान में आजाता है। .... इसके अलावा तारकायुगलों की गति को अन्य तरीकों से भी हम जान सकते हैं।"

"तारकायुगल के दोनों तारे एक दूसरे की परिक्रमा करते समय अपनी दिशा बदलते होंगे?"

"जरूर बदलते हैं, किन्तु उन दोनों में फासला बहुत न हो तो यह फर्क देख पाना मुश्किल होता है। लेकिन डाप्लर इफेक्ट द्वारा हम उनकी गति यहां बैठे-बैठे नाप सकते हैं।" राजेश ने स्पष्ट किया।

डाप्लर इफेक्ट क्या होता है, ब्रजेश जानता था। हम स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़े हैं और सिटी बजाती हुई कोई ट्रेन तेज गति से हमारे सामने से गुजर जाती है तो उसकी सीटी का स्वरमान एकदम कम होता जाता है। ट्रेन जब हमारी ओर आरही होती है तब सीटी का स्वर ब्हुत कर्कश सुनाई देता है और जब दूर जाती है तो उसकी कर्कशता कम होती जाती है। यह सब हम अनुभव करते हैं। वास्तव में सीटी एक ही स्वर में बजती है। फर्क उसके और हमारे बीच के फासले के कारण और उसकी गति के फलस्वरूप हमें प्रतीत होता है। आवाज या स्वर पर लागू पड़ने वाली यही बात प्रकाश पर भी लागू होती है। तारा-युगुल के हमसे दूर जा रहे तारे के प्रकाश तरंगों की लम्बाई बढ़ती है और पास आने वाले तारे की प्रकाश तरंगों की लंबाई कम होती जाती है।

कम्प्यूटर में तारों का मानचित्र भर दिया गया था। आकाश के किसी भी भाग में आम प्रकाशसीमा से अधिक तेजस्वी तारों की जानकारी पहले के वेधों से प्राप्त की गई थी। वह कम्प्यूटर की स्मृतिमंजूषा में संग्रहीत थी। उसके अनुसार आज राजेश द्वारा लिए गए वेधों के तारे हैं या नहीं, इसकी विस्तृत तुलना कम्प्यूटर कर रहा था।

राजेश कहने लगा, "हर्शेल पितापुत्रों ने तारों की जानकारी बहुत ही तरतीब से दर्ज कर रखी है। ऐसा उन्होंने तब किया है, जबकि आधुनिक खगोलविज्ञान के लिए उपलब्ध कोई भी साधन उनके पास नहीं थे। .... यह तो कोलम्बस द्वारा अतलांतिक पार करते समय की परिस्थिति की आज के आरामदेह जहाजों के साथ तुलना करने के समान ही है।"

"राजेश, मैं एक बात कहूं?" ब्रजेश ने पूछा।

"पूछो, तुम्हें अभय देता हूं।" राजेश ने हंस कर कहा।

"खगोलविज्ञान ही क्यों, विज्ञान की किसी भी शाखा को लो, ऐसा अवश्य प्रतीत होगा कि डेढ-दो सदियों पूर्व बहुत ही मुश्किल परिस्थितियों में अनुसंधान करने वाले वैज्ञानिकों की अपेक्षा आज के वैज्ञानिक काफी बेहतर हालात में हैं। भरपूर पैसा, आधुनिकतम तकनोलॉजी, सभी संसाधनों से लैस प्रयोगशालाएं एवं अनुसंधान-संस्थान आदि सब कुछ आज के वैज्ञनिकों के लिए उपलब्ध हैं। किन्तु फिर भी मुझे लगता है कि पुराने जमाने वाले वैज्ञानिकों को जिद्दोजहन आज के वैज्ञानिकों में नहीं है। आज का वैज्ञानिक लड़ियाया हुआ है।"

"तुम्हारी बात ९९ प्रतिशत वैज्ञानिकों पर लागू होती है, मैं भी कहूंगा। किन्तु कम से कम एक प्रतिशत वैज्ञानिक तो आज भी ऐसे हैं, जो उसी जिद्दोजहन से विज्ञान के क्षेत्र

में आए हैं। अन्य व्यवसायों में जाने का मोह संवरण कर ये लोग विज्ञान के क्षेत्र में आए हैं। ऐसे लोगों के प्रयासों के बल पर ही अनुसंधान का कार्य आगे चल रहा है। बाकी सारे तो बाजारू है बाजारू। ...."

"राजेश, वह देखो ...." ब्रजेश ने यकायक कहा।

कम्प्यूटर के टी.वी. पर्दे पर एक लाल बत्ती जलती-बुझती दिखाई दे रही थी। ध्यान आकृष्ट करने के लिए ही ऐसा होरहा था।

बत्ती के नीचे एक वाक्य उभरा था: 'तारा क्रमांक ११४१+७९१४ मिल नहीं रहा, बाकी सारे तारे पहले जैसे और पहले के अनुसार हैं।'

"मैं यकीन नहीं कर पारहा हूं। आखिर कोई तारा ऐसे कैसे गायब हो सकता है?" रिचर्ड स्मिथ ने चकित होकर कहा। उनके कावलूर पहुँचते ही राजेश ने उन्हें कल रात वाला सारा किस्सा बयान किया। उनसे चर्चा करना-वरना तो दूर रहा ... गत रात राजेश केवल उस गायब तारे के बारे में ही सोचता रहा था।

"प्रोफेसर स्मिथ ..."

"नहीं, केवल रिचर्ड कहो।" प्रोफेसरसाहब ने राजेश को बीच ही में टोंक दिया। उन्हें औपचारिक आदरयुक्त संबोधन पसंद नहीं थे।

"रिचर्ड, आप आज रात को स्वयं देख लेना, ... किन्तु कल के कम्प्यूटर के रिकार्ड मैं तुम्हें अभी दिखाता हूं।"

टी.वी. पर्दे पर राजेश ने कल रात वाला सारा रामायण फिर दिखाया। उसे देख कर रिचर्ड स्मिथ हैरान थे। उन्होंने राजेश की ओर देखा। राजेश अपनी मुस्कुराहट दबाने की कोशिश कर रहा था।

"अरे चोट्टे! लगता है तुमने इस समस्या का समाधान ढूंढ भी लिया है, क्यों?" प्रोफेसरसाहब ने कहा।

"रिचर्ड, रात भर सोच कर मैंने इस मामले की कारणमीमांसा तैयार की है। किन्तु मैं देखना चाहता हूं कि तुम स्वयं किस निष्कर्ष पर पहुंचते हो," हंसते हुए राजेश ने कहा, "मैं तुम्हें तीन संभावनाएं बता देता हूं।"

रिचर्ड सोच में डूबे थे।—"आकाश का कोई तारा अचानक गायब कैसे हो सकता है?" फिर उन्होंने स्वयं ही कहा, "कही यह सुपरनौवा वाला हादसा तो नहीं है?" कह कर उन्होंने सिर झटका कर इस तर्क को स्वयं ही नकारा।

"पहली संभावना तो समाप्त हो गयी। उस तारे का विस्फोट होकर उसका सुपरनोवा अवशेष में रूपांतरण होजाता तो दुनिया की बीसियों वेधशालाओं में बात अवश्य दर्ज हो जाती। उनकी निगाहों से वह कतई नहीं बच पाती। विस्फोट से पूर्व उस तारे की रोशनी में विलक्षण वृद्धि होजाती ... उसके अलावा वह तारा लाल राक्षसी तारा नहीं था। ऐसे राक्षसी तारे ही उनमें विस्फोट होकर बिखर जाया करते हैं ...."

"बस-बस, बस करो, राजेश! व्यर्थ में जले पर नमक न छिड़को ... दूसरी संभावना उस तारे का न्यूट्रॉन तारे या कृष्णविवर में रूपांतरण होने की है ... किन्तु मुझे भी वह असंभव ही लगती है। यह तारा हमारे सूर्य जैसा था। यकायक उसके सिकुड़ जाने की संभावना नहीं है।" राजेश की ओर प्रश्नवाचक मुद्रा में देखते हुए रिचर्ड स्मिथ ने कहा।

"तीसरी संभावना ?" राजेश ने शांत भाव से पूछा।

स्मिथसाहब पांच मिनट ठुइडी खुजाते सोचते रहे। अन्त में हार मानते हुए उन्होंने कहा, "भई, मैं तो हार गया, तुम ही बताओ, क्या हुआ होगा ?"

"ग्रहण।" एक शब्द में राजेश ने उत्तर दिया।

"ग्रहण ? कैसा ग्रहण ? किसका ग्रहण ? इतनी दूरी पर उस तारे को ग्रहण लगाने वाली चीज भी उतनी ही बड़ी होना आवश्यक है। ... कहीं तुम यह तो नहीं न बताना चाह रहे कि उस तारे जैसा ही एकाध बड़ा ग्रह उसके आसपास भ्रमण कर रहा है ? राजेश,तुम स्वयं भली भांति जानते हो कि इतने बड़े ग्रह के वहां होने की कोई संभावना नहीं है।" प्रो. रिचर्ड ने विश्वासपूर्वक कहा।

"ऐसा ग्रह वहां नहीं है, यह तो मुझे भी मंजूर है। किन्तु रिचर्ड, तुम्हारे देश का प्रख्यात डिटेक्टिव शेरलॉक होम्स क्या कह गया है ? जब अन्य सभी संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं, तो शेष संभावना को, चाहे वह कितनी ही असंभव क्यों न प्रतीत होती हो, ग्राहय मान लेना चाहिए।" राजेश ने कहा।

"किन्तु श्रीमान राजेश होम्स, स्वयं आपने भी तो किसी ग्रह द्वारा उस तारे को ढांका जाने की संभावना को अस्वीकर कर दिया है न ? फिर शेष संभावना रहती ही क्या है ?" रिचर्ड ने कुछ उपालंभ से कहा।

राजेश ने अपनी जेब से एक कागज का टुकड़ा निकाला। उसपर केवल दो शब्द लिखे थे, जिन्हें पढ़ कर स्मिथसाहब भौंचक रह गए।

"असंभव ! ऐसा होना नितांत असंभव है !" वे बुदबुदाए और अपने ही विचारों में खो गए ... आहिस्ता आहिस्ता उनके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। उन्होंने राजेश का हाथ अपने आथों में लिया और कहा :

"होम्स को वाटसन का सलाम।"

केवल अत्यंत महत्व की बैठकों के लिए सुरक्षित वह कमरा खचाखच भरा था। सभी ६४ सदस्य उपस्थित थे। इस समिति पर शासक, शिक्षक, वैज्ञानिक, तकनीशन, अर्थशास्त्री, लेखक .... आदि विविध क्षेत्रों के चुनिंदा लोगों को लया गया था। आम तौर पर समिति की बैठक के लिए सभी सदस्य शायद ही उपस्थित रहते थे। किन्तु आज की बैठक की कार्यसूची इतनी विलक्षण थी कि अनेक जरूरी काम छोड़ कर हर सदस्य बैठक के लिए उपस्थित था।

शोर शांत होने के बाद अध्यक्ष बोलने के लिए खड़े हुए। उन्होंने कहा, "मित्रों, हमारे आह्वान को अब उत्तर मिल तो रहा है, किन्तु वह बहुत ही धीमा है। फिर भी हमारी यंत्रणा उसे झेल सकी और उसका अर्थ भी समझ सकी है। .... प्राप्त जानकारी अब आपके सामने वाले पर्दे पर आपको दिखाई देगी।"

अध्यक्ष अपने आसन पर बैठ गए। सबकी आंखें सामने लगे विशाल पर्दे पर लगीं। उसपर जानकारी और चित्र आने लगे।

"सन्देश का स्थान : तारा क्रमांक १५७१२७२२ के ईर्दगिर्द भ्रमण करने वाला तीसरा ग्रह। कुल ग्यारह ग्रह इस ग्रहमाला में हैं।

ग्रह की दूरी : वह ग्रह अपने तारे की परिक्रमा करने के लिए जो समय लेता है उसे 'वर्ष' कहा जाता है। हमारा तारा क्र-१ और पड़ोस का तारा-२ एक दूसरे की परिक्रमा करते रहते हैं। वह परिक्रमा पूरी होने में लगभग १०२२ वर्ष लग जाते हैं। ग्रह की हमसे जितनी दूरी है, उसे पूरा करने में १७ वर्ष लग गए। अर्थात् हमारा सन्देश उन्हें प्राप्त होकर उसका उत्तर आने में उनकी कालगणनानुसार ३६ वर्ष बीतते हैं। (उनके आंकड़े दशमलव पद्धति से लिखे होते हैं। उन्हें बदल कर हमारी अष्टांक प्रणाली में उन्हें प्रस्तुत किया है।)"

पर्दे पर ग्रह की जानकारी देने वाले कुछ चित्र आए। पर्वत, नदियों, शहरों, मनुष्यों, प्राणियों आदि के चित्र कुछ धुंधले-से आए। उसके बाद एक टिप्पणी प्रगट हुई :

"यह सभ्यता तंत्रविज्ञान में तेजी से विकास करती जारही है। हमारे स्तर तक पहुंचने में उन्हें काफी कालावधि लग जाएगी। अभी वे लोग तारों की ऊर्जा का उपयोग उतनी कार्यकुशलता से नहीं कर पा रहे हैं, जितना कि हम लोग तरतीब के साथ अपने तारों की ऊर्जा का कर लेते हैं। किन्तु उनकी कल्पकता की दाद देनी होगी कि उन्होंने हमारी खोज कर ही ली .... हमारे सन्देश की वजह से वे हमारी खोज नहीं कर पाए, बल्कि उन्होंने जब हमारी खोज कर ली, तो उसके बाद अपनी प्रचण्ड रेडियो दूरबीनें हमारी ओर मोड़ी और तब जा कर कहीं वे हमारे सन्देश को ग्रहण कर सके।"

यहां सदस्यों के मन में सवाल उठा कि बिना हमारे सन्देश के उस ग्रह के वासियों ने हमारा पता कैसे लगा लिया होगा ? शायद ऐसे सवाल की कल्पना करते हुए ही पर्दे पर यह जानकारी आई :

"उन्होंने हमारी खोज कैसे की, इसकी जानकारी उन्होंने ही अपने सन्देश में दी है, जो इस प्रकार है। उसमें संयेग के साथ साथ उनकी कल्पकता भी है।

"उस ग्रह पर कभी एक प्रख्यात वैज्ञानिक रहता था। उसका नाम था फ्रीमन डाइसन। उसने एक परिकल्पना प्रस्तुत की कि किसी ग्रह की जीवसृष्टि अतिविकसित अवस्था तक पहुंची, तो उसकी ऊर्जा की भूख मिटाने के लिए एक कृत्रिम गोलाकार बस्ती बना कर उसके जरिए ऊर्जा पहुंचाई जासकती है। ऐसी बस्ती को 'डाइसन का गोला' कहा गया। इसका सीधा सा अर्थ है, तारे को केन्द्र बना कर उसे सभी ओर से घेरने वाला गोला या वर्तुल। तारा और ग्रह के बीच के फासले के बराबर त्रिज्या से ऐसा

गोला बनाया जाता है। उसके निर्माण में किसी अन्य ग्रह की सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। गेंद की भान्ति यह गोला भी भीतर से पोला होगा और उसके पृष्ठभाग की मोटाई कम होगी। तारे से निकलने वाला प्रकाश इस गोले के बाहर नहीं आसकता। अत: उसकी ऊर्जा का पूरा उपयोग उसके भीतर रहने वाली जीवसृष्टि कर सकती है।

"अब आपकी समझ में आगया होगा कि हमारी बस्ती इसी तरह के डाइसन गोले के भीतर है। यह बस्ती हमारे तारे की—यानी तारा-९ की ऊर्जा का उपयोग कार्यकुशलता से करती है। इसमें सन्देह नहीं कि हमारी वस्ती काफी कालावधि पहले से अस्तित्व मैं है। किन्तु ऐसा गोला बनाने की क्षमता प्राप्त करने में हमारी सभ्यता को जो समय लगा उसे देखते हुए डाइसन के समकालीन लोगों के लिए उसकी कल्पना करना भी नामुमकिन है। आने वाले हजारों वर्ष में (उनकी कालगणनानुसार) भी यह संभव नहीं है।

"किन्तु विश्व में कहीं और डाइसन के गोले अवश्य ही अस्तित्व में होंगे यह कल्पना उन्हें असंभव प्रतीत नहीं हुई और इसीलिए वे हमारी खोज कर सके।

"आप लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि हमारा गोला जिस तारे को मध्य बिंदु मान कर है वह तारा-९ और तारा-२ एक दूसरे की परिक्रमा करते हैं। किन्तु दूर से देखने वालों को तारा-९ दिखाई नहीं देता। किन्तु किन्ही विशिष्ट सतहों पर से देखने वालों को दिखाई देगा कि तारा-२ को हमारे गोले का ग्रहण लग चुका है। .... यह तभी होगा जब कि देखनेवाले और तारा-२ के बीच हमारा गोला आ जाएगा। तारा-९ उन्हें दिखाई नहीं देगा, क्योंकि वह गोले के भीतर बंद होगा।

"जिन ग्रहवासियों ने हमारी खोज कर ली है, उनकी कालगणनानुसार १०२२ वर्ष में हमारे तारायुगल की आपसी परिक्रमा एक बार पूरी होती है। इसका अर्थ है कि हर १०२२ वर्ष में एक बार तारा-२ ग्रहण लगने के कारण उन्हें दिखाई नहीं देगा। ठीक वैसी ही स्थिति हाल में आई और उस ग्रह के एक चालाक निरीक्षक के ध्यान में आगया कि तारा-२ अचानक गायब होगया है। उस ग्रह के जीवों की आयुसीमा १०० से १२० वर्ष होने के कारण १०२२ वर्ष में एकाध बार होने वाली इस घटना को उनकी दृष्टि से अपूर्व संयोग ही कहा जाएगा।

"उस शास्त्रीय निरीक्षक का नाम है राजेश गुप्ता। तारा अचानक कैसे छिप गया इसकी कारणमीमांसा करते-करते वह डाइसन के गोले के सिद्धान्त पर आ रुका, यही संभावना उसे सबसे अधिक सही प्रतीत हुई।

"वह और उसका एक साथी रिचर्ड स्मिथ, दोनों इस नतीजे पर आए कि भले ही यह डाइसन का गोला उन्हें दिखाई न दिया हो, उसमें से निकलने वाली किरणें अपनी अवरक्त दूरबीन अवश्य पकड़ लेगी। तारों की ऊर्जा (प्रकाश) का हम लोग उपयोग कर उसे ऊष्णता में बदल लेते हैं। फिर वही ऐसी किरणों के रूप में बाहर पड़ती हैं (—हमारे यहां उन किरणों का नाम अलग है।) राजेश और रिचर्ड ने अपनी अवरक्त दूरबीन द्वारा हमारी दिशा में अंतरिक्ष के कुछ वेध लिए और उन्हें हमारे गोले के अस्तित्व का अचूक पता चल गया।"

पर्दे पर आने वाली जानकारी समाप्त होगई। अध्यक्ष ने कहा, "अब इस प्रकरण में आगे क्या करना है, हम लोग तय करें। पहले तो हम लोग अपनी सफल खोज करने वाले उन लोगों की कल्पकता की दाद देंगे और वैसा सन्देश भेजेंगे। राजेश और रिचर्ड को उसमें बधाइयां भी देंगे।"

सभी सदस्यों ने सम्मति दर्शाने के लिए अपने अपने सिर पर लगे एन्टेना खड़े किए।

राजेश की आयु अब सत्तर के आसपास पहुंच चुकी थी। वह अपने बगीचे में काम कर रहा था। वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों में भाग लेना उसने विगत पांच वर्षों से बंद कर दिया था। किन्तु विज्ञान के विषय में वह काफी पढ़ता था। अब तो पढ़ना और बागवानी करना, दो ही प्रिय कार्य रह गए थे उसके लिए।

तभी उसकी कलाई पर लगे घड़ीनुमा उपकरण से बारीक सीटियां बजने लगीं। कुछ खिसिया कर उसने बटन दबाया और कहा, "राजेश।"

"हैल्लो राजेश, मैं रिचर्ड बोल रहा हूं स्काटलैण्ड से। क्या हाल है तुम्हारी उटी का ?"

"मौसम बहुत सुहावना है इन दिनों। किन्तु मेरा ख्याल है मौसम के बारे में पूछने के लिए निश्चय ही तुमने फोन नहीं किया है।" राजेश अपने से ही मुस्कुरा कर कह गया।

"राजेश ! बहुत ही महत्व की खबर दे रहा हूं। अरीसीवं में लगी दूरबीन को हमारे उस तारे से प्रतिसन्देश आए हैं।"

राजेश के तनबदन में बिजली सी कौंध गई.... ३० साल बाद प्रतिसन्देश आ रहे थे ! क्या था उनमें ? उधर से रिचर्ड स्मिथ कह रहे थे :

"अभी अभी मुझे अरीसीवां से एक फोन आया है। तुम्हें भी वे सारी जानकारी भेज रहे हैं। शायद अब तक तुम्हारे टी.वी. सेट में आ भी गई होगी... उन लोगों ने हमें बधाइयां भेजी हैं उनका पता लगा लेने के लिए... और हां, तुमने विज्ञान और गणित के जो कूट-प्रश्न भेजे थे, उनके उत्तर भी उन्होंने भेज दिए हैं। अपना टी.वी. खोल कर स्वयं ही पढ़ लो ना। मैं तुम्हारा ज्यादा समय नहीं लेता। जिज्ञासा तो तुम्हें भी होगी। बाई...।

स्मिथ का 'फोन' बंद होने तक इधर राजेश ने अपना टी.वी. खोल लिया था। उसके सांकेतिक नंबर पर उसकी 'इलैक्ट्रानिक डाक' में वह जानकारी आने वाली थी।

राजेश को आज भी वे बीस कूट-प्रश्न याद थे। विगत ३० वर्ष में केवल पांच का ही समाधान निकल आया था। प्रत्येक प्रश्न को हल करने वाले को विश्वकीर्ति प्राप्त हो चुकी थी। अब उसे उन सभी प्रश्नों के उत्तर घर बैठे मिलने वाले थे। पंचपकवान भरे थाल पर भूखा जैसे झपटता है, ठीक वैसे ही राजेश पेटू की तरह टी.वी. पर आने वाली

सांकेतिक जानकारी का अर्थ लगाने बैठ गया। उसे परम हर्ष हो रहा था। किन्तु एक उदासीनता का विचार भी साथ ही मन में आ रहा था। राजेश ठीक से स्वयं भी समझ नहीं पा रहा था कि आखिर वह उदासी है किस बात के लिए। अचानक उसे याद आया।

पाठशाला में उसे एक अत्यंत मेघावी छात्र की ख्याति प्राप्त हो चुकी थी। अपने प्रश्नों को वह स्वयं हल किया करता था.. आठवीं कक्षा में कुछ प्रश्न वह सुलझा नहीं पा रहा था। परीक्षा बिल्कुल करीब आ चुकी थी। तब कक्षा के एक मित्र ने उसे उन प्रश्नों की एक गाईड-नुमा पुस्तक ला कर दी थी। उसमें सभी प्रश्नों के उत्तर थे। उनको याद कर लेने के बाद उस परीक्षा की तैयारी तो पूरी हो गई थी। किन्तु स्वयं प्रश्न हल करने का सन्तोष नहीं था।

आज वही असन्तोष फिर सिर उठा रहा था। सृष्टि की सभी अनबूझी पहेलियों के उत्तर यों ३० वर्ष बाद प्राप्त होने लगे, तो मानव कहीं स्वयं गवेषण करते हुए नए-नए आविष्कार करने की जिद खो तो नहीं बैठेगा ?

इसी विचार से, उदास मन से, और शून्य में लगी सूनी-सूनी आंखों से राजेश टी.वी. से जुड़े यंत्र में छप कर आने वाली जानकारी की ओर देख रहा था...

यंत्राधीन

"यह भी कोई पत्र लिखा है ?" पत्र को अपने मित्र की ओर फेंकते हुए मेजर दलजित सिंग ने कहा। मित्र ने उसे खोल कर देखा। सरकारी अशोक स्तंभ का चिन्ह बीचोबीच था। प्रतिरक्षा विभाग ने वह पत्र भेजा था। छोटे से पत्र में लिखा था :

"२१ अप्रैल को सुबह ग्यारह बजे इस ऑफिस में उपस्थित रहने का आपसे अनुरोध करने का आदेश मुझे मिला है। आपको यात्रा-खर्च और दैनिक भत्ता विभाग के नियमों के हिसाब से दिया जाएगा ....।"

"सीधे सीधे कहते हैं कि फलां समय इधर उपस्थित रहो। यात्रा-खर्च देंगे।' इनका क्या जाता है ऐसा कहने में ?" तैश में आकर दलजित सिंग बोला।

"अरे हमारे प्रशासन की यही तो खासियत है कि वह किसी भी प्रकार का दायित्व अपने सर नहीं लेता। और कुछ पूछो तो वरिष्ठों की ओर उंगली दिखाता है। चलो मानते है कि वे तुम्हें उपेक्षित हो ऐसा निमंत्रण पत्र भेजते हैं, तुम वहां जाते हो और जब यात्रा खर्चा मांगते हो तो पता है सरकारी आडिटर क्या कहेगा ? तुम्हें इस प्रकार का निमंत्रण भेजने का अधिकार उस अधिकारी को किसने दिया ?" उसके मित्र ने कहा।

"सरकारी अधिकारी ही नहीं कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय के अधिकारी भी ऐसे ही पत्र लिखते है।"

"कहते हैं यह अंग्रेजों की पद्धति है !"

"किंतु स्वतंत्रता के चार दशकों बाद इस पद्धति में कोई सुधार होना चाहिए या नहीं ?" दलजित ने कहा।

"अच्छा, यह बता तुम दिल्ली जाओगे या नहीं ?" मित्र ने पूछा।

"यह अनुरोध नहीं, आदेश है भाई।" दलजित आरक्षण के लिए स्टेशन की ओर चल पड़ा।

++ ++ ++

औनरेबिल विलियम मौन्क्रीफ अपने निगोड़े-निवास (बैचलर फ्लैट) में नाश्ते के साथ 'टाइम्स' पढ़ रहा था। ईटन केंब्रिज में पढ़ाई पूरी कर के उसने रॉयल एअर फोर्स में प्रवेश किया था। कुछ साल वहां काम किया, अपने साहासिक कार्यों के लिए उसे मेडिल से सम्मानित किया गया था। किंतु प्रत्यक्ष लड़ाई में भाग लेने का अवसर न मिलने के कारण उसने एअर फोर्स छोड़ दिया था। फिलहाल वह 'बेरोजगार' था। अपने साहस का परिचय दे ऐसा उसे कोई मौका मिल नहीं रहा था। वह हमेशा सोचता कि काश, मैं एलिजाबेथ रानी की बजाय विक्टोरिया के इंग्लैंड में पैदा हुआ होता।

वह रोज सुबह टाइम्स का पर्सनल कॉलम पढ़ता—इस आशा से कि उसे दु:साहस का कोई अनुभव मिले।

आज उसे कोई मनचाही चीज मिली। एक विज्ञापन में लिखा था :

'हमेशा के शांत सुचारु जीवन से तंग आ गए हैं ? कुछ कर गुजरने की इच्छा हो, तो संपर्क करें : बॉक्स नं. ३४५७।'

होगा कोई सिरफिरा विज्ञापनदाता ... पर उत्तर देने में क्या हर्ज है ? ... ज्यादा से ज्यादा एक डाक टिकट ही तो बेकार जायेगा नं ? सौदा महंगा नहीं पड़ेगा ...।

आनरेबुल विलियम मोन्क्रीफ ने अपने कीमती नोटपेपर पर लिखना शुरू किया।

++ ++ ++

डॉ. कार्टर चैटरसन ने अपनी सदनिका के कार पार्क में अपनी गाड़ी घुसाई, इंजन बंद किया, गाड़ी का दरवाजा फटाक से बंद किया और लिफ्ट की ओर दौड़ पड़े। बार बार घड़ी देख रहे थे। ५.५० हो गए थे। घर में घुसते ही टी.वी. शुरू किया।

एरिक सेवराय की समाचार समीक्षा समाप्त होने को थी। उसका अंतिम वाक्य था, " ... वैज्ञानिक यदि अपने पांव जमीन पर टिका कर अनुसंधानों को व्यवहार्य स्वरूप प्रदान करें तो ऐसी नौबत नहीं आएगी।"

क्या मतलब ? सिनेट ने आज क्या निर्णय दिया है ? उसके गुट के तथा अन्यत्र जीव विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों को अनुमति मिली है या नहीं ? यही तो कार्टर जानना चाहता था। कार रेडियो खराब था इसलिए वह टी.वी. की ओर लपका था, लेकिन लगता है उसके आने से पहले ही वह समाचार बताया जा चुका था। हो सकता है अंत में वह समाचार दोहराए ! अत: उसने टी.वी. की ओर पुन: ध्यान दिया। कुछ विज्ञापनों के बाद समाचार निवेदक वाल्टर क्रान्काइट पर्दे पर आया।

"डाउजोन्स, इंडस्ट्रियल एवरेज ५.५ पाइंट से कम हुआ। न्यूयार्क स्टाक एक्स्चेन्ज में इक्कीस करोड़ के शेअरों का लेन-देन हुआ। न्यूयार्क एक्स्चेन्ज में शेअर की औसत कीमत १५ सेंट्स कम हुई तथा अमरीकी एक्स्चेन्ज में तीन सेंट्स से ....

तो यह था आज की परिस्थिति का विवरण। मैं वाल्टर क्रान्काइट सी.बी.एस. न्यूज से बोल रहा हूं। शुभरात्री।"

कार्टर ने टी.वी. बंद किया और अपने एक सहयोगी का फोन मिलाया।

"जॉन मैं कार्टर बोल रहा हूं। सिनेट का क्या निर्णय रहा ?"

"तुम्हें कुछ नहीं पता कार्टर ? ७० के मुकाबले २० वोटों से सिनेट ने प्रयोगों पर रोक लगाने का निर्णय लिया है। पांच वर्ष बाद परिस्थिति का पुन: जायजा लिया जाएगा। हम सब बेकार हो गए हैं।"

"तुम क्या करोगे ?" कार्टर ने पूछा। उसे यह निर्णय अपेक्षित ही था। परंतु यह कड़वा सच सुनकर वह भी उदास था।"

"मैं तो शायद हैम्बर्गर बेचने लगूंगा !" जॉन के चेहरे पर उदासी थी। "वैसे भी कुछ सिनेटरों ने वैज्ञानिकों को जनता के ज्यादा से ज्यादा करीब आने को कहा है। कम से कम वे सिनेटर तो खुश हो जाएंगे।"

कार्टर ने फोन नीचे रखा। उसे एरिक सेवराय के वे शब्द फिर याद आ रहे थे।

भविष्य की चिंता तो उसे भी थी। जिस अनुसंधान के प्रति वह पूर्णत: समर्पित था उसके अचानक बंद हो जाने से उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। अमरीकी निग्रो परिवार में उसने अत्यंत खस्ता हालत में दिन गुजारे थे। उसी तंगी से मार्ग ढूंढता आज वह इस पद तक आ पहुंचा था। दिक्कतों से मार्ग निकालना उसकी आदत बन गई थी। लेकिन इस परिस्थिति ने उसे किंकर्तव्यविमूढ़ कर दिया था।

तभी उसका फोन बजने लगा। उसने अपना नाम बताया। लेकिन उधर से बोलने वाले व्यक्ति की आवाज सुन उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था।

++ ++ ++

ब्रसेल्स के रूसी दूतावास में कार्यरत कप्तान इल्या मोरोविच वास्तव में रूसी जासूसी संस्था के.जी.बी. का एजंट था। किंतु उसके बोलने और मिलनसार स्वभाव के कारण किसी को इसका अंदेशा भी नहीं होता। एक समय था जब उसने रेड आर्मी में काम किया था। किंतु अब वह विदेश विभाग में काम करता था। उसे मदिरा और मदिराक्षियां जितनी पसंद थीं उतना ही शतरंज से भी प्यार था। इस खेल में उसे अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति मिल चुकी थी।

किंतु इलेक्ट्रानिक्स में उसकी निपुणता बहुत थोड़ो को ही पता थी। ब्रसेल्स में तो किसी को भी पता नहीं था—रूसी राजदूत को भी इस बात की जरा भी भनक नहीं थी।

राजदूत ने आज उसे बुलाया था। ऑफिस पहुंचने पर राजदूत ने उसे एक संदेश बताया :

"तुम्हें मास्को से बुलावा आया है।"

इसका परिणाम अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी, इसलिए कप्तान ने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिए।

"मुझे कब निकलना होगा ?" उसने पूछा।

"अभी इसी समय।" राजदूत ने शायद डेस्क के नीचे का कोई बटन दबाया था, क्योंकि दो सादे वर्दी वाले वहां आए।

"यह दोनों तुम्हें हवाई अड्डे ले जायेंगे। वहां एक इल्युशिन तुम्हें लेने आया है। मेरी शुभ कामनाएं तुम्हारे साथ हैं।" राजदूत ने उसे विदा किया।

इस तरह अचानक जाने से फ्लैट के सामान इत्यादि का क्या होगा ? मेरे मित्रों को क्या बताया जायेगा ? ये सवाल उसने पूछे नहीं।

वह जानता था कि इस परिप्रेक्ष्य में सारी व्यवस्था पहले ही कर दी गई होगी।

++ ++ ++

चीन की 'अणु शक्ति योजना' का चांग तेंग एक उच्च स्तरीय वैज्ञानिक था। तीस ही साल का था लेकिन बचपन से अपनी प्रतिभा का परिचय देता आया था। चीन ने जिस तेजी से परमाणु बम बनाने में प्रगति की थी उसमें चांग ने बहुत बड़ा काम किया था। राजनीतिक नेताओं ने उसके महत्व को समझते हुए उसके देश से बाहर जाने पर पाबंदी लगाई थी।

पीकिंग से आज उसे एक आदेश आया था। वह खुद उसे देखकर हैरान था क्योंकि उस आदेशानुसार उसे पीकिंग से बाहर भेजा जा रहा था। कहते हैं कि यह निर्णय चेअरमन माओं ने निधन पूर्व ही लिया था। किंतु लाल 'फीताशाही में अटके इस निर्णय पर अब अमल हो रहा था। उसके वरिष्ठों ने इस बात को स्पष्ट किया था।

चांग तेंग विदेश यात्रा की तैयारी में जुट गया।

++ ++ ++

एक गोलाकार कमरे के बीचो बीच पांच कोनों वाला टेबल रखा था। उस टेबल के साथ पांच कुर्सियों में पांच लोग बैठे थे। टेबल के पास प्रमुख ऐसा कोई विशिष्ट स्थान नहीं था—मानों पांचों ही मुख्य थे।

वे पांचों कोई पुस्तिका पढ़ रहे थे। कमरे में पूरी खामोशी थी। सरदार जी ने पुस्तिका प्रथम पूरी की।

"अरे, कितनी मजेदार बात है!" दलजित सिंह ने कहा। कुछ देर बाद कार्टर पैटरसन और विलियम मॉन्क्रीफ ने भी पुस्तिका पढ़ ली।

"जस्ट माय कप ऑफ टी!" विलियम ने कहा।

"लगता है, साइन्स-फिक्शन को प्रत्यक्ष में लाने का विचार है! क्यों, इल्या तुम्हारा क्या ख्याल है?" कुछ ही देर पूर्व पुस्तिका खत्म करने वाले रूसी की ओर देखते हुए कार्टर ने पूछा।

इल्या मोरोविच ने हंस कर अनुमोदन किया। चांग तेंग की ओर सब देख रहे थे। उसने पुस्तिका अत्यंत सावधानी से और आराम से पढ़ी और टेबल पर रखी।

उसका पुरबिया चेहरा निर्विकार था।

"तो कुल मिलाकर आप सबको प्लैन पसंद है।" अचानक अंग्रेजी में आवाज आई। किंतु बोलने वाला अदृश्य था। ध्वनिक्षेपण की व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि प्रत्येक को लगता कि आवाज उसी के सामने से आ रही है। "आप कुछ पूछना चाहते हो तो पूछिए। यदि मेरी भाषा समझने में कोई परेशानी हो तो साफ साफ कहिए—मैं आपकी भाषा में बोल सकता हूं।"

"इस प्रयोग में भाग लेना या न लेने का पर्याय हमारे पास है या नहीं?" इल्या ने पूछा।

"नहीं!" उस आवाज ने उत्तर दिया। इस प्रयोग के लिए हमने एक सौ आदमियों को बुलाया था। प्रत्येक परिक्षा में लोग छंटते गए। अंतिम मंजिल तक वह पर्याय आप ही को दिया गया था और काम की साधारण कल्पना भी दी थी।"

"क्या सौ साल तक हम जमी हुई स्थिति में जी सकेंगे?" दलजित ने पूछा।

"यह जोखिम तो आपको उठाना ही पड़ेगा। हमारे वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञ इस बात के प्रमाण दे रहें है कि ऐसी स्थिति में जिया जा सकता है। किंतु अब तक के उनके सारे प्रयोग जानवरों पर—छोटी अवधि के लिए हुए हैं। मनुष्य पर इस तरह का यह पहला ही प्रयोग है।"

"लेकिन उसके लिए अंतरिक्ष ही क्यों ? पृथिवी पर क्या हमें नहीं रख सकते ?" तेंग ने पूछा।

"पृथिवी पर सौ सालों तक कौनसी जगह सुरक्षित रहेगी ? उससे तो अच्छा है, आप शनि के ईद गिर्द आराम से घूमते रहिए। उस तरफ मानवी यानों के आने की संभावना भी कम है। और वैसे आप को ज्यादा चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे, क्योंकि आपके अंतरिक्ष यान की रचना कुछ इस तरह से की है कि शनि तक जाकर सौ चक्कर काट कर जब वापिस आओगे तो पूरे सौ साल हो चुके होंगे।" आवाज ने कहा।

"हम में से कोई अंतरिक्ष यान चलाने में माहिर नहीं है। मैं सिर्फ हवाई जहाज चला सकता हूं। ऐसी स्थिति में हमारा यान पृथिवी पर उतरेगा कैसे ?" विलियमने पूछा।

"यह खतरा भी आपको उठाना ही होगा। वैसे जब तक आप पृथिवी के करीब आने लगोगे, अंतरिक्ष यातायात बहुत बढ़ चुका होगा। कोई न कोई सहायता कर ही देगा। आपका यान पृथिवी के चक्कर लगाने से पहले आप जमी हुई अवस्था से पूर्वावस्था में आ जाएंगे। इसकी भी व्यवस्था यान में कर दी गई है। और फिर आप सब तो बुद्धिमान हैं, बहादुर हैं, क्या करना है, आप खुद ब खुद जान जाएंगे। और यान में भी सारी जानकारी दी हुई है।"

"पृथिवी पर लौटने के बाद हमसे क्या अपेक्षा होगी ?" कार्टर ने पूछा।

"तुम लोग इक्कीसवीं सदी में बीसवीं सदी के प्रतिनिधि बन कर जाओगे। जमाना बदल चुका होगा। उसे सुधरा हुआ अधिक विकसित पाओगे। शायद आपकी बुद्धिमानी उनके लिए फायदेमंद भी साबित हो।"

दलजित ने कल्पना की कि शायद हमारे साथ ऐसा भी हो सकता है : जैसे बहादुरशाह जफर, ड्यूक ऑफ वेलिंग्टन, थॉमस एडम्सन, चार्लस डार्विन, डिकन्स, आगरकर, वासुदेव बलवंत ... को आज़ का जमाना देखने पर, महसूस हुआ होता। और आज के जमाने ने उन्हें किस दृष्टि से देखा होता ? खैर, एक बात से वह संतुष्ट था कि—हम पांचों में से कोई भी असामान्य अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति का नहीं है। ... हम सब सामान्य नागरिक है।

++ ++ ++

स्पेश स्टेशन क्र. ५ के 'रिमोट सेंसर' में लाल बत्ती टिमटिमाने लगी। साथ ही खतरे का संकेत—पीssप पिप पीssप पिप की आवाज—सब दूर आने लगी। मुख्य ऑपरेटरने ने एक बटन दबाया। आवाज रुक गई, किंतू उसके सामने के पांच मीटर स्क्रीन पर एकदम प्रकाश आया। दूसरे ही क्षण प्रकाश की जगह एक चित्र ने ले ली। अंतरिक्ष का एक भाग था वह।

ऑपरेटरने ने दूसरा बटन दबाया। पर्दे पर एक हरे रंग का बिंदू दिखाई देने लगा। थोड़ी देर इधर उधर घूम कर वह एक स्थान पर स्थिर हुआ और ऑपरेटर के बगल

वाले कंप्यूटर में से एक कार्ड बाहर आया। उस पर : यू.एफ.ओ. और कुछ आंकड़े लिखे थे।

यू.एफ.ओ. का मतलब था 'अन्आइडेंटिफाइड फ्लाइंग ऑब्जेक्ट'। वैसे तो अंतरिक्ष के सभी यान कंप्यूटर में दर्ज होते थे—मिलिटरी के गुप्त यान भी। अर्थात् उनकी जानकारी मिलिटरी कोड के बिना कंप्यूटर नहीं देता था। किंतु यू.एफ.ओ. का अर्थ था कोई ऐसा यान जो कंप्यूटर को ज्ञात्त नहीं था।

बीसवीं सदी में उड़न तश्तरियों के बारे में बहुतों से सुना था। किंतु लगभग सबके बयान या तो झूठे साबित हुए या उनकी देखी चीजें पृथिवी के ही जहाज या अंतरिक्ष-यान होते थे। लेकिन जिनकी जांच नहीं हो सकी थी उन्हें यू.एफ.ओ. का नाम दिया गया था—यानी उड़ने वाली वे वस्तुएं जिनको पहचाना नहीं गया।

किंतु २०७७ में ऐसा नहीं था। पृथिवी के आस पास के क्षेत्र के प्रत्येक यान की संपूर्ण जानकारी कंप्यूटर में दर्ज रहती। उड़न तश्तरी की सत्यता परखने में जरा भी वक्त नहीं लगता था। वह तश्तरी पृथिवी की ही है या नहीं—कंप्यूटर तुरंत बता देता।

और आज वही कंप्यूटर कह रहा था कि उसे अज्ञात यान पृथिवी के करीब है।

++ ++ ++

प्रथम विलियम जागा।

किंतु सिवाय दिमाग के शरीक के अन्य किसी भी अवयव पर उसका काबू नहीं था। सिर्फ विचार करने की शक्ति जागृत हुई थी। वह कौन है ? कहां है ? कौनसी परिस्थिति में है ? इनके उत्तर उसे धीरे-धीरे मिलने लगे। इसका मतलब जमी हुई स्थिति के कारण उसकी स्मरण शक्ति पर कोई असर नहीं हुआ था। वह पूर्ववत् थी।

पूर्ववत् ? मगर कितने समय पूर्व ? ... सौ साल ?

उसे सब अविश्वसनीय लग रहा था। इतना समय बीतने का कोई अनुभव उसके पास नहीं था। मैं शायद किसी अंतरिक्ष यान में हूं। थोड़ा हिल डुल सका- तो कंप्यूटर समय की जानकारी दे सकेगा—सेकंड, मिनट, घंटे, दिन, महीना, वर्ष .... शताब्दी भी।

उसे उसकी सूचनाएँ याद आने लगीं। "प्रथम तुम्हारा मस्तिष्क काम करने लगेगा। तत्पश्चात् आंखें, नाक, कान और जीभ ... फिर जबड़ा, गर्दन ... फिर हाथ ... कमर और अंत में पांव।"

उसने आंखें खोलने का प्रयत्न किया। बड़े संघर्ष के बाद पलकें खुलीं तो, लेकिन तुरंत बंद हो गईं। यान के अंदर का अत्यंत मंद प्रकाश भी वे सह न पाईं। "जरा धीरज से काम लो ?"—उसने स्वयं को समझाया।

कुछ घंटों बाद—जो उसे युगों से प्रतीत हुए—वह खड़ा होकर पहले की तरह चलने फिरने लगा। उसके अन्य सहयात्री अभी गहरी नींद सो रहे थे।

विलियम ने यान की जांच शुरू की। उसे जमी हुई स्थिति में वहां लाया गया था। अत: उसने पहले कुछ देखा ही नहीं था। वैसे तो उन पांचों में से किसी ने भी कुछ देखा

नहीं था। हां, 'फ्लाइट सिम्युलेशन' के लिए उपयोग किया गया 'डमी' यान उसने देखा था।

एक वैज्ञानिक होने के कारण सभी कंट्रोलों से वही अधिक परिचित था। प्रत्येक स्थान पर जानकारी देने के लिए 'मैन्युअल्स' रखे थे ... उनका पूरा अभ्यास कर सकूं शायद इसीलिए पहले मुझे जगाया गया हो। उसने अभ्यास शुरू कर दिया। कुल चार घंटे बाद वह यान से, उस योजना से तथा खतरे के समय दी गईं हिदायतों से अवगत हो गया।

यान मंगल से पृथिवी की ओर जाने वाले मार्ग के अंतिम चरण में था। अगले दस दिनों में वह पृथिवी के चक्कर काटने लगेगा। उसने कंप्यूटर की घड़ी देखी। तारीख थी ५ जून २०७७! इन दस दिनों में उसके अन्य सह यात्री जागने वाले थे।

पहली बार उसने भूख को अनुभव किया। यान की रसोई में जमाए गए अन्न के कुछ पैकेट थे। उनमें से एक उसने निकाला और 'माइक्रोवेव' ओवन' में उसे गर्म किया।

अगले दो दिन योजनानुसार बीते। और फिर अनपेक्षित घटनाओं का सिलसिला शुरू हुआ।

यान की रेडियो-इंटरकॉम सिस्टिम में खतरे की निशानी—लाल बत्ती जलने लगी। विलियम ने एक खास बटन दबाया। रेडियो से आवाज आने लगी।

पीssप पिप पीsssप पिप ...

उसने वेवलेंथ बदल कर देखी। केवल पांच छह वेवलेंथ पर ही यह संकेत आ रहा था। रडार-स्क्रीन पर देखा—वहां कुछ नहीं था।

अत: उसने एक वेवलेंथ का चयन करके वैसा ही संकेत उस पर भेजना शुरू किया। शीघ्र ही उसे अंग्रेजी में संदेश मिलने लगे।

''अपना परिचय दो। तुम्हारा यान हमारे स्क्रीन पर है।''

विलियम ने यान का नंबर बताया और बताया कि वह पृथिवी से ही आया है।

''तुम्हारा रिकार्ड हमारे पास नहीं, परंतु तुम चूंकि अंग्रेजी में बोल रहे हो, इसलिए मान लेते हैं कि तुम पृथिवी के ही हो। तुम्हारा यान कम छोड़ा गया था ?''

विलियम ने सारी जानकारी दी। सौ साल पुरानी जानकारी क्या अब उपलब्ध होगी ? किंतु उसे ज्यादा देर रुकना नहीं पड़ा।

''तुम्हारा रिकार्ड हमें मिल गया है—हमारी मेमरी से।'' फिर से आवाज आई। 'मेमरी' यह क्या होता है ? विलियम सोच रहा था। इतनी जल्दी रिकार्ड मिलने पर उसे आश्चर्य हो रहा था। उसने आगे सुना, ''तुम्हारा स्वागत है। आप पांच लोग हैं न ? और उनमें से चार अब भी सो रहे हैं न ? हम आप ही की राह देख रहे हैं। हम तक पहुंचने में आपको चार दिन लग जाएंगे। यदि कोई मदद चाहिए हो तो अवश्य बताइए। हम चार घंटों में तुम्हारे पास पहुंच सकते हैं।''

''अभी तो सब ठीक है। जरुरत पड़ी तो इसी वेवलेंथ पर संपर्क करूंगा।'' विलियम ने कहा। उसे एहसास हो रहा था कि इक्कीसवीं सदी में उनका यान बैलगाड़ी

साबित होगा। संदेश देने के बाद उसने रेडियो बंद कर दिया।

उसे किसी के उबासी देने की आवाज आई। सरदारजी जाग गये थे।

++ ++ ++

विलियम की सारी जानकारी स्पेस स्टेशन क्र. ५ के पास थी। पृथिवी से छोड़े जाने से पहले इस यान की सारी जानकारी दर्ज की गई थी। और सौभाग्य से 'स्पेस आर्काइवज' में वह उपलब्ध थी। अतः यान के पास आते ही उसके अंदर के इलेक्ट्रानिक्स पर स्पेस स्टेशन क्र. ५ ने काबू पा लिया और यान स्टेशन पर ले आए। तब तक सभी यात्री जाग चुके थे।

"बीसवीं सदी के दूतों, आपका स्वागत है!" स्पेश स्टेशन के निदेशक ने उनका स्वागत किया। "जिस संस्था ने आपको भेजा था उसका अस्तित्व अब मिट चुका है। आपको दुनिया बहुत बदली हुई दिखाई देगी। लोग बदल गए हैं, देश बदल गए हैं—परंतु पृथिवी वही है। पिछली सदी की बुद्धिमत्ता आपके पास है—हमें भी उसका उपयोग करना है।"

"युनाइटेड नेशन्स का क्या हुआ?" कार्टर पैटरसन ने पूछा। निर्देशक के थोड़े से उल्लेख ने उसकी उत्सुकता बढ़ा दी थी।

"इस शताब्दी के प्रारंभ में ही उस संस्था का अंत हो गया। कारण कोई युद्ध नहीं था—सदस्य राष्ट्रों के बीच की अदावत बढ़ती गई—संस्था का कोई अंकुश ही न रहा उन पर और प्रबल राष्ट्रों ने अपनी सदस्यता छोड़ दी। आर्थिक परिस्थिति दिन ब दिन खराब होती गई। परिणामतः संस्था ही बंद हो गई।" निदेशक ने स्पष्टीकरण दिया।

"दुनिया में इस तरह की कोई संस्था अब है?" कार्टर ने पूछा।

"नहीं, क्योंकि वैसी समस्याएं ही अब नहीं रहीं। कुछ अलग प्रकार की संस्थाएं हैं—उनके बारे में आपको यथा समय पता चल ही जाएगा। अब आपको पृथिवी पर पहुंचाया जाएगा। वहां अमरिका महाद्वीप के प्रमुख आपके स्वागत के लिए उपस्थित हैं।"

"अमरीका महाद्वीप यानी क्या?"—कार्टर

"पृथिवी तक की अपनी यात्रा में इसे पढ़िए, आपके काफी प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे।" निदेशक के इशारा करते ही उनके सहयोगी पांच टेपरिकार्डर जैसी चीजें उठा लाए। "पढ़ने की यह आधुनिक पद्धति आपके लिए नई है।" हंसते हुए निर्देशक ने कहा, "कैसेट रूप में इसमें सारी जानकारी है—अंग्रेजी में। अंग्रेजी अब दुनिया में सर्वत्र प्रयोग में लाई जाती है। यह कैसेट मस्तिप्क से टर्मिनल द्वारा जोड़ी जाएगी। आप जिस प्रकार टेप रिकार्डर द्वारा एक टेप से दूसरे पर रिकार्डिंग करते हैं, उसी प्रकार सारी जानकारी जल्दी से आपके मस्तिष्क में भर दी जाएगी।"

"तो क्या अब पुस्तकें नहीं होतीं?" चांग तेंग ने पूछा।

"आंखों से पढ़ कर जानकारी प्राप्त करने का तरीका बहुत क्रूड और इनेफिशियंट था। फिर इसका भी तो कोई भरोसा नहीं होता था कि पढ़ी हुई सारी जानकारी दिमाग में घुस ही जाएगी। किन्तु यह इलेक्ट्रानिक प्रणाली शतप्रतिशत यशस्वी हुई है छोटे बच्चे

जल्दी जल्दी सीखते हैं और बड़ों को भी वांछित ज्ञान तुरंत मिल जाता है। फिर पुस्तकें पढ़ेगा कौन ? कुछ पुरानी संस्थाएं हैं, जो आज भी पुस्तकें प्रकाशित करती हैं। किन्तु उनकी मांग ज्यादा नहीं है।''

''तो पहले वाले वे बड़े बड़े ग्रंथालय कहां गए ? ब्रिटिश म्युजियम का पुस्तकालय, ऑफ्स्फोर्ड का बॉडलेयन, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, मास्को का बड़ा पुस्तकालय...''

चांग तेंग की सूची को बीच ही में काटते हुए निदेशक ने कहा, ''उन सबका पुरातत्वीय संग्रहालय में रूपांतरण होगया है। पुरानी किताबें वहीं मिलती हैं।''

स्पेश-शटल तेजी से पृथिवी की ओर जा रहा था, किन्तु अंदर बैठे यात्रियों को उसकी गति का थोड़ा भी अहसास नहीं होरहा था। शटल स्वयंचलित था। प्रस्थान तथा गंतव्य स्थानों से उसके मार्ग का संपूर्ण नियंत्रण किया जा रहा था। पांचों यात्री अपने-अपने विचारों में खोये थे।

चांग तेंग सोच रहा था, इस यान को कौनसी शक्ति चला रही है ? निश्चय ही बीसवीं सदी के राकेटों को चलाने वाला ईंधन इसमें नहीं था। फिर इसमें कौनसा ईंधन काम में लाया जाता होगा ? स्पेस स्टेशन क्र. ५ से निकले यान पीछे गंदी वायु नहीं छोड़ते थे। ''अरे ! इस बारे में सोचने की क्या आवश्यकता है ? उत्तर तो अपने पास है ही।'' मुस्कुराते हुए वह खुद से बोला। टेपरिकार्डर ने जवाब कभी का उसके दिमाग में भर दिया था। उसने एक विषय पर ध्यान केन्द्रित किया : ऊर्जा का व्यवहार्य रूप ... और दिमाग में भरी जानकारी उसके सामने आ गई।

ऊर्जा का मूल स्त्रोत था सूर्य। थर्मोडाइनैमिक्स का सिद्धांत उसे याद आया—उन्नींसवीं सदी का। हीट इंजन्स—उष्णता पर चलने वाले इंजन—उष्णता का उपयोग काम के लिए करते हैं। केल्विन एवं कार्नो ने ये सिद्धांत रखे थे। उच्च तापमान की उष्णता के स्त्रोतों से उष्णता निकाल कर ठंडी जगह पहुंचाकर उस उष्णता को काम में लाया जा सकता है। किंतु इन इंजनों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए यह जरूरी होता है कि स्त्रोत का तापमान ठंडी जगह के तापमान से कई गुना अधिक—अधिकतम हो।

इक्कीसवीं सदी के मानव ने इस क्षेत्र में काफी सफलता हांसिल कर ली थी। उष्णता का स्त्रोत सूर्य था। पृष्ठभाग का तापमान लगभग ५५०० सेल्सियस। बीसवीं सदी के अंत तक जिस कल्पना को प्रत्यक्ष में लाने की थोड़ी सी शुरूआत हुई थी, वह आज यहां पूर्णत: साकार हो गई थी। लेकिन यह सब कैसे संभव हुआ ? तेंग को और भी जानकारी मिली, किंतु उसके वैज्ञानिकी दिमाग के लिए भी वह बड़ी भारी पड़ रही थी। उसका सर फटने लगा। उसने अपने इस अनुभव से कल्पना की कि 'उन्नींसवीं सदी के वैज्ञानिक को भी यह समझने में कितने कष्ट हुए होंगे कि एटॉमिक रिएक्टर कैसे चलता है ? मुझे विज्ञान के पाठ पुन: याद करना चाहिए ... धीरे धीरे ...।'

दलजित सिंह सोच रहा था : आजकल के देश कौनसे शस्त्रों का प्रयोग करते हैं ? उत्तर मिला : परमाणु अस्त्र तो अब बहुत पुराने हो चुके हैं। अब उनसे कहीं अधिक भयंकर अस्त्रों का निर्माण हुआ हैं। किसी वस्तु के सभी परमाणुओं का विश्लेषण करने

वाली या उसे विभाजित कर—उसके परमाणुओं को इधर उधर फैलाने वाली इस शक्ति पर किसी भी परमाणु शक्ति से अधिक नियंत्रण रखा जाता है। इन्हें शुरू करने के लिए ऊर्जा का बहुत बड़ा स्त्रोत आवश्यक होता है। प्रत्येक महाद्वीप के पास एक ही ऐसा स्त्रोत है और उसे शुरू करने की शक्ति या जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति की नहीं है ...। गलती से या क्रोध में, या किसी सनक में उसका उपयोग नहीं होगा।

इल्या मोरोविच दुनिया की राजनैतिक स्थिति के बारे में जानना चाहता था। हम सब अमरीका महाद्वीप की ओर जा रहे हैं .... क्या मतलब था इसका ? उसने इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और उसे आवश्यक जानकारी मिल गई। उसकी आंखों के सामने दुनिया का नक्शा उभर आया। लेकिन उस पर केवल चार महाद्वीप थे। क्रमांक एक—उत्तर—दक्षिण अमरीका। क्रमांक दो—रूस और सायबेरिया समेत यूरोप। क्रमांक तीन—चीन, जापान, भारत, दक्षिण पूर्ण एशिया तथा आस्ट्रेलिया। क्रमांक चार—मध्य पूर्व एशिया और अफ्रीका।

इन महाद्वीपों का आधार धर्म या जाति-भेद नहीं था। यह विभाजन अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोन से किया गया था। प्रत्येक महाद्वीप का व्यापार, तंत्र विज्ञान तथा जीवन स्तर उसके पास उपलब्ध प्राकृतिक स्त्रोतों पर आधारित था। प्रगति के स्तर के अनुसार इन महाद्वीपों की वरीयता निर्धारित की गई थी। महाद्वीप-१ और २ पूर्णत: सौर ऊर्जा पर निर्भर थे। ३ और ४ ने थोड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा का उपयोग प्रारंभ किया था, किंतु वे अब भी कोयला, पेट्रोल तथा परमाणु शक्ति पर ही निर्भर थे। उनका जीवन स्तर महाद्वीप-१ और २ से थोड़ा पिछड़ा हुआ था लेकिन फिर भी बीसवीं सदी के किसी भी राष्ट्र के जीवन-स्तर से उन्नत था।

और विलियम मॉन्क्रीफ यान के निर्दिष्ट मार्ग का नक्शा देख रहा था। कुछ भाग काले बिंदुओं से भरा था और वहां 'प्रवेश बंद' लिखा था। अंतरिक्ष के इस भाग में यानों के जाने पर पाबंदी क्यों थी ?

क्योंकि वहां सौर—शक्ति—केन्द्र थे। बचपन मे लेन्स पर सूर्य प्रकाश केन्द्रित करके कागज जलाने का प्रयोग उसे याद आया। उसी सिद्धांत पर अंतरिक्ष में कई स्थानों पर विशाल 'रिफ्लेक्टर' बिठाए गए थे। वहां केन्द्रित सूर्य-प्रकाश की शक्ति का उपयोग किया जा रहा था।

विलियम को याद आया कि बीसवीं सदी में भी वैज्ञानिकों ने सौर शक्ति-केन्द्रों का विचार किया था। किंतु अंतरिक्ष में रिफ्लेक्टर बिठाने योग्य विकसित तकनीक उनके पास नहीं थी। वही बात आज मानव ने साकार कर दिखाई थी।

"अंतरिक्ष अब पहले की तरह साफ नहीं रहा...।" विलियम खुद से बुदबुदाया।

कार्टर पैटरसन को मूलभूत वैज्ञानिक प्रगति के बारे में जिज्ञासा थी। उसके जीव-विज्ञान के प्रयोग रोक दिए गए थे। अब मानव कहां तक पहुंचा है ? क्या जीवन का रहस्य वह जान गया था ?

नहीं ! किंतु उसने जबरदस्त उन्नति की थी। अप्राकृतिक उपायों से जीव-सृष्टि का निर्माण तो वह नहीं कर पाया था, किंतु उस मंजिल के बहुत पास आ गया था।

अनुमान था कि वह दस सालों में इस समस्या पर विजय पा लेगा। हर तरह की बीमारियों पर उसने विजय पा ली थी। कैन्सर जैसी बीमारियों की भी रोकथाम करने में वह सफल हो गया था।

यह सब तो ठीक था, किन्तु अब उसके सामने नई समस्याएं उभर आईं थीं। बीमारियों पर विजय पा लेने से मनुष्य की औसत आयु-सीमा बढ़नी चाहिए थी। किन्तु प्रत्यक्ष में उलटा हो रहा था। महाद्वीप-१ और २ में मनुष्य की औसत आयु-सीमा ५५ रह गई थी। तीन और चार पर वह ६५ थी। फिर भी प्रति वर्ष वह कम ही होती जा रही थी। ऐसा क्यों हो रहा है, इसका कोई उत्तर नहीं मिल रहा था। किसी मशीन की तरह अचानक ही मनुष्य का जीवन समाप्त हो जाता था। दूसरी बड़ी समस्या थी जनसंख्या की। पिछले पचास वर्षों में मनुष्य की प्रजनन क्षमता कम हो गई थी। विश्व-जनसंख्या के बारे में कुछ डरावनी भविष्यवाणियां कार्टर को याद आई ... लेकिन वे गलत साबित हुई थीं। २०७७ में विश्व जनसंख्या केवल ६ अरब थी और दिनोदिन वह कम ही हो रही थी। जीवविज्ञान के वैज्ञानिकों को इसके कारण का पता नहीं चल रहा था। जनसंख्या यदि इसी तरह कम होती गई तो और दो शताब्दियों में पृथिवी मनुष्यहीन हो जाएगी ... कार्टर के रौंगटे खड़े हो गए थे।

पांचों यात्री अपने अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढ रहे थे। कुछ उत्तर सुखकारक थे, आशादायक थे तो कुछ डरावने और निराशाजनक।

"पृथिवी पर आपका स्वागत है। बाहर अमरीका महाद्वीप के प्रमुख आप की प्रतीक्षा कर रहे है।"

यात्रियों की विचार श्रृंखला टूटी। सौ साल की उनकी यात्रा समाप्त हो गई थी।

++ ++ ++

"कुछ भी कहो यार ! मुझे तो सौ साल पुराना जीवन ही अच्छा लगता !" दलजित ने कहा। पृथिवी पर सब जगह उनका भरपूर स्वागत हुआ था। भिन्न भिन्न मार्गों से तीन महीनों में वे चारों महाद्वीप हो आए थे। चन्द्रमा पर बसी बस्ती को देखने कुछ ही दिनों में वे जाने वाले थे।

सौ साल पहले इस यात्रा पर वे निकले थे तो उनके कोई सगे संबंधी नहीं थे। अकेले जीने के वे आदी हो चुके थे और इसीलिए वे इस यात्रा के लिए तैयार हुए थे। उनके दूर के संबंधियों के वंशज हालांकि जीवित थे, किंतु उनसे अब संबंध जोड़ने की उन्हें इच्छा नहीं थी। वैसे भी इक्कीसवीं सदी में रहन-सहन यंत्रवत् हो गया था। पारिवारिक जीवन, आपसी आत्मीयता, लंबे समय तक टिकने वाली मित्रता अब नहीं रही थी। दलजित सिंह जैसे फौजी आदमी को यह अजीब लग रहा था।

"नया नौ दिन, पुराना सौ दिन," वाली कहावत हर व्यक्ति को गुजरे जमाने की बदलते जमाने के साथ तुलना करते समय याद आती है।"—कार्टर ने कहा।

"पिछली शताब्दी में गरीबी, अपराध आदि कारणों से मनुष्य एक दूसरे का द्वेष करते थे। ये दोष पूरी मनुष्य जाति को सताते थे। अब वे कारण तो नहीं हैं, किंतू फिर

भी मनुष्य सुखी नहीं दिखाई देता।'' विलियम ने कहा।

''मुझे भी यही लगता है।'' इल्या ने बात की पुष्टि की। ''मैं देख रहा हूं कि यहां मनोरंजन के कई साधन हैं, सफर के लिए कोई परेशानी नहीं है, शारीरिक श्रम है ही नहीं। लेकिन फिर भी मनुष्य किसी निरंतर बेचैनी का शिकार है।''

''सच पूछो तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। प्राकृतिक विपत्तियों से जूझने में, उन पर विजय पाने में आज तक मनुष्य को बहुत संघर्ष करना पड़ा। यही संघर्ष जीवन को दिलचस्प बनाता था। अब न तो वो विपत्तियां हैं और न ही वह उत्साह।'' तेंग ने राय दी।

''तेंग की बात मुझे भी जचती है।'' कार्टर ने कहा, ''मनुष्य जाति धीरे धीरे कम हो रही है। वैज्ञानिकों को कारण पता नहीं चल रहा। मुझे तो लगता है, 'सर्वाइवल इन्स्टिंक्ट' ही खत्म होती जा रही है। जीवन-बोध समाप्त होने लगा है। आज मनुष्य समाज में जीने के प्रति कोई होड़ नहीं, कोई उत्साह नहीं। यही जनसंख्या कम होने का बुनियादी कारण है। आज के जीव-वैज्ञानिक कारण खोज रहे हैं किंतु इस मुख्य कारण को अनदेखा कर रहे हैं। किसी भी प्रकार के जीव के अस्तित्व में, उसकी मजबूती में प्राकृतिक ताकद होती है। वही इस यंत्रवत् जीवन ने नष्ट कर दी है। एक असन्तुलन पैदा हो गया है।''

''किंतु मुझे तो एक नया खतरा नजर आ रहा है—और यदि जल्दी ही कुछ न किया गया, तो परिणाम भी सामने आ जाएंगे।'' विलिमय ने कहा। अन्य लोगों की प्रश्नार्थक मुद्रा देख कर उसने आगे कहा, ''महाद्वीप-१ और २ पूर्णतः सौर-शक्ति पर निर्भर करते हैं। यही नहीं, उनके सभी शक्ति-केन्द्र अंतरिक्ष में हैं और उनका सारा जीवन ही उस पर आधारित है। फर्ज करो, वे बंद पड़ गए, तो ? हम जानते ही हैं कि पिछली सदी में सभी सुख-सुविधाओं से लैस फ्लैटों में रहने वाला आदमी बिजली और गैस पर किस क़दर निर्भर करता था। बीजली बंद तो लिफ्ट बंद, चारो तरफ अंधेरा, फ्रिज, डीप फ्रीज लगा पिघलने-बिजली आने तक वह कितना परेशान हो जाता था। वही परिस्थिति आज लगभग पूरी दुनिया में हो गई है और मेरे हिसाब से आज स्थिति ज्यादा संजीदा है।''

''वह कैसे ?''—दलजीत ने पूछा।

''मान लो, सौर-शक्ति-केन्द्र बंद पड़ जाते हैं। चूंकि उन्हीं पर सभी व्यवहार निर्भर करते हैं, सारी दुनिया का जनजीवन ठप्प होने की स्थिति होजाएगी। और यह स्थिति थोड़े समय के लिए नहीं, बल्कि हमेशा के लिए होगी ! इसका कारण यह है कि बंद पड़े केंद्रों को ठीक करने वाले यंत्र कौनसी शक्ति पर चलेंगे ?''

''पर इन केंद्रों में खराबी आएगी कैसे ? और सबके एक साथ खराब होने की संभावना भी कम ही है।'' तेंग ने कहा।

''हां-हां, ठीक है। किंतु एक परिस्थिति है जब यह खराबी उत्पन्न हो सकती है।'' विलियम ने कहा ''वह परिस्थिति है ... विश्व युद्ध !''

''विलियम की बताई संभावना कम जरूर है, किंतु उससे इंकार नहीं किया जा

सकता।" दलजीत ने कहा, "युद्ध यानी केवल शस्त्रास्त्रों की ही तो बात नहीं है। एक दूसरे का संहार करने योग्य शस्त्र सभी के पास हैं। मैंने इस बारे में थोड़ा अध्ययन किया है! चारों महाद्वीपों ने युद्ध के एक दूसरे प्रकार पर भी विचार किया है। वह है शत्रु के सभी शक्ति-केन्द्रों का नाश। इससे प्राण-हानि नहीं होगी, किंतु शत्रु बिल्कुल निढाल हो जाएगा। ऐसे युद्धों में महाद्वीप-१ और २ पूर्णतः धराशायी हो जाएंगे। वैसे महाद्वीप-३ और ४ की स्थिति इतनी बिकट नहीं होगी, क्योंकि उनके केन्द्र छोटे और इधर उधर फैले हुए हैं। और वे सभी केन्द्र पूर्णतः सौर-ऊर्जा पर निर्भर नहीं करते हैं—कुछ तो अब भी परमाणु-शक्ति, पेट्रोल, कोयला आदि पर चलते हैं। किंतु उन सब पर एक कंप्यूटर नियंत्रण रखता है, और वह कंप्यूटर ही यदि बंद पड़ जाए, तो..."

"किंतु ऐसा विश्व-युद्ध होने की संभावना ही नहीं है, क्योंकि चारों महाद्वीपों के आपसी संबंध बहुत अच्छे हैं। केवल व्यापारिक दृष्टि से वे अलग हैं। पिछले तीन महीनों से यहां की राजनीतिक परिस्थिति का मैं निरंतर अध्ययन कर रहा हूं।" इल्या ने कहा।

इल्या की बातें तो ठीक थीं, लेकिन उसका निष्कर्ष गलत था।

तत्पश्चात् तीन महीने गुजर गए। पांचों इक्कीसवीं सदी में सामान्य रूप से जीने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे। और उसमें वे सफल भी हो गए थे। किंतु वे एक दूसरे काल से, दूसरी संस्कृति से आए हैं इसे वे भुला नहीं पाए थे। विलियम ने निवास के लिए महाद्वीप-१ को चुना था। इल्य ने २, दलजित और तेंग ने ३ तो कार्टर पैटरसन ने महाद्वीप-४ में अपना निवास बनाया था। फिर भी हर सप्ताह वे एक दूसरे से मिलते और विचार विमर्श किया करते थे।

एक दिन विलियम दलजित के घर गया। बड़ा चिंतित प्रतीत हो रहा था। दलजित के कुछ पूछने से पहले ही वह कहने लगा,

"मैंने महाद्वीप-१ के शक्ति-केन्द्रों का काफी अध्ययन किया है। मुझे तो लगता है भविष्य काफी खतरे में है। यह सभी केन्द्र पृथिवी के साथ ही घूमते हैं और सूर्य-प्रकाश के मार्ग में आने पर शुरू हो जाते हैं। सभी दिशाओं में ऐसे केन्द्र है। इसलिए कोई न कोई केन्द्र निरंतर काम करता ही रहता है।"

"ऐसे कितने केन्द्र है ?" दलजित ने पूछा।

"महाद्वीप-१ के पास करीब २४ केन्द्र हैं। प्रत्येक केन्द्र आस-पास के छोटे केन्द्रों पर नियंत्रण रखता है। छोटे केन्द्र कई हैं, लेकिन वे सभी बड़े केन्द्रों पर निर्भर करते हैं। अतः बड़े केन्द्र बंद होते ही छोटे केन्द्र भी बंद पड़ जाते हैं। इन २४ केन्द्रों पर ध्यान रखने वाला कंप्यूटर पृथिवी पर महाद्वीप-१ में है।

"सूर्यप्रकाश में आने वाले केन्द्र का शुरू रहना आवश्यक है। यदिं वह बंद हो जाए तो कम्प्यूटर उसका कारण ढूंढ निकालता है। अनेक अंभावित कारणों में से, कंप्यूटर सही कारण का पता लगाता है। तत्पश्चात् केन्द्र को दोषमुक्त करने की योजना बनाई जाती है। तब तक, सूर्यप्रकाश के तहत अन्य केन्द्र अपनी शक्ति बढ़ाकर अस्थायी रूप से काम चला लेते हैं।"

"दो सवाल।" दलजित ने कहा।

"पूछो।"

"नंबर एक : अस्थायीयानी कितनी देर ?"

"किसी भी दोष को हटाने में एक घंटे से अधिक समय नहीं लगता। इसलिए एक घंटे तक ऊर्जा देने का अतिरिक्त काम कोई भी केन्द्र कर सकता है।"

"इसका मतलब, इससे अधिक समय हो जाने पर केन्द्र बंद हो जाएगा। लेकिन तब तक कोई न कोई केन्द्र तो प्रकाश में आ ही जाएगा।" दलजित हिसाब लगा रहा था। "किंतु चलने वाला केन्द्र यदि अंधेरे में आ जाएं ? फिर तो आफत आ जाएगी !"

"परंतु ऐसा होना असंभव है, क्योंकि घंटे के अंदर-अंदर कोई भी खराबी ठीक कर ही ली जानी है।" विलियम ने कहा। "दूसरा प्रश्न ?"

"कंप्यूटर यदि दोष का पता न लगा सका, तो ?"—दलजित

"यही प्रश्न मैंने वहां के वैज्ञानिकों से भी पूछा था। किंतु वे सभी कुत्सित हंसे। उनका कहना था कि कंप्यूटर केन्द्र के चप्पे-चप्पे से परिचित था। कंप्यूटर सभी खराबियां जानता है, सिवाय......"

"सिवाय क्या ?"

"शत्रु यदि जान बूझकर किसी केन्द्र में खराबी पैदा कर दे,तो ! किंतु वैज्ञानिकों को भरोसा है कि ऐसी स्थिति नहीं आएगी और भूले से कभी आती भी है,तो उस पर उपाय भी बड़ा जालिम है।"

दलजित को अब भी सन्तोष नहीं हुआ था। यह देखते हुए विलियम ने बात और स्पष्ट की। "प्रत्येक महाद्वीप के केन्द्र पर नियंत्रण रखने के लिए एक कंप्यूटर होता है। किस महाद्वीप ने केन्द्र में खराबी उत्पन्न की है इसका पता शायद न लगे।इसलिए अन्य तीन महाद्वीपों के कम्प्यूटरों को निष्क्रिय करने की योजना उनके पास है, जिससे उस महाद्वीप के केन्द्र अपने आप ही बंद पड़ जाएंगे। किन्तु यह योजना आत्मघात करने वाली है, क्योंकि प्रत्येक महाद्वीप के कम्प्यूटर में प्रत्याक्रमण की एक 'योजना है। 'मरने' से पहले प्रत्येक कम्प्यूटर उसे निष्क्रिय करने वाले कम्प्यूटर का नाश कर सकता है।"

"यानी सभी कंप्यूटर निष्क्रिय हो जाएंगे !" दलजित ने कहा।

"हां ! और उनके साथ ही यह सुचारु रूप से चलने वाला जन-जीवन समाप्त हो जाएगा। ऐसी नौबत अपने पर न आए इसलिए दूसरे महाद्वीप का केंद्र बंद करने की कोई हिम्मत नहीं करेगा। प्रथम हमला करने वाले कंप्यूटर को आश्वस्त करना पड़ता है कि हमले के बाद उसका नाश नहीं होगा।" विलियम ने बताया।

"और जैसा कि तुमने बताया है, कंप्यूटर को इस तरह आश्वस्त करना असंभव है।"

"यही कारण है कि हमला होने की संभावना लगभग शून्य है।" विलियम का कहना था कि, "लगभग इसलिए कहा, क्योंकि कंप्यूटर में अपने आप ही कोई खराबी पैदा होती है, और उसका तर्कशास्त्र गड़बड़ा जाता है,तो शायद ऐसा हो सकता है और इसीलिए कंप्यूटर में कोई खराबी पैदा न हो इसकी बहुत दक्षता बरती जाती है।"

"भई,मैं तो यह सब सुन कर बड़ा बेचैन हूं। इतनी अधिक यंत्राधीनता ठीक नहीं है।" दलजित ने कहा।

"क्योंकि तू पिछली सदी का है। तुम्हारी तरह मैं भी चिंतित हूं। महाद्वीप के कंप्यूटर विशेषज्ञों को मैंने अपनी चिंता बताई तो लगे हंसने। कहने लगे, 'बीसवीं सदी के तुम्हारे यंत्र खराब होते होंगे। यहां किसी खरावी की कोई संभावना नहीं है।' वैज्ञानिकों का ऐसा मानना मैं समझ सकता हूं। लेकिन हैरानी की बात है कि आप लोगों की भी यही धारणा है। हमारी चिंता को कौन पूछता है ?"

"तो फिर हमें—हम पांचों को ही कुछ करना होगा।"

"बिल्कुल मेरे मन की बात कह दी तुमने, दलजित !" उसकी पीठ थपथपाते हुए विलियम ने कहा। "परंतु हम क्या कर सकते हैं ?"

इस परिप्रेक्ष्य में मैंने कुछ सोचा है। तेंग और कार्टर को आने दो, फिर बताता हूं।" दाढ़ी सहलाते हुए सरदारजी बोले। इल्या का तंत्र-विज्ञान हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

++ ++ ++

२०७७ की बंबई कुलाबा से लेकर बोरिवली और कल्याण तक फैली थी, और जनसंख्या थी सिर्फ ३० लाख। सौ साल पहले की भीड़ भाड़, एक दूसरे से सटे हुए पुराने घर, खचाखच भरी रेल गाड़ियां और बसों के लिए दौड़ने वाले लोग .... इनका कोई भी निशान इस बंबई में नहीं था। मुख्य परिवहन जमीन के नीचे मोनो-रेल थी। इस मोनो-रेल में न कोई आवाज थी, न कोई धक्का-मुक्का और न ही कोई चालक था। प्रत्येक स्टैशन पर एक छोटी सी बस्ती थी जहां लोगों के घर, तथा व्यापारियों की दुकानें इत्यादि थे। जमीन के पृष्ठभाग पर सड़कें थीं जहां बिजली से चलने वाली बस जैसी गाड़ियां चला करती थीं। थोड़ी-थोड़ी दूरियों के लिए चलने वाली इन गाड़ियों में चालक होते थे लेकिन कोई कंडक्टर नहीं थे, क्योंकि यह यात्राएं मुफ्त हुआ करती थी। लोगों के कार्यस्थल ज्यादा से ज्यादा दो तीन मील की दूरी पर होते थे। बच्चों के लिए उनकी बस्ती में ही स्कूल थे। वैसे महाद्वीप ३ महाद्वीप १ से पिछड़ा हुआ था। महाद्वीप १ में बच्चे अपने घरों में ही पढ़ते थे ! घर में टी.वी. पर ही शिक्षक उन्हें पढ़ाते। बच्चों के प्रश्नों को वे सुन सकते थे—यही नहीं प्रश्नकर्त्ता भी शिक्षक को उसके टी.वी. पर्दे पर दिखाई देता था। बंबई के कुछ विभागों में ही यह पद्धति प्रचलित ही रही थी, अन्यत्र नहीं।

दलजित सिंह और चांग तेंग आकाश यान से उतरे और सुरंग-रेल की ओर चल पड़े। उस रेल-स्थानक का नाम था उरण। कुलाबा की ओर जाने वाली रेल में वे चढ़े और शहर के बिल्कुल दूसरे सिरे पर 'हौलिडे कैंप' पर उतरे। पहले यहां सैनिकी बस्ती थी। आज भी कुछ इलाका 'टॉप सिक्योरिटी' वाला था।

स्टेशन से बाहर आते ही दोनों ने इसी इलाके की ओर चलना शुरू किया। वहां बस

नहीं जाती थी। सड़क बिल्कुल निर्मनुष्य थी, क्योंकि सामान्य आदमी को वहां प्रवेश नहीं था।

"सौ साल पहले यहां चार पांच मंजिली इमारतें थीं। मैं वहां के एक फ्लैट में कुछ साल रहा भी था।" दलजित सिंह ने कहा। अब इमारतों की जगह खुला मैदान था।

"तुम्हारी एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक संस्था यहां थी न ? भला क्या नाम था उसका ?" तेंग याद करने की कोशिश कर रहा था।

"टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ फन्डामेंटल रिसर्च" दलजित ने बताया।

"बिल्कुल ठीक-टाटा इन्स्टिट्यूट ! मैं कभी वहां गया तो नहीं था, किंतु उसकी सारी जानकारी हमारे पास थी।" तेंग ने बताया।

सरदारजी हंसते हुए खुद से बुदबुदाए, "हिंदी-चीनी भाई-भाई !"

"क्या कहा ?" तेंग ने पूछा।

"कुछ नहीं !" सौ सालों में सब कुछ कितना बदल चुका था।

टाटा इन्स्टिट्यूट तो अब नहीं थी लेकिन जाना उन्हें उसी तरफ था। उन्हें जो कंप्यूटर चाहिए था वहीं था। उस जगह के पास आते-आते तेंग ने पूछा, "हमने शांघाई में जो किया वही यहां करना है न ?"

दलजित ने हां भरते हुए गर्दन हिलाई। युद्ध-भूमि पर जाते समय जो उत्साह और उत्तेजना उसमें होती उसी को आज वह पुनः अनुभव कर रहा था।

"हां। जो शांघाई में किया, वही बंबई में करना है।"

++ ++ ++

कंप्यूटर चाहे कितना ही उन्नत हो गया हो, लेकिन था तो वह बेगार ही। बीसवीं सदी के लोग यह जानते थे, क्योंकि उन्होंने ही कंप्यूटर को जन्म दिया था। पहला मॉडेल बहुत ही भद्दा था। छिद्रों वाले कागज के टेप पर सही जगह पंच कर उसे सूचना देनी पड़ती थी। फिर टेप की जगह कार्डों ने ली। आंकड़ों के 'कोड़' द्वारा सूचना देना जरूरी नहीं रहा। उस को सीधे–सीधे जोड़, गुणा की सूचना दी जा सकती थी। आगे चल कर, इलेक्टॉनिक्स में जैसे-जैसे विकास होता गया, कंप्यूटर से उसका मेल करना सरल होता गया। साथ ही कंप्यूटर की ग्रहण-क्षमता, कार्य-कुशलता और गति भी बढ़ती गई। जो काम, इंसानी दिमागी क्षमता से परे था उसे कंप्यूटर सहज रूप से करने लगा। और मनुष्य का उस पर विश्वास भी यहीं से बढ़ता गया।

धीरे-धीरे मनुष्य यह भूलने लगा कि कंप्यूटर आखिर एक बेगार ही है। उसके 'दिमाग' में विकल्प भरने का काम मनुष्य को करना पड़ता है। एक बार विकल्प भर दिए जाएं—फिर वो दस हों या दस लाख—कंप्यूटर उनका बराबर विचार करेगा। किंतु यदि दस विकल्प हों, तो कंप्यूटर ग्यारहवां नहीं ढूंढ सकता। यह बात मनुष्य भुला बैठा।

कंप्यूटर की यह बेगारी मनुष्य को भारी धक्का पहुंचाने वाली थी।

++ ++ ++

१५ जून २०७८ को सूर्य के पृष्ठभाग में थोड़ा परिवर्तन हुआ। सूर्य के अंतरंग में अणुगर्भीय प्रक्रियाएं होती रहती हैं। उनका उसके बाहरी अंग पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता। अंतरंग की प्रक्रिया से निर्माण होने वाली ऊर्जा बाह्यांग ो बाहर जाती है, बस। किन्तु बाह्यांग की सतह के पास चुंबकीय क्षेत्र के कारण कुछ घटनाएं होती हैं। जैसे सूर्य के धब्बे, कभी तेजस्वी दिखाई देने वाले भाग, सूर्य की विश्वकिरणें, थोड़ी देर के लिए उठती ज्वालाएं आदि सब बाह्यांग में होने वाली घटनाओं के कारण दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त सूर्य से सौरवात (सोलर विंड)—यानी विद्युत्‌भार वाले मूलकणों की हवा—भी निकलती है।

पृथिवी इन सब घटनाओं से दूर तो है, किन्तु अलिप्त नहीं है। पृथिवी के इर्द-गिर्द फैला वायुमण्डल उस सौर-वात से उसका रक्षण करता है।

मनुष्य द्वारा निर्मित सौर-केन्द्र इस वायुमण्डल के बाहर थे।

सूर्य की सतह पर हुए परिवर्तन कुछ ही क्षणों के लिए थे। उससे बहुत बड़ी ज्वाला निकली और साथ ही सौर-वात में यकायक बहुत वृद्धि हो गई। सारा खेल चन्द मिनटों का ही था।

किन्तु महाद्वीप-१ और महाद्वीप-२ के सारे सौरशक्ति-केन्द्र बंद पड़ गए।

कम्प्यूटर हड़बड़ा गए। यह खराबी किन किन कारणों से हो सकती है इसके सारे विकल्प उन्होंने खोजे। किन्तु इस खराबी के कारणों वाला कोई विकल्प उन्हें नहीं मिला। मिलता भी कैसे ? उनके दिमाग में विकल्प भरने वाले मनुष्य ने इस संभावना की कल्पना ही जो नहीं की थी। सौर-बात में वृद्धि मनुष्य की कल्पना से बाहर की चीज थी। बल्कि कम्प्यूटरों को तो यही बताया गया था कि 'सौर-वात से सौरशक्ति-केन्द्रों को कोई खतरा नहीं है।'

कम्प्यूटर-१ ने निर्णय लिया कि स्थिति आपात्कालीन है। ऐसे में तो अंतिम विकल्प ही लागू पड़ता है। उसी समय कम्प्यूटर-२ ने भी यही निष्कर्ष निकाला।

दोनों ने आपस में सन्देश का आदान-प्रदान किया कि महाद्वीप-३ और महाद्वीप-४ के कम्प्यूटरों को निष्क्रिय कर दिया जाए।

दूसरे ही क्षण पृथिवी का अतिविकसित मनुष्य जीवन ब्रेक लगी गाड़ी की भान्ति रुकने लगा।

चारों महाद्वीपों का ऊर्जा-प्रवाह थमने लगा। आपात्काल के लिए जमा कर रखी ऊर्जा भी घटने लगी। वैज्ञानिक जानते थे कि यह ऊर्जा अधिक से अधिक दो दिनों के लिए ही पर्याप्त थी।

अपवाद सिर्फ महाद्वीप-३ और ४ के छोटे शक्ति-केन्द्रों का था जो नियमित रूप से चल रहे थे।

महाद्वीप-३ का मुख्य कंप्यूटर दिल्ली में था। वह निष्क्रिय हुआ तो उसके मातहत पीकिंग, शांघाई, बैंकॉक, सिडने, बंबई के कंप्यूटर और अंतरिक्ष के शक्ति-केन्द्र भी बंद होने चाहिए थे। बंबई और शांघाई के कंप्यूटरों को छोड़ सभी जगह ऐसा ही हुआ था। किन्हीं कारणों से इन दो कंप्यूटरों पर दिल्ली ने अपना नियंत्रण खो दिया था। इसीलिए

दक्षिण भारत के शक्ति केंद्र सुचारु रूप से चल रहे थे !

महाद्वीप-४ के कंप्यूटरों के बारे में भी यही हुआ था। काहिरा स्थित महाद्वीप-४ का मुख्य कम्प्यूटर बंद था, लेकिन बगदाद और प्रिटोरिया के छोटे कंप्यूटर अभी चल रहे थे। शेष सभी भागों के कंप्यूटर बंद पड़ चुके थे। अत: दक्षिण अफ्रीका और मध्य पूर्व के शक्ति केन्द्र काम दे रहे थे।

तभी बंबई दूरदर्शन से एक महत्वपूर्ण समाचार के प्रसारण की सूचना दुनिया में दी गई। समाचार प्रसारण का समय था दोपहर १२.०० बजे ग्रीनिच मीन टाइम १७ जून २०७८। सब लोग यह समाचार देख सके इसलिए चारों महाद्वीपों में अस्थाई रूप से बिजली दी जाने की सूचना दी गई। ऊर्जा के अपर्याप्त भंडार से यह प्रावधान करने लायक इस समाचार में क्या होगा ? सबकी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।

ठीक समय पर टी.वी. पर्दे पर कार्यक्रम शुरू हुआ। पांच व्यक्ति सामने आए। उन्होंने अपना परिचय दिया—दलजित सिंह सौंध, विलियम मॉन्क्रीफ, कार्टर पैटरसन, इल्या मोरोव्हिच और चांग तेंग। सबकी ओर से विलियम ने बोलना शुरू किया।

"पिछली शताब्दी में हम सब (पांचों) इसी पृथिवी पर पले थे। कम तापमान में जीवन की गति धीमी हो जाती है और इसलिए मनुष्य शरीर को जमा कर क्या जीवन काल बढ़ाया जा सकता है ? यह प्रयोग हम पर किया गया था। हमारी शारीरिक आयु में कोई खास बढ़ौतरी नहीं हुई और हमने सौ साल का काल खंड पार किया। बीसवीं सदी के रिश्ते-नाते तोड़ कर हम इक्कीसवीं सदी में आपके बीच आए हैं।

"आपने हमारा स्वागत किया, कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी, हम वास्तव में आपके बहुत बहुत आभारी हैं। आपके उपकारों का बोझ उतारने का मौका इतनी जल्दी मिलेगा, हमने कभी सोचा भी नहीं था—बल्कि हम तो चाहते थे कि वैसी स्थिति ही न आए। पर दुर्भाग्य से वह स्थिति आज ही आन खड़ी है ....

"कुछ महीने पहले रिकार्ड किया हुआ एक कार्यक्रम आपको दिखाने जा रहे हैं। उस कार्यक्रम के समाप्त होते ही दूरदर्शन का प्रक्षेपण बंद हो जाएगा। अत: आप से हम इसी समय विदा लेते हैं।"

रिकार्ड किया हुआ कार्यक्रम शुरू हो गया। पर्दे पर था दलजित सिंह। उसने कहा, "दोस्तों, यह रिकार्ड किया हुआ कार्यक्रम आपको कब दिखाया जाएगा पता नहीं। हम शायद तब तक जीवित न हो। यह रिकार्डिंग १ जनवरी २०७८ को की जा रही है। हो सकता है, यह कार्यक्रम दिखाने की नौबत ही न आए। यदि ऐसा होता है तो हमारा अनुमान गलत साबित होगा और उस स्थिति में हमें खुशी ही होगी।

"हमारा जन्म बीसवीं सदी में हुआ। हमारे और हमारे माता पिता के जमाने में विज्ञान और तकनीकी विद्या ने दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति की। वह उन्नति अगले सौ वर्षों में कितनी आगे जाएगी, यह जानने की हमें और हमारे समकालीन मानवों को बड़ी उत्सुकता थी।

"हम पांचों का यह सौभाग्य है कि हमें खुद इस प्रश्न का उत्तर मिल गया। जमी हुई स्थिति में हम १९७७ से २०७७ में आ पहुंचे। हमने जो कुछ देखा वह मेरा मित्र

कार्टर पैटरसन आपको बताएगा।"

"अभी आपसे दलजित सिंह बोल रहा था।" कार्टर बोलने लगा "मैं अधिक विस्तार से तो नहीं कहूंगा। हमें मुख्य फर्क नजर आया यंत्राधीनता में। बीसवीं सदी में भी यंत्रों का काफी प्रयोग होता था, किंतु उसका नियंत्रण मनुष्य के हाथ होता था। इक्कीसवीं सदी में यह नियंत्रण जाता रहा। पहले पहल छोटे-मोटे काम यंत्रों पर सौंपे जाने लगे। किंतु बाद में देखते ही देखते महत्वपूर्ण कामों में भी यंत्रों ने मनुष्य-मस्तिष्क का स्थान ले लिया। मनुष्य-विचारों की शिथिलता, अकार्यक्षमता खत्म हो गई और निर्णय तेजी से लिए जाने लगे। अत: २०७७ में दुनिया का जीवन स्तर बहुत उन्नत हो गया। १९७७ में जो प्रश्न कठिन प्रतीत होते थे, २०७७ में सुलझ गए। हमें खुशी तो हुई, लेकिन इस अत्यधिक यंत्राधीनता को देख बेचैनी भी होने लगी। क्या इतनी यंत्राधीनता अच्छी है ? इस प्रश्न का उत्तर, विशेषत: एक बात में हमारे लिए नकारात्मक ही था। हमने वैसा कहा भी, पर इक्कीसवी सदी के लोगों ने हमारा मजाक उड़ाया। वह बात कौनसी थी ? मेरा साथी चांग तेंग आपको बताएगा।"

चांग तेंग ने अपनी धीमी आवाज में बोलना शुरू किया। "किसी भी संस्कृति की औद्योगिक उन्नति उसके ऊर्जा के इस्तेमाल पर निर्भर करती है। ऊर्जा का प्रयोग २०७७ में मनुष्य १९७७ की तुलना में सौ गुना ज्यादा करने लगा। सौर-शक्ति लगभग अपरिमित मात्रा में उपलब्ध थी। अत: १९७७ में सताने वाला ऊर्जा का प्रश्न हल हो गया था। किंतु इस शक्ति का नियंत्रण पूर्णत: कंप्यूटरों के अधीन था और लगता है, स्थिति ऐसी ही रहेगी। विनाशकारी अस्त्रों का प्रयोग करने की बजाय शत्रु के शक्तिकेंद्रों का नाश करने की व्यवस्था की गई थी। आपसी झगड़ों के कारण दुनिया के सभी शक्ति-केन्द्रों के नष्ट होने की पूरी संभावना थी। और मजे की बात तो यह है कि केन्द्रों को नष्ट करने का यह महत्वपूर्ण निर्णय भी कंप्यूटरों को सौंपा गया था। इसमें विश्वास था कि मानवी गलती नहीं होगी। परंतु यंत्र गलती नहीं करेगा यह कैसे कहा जा सकता था ? 'फलां पर्याय की जांच करके आखरी पर्याय के रूप में यह निर्णय लेना' कह कर वैज्ञानिक पीछे हट गए। किंतु यदि अकल्पित स्थिति पैदा हो जाए, तो ? तो कंप्यूटर योग्य निर्णय नहीं ले सकता। ऐसे में युद्धलायक स्थिति के न होते हुए भी, गलती से इस कंप्यूटर द्वारा सभी शक्ति-केन्द्रों को नष्ट करने का निर्णय लिया जाने की संभावना थी। यह अकल्पित स्थिति क्या थी, हमें भी पता नहीं था। ऐसी स्थिति का उत्पन्न होना असंभव तो नहीं है। किंतु कभी कमार वह आ भी सकती है। और उस दृष्टि से सुरक्षा की योजना बनाना आवश्यक है। २०७७ में मनुष्य ने ऐसी योजना नहीं बनाई थी और न ही उसकी उसे कोई जरूरत ही लग रही थी। इसलिए हमने ऐसी योजना बनाई और उस पर अमल भी किया। उसकी जानकारी मेरा मित्र इल्या मोरोव्हिच देगा।"

इल्या ने तुरंत ही मुख्य बात शुरू की थी। "कुछ केन्द्रों को बचाने की दृष्टि से हम प्रयत्न कर रहे थे। २०७७ के विश्व ऊर्जा-केन्द्र चार महाद्वीपों के अधीन थे। उनमें महाद्वीप-१ और २ के सभी केन्द्र अंतरिक्ष में थे। ३ और ४ के कुछ केन्द्र सौर-शक्ति की बजाय तेल, कोयला और परमाणु शक्ति पर चलते थे। हमें लगा, इन केन्द्रों को बचाया

जा सकता है। और इसके लिए उनपर कम्प्यूटर के नियंत्रण को समाप्त करना आवश्यक था। कम्प्यूटर-नियंत्रण का हमने गहराई से अध्ययन किया। चूंकि उनके सभी भाग यंत्राधीन थे, मार्ग निकालना संभव हो सका। मनुष्य का दिमाग आज भी यंत्रों के दिमाग से श्रेष्ठ हे यह बाँत फिर एक बार साबित होगई। दलजीत सिंह और चांग तेंग ने महाद्वीप-३ में इस नियंत्रण को शिथिल कर दिया। वहां के मुख्य कम्प्यूटर को इस भुलावे में रखा कि बम्बई तथा शांघाई के सौरशक्ति केन्द्रों पर भी उसीका नियंत्रण है। कार्टर, विलियम और मैंने महाद्वीप-४ के सौरशक्ति-केन्द्रों में यही किया। अब विलियम मॉन्क्रीफ इस कहानी का समापन करेगा।"

विलियम पर्दे पर दिखाई देने लगा। उसने कहा, "हमें आशा है, हमारी योजना के कारण सभी सौरशक्ति-केन्द्रों के नष्ट होने की नौबत नहीं आएगी। हमारे इस काम के कारण बचे हुए केन्द्र २०७८ में विश्व-शक्ति की कुल अपेक्षा की, अधिक से अधिक तीन या चार प्रतिशत शक्ति दे सकेंगे। किन्तु शक्ति का समुचित उपयोग किया गया, तो अंतरिक्ष में बंद पड़े सभी केन्द्र पुनः शुरू किए जा सकेंगे। किन्तु यह उपाय भी स्पष्टतः चन्द वर्षों तक ही लागू रहेगा, क्योंकि हमारा अनुमान है कि आगामी ५० वर्षों में पृथिवी पर एक भी सौरशक्ति-केन्द्र नहीं रहेगा। उस हालत में हमारे द्वारा बचाए गए पृथिवी के सभी केन्द्र भी बंद हो चुके होंगे ओर हमारी इस योजना का कोई लाभ नहीं होगा। किन्तु उससे पहले ही कम्प्यूटर यदि आखरी विकल्प पर अमल करता है और फलस्वरूप वह विकट स्थिति आन खड़ी हो जाती है, जिसकी कि हमने कल्पना की है, तो कुछ केन्द्र चलते रह सकते हैं। यह पूर्वमुद्रित टेप चलाते ही आपको कुछ केन्द्रों के चलते रहने का राज़ मालूम हो जाएगा। इसीलिए इस टेप को बम्बई दूरदर्शन में संभाल कर रखा जा रहा है। यह रिकार्डिंग उसपर लिखी परिस्थिति में उसका प्रकाशन होते तक गोपनीय रहेगी। ... किन्तु अब चूंकि आप यह कार्यक्रम देख रहे हैं, लगता है, वह परिस्थिति आगई है। हमें आशा है, आप इस स्थिति से कुछ सबक सीखेंगे। यदि ऐसा होता है, तो हम समझेंगे कि सौ साल हमारा जमा रहना सार्थक होगया। ... नमस्ते !"

पत्थरसिंह

"गुरुजी ! गुरुजी ! दरवाजा खोलिए ! आकाश से एक तारा नीचे आ धमका है।" दरवाजा खटखटाते हुए सुमान्या चिल्ला रहा था।

गुरुजी आंखे मलते हुए बाहर आए। "क्यों भई ? क्या बतिया रहे हो ?"

सुमान्या कभी पीता नहीं था, अन्यथा उन्हें कोई दूसरा ही शक हो जाता !

"मैं तो जी हरि परब के साथ पाटील की बाग में गप्पें मार रहा था। आपने परसों जो तारे दिखाए थे उन्हें आकाश में ढूंढ़ रहा था। अब सभी तारे तो हमें मिल नहीं रहे थे। तभी एक तारा अचानक कूद पड़ा—सीधे पाटील के बगीचे में। वह तो अच्छा हुआ कि मैं और परब पेड़ की आड़ में छिप गए, वरना वह हमारे सिर पर ही आ टपकता ! परब पाटील को बुलाने गया है और मैं आपके पास आया हूँ।"

रात के ढाई बजे होंगे। गुरुजी ने कहा, "तू चल आगे। मैं लालटेन लगाकर अभी आया।"

लेकिन सुमान्या वहां से हिला भी नहीं। बाग में अकेले जाने से डर जो रहा था।

वे दोनों बाग में पहुंचे। उधर लक्ष्मणराव पाटील, उनका बेटा शंकर और परब एक कोने में खड़े थे।

"आइए गुरुजी !" पाटील ने उनका स्वागत किया, "यह देखिए मेरे चौकीदार क्या उठा लाए हैं !" उन्होंने थोड़ी-दूरी पर पड़ी एक वस्तु की ओर उंगली दिखाई।

"अरे ! गिरते समय तो यह वस्तु किसी तारे की तरह बहुत चमक रही थी, पर अब तो बिल्कुल काली स्याह हो गई है !" हरि परब ने भी सुमान्या की इस बात की पुष्टि की। गुरुजी धीरे-धीरे उस वस्तु की ओर बढ़े।

वह वस्तु करीब एक फुट व्यास की गेंद की तरह थी। बाहर से पूरी तरह झुलस गई थी। वह जहां गिरी थी वहां की जमीन भी काली पड़ गई थी।

"अरे, यह कोई तारा नहीं हैं !" गुरुजी ने समझाया। "इस तरह के पत्थर आकाश में ग्रहों की ही तरह घूमते रहते हैं। और कभी-कभी पृथिवी पर गिरते हैं। इन्हें 'उल्का पिंड' कहते हैं। चूंकि यह, हमारे गांव में गिरा है इसलिए इसे 'विसापुर उल्का पिंड' कहा जाएगा !"

"पर पहले तो यह खूब चमक रहा था—कोई सीधा साधा पत्थर नहीं है ! जरूर कोई जादू होगी उसमें !" परब ने कहा।

"नहीं ! नहीं ! कोई जादू-वादू नहीं है उसमें ! दरअसल नीचे गिरते समय हवा से उसका घर्षण होता है और वह गर्म हो जाता है और इसीलिए चमकने लगता है। किसी पत्थर से पत्थर जब रगड़ते हैं तो आग पैदा होती है न—वैसे ही।" गुरु जी ने बात अधिक से अधिक सरल कर समझाने का प्रयत्न किया।

"तो फिर इस पत्थर का क्या इंतजाम करना है ?" पाटील ने पूछा। उसे छूकर

देखने की तो किसी की हिम्मत नहीं थी।

"तहसील में संदेशा भिजवा दो ! निर्णय वहां के विशेषज्ञों पर छोड़ दो।" सब गुरु-जी की बात मान गये।

पत्थर को चद्दर से ढक, सुमान्या और परब उस पर निगरानी रखने बैठ गए।

++ ++ ++

न्यूयार्क के कैनेडी हवाई अड्डे की ओर टैक्सी तेजी से दौड़ी जा रही थी और टैक्सी में बैठी सवारी के विचार उससे भी अधिक तेजी से दौड़ रहे थे।

कुछ देर पहले की घटनाएं डॉ. डेविड रैट्क्लिफ को याद आ रही थी... हमेशा की तरह सुबह साढ़े आठ बजे वह इन्स्टिट्यूट फौर स्पेस स्टडीज के अपने दफ्तर पहुंचा था। अमेरिकन फिजिकल सोसायटी की बैठक में एक निबंध लिखने का काम उसे सौंपा गया था। उसे शुरू करने ही वाला था, कि फोन बज उठा। "आपके लिए भारत से—दिल्ली से—इंटरनैशनल ट्रंक कॉल आया है !" औपरेटर ने कहा।

भारत के कई वैज्ञानिकों से वह परिचित था। बहुतों से उसका नियमित पत्राचार था। निबंधों का आदान-प्रदान उनके साथ होता था। लेकिन फोन पर बात करने लायक स्थिति कभी उत्पन्न नहीं हुई थी। कौन हो सकता है भला...

उसे ज्यादा देर नहीं रुकना पड़ा। फोन से स्पष्ट आवाज आ रही थी। "डॉ. रैट्क्लिफ ? मैं डॉ. राव बोल रहा हूं—पी.ए.टी. राव !"

"मॉर्निंग पैट !" डेविड रेट्क्लिफ और पी.ए.टी. (पैट) राव ने कुछ वर्षों तक पी.एच.डी. का शोध एक साथ किया था।

"गुड ईविनिंग, डेविड ! यहां शाम हो रही है। तुम्हें यहां तुरंत आना होगा, इसीलिए मैंने फोन किया है। आज रात की एअर इंडिया की फ्लाईट से तुम आ सकोगे ?"

"आज रात ? मगर क्यों ?... मैं आ सकता हूं.... पर किस लिए आना है, यह पता चलता तो अच्छा होता।" डेविड।

"विसापुर उल्का-पिंड के सिलसिले में मैं एक बैठक बुलाना चाहता हूं। हो सके तो परसों सुबह से। और दो-तीन जनों को मैं बुला रहा हूं। कौर्नेल के क्लौड पेकेअर भी उसी फ्लाईट पर होंगे ! लंदन से जौन फ्लैमिंग तुम्हें शामिल होंगे !... तुम्हारा टिकट केनेडी हवाई अड्डे पर एअर इंडिया के प्रथम श्रेणी के चेक-इन काउंटर पर मिल जाएगा। विसा लगेगा; परंतु वह दिल्ली आने पर तुम्हें मिले ऐसी व्यवस्था मैंने कर दी है... तो मैं यह मान कर चलता हूं कि तुम आ रहे हो !"

उसके थोड़ी ही देर बार एअर इंडिया से फोन आया था। डेविड की भारत यात्रा की तैयारी फटाफट हो गई।

विसापुर मिटिओराईट के बारे में उसने हाल ही में पढ़ा था। मगर राव की बातों से कुछ पता नहीं चल रहा था। क्लौड पेकेअर 'प्रिबायौटिक केमिस्ट थे—अंतरिक्ष की जीव सृष्टि का वे अध्ययन करते थे। और जौन फ्लैमिंग एक माइक्रोबायलौजिस्ट था। डेविड

और पैट राव मिटिओराईट विशेषज्ञ थे। इन सबको इतनी शीघ्रता से बुलाने का क्या कारण हो सकता है ?

डेविड के मन में एक कारण उभर रहा था। किंतु वह इतना भयानक था कि संभावना की कक्षा में उसकी गणना करने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी !

वैनवाइक एक्सप्रेसवे से टैक्सी हवाई अड्डे की ओर मुड़ी और एअर इंडिया के डिपार्चर बिल्डिंग की तरफ आई। बोईंग-747 के लिए यात्री आ रहे थे। मगर प्रथम श्रेणी काउंटर के पास ज्यादा भीड़ नहीं थी। कोई व्यक्ति इशारों से काउंटर के पीछे खड़ी औरत को कुछ बता रहा था। दूर से ऐसे लग रहा था मानो वह झगड़ रहा हो !

डेविड मुस्कुराया। इशारों की अदा और गंजेपन से वह उस व्यक्ति को पहचान गया था।

हमेशा की बोलचाल में भी क्लौड पैकेअर के हाथों की यह अदाकारी उसके दोस्तों में मजाक का कारण होती थी।

"हैलो क्लौड ! क्या बता रहे हो उसे ?" उसकी पीठ पर थपकी मारते हुए डेविड ने कहा।

"कुछ नहीं, मैं कह रहा था कि मुझे यात्रा में शाकाहारी भोजन चाहिए !" अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में पैकेअर ने कहा।

डेविड ने पैकेअर की समस्या सुलझाई, समान चेक-इन कराया और एक दो फोन किए।

हवाई जहाज में दोनों पास-पास बैठे थे। दोनों के सफर की मंजिल एक ही थी लेकिन किसी को भी कोई खास जानकारी उस संबंध में नहीं थी।

उड़ान भरने से पहले हवाई सुंदरी ने भारतीय अखबार वितरित किए। 'इंडियन एक्सप्रेस' में छपे एक समाचार ने उसका ध्यान आकर्षित किया।

"रूसी शातिर की भारत यात्रा"

भारत में शतरंज का अधिक प्रसार करने के लिए भारतीय शतरंज संगठन ने रूसी ग्रैंडमास्टर एलेक्सोई नोबिकोव को भारत आमंत्रित किया है। श्री नोविकोव विश्वमें शतरंज के तीसरे नंबर के शातिर थे। हालांकि कुछ लोग उनकी योग्यता को इससे ऊपर का स्थान देते थे। भारत में वे कई जगह खेलेंगे। लेकिन भारत में उनको चुनौती दे सके ऐसा कोई प्रतिद्वंदी नहीं है, इसलिए उनकी सभी खूबियों का पता लगने की संभावना कम है।"

++ ++ ++

शौकिया तौर पर डेविड भी एक शतरंज खिलाड़ी था। कई खिलाड़ियों की पद्धति का उससे अध्ययन किया था। क्या इस बार भारत-यात्रा में नोविकोव का खेल देखने का मौका मिलेगा ? यह विचार उसके मन को छू गया।

++ ++ ++

पैट राव के दफ्तर के सम्मुख एक कान्फरन्स हॉल था। वहां दस व्यक्तियों की एक बैठक चल रही थी। अध्यक्ष स्वयं राव थे। वे एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। फिर भी उनका स्वभाव बड़ा मिलनसार था। यही कारण था कि कोई नया विद्यार्थी भी उनसे चर्चा करने से डरता नहीं था। पहले राव साहब चैन-स्मोकर थे। किंतु डॉक्टरी सलाह मानकर उन्होंने वह आदत त्याग दी थी। अब जब भी वे किसी गहन विचार में मग्न होते, मूंगफली खाते रहते। सिगरेट की जगह अब जेब में मूंगफली के दाने हुआ करते थे।

उनके पास प्रयोग शाला के व्यवस्थापकीय अधिकारी डॉक्टर मडकमकर बैठे थे। गए जमाने वे भी वैज्ञानिक थे, परन्तु अनुसंधान क्षेत्र अपना नहीं है इस बात को वे जल्दी ही समझ गए और व्यवस्थापन की ओर मुड़े। आज किसी कुशल आय.सी.एस. या आय.ए.एस. अधिकारी से भी अधिक निपुणता उन्होंने अर्जित कर ली थी।

क्लौड पैकेअर और डेविड रेट्क्लिफ के अतिरिक्त एक अन्य विदेशी वैज्ञानिक, जौन फ्लैमिंग भी बैठक में उपस्थित थे। वे माइक्रोबायालौजिस्ट थे। जीव रचना के लिए आवश्यक बीजाणुओं का उन्होंने गहराई से अध्ययन किया था। दो भारतीय कंप्यूटर विशेषज्ञ—सौफ्टवेयर क्रे डॉ. गुप्ता और हार्डवेयर के डॉ. रामनाथन भी बैठक में उपस्थित थे। डॉ. राव के विभाग के अन्य दो सहयोगी चर्चा में भाग लेने और उसका विवरण लिखने पूरी तैयारी से आए थे।

दसवां व्यक्ति अंत में आया और अपने साथ लाई काले कपड़े से ढंकी एक वस्तु उसने पास की मेज पर रख दी। डॉ. राव ने परिचय कराया :

"आप हैं प्रसिद्ध मस्तिष्क विशेषज्ञ डॉ. मथरानी। आप जो वस्तु लाए है वही 'विसापुर—मिटिओराइट' है—और उसी पर चर्चा करने के लिए हम एकत्रित हुए हैं।"

"यह बैठक बुलाने के क्या कारण है, यह जानने के लिए हम सब उतावले हो रहे हैं।" डॉ. पैकेअर इशारों के अपने हमेशा के अंदाज में बोले।

गला साफ करते हुए डॉ. राव ने बोलना शुरू किया, "एक सप्ताह पूर्व महाराष्ट्र के एक गांव में यह विसापुर मिटिओराइट मिला। एक बगीचे की रखवाली करने वाले दो चौकिदारों ने उसे बगीचे में गिरते हुए देखा। उनका कहना था कि गिरते समय मिटिओराईट बहुत चमकीला था। लेकिन जब वह नीचे गिरा तो झुलसा हुआ प्रतीत हो रहा था। गांव के 'गुरुजी' तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी उसे उसी अवस्था में देखा था।

"अगले दिन इसे पास के एक शहर में लाया गया। वहां एक कॉलेज के वैज्ञानिक ने उसका सतही मुआयना किया और हमारे पास भेज दिया। लेकिन उन्हें एक बात असंगत लगी। विसापुर वालों का कहना था कि जब उन्होंने देखा तो मिटिओराइट बिल्कुल काला-कोयला हो चुका था। और प्राध्यापक महाशय ने उसे फीके ग्रे रंग का पाया।"

"इंटरेस्टिंग !" डॉ. फ्लैमिंग बोले।

"अचरज की बात तो आगे है।" राव ने कहा। "मिटिओराइट हम तक पहुंचने में और दो दिन बीत गए थे। और जब हमने उसे देखा तो वह ग्रे नहीं बिल्कुल बेदाग सफेद

हो गया था। आज भी वह इसी स्थिति मे है। पृथिवी पर आते समय वातावरण के घर्षण से पैदा होने वाली उष्णता का कोई परिणाम अब उस पर नहीं नजर आता !"

"क्या हम उसे देख सकते हैं ?" डेविड ने उत्सुकतावश पूछा।

"ठहरिए ! थोड़ी देर और सब्र करें।" डॉ. राव ने हंस कर कहा, "आप सबको यहां बुलाने का एक और कारण भी है। उस मिटिओराइट के एक छोटे से टुकड़े का हमने विश्लेषण किया। हमें उसमें ऐसे रेणू नजर आए जो जीवन की बुनियादी ईकाई माने जाते हैं। इन रेणुओं और एमिनो एसिड्स में बहुत समानता है। एक बात तो मुझे और भी अधिक महत्वपूर्ण लगती है कि इन रेणुओं की रचना बहुत ही सुघड़ है। पृथिवी से बाहर एमिनो एसिड्स के अस्तित्व के कुछ सबूत मिले है। लेकिन मुझे लगता है, यह सबसे ठोस प्रमाण है और इसीलिए मैंने आपको यहां बुलाया है।

"इसी बीच एक और घटना ने इस सभा को और महत्व प्रदान किया है। विश्लेषण के दौरान प्रयोगशाला में विद्युत् तरंगों का रिसीवर यकायक कुछ तरंगों का अस्तित्व दर्शाने लगा। हमने देखा कि उन तरंगों का उगम मिटिओराईट से ही हो रहा था। वे तरंगें मनुष्य के मस्तिष्क से निकलने वाली लहरों के समान थीं। मैंने तुरंत डॉ. मथरानी को बुलाया और उन्होंने भी अपने प्रयोगों से इस बात की पुष्टि की। आज वे इस बारे में और विस्तृत जानकारी देंगे।

"इसलिए दोस्तों, मुझे लगता है कि यह उल्कापिंड हमें आज तक मिले अन्य उल्कापिडों से भिन्न है। निश्चय ही इसमें कहीं जीवसृष्टि का उद्गम होता है। क्या यह धारणा सही है ? यदि है तो किस प्रकार की जीवसृष्टि है ? कहां केन्द्रित है ? यही सब हमें ढूंढना है। मैं तो मानता हूं कि इसमें जीवन है। अतः मैंने पहले ही इसका नामकरण भी कर दिया है। 'पत्थरसिंह' नाम रखा है इसका—इसे ढूंढने वाले चौकीदारों ने इसी नाम से उसे संबोधित किया था। तो आइए पत्थरसिंह से आपका परिचय कराता हूं।"

राव साहब ने पत्थरसिंह पर रखा आवरण हटा दिया।

++ ++ ++

सभी वैज्ञानिक पत्थरसिंह की मेज के इर्द-गिर्द खड़े थे, लेकिन उनकी अपेक्षानुरूप उन्हें वहां कुछ विशेष नजर नहीं आया। किसी पत्थर या रोड़े की ही एक जाति थी बस ! हां उसकी सतह अवश्य शुभ्र और चमकीली थी। किंतु उसमें किसी जीव सृष्टि का उद्गम होगा, कोई नहीं सोच सकता था।

"क्या इसकी सतह सचमुच झुलसी हुई थी ?" थोड़ा अविश्वास जताते हुए जौन फ्लैमिंग ने कहा।

"जी हां, अत्यंत विश्वसनीय गवाहों ने इस बात की पुष्टि की है। लेकिन हम में से किसी ने अपनी आंखों से नहीं देखा।" पैट राव।

जौन फ्लैमिंग ने पैकेअर की ओर देखा। शायद वे दोनों एक ही बात सोच रहे थे, क्योंकि दोनों एक ही साथ बोल पड़े :

"इसके कुछ भागों पर हम प्रयोग करना चाहते हैं।"

तभी मथरानी कुछ उपकरणों के साथ उपस्थित हुए। पत्थरसिंह के पृष्ठभाग पर उन्होंने इलेक्ट्रोड जैसे कुछ बार लगाए। उसमें से निकलने वाली तारों को एक बक्से से जोड़ा। बक्सा खोलकर उन्होंने कुछ बटन दबाए। और इसी के साथ उन उपकरणों में घड़ी की सुइयों जैसे कांटे जल्दी जल्दी घूमने लगे।

''पत्थरसिंह के मस्तिष्क से निकलने वाली तरंगों में उतार चढ़ाव हो रहा है।'' मथरानी ने कहा। ''तरंगों का यह उतार चढ़ाव उसकी उत्तेजना दर्शाता है।'' एक कागज पर दर्ज हो रहे आलेखा ने सभी का ध्यान आकर्षित किया।

तरंगों में होने वाले उतार चढ़ावों की रेखाकृति कागज के रोल पर अंकित हो रही थी। मथरानी ने एक दूसरा रोल खोला। उस पर भी वैसा ही आलेख था।

''आज का आलेख कल की अपेक्षा अधिक तेजी से और अधिक उतार चढ़ावों से अंकित है। लगता है, पत्थरसिंह हमारी उपस्थिति अनुभव कर रहा है। कल मैं अकेला ही था।''

डेविड रैट्क्लिफ रोमांचित हो गया। उसने दोनों आलेख देखे।



यह था कल का आलेख। और आज का आलेख कुछ इस प्रकार का था :



इसका मतलब पत्थरसिंह का भेजा जागृत था ! यही नहीं, मनुष्य के भेजे की तरह अवसर-बेअवसर उसमें बदलाव भी आ रहा था।

''आपके पास अच्छा कंप्यूटर है ?'' उसने पैट राव से पूछा।

''हां है।''

उस प्रयोगशाला के इलेक्ट्रानिक कंप्यूटर की तकनीकी जानकारी डॉ. रामनाथन ने दी। 'डेविड' ने आगे कहा,

''डां. गुप्ता और रामनाथन की सहायता से यदि कंप्यूटर इस्तेमाल के लिए मिल जाए तो इस भेजे की शक्ति आजमाई जा सकती है। लेकिन कंप्यूटर पूरे २४ घंटों के लिए मिल सकता है न ?''

डॉ. गुप्ता ने कोई आपत्ति नहीं दिखाई। रामनाथन ने भी इस प्रयोग में शामिल होने

की इच्छा जाहिर की।

तभी इतनी देर चुपचाप बैठे भड़कमकर ने कहा, "दिन में कुछ घंटों के लिए कंप्यूटर इंडस्ट्री को देने के लिए हम वचनबद्ध है। उसका क्या होगा ?"

राव ने कहा, "कंप्यूटर ब्रेकडाउन हो जाता तो इंडस्ट्री क्या करती ? हम कह देंगे कि इमर्जन्सी है, इसलिए मजबूरन कुछ अरसे तक उन्हें कंप्यूटर नहीं दे सकते !"

"यह जोखिम मैं अपने सर नहीं ले सकता !" अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर भडकमकर ने कहा। भडकमकर के इस सुरक्षात्मक रवैये को मेहमान भी भांप गए थे।

"अच्छा, यदि मैं आपको एक नोट लिख कर दे दूं, तो ?" रामनाथन ने पूछा।

"नोट ?" शब्द ने भडकमकर पर जादू सा असर कर दिया, "हां, फिर ठीक है। लेकिन दो प्रतियां भेजिए ! एक मेरी फाईल में रहेगी और दूसरी में सायक्लोस्टाइल के लिए भेज दूंगा !" दरअसल अपने अनुभव से उन्होंने दो बाते पल्ले बांध ली थीं—एक—लीक से हटकर कोई काम करना हो तो लिखित प्रमाणपत्र होने चाहिए और दो—उस काम की अपने ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं होनी चाहिए। इन बातों का पालन वे हमेशा करते थे।

सभा की समाप्ति पर वैज्ञानिक दो गुटों में बंट गए। फ्लैमिंग और पैकेअर ने पत्थरसिंह के उस कटे भाग पर अन्य प्रयोग करने चाहे। बचा हिस्सा डेविड कंप्यूटर कक्ष में ले गया। पैट राव, गुप्ता और रामनाथन ने मथरानी की सहायता से पत्थरसिंह को 'प्रशिक्षित' करने की सोची।

रामनाथन ने पत्थरसिंह के भेजे को कंप्यूटर के भेजे से जोड़ दिया और प्रयोग शुरू कर दिए। इन प्रयोगों का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि क्या पत्थरसिंह में विचार-शक्ति है ? यदि है, तो कितनी ? उसमें स्मरण शक्ति है, या नहीं ?

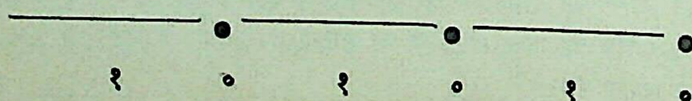
"आरंभ कहां से किया जाए ?" मथरानी ने पूछा।

"मुझे लगता है, 'द्विमान गणित' उसे सिखाया जाए।" गुप्ता ने कहा। डेविड ने भी इसका समर्थन किया।

द्विमान गणित यानी ० और १ सिर्फ इन दो आंकड़ों में लिखा गया अंकगणित। ० से ९ तक के दस अंकों का ही हम रोजाना प्रयोग करते हैं। ९ के बाद १० आकड़ा लिखा जाता है। लेकिन 'दस' अंक के लिए कोई नया अंक प्रयोग में नहीं लाया जाता। वही नियम द्विमान गणित का भी है। ० और १ के बाद 'दो' का अंक लिखने के लिए नए अंक की बजाए १० लिखते हैं। इसी नियमानुसार तीन याने ११ और चार का मतलब १०० ...

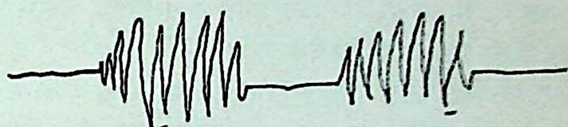
किंतु शून्य और १ अंक की जानकारी पत्थरसिंह को कैसे दी जाए ?

लंबी और छोटी अवधि के इलेक्ट्रानिक्स सिग्नल द्वारा :

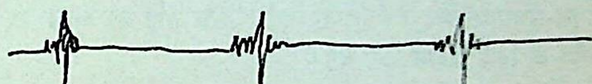


"मोर्स कोड' का ही यह एक प्रकार होगा !

कई प्रयोगों के पश्चात् पत्थरसिंह प्रत्युत्तर देने लगा। लंबी अवधि का ऐसा संकेत (----) देने पर उसका प्रत्युत्तर होता।—



और छोटी अवधि का (—) ऐसा संकेत देने पर आने वाला प्रत्युत्तर इस प्रकार का होता था :



"पत्थरसिंह को अंकों की पहचान तो हो गई है !" एक आह भरते हुए गुप्ता ने कहा।

"अब सब काम आसान है डेविड ने कहा, "अब उसे जोड़-घटा सिखाने हैं—ताकि वह 'सुशिक्षित' हो जाए !"

और आगे का काम उनकी अपेक्षानुसार सरल होता गया। पत्थरसिंह ने अंकगणित के नियम शीघ्र ही सीख लिए। यद्यपि उसके उत्तर तरंगों के रूप में थे, उन्हें रूपांतरित करने का काम कंप्यूटर करने लगा।

"मुझे लगता है कि इसका भेजा बहुत तेज है, स्मरण शक्ति के तो क्या कहने। एक बार बताई बात वह भूलता ही नहीं—सिखाते-सिखाते हम थक जायेंगे लेकिन उसकी ग्रहण-क्षमता कम नहीं होगी।" मथरानी बोले, "जितना सिखाए उतना कम ही है !"

लेकिन डेविड बहुत चिंतित था। क्यों, यह तो शायद स्वयं भी न बता पाया। जोड़-घटा सीखते समय पत्थरसिंह ने खुद गुणा और भाग पद्धति खोज ली थी। यही बात उसे अन्य चीजें सिखाते समय होने लगी। गणित का आधारभूत सिद्धांत और उसे सुलझाने की प्रणाली उसे एक बार पता चलने की देर थी, कि वह कोई भी गणित चुटकियों में सुलझा देता। यूक्लिड के ज्यामिति के नियम बताते ही उसने पायथैगोरस के प्रमेय सुलझा दिए।

"कितनी जबरदस्त विचारशक्ति है !" गुप्ता ने पत्थरसिंह की प्रशंसा की। "बच्चू का भेजा आइन्स्टाइन जैसा लगता है ! 'शिष्यादिच्छेत्पराजयम्' कहना पड़ेगा।"

"गुरु की इच्छा भी यही होती है कि शिष्य उसे पराजित करे।" डेविड अपनी चिंता का कारण जान गया। गुप्ता ने आइन्स्टाइन का उल्लेख किया था। लेकिन डेविड की मान्यता थी कि पत्थरसिंह का भेजा मनुष्य की क्षमता से परे है।

आइन्स्टाइन .... यानी जर्मन भाषा में एक पत्थर—पत्थरसिंह ही ! नहीं तो और क्या ?

मगर यह पत्थर तो, शुरू से ही ज्ञान अति शीघ्रता से अपना रहा था। और ज्ञान

के पीछे होती है शक्ति ... डेविड पत्थरसिंह की शक्ति को सीमित रखना चाहता था। इस शिष्य से वह पराजित होना नहीं चाहता था !"

लेकिन गुप्ता उसे सिखाए जा रहे थे। उसके भेजे में तरह-तरह के गणित ठूसने के बाद वे बोले, "अब इसे विज्ञान की दीक्षा देते हैं।"

'नहीं ! रुकिए !" डेविड एकदम चिल्लाया। "अमूर्त गणित सिखाने तक बात ठीक थी, लेकिन विज्ञान ? मनुष्य संस्कृति जिस शक्ति में समाई हुई है उस विद्या को गुरुमंत्र क्या हमें स्वयं होकर इस 'पराए' को देना चाहिए ?"

डेविड की इस बात पर अन्य सभी हैरान थे। वह समझ चुका था कि उसकी बातों पर कोई जल्दी विश्वास नहीं करेगा—करेगा भी इसका पता नहीं। लेकिन इन लोगों का ध्यान दूसरी तरफ बँटाना ठीक रहेगा। उसे एक बात सूझी और उसने कहा—

"क्यों न हम इसे पहले शतरंज सिखाएं। देखें तो कितनी निपुणता हासिल करता है उसमें ? विज्ञान बाद में सिखाएंगे।"

"बहुत सुंदर कल्पना है।" गुप्ता बोले, "और यदि यह सीख कर तैयार हो जाता है तो नोविकौव के साथ खेलने लगा देंगे।"

नोविकौव ? हवाई जहाज में पढ़े उस समाचार की डेविड को याद आई।" नोविकौव यहां कब आ रहे हैं ?" उसने पूछा।

"परसों पूरा दिन वे इस शहर में होंगे।"

यानी पत्थरसिंह को शतरंज सीखने के लिए एक दिन की अवधि थी।

++ ++ ++

P-K 4

नोविकौव ने राजा के आगे का प्यादा दो घर आगे बढ़ाया और शुरुआत की। उससे टौस जीत कर सफेद रंग चुना था।

डेविड ने काली प्यादियां संभाली थी, लेकिन वास्तव में खेलने का काम पत्थरसिंह ही करने वाला था। इस मुकाबले को वास्तव में लाने में उन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े थे। पहले भडकमकर ने आपत्ति उठाई थी—नोविकौव कोई वैज्ञानिक नहीं है अत: उसकी इस यात्रा का खर्च कहां और कैसे दिखाया जाए ? आखिर इंडियन चेस फेडरेशन (भारतीय शतरंज संगठन) ने हम खर्चा देंगे।" ऐसा लिखित वादा किया तब कहीं उन्होंने अपनी आपत्ति वापस ली थी। नोविकौव भी एक पत्थर के साथ खेलने को राजी नहीं थे। लेकिन जब उन्हें यकीन दिलाया गया कि उस पत्थर में एक शक्तिशाली भेजा है, तब कहीं जाकर वे तैयार हुए। फिर भी उन्होंने खेल निर्धारित समय तक ही खेलने की शर्त रखी थी। मगर यही शर्त उनके लिए महंगी सिद्ध होगी इसका पूर्वानुमान उन्हें भला कैसे होता ?

डेविड के पास ही कंप्यूटर टर्मिनल था। जिसके द्वारा नोविकौव की चाल कंप्यूटर को सूचित की जाती थी। यही कंप्यूटर पत्थरसिंह के भेजे से जोड़ा गया था। पत्थरसिंह का प्रत्युतर कंप्यूटर टर्मिनल के मार्ग से होते हुए टर्मिनल के टी.वी. पर्दे पर आता था।

पहली बार पत्थरसिंह ने विचार करने में अधिक समय लगाया। खेल शुरू होने से पहले ही डेविड ने पत्थरसिंह को नोविकौव के प्रसिद्ध चालों की जानकारी दे रखी थी। इनको ध्यान में रख कर पत्थरसिंह ने उत्तर दिया।

...... PQB 4

सिसिलियन डिफेन्स! डेविड को आश्चर्य हुआ, क्योंकि यह सुरक्षात्मक रुख नोविकौव के सामने उपयुक्त नहीं था। उसने ऊंट के सामने का प्यादा दो घर आगे खिसकाया था।

नोविकौव संतुष्ट नजर आ रहा था।

राजा के पास का घोड़ा वह ऊंट के सामने ले आया।

kt-KB 3

उसकी अपेक्षा थी कि पत्थरसिंह वजीर के सामने वाला प्यादा एक घर चलेगा। डेविड ने भी यही सोचा था। लेकिन पत्थरसिंह ने राजा के सामने का प्यादा एक घर आगे चलाया था।

....: P-K 3

लेकिन अभी तो सिर्फ शुरूआत थी। पत्थरसिंह नोविकौव के अनुमानानुसार नहीं खेल रहा था। वह बिल्कुल अलग तरीके से अलग चाल चल देता था। नोविकौव में नवीं चाल में तो पत्थरसिंह ने ग्यारहवीं चाल में कैसलिंग किया। अब नोविकौव को सुरक्षात्मक रुख अपनाना पड़ रहा था। उसे सोचने में ज्यादा समय लगने लगा। इसके विपरीत पत्थरसिंह की बारी आते ही वह जल्दी से निर्णय लेकर चाल चल देता।

तीसरे दौर में नोविकौव के पास ऊंट और चार प्यादे थे तो पत्थरसिंह के पास हाथी और तीन प्यादे थे। दोनों लगभग बराबरी पर थे। लेकिन नोविकौव के पास समय बहुत कम था। और वह गलती कर बैठा।

वजीर बनाने के लिए अपने घोड़े के सामने का प्यादा एकदम दो घर आगे चलाया। पत्थरसिंह ने उसके मार्ग में अपना ऊंट के सामने वाला प्यादा बिठा दिया। सफेद प्यादे ने उस काले प्यादे को मार डाला और ऊंट के सामने काली गली में घुस गया।

और वजीर बनने के लिए हाथी की गली में जो काला प्यादा था उसका रास्ता साफ हो गया....।

सभी अनुभवी लोग, हमले की इस सीधी परंतु प्रभावी चाल को देख दंग रह गए थे। उनमें से किसी के भी दिमाग में यह चाल नहीं आई थी।

तत्पश्चात् ग्यारहवें दौर में नोविकौव ने हार मान ली, क्योंकि सफेद राजा की मात निश्चित थी।

++ ++ ++

"बधाई हो, डेविड! पत्थरसिंह ने खूब मजे चखाए नोविकौव को।"

"और शतरंज के यह सर्वथा नए और आक्रामक पैंतरे मैंने तो पहले कभी देखे नहीं थे। तुमने क्या मंत्र पढ़ाया था उसे?"

सभी दस वैज्ञानिकों ने सभा में डेविड को बधाई दी। लेकिन डेविड गहरी सोच में डूबा था।

"दोस्तों ! मैंने पत्थरसिंह को कोई मंत्र नहीं दिया था। मैंने उसे शतरंज के केवल नियम बताए थे। जीतने के लिए क्या आवश्यक होता है यह समझाया था। प्रसिद्ध खिलाड़ियों ने क्या पैंतरे लगाए थे उसके कुछ नमूने उसे बताए थे। लेकिन खेल में निर्णय केवल पत्थरसिंह ने ही लिए थे।"

"फिर तो तुमने उत्तम शिष्य तैयार कर दिखाया है।" पैट राव ने कहा।

"यही तो चिंता की बात है मेरे लिए। पत्थरसिंह की किसी भी चीज को ग्रहण करने की गति इतनी अधिक है कि मुझे तो डर लगने लगा है। मैं सच्चे दिल से कहता हूं—पत्थरसिंह को नष्ट कर दो।"

कमरे में चारों ओर सन्नाटा छा गया। डेविड ने आगे कहा—

"अधिक बुद्धिमान प्राणी हमेशा ही कम बुद्धि वाले पर अपना रौब जमाता है। सृष्टि का नियम है यह। अपनी बौद्धिक क्षमता के बूते पर ही मनुष्य ने पृथिवी के प्राणियों, पक्षियों, आदि पर राज किया। केवल विज्ञान और तंत्र-विज्ञान के आधार पर अल्पसंख्यक समाज ने स्वयं बहुजन समाज पर राज किया है।"

"यह पत्थरसिंह हमसे इतना अधिक बुद्धिमान है कि एक बार यदि हमें मात देने की ठान ले तो अधिक से अधिक छोटा और सीधा मार्ग अपनाएगा। इससे पहले कि यह ऐसी चाल चले, इसका संहार कर दीजिए।"

"लेकिन क्या हम उसकी अक्लमंदी का अपने लिए फायदा नहीं उठा सकते ? कंप्यूटर से भी तो मनुष्य ने कितना फायदा कर लिया है।" पैट राव।

"पैट ! एक महत्वपूर्ण बात तुम भूल रहे हो। पत्थरसिंह कंप्यूटर नहीं है। कंप्यूटर की अपनी विचार-शक्ति नहीं होती। जो कुछ उसे करने को कहा जाता है उतना ही काम वह क़रता है। इसके विपरीत पत्थरसिंह की विचार-क्षमता बड़ी तीव्र है। और यह जरूरी नहीं कि हमेशा वह हमारे भले की ही सोचेगा। इसलिए यह झंझट छोड़ दीजिए औरं —उसका नाशकर दीजिए।"

"लेकिन यह संभव नहीं है।" शांत स्वर में जौन फ्लैमिंग ने उत्तर दिया। "पिछले दो तीन दिनों में मैंने और पैकेअर ने इस पर—अर्थात् उसके छोटे से हिस्से पर—कई प्रयोग किए। उसे भट्टी में डाला, उसमें एक लाख होल्ट का विद्युत-प्रवाह छोड़ा, जबरदस्त दबाव उसपर डाला, उसे पोले क्षेत्र में डाला—क्या क्या नहीं किया। लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ। शुरू में तो ऐसा लगा कि वह नष्ट हो गया है। यानी झुलसा हुआ, चूर्ण बना हुआ या मृतक की भांति शांत पड़ा दिखता था, पर फिर से सजीव हो जाता था।"

"और उसके टुकड़े करने पर भी प्रत्येक भाग में जीवशक्ति पाई गई थी।" पैकेअर ने कहा। "हम यह टुकड़ा जांच के लिए ले गए थे। उसे छोटे छोटे भागों में विभाजित किया। फिर भी उसका भेजा क्रियाशील था। इसी तरह किसी एक भाग के जलाने या इलेक्ट्रोक्यूट करने पर भी उसका नूतनीकरण होता रहा। पृथ्वी की जीवसृष्टि से जो न बन पाया वह जीवनसृष्टि के इस नमूने में दिखाई देता है।"

कुल मिलाकर काफी बहस हुई। फ्लैमिंग का विचार था कि इस प्रकार क जीव-सृष्टि की अच्छी तरह जांच की जाए और अपने लिए उसकी उपयोगिता का अनुमान लगाए जाए। किंतु डेविड ने इस विचार का कड़ा विरोध किया।

"केवल कोई विषाणु या जीवनसृष्टि का कोई हलका नमूना होता तो मैं मना न करता; लेकिन यहां मामला कुछ और है। यह एक विचारशील प्राणी है और सभी क्षेत्रों में हम से कहीं अधिक आगे जा चुका है। शतरंज के दांव पेंच उसने जिस शीघ्रता से ग्रहण किए, उससे साबित होता है कि सीखने पर वह सयाना होता है और इतनी विशाल बुद्धिमत्ता का स्वागत करने के लिए हम—यानी हमारी मनुष्य-संकृति—अभी योग्य नहीं हुए हैं।"

"तुम तो ऐसी बात कर रहे हो जैसे कोई जंगली जनजाति अपना शक किसी आगंतुक सुसंस्कृत व्यक्ति के प्रति दर्शाती है।"—फ्लैमिंग।

"उपमा बिल्कुल ठीक दी है।" डेविड ने कहा, "गोरों ने रेड इंडियनों से अमरीका किस आधार पर हासिल की थी? उनका तंत्र-विज्ञान श्रेष्ठ था और उसका अपनी साम्राज्यवादी नीतियों के अनुसार उपयोग करने की क्षमता उनमें थी। पत्थरसिंह का ऐसा ही कोई 'उद्देश्य' होगा यह बात नहीं—किंतु उसके मन में आने से पहले उसका उच्चाटन कर दे यही उचित होगा।"

"उच्चाटन ?" पैट राव ने पूछा।

"और नहीं तो क्या ?" हम इसे नष्ट नहीं कर सकते। और वह हमारे बीच रहने लायक नहीं। अत: वह जिस मार्ग से आया उसी मार्ग से उसे वापिस भेजा जाए—बिना कोई शोरगुल किए।"—डेविड।

लंबी चर्चा के बाद वैज्ञानिकों ने डेविड की बात मान ली। पता नहीं क्यों, लेकिन राव के मन में इस निर्णय को लेकर अब भी शक था। पर उसने पत्थरसिंह के उच्चाटन की सम्मति दे दी। अंत में भडकमकर ने चर्चा का समापन किया।

"किसी उल्कापिंड को देश से बाहर निकालना हो तो भी, कई अनुमतियां लेनी पड़ती हैं—और हम तो पत्थरसिंह को पृथिवी से बाहर भेजने वाले हैं। परंतु यदि आपकी समिति ने निर्णय ले ही लिया है, तो उसके 'मिनिट' मेरे पास भेज दो। व्यवस्थापकीय जिम्मेदारी मेरी। पर पत्थरसिंह को पृथिवी से बाहर कैसे भेजेंगे ? कितना समय लगेगा ?"

"मैं 'इस्त्रो' से (इंडियन स्पेस रिसर्च और्गनायजेशन) संपर्क करता हूं। मुझे लगता है, रॉकेट की जरुरत पड़ेगी; और पे-लोड अधिक न होने के कारण दो महीने लग जाएंगे।" मूंगफली के दाने खाते-खाते राव ने कहा।

++ ++ ++

विदेशी वैज्ञानिक वापिस लौट गए। भडकमकर उच्च स्तरीय लोगों से मिल कर अनुमतियां हासिल करने में जुट गए। पत्थरसिंह कड़ी सुरक्षा में वहीं था।

बीच-बीच में राव पत्थरसिंह को देखते थे कि कहीं उसमें कोई परिवर्तन तो नहीं

हुआ। परंतु उन्हें कोई परिवर्तन नहीं नजर आया। उसे काले आवरण से ढक कर कांच की एक पेटी में बंद कर रखा था।

लेकिन आज राव को थोड़ा फर्क महसूस हो रहा था। वे जब कमरे में आए थे, तो पत्थरसिंह का आवरण फिसल गया था। खिड़की की दरार में से सूर्य किरणें उस पर आ रही थीं। और इसी कारण उसमें काफी तेज नजर आ रहा था।

राव ने आवरण हटा दिया। कुछ सोच कर उन्होंने खिड़की खोली। प्रखर सूर्य प्रकाश में पत्थरसिंह पूरी तरह नहा गया था।

उन्हें याद आया : पत्थरसिंह की कार्यक्षमता प्रकाश में बढ़ती है। वह जब रात को आया तो झुलसा हुआ था। विसापुर से उनके पास आया तब वह अधिकांश ढका हुआ था। लेकिन दूसरे दिन विसापुर में खुला था तो उतने में ही वह चमक उठा था।

"सूर्य प्रकाश खूब भाता है पठ्ठे को।" राव बड़बड़ाए। फिर किसी विचार ने उन्हें बेचैन कर दिया। वे उसकी ओर देखते रहे।

पत्थरसिंह का ऊपरी हिस्सा अत्यंत चमकीला हो गया था और उन्हें लगा कि वह ऊपर नीचे भी हो रहा है।

उनका सिर दुखने लगा। उन्हें लगा जैसे पत्थरसिंह उन्हें घूर रहा है।

"यह कैसा पागलपन है। पत्थरसिंह की आंखें कहां है?" खुद को उन्होंने समझाया। पर उन्हें लगा जैसे वे हिप्नोटाइज हो गए हो।

जैसे तैसे वे खिड़की के पास गए और उसे बंद कर दिया। वे पत्थरसिंह पर आवरण डालने के लिए मुड़े और उन्हें बेचैन करने वाला विचार स्पष्ट हो गया। आवरण डालकर वे तुरंत भडकमकर को फोन करने मुड़े। लेकिन उससे पहले ही उन्हें चक्कर आया और वे बेहोश हो गए।

दो हफ्ते राव बेहोश थे। नींद में बतिया ने की तरह वे कुछ बोलते थे लेकिन किसी की कुछ समझ में नहीं आता था। अंत में होश में आने पर डॉक्टर ने उनसे कुछ सवाल किए। मथरानी भी पास ही थे। पर राव को कुछ याद नहीं था।

लेकिन और दो हफ्तों बाद उनकी स्मरण-शक्ति लौटने लगी। उन्हें पत्थरसिंह याद आ गया। लेकिन अपनी बेहोशी का कारण न बता सके। वे पूछ रहे थे कि उन्हें बेहोशी की हालत में जब पाया गया था, तो क्या वहां कोई विशेष बात नजर आई थी? लेकिन उनके इस प्रश्न का कोई उत्तर उनका समाधान नहीं कर पा रहा था। भडकमकर का यह अनुमान था कि राव की बीमारी का पत्थरसिंह से कोई संबंध अवश्य होगा। इसलिए उन्होंने उसे उनसे दूर एक सेफ डिपौझिट वॉल्ट में बंद कर दिया था। उसके प्रस्थान का दिन पास आ गया था।

राव कोई लेक्चर सुन रहे थे। सेमिनार रूम में अंधेरा था, क्योंकि वक्ता कुछ स्लाईड्स दिखा रहा था। तभी एक अन्य श्रोता देरी से अंदर आया। उसने दस सेकंड के लिए ही दरवाजा खोला होगा; लेकिन अंधेरे में पर्दे पर बाहर से आने वाले प्रकाश ने सभी के लिए रुकावट पैदा कर दी—परंतु राव साहब सिर जोर से दबाए खड़े हुए।

और बिजली की तरह एक विचार उनके दिमाग में कौंधा।

वे भाग कर भडकमकर के पास गए। वे फोन पर बातचीत कर रहे थे, अतः राव को बैठने का इशारा किया।

"थैंक यू वैरी मच फौर यूवर कोओपरेशन। आइ विल मेन्शन इट टू द चेअरमन। एंड विश यूवर फ्लाइट एवरी एक्सेस !"

फोन नीचे रख उन्होंने राव की ओर देखा। वे संतुष्ट दिखाई तो दे रहे थे, लेकिन चेहरा बता रहा था कि अब भी कोई चिंता उन्हें सता रही है। उन्होंने पूछा, "वाट इज द मैटर, पैट ?"

"पत्थरसिंह...... कहां है वह ? उसे पृथ्वी से बाहर मत भेजिएगा। उत्तेजित होकर राव ने कहा।

"क्यों ?"भडकमकर ने शांत स्वर में पूछा।

"मेरी बेहोशी का कारण मुझे अब याद आया है। पत्थरसिंह के ऊपर सूर्यप्रकाश आते मैंने देखा था। उसके भीतर का जीव सूर्य प्रकाश पर जीता है। वहीं उसकी ऊर्जा का मुख्य स्रोत है। ऐसे में उसे पृथिवी से बाहर भेजना मूर्खता होगी। वहां के निर्मल सूर्य प्रकाश में वह अत्यधिकं शक्तिशाली हो जाएगा.....

बेहोशी से पूर्व मैंने सोचा कि कहीं यह कोई जासूस तो नहीं ? न जाने कहीं दूर से यह आया और पृथिवी पर आ धमका। हमारी क्षमता वह जान गया है। अब इसका क्या भरोसा कि वह यह सारी जानकारी जहां से वह आया वहां न दे ? पृथिवी के पृष्ठ भाग से उसके लिए यह सिग्नल भेजना शायद संभव न हो पाता, क्योंकि उसमें से माइक्रोवेब्स तरंगे निकलती हैं और वे पृथ्वी के बाहर के वायुमंडल को छेद नहीं सकती थीं। हमने यदि उसे ऊपर भेजा तो उसका सारा काम अनायास हो जाएगा। उससे तो अच्छा है हम उसे पृथिवी में कहीं गाड़ दें।

यह विचार मेरे मन में आया और मुझे चक्कर आने लगा। मेरा विचार जान कर शायद पत्थरसिंह ने ही ऐसा किया था। चलिए, जल्दी कीजिए, 'इस्त्रो !' से कह कर फ्लाइट रद्द करवा दीजिए।"

राव बड़ी तेजी से बात कर रहे थे; पर भडकमकर बिल्कुल शांत थे।

"मुझे लगता है, आपने काफी विज्ञान-कहानियां पढ़ी होंगी। अजी, ले-देकर पत्थर का एक टुकड़ा ही तो है वह। कितना डरेंगे उससे। और फ्लाइट रद्द करवाने का कोई फायदा नहीं। वह पहले ही रद्द हो चुकी है।"

"तो फिर पत्थरसिंह कहां है ?"

मेज पर रखा एक टैलेक्स उन्होंने राव को थमाया :

Paththar Singh to be carried in Spacelab—7 today.

टैलेक्स इस्त्रो का था और तारीख कल की थी। राव कुछ समझ नहीं पाए। भडकमकर ने बात स्पष्ट की।

"आप ने पत्थरसिंह को स्पैशल रॉकेट से भेजने की योजना बनाई थी। लेकिन उसमें बहुत खर्चा आता और हमारी ही लैब को अधिकांश खर्चा करना पड़ता। कल एक स्पेस-लैब मिशन जा रहा था और पे-लोड की भी उसमें गुंजाइश थी। अतः मैंने तुरंत

निर्णय लिया—कि पत्थरसिंह को उसी में भेजा जाए। मिशन के अन्तरिक्षवीर उसे बाहर छोड़ देंगे।"

मडकमकर के चेहरे पर खर्चा बचाने का उपाय कर बड़ा मारी तीर मारने, का सन्तोष छलक रहा था। लेकिन राव का उधर ध्यान नहीं था। उन्होंने पूछा, "फोन करके देखिए फ्लाईट गई क्या—शायद अभी समय होगा।"

"इस्त्रो ने अभी अभी फोन किया था। अंतरिक्षवीर अपना काम कर चुके हैं। आप जब यहां अंदर आए तो मैं उन्हीं से बोल रहा था।"

राव सिर पीट कर रह गए।

++ ++ ++

स्पेस लैब-7 इस्त्रो को संदेश भेज रहा था।

"मैं औस्ट्रोनौट-1 बोल रहा हूं। नंबर-2 ने अभी-अभी पत्थरसिंह को बाहर रखा है।

उसमें तेजी से परिवर्तन ही रहे है। सूर्य किरणों के कारण उसकी चमक बढ़ती जा रही है, इतनी कि हम उधर देख नहीं पा रहे....।

अरे ! यह क्या ! लगता है, हमारे माइक्रोवेव डिटेक्शन यंत्र बहुत सक्रिय हो रहे हैं। उस पथरूं से ही ये किरणें आ रही हैं। किरणें अर्सा मेजर (Ursa Major) नक्षत्र की दिशा में छोड़ी जा रही हैं। हम उस दिशा में गए तो हमारे डिटेक्टर यंत्र बंद पड़ जाएंगे। अतः हम उस दिशा को टाल कर अपना अंतरिक्षयान चला रहे हैं' ......"



भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध और अप्रकाशित सामग्री का अनुसन्धान और प्रकाशन तथा लोक-हितकारी मौलिक-साहित्य का निर्माण

•

डॉ. जयंत नारलीकर

प्रोफेसर जयंत विष्णु नारलीकर का जन्म महाराष्ट्र के कोल्हापुर में १९३८ में हुआ। शिक्षा-दीक्षा वाराणसी के हिंदू विश्वविद्यालय तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई। ससम्मान डॉक्टरेट करने के बाद वे कैम्ब्रिज में ही अध्यापन करते रहे। पंद्रह वर्ष विदेश में अनुसंधान किया। खगोलिकी के क्षेत्र में डा. नारलीकर ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिक फ्रेड हॉयल के साथ महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपने कार्य के लिए उन्हें अनेक पदक तथा सम्मान प्राप्त हुए हैं। प्रमुख पुरस्कार हैं : स्मिथ'स पुरस्कार ([illegible]), एडम'स पुरस्कार (१९६७), पद्मभूषण (१९६५), नेहरू फैलोशिप (१९७[illegible]), इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स का स्वर्ण पदक (१९७३), शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार (१९७९) तथा राष्ट्रभूषण पुरस्कार (१९८२)।

वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में देश की सबसे बड़ी संस्था टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फन्डामेन्टल रिसर्च, बम्बई, में आप वरिष्ठ प्राध्यापक रहे। इन दिनों पुणे में खगोलिकी तथा खगोलभौतिकी के आन्तर्विश्वविद्यालय-केन्द्र के आप निदेशक हैं। मराठी में विज्ञान-गल्प लिखने के प्रवर्तक हैं और कई विज्ञानकथाओं के लोकप्रिय लेखक हैं। एक विज्ञान-उपन्यास भी शीघ्र ही प्रकाश्य है।

